गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-12, अंक-3   जुलाई-सितम्बर 2025 (भाग-1)   आईएसएसएन : 2348-5639

संपादक
• डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

कार्यकारी संपादक
• डॉ. वर्षा रानी

प्रबंध संपादक
• डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

सह-संपादक
• डॉ. लता एस. पाटिल,
• डॉ. सुलक्षणा अहलावत

अक्षर संयोजन
• मो. सलीम

कानूनी सलाहाकार
• डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
• अजीत सिहाग, एडवोकेट

सलाहकार सम्पादक मंडल

• डॉ. निशीथ गौड, आगरा
• डॉ. ऊषा रानी, शिमला
• डॉ. गोविन्द सोनी, श्रीगंगानगर
• डॉ. सुषमा रानी, जीन्द
• डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
• डॉ. दीपशिखा, पटियाला
• डॉ. गौतम कुमार साहा, दरभंगा
• श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन
• डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
• डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
• डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
• डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा
• डॉ. संजय कुमार, रांची
• डॉ. संतोष कुमार भगत, रांची

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध -पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 650/- रु. एक प्रिंट प्रति   वार्षिक 2500/- रु.

Editorial Board Member

1. **Dr. Priyanka Ruwali**
   Dept. Of Sociology
   D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttrakhand
2. **Ashutosh Singh**
   Department of History,
   Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana
3. **Mansi Sharma**
   ICSSR- Doctoral Fellow,
   Department of Political Science,
   University of Lucknow, Lucknow, U.P.
4. **Kishor Kumar**
   Department of History,
   Kumaun University, Nainital, Uttarakhand.
5. **Vivek Kumar**
   Research Scholar,
   Department of Medivial and Modern History,
   University of Lucknow, U.P.

विषय विशेषज्ञ सलाहकार समिति/ संपादकीय मंडल :

- **Dr. Mudita Popli**
  Principal, Maa Karni B Ed College Nal, Bikaner
- **Dr. Tapasya Chauhan**
  Assistant Professor,
  Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra (Utter Pradesh)
- **Dr. AMBILI V. S.**
  Assistant Professor, Department of Hindi,
  N.S.S. College, Pandalam, Pathanamthitta Distt. University of Kerala.
- **Dr. Om Prakash Mehrara**
  Director, Shri Ramnarayan Dixit PG College, Srivijaynagar, Distt. Anupgarh (Rajasthan)
- **Dr. Anju Bala**
  Assistant Professor Hindi,
  Guru Nanak Girls College, Yamunanagar-135001
- **डॉ. श्रीमती अभिलाषा सैनी**
  प्राचार्य, स्व. रामनाथ वर्मा शासकीय महाविद्यालय, मोपका, जिला-बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़
- **डॉ. माया गोला,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)
- **डॉ. मोहित शर्मा**
  श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्क तीर्थ किशनगढ़, जिला अजमेर (राजस्थान)-305815
- **रजनी प्रिया**
  रॉंगाटाँड़ रेलवे कॉलोनी, क्वार्टर सं. 502/136, तरुण संघ क्लब दुर्गा मंदिर, धनबाद, लैण्डमार्क - नियर श्रमिक चौक, पोस्ट जिला-धनबाद, झारखंड-826001

- **डॉ. आँचल कुमारी,** असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी
  राम चमेली चड्ढा विश्वास गर्ल्स कॉलेज गाजियाबाद चौधरी चरणसिंह युनिवर्सिटी, मेरठ (उ. प्र.)
- **डॉ. सरिता भवानी मालवीय**
  असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ लॉ.,
  आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- **डॉ. संदीप कुमार,** असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **डॉ. प्रमोद नाग**
  सहायक प्राध्यापक, आचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेजुएट स्टडीज, बेंगलुरु-560107
- **पल्लवी आर्य**
  असि. प्रोफेसर, भाषाविज्ञान विभाग, के.एम.आई. डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **डॉ. अमित कुमार सिंह**
  डी. लिट्., असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.एम. आई., डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
- **कोकिला कुमारी**
  शोद्यार्थी, हिंदी विभाग, राँची वि.वि. राँची, झारखंड
- **गोस्वामी सोनीबाला**
  शोधार्थी - जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार
- **डॉ. करुणेन्द्र सिंह**, असिस्टेंट प्रोफेसर
  रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, गोरखपुर, बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीपीगंज, गोरखपुर
- **डॉ. मीरा चौरसिया**
  चमनलाल महाविद्यालय लंढौरा, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड-247664
- **Dr. Vimal Parmar**
  Assistant Prof. Rajasthan P.G. Law College, Chirawa , Rajasthan
- **डॉ. तनु श्रीवास्तव**
  असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), स्कूल ऑफ सोशल साइंस, देवी अहिला विश्वविद्यालय, इन्दौर
- **डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी**
  उप-प्राध्यापक, केंद्रीय हिन्दी विभाग
  त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल
- **Dr. Archana Tiwari** , Assistant Professor , History and Indian Culture, Uni. Rajasthan, Jaipur
- **डॉ. जगदीप दुबे**
  सहायक प्राध्यापक वाणिज्य (म.प्र.), शासकीय आदर्श महाविद्यालय, डीनडोरी (म.प्र.)
- **डॉ. चन्द्रशेखर सिंह**
  समाज कार्य विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- **लेफ्टि. डॉ. सन्दीप भांभू**
  शारीरिक शिक्षा विभाग, टॉटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

Request to Writers

Send quality original and unpublished works written on language, literature, society, science and culture. For publication, along with the translated works, also send the letters of consent received from the original authors. Compositions should be typed in Hindi Unicode Mangal font, English Time Roman. At the beginning of the article, a summary of the article is required which should be between 150 to 200 words maximum. The abstract must reflect the purpose of writing the article. Also write 5 to 7 'key words' (seed words) according to the article.

Write the article by dividing it appropriately into subheadings. Be sure to give a conclusion at the end of the article. The word limit should be 2000 to 2500 words. List of bibliographies at the end of the article APA Be in the format of. While sending the article, please write your name, address, phone number and title of the article in the e-mail. Submit a declaration to the effect that the article is original, unpublished, the author and not the editorial board will be responsible for any dispute related to it in future.

At the end of the composition, mention your complete postal address, mobile number and e-mail address.

- Editor

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज, विज्ञान एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएं भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ हिंदी यूनिकोड मंगल फान्ट अंग्रेजी टाइम रोमन में टंकित होनी चाहिए। लेख के प्रारंभ में लेख का सार अपेक्षित है जो अधिकतम 150 से 200 शब्दों के मध्य हो। सार में लेख लिखने का उद्देश्य अवश्य परिलक्षित होना चाहिए। लेख के अनुरूप 5 से 7 (की वर्ड) (बीज शब्द) भी लिखें। लेख को यथोचित उपशीर्षकों में विभाजित करके लिखें। लेख के अंत में निष्कर्ष अवश्य दें। शब्द सीमा 2000 से 2500 शब्दों की हो। आलेख के अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची ए.पी.ए. के प्रारूप में हो। लेख भेजते समय अपने नाम, पता, फोन नंबर एवं लेख का शीर्षक ई-मेल में अवश्य लिखें। इस आशय का एक घोषणा-पत्र प्रस्तुत कर दें कि लेख मौलिक है, अप्रकाशित है, भविष्य में इससे संबंधित किसी भी विवाद के लिए लेखक उत्तरदायी होंगे संपादक मंडल नहीं।

रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता अंकित करें।

-संपादक

प्रकाशित पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क करे :

सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094

मोबाइल : 9818128487, 8383042929

ISSN : 2348-5639

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

[भाग III—खण्ड 4] भारत का राजपत्र : असाधारण 105

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

संपादकीय : भारतीय समाज और साहित्य : विचार, विमर्श और वैचारिक पुनर्पाठ का समय

वर्तमान समय भारतवर्ष के सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन में एक नए उथल-पुथल का काल है। यह कालखंड न केवल तकनीक और संचार के स्तर पर परिवर्तनशील है, बल्कि यह मूल्यबोध, दृष्टिकोण और विमर्शों के पुनर्परिभाषण का भी युग है। ऐसे समय में साहित्य और समाज के संबंधों पर गहन पुनर्विचार आवश्यक हो जाता है। साहित्य केवल कल्पना नहीं, वह अनुभव, संघर्ष, दृष्टि और सामाजिक चेतना का दस्तावेज है। आज जब भारत एक ओर अपनी परंपराओं और मूल्यों को बचाए रखने की जद्दोजहद में है, तो दूसरी ओर वह वैश्विक विमर्शों, नवपूंजीवाद, उपभोक्तावाद और डिजिटल संस्कृति से भी गहराई से प्रभावित हो रहा है। इसी द्वंद्व में साहित्य की प्रासंगिकता और उसकी भूमिका स्पष्ट होती है।

'शोध समालोचन' पत्रिका का यह अंक, जुलाई, अगस्त और सितम्बर की त्रैमासिक सीमा में, उन्हीं विमर्शों को रेखांकित करता है जो आज के साहित्यिक परिवेश, समकालीन रचनाशीलता और समाज के अंतर्विरोधों के बीच एक संवाद कायम करते हैं।

साहित्य और सामाजिक यथार्थ

साहित्य हमेशा समाज का दर्पण नहीं होता, वह कई बार समाज से आगे चलने वाला, चेतना देने वाला और क्रांति की बीज बोने वाला औज़ार भी होता है। आज जब सामाजिक यथार्थ बहुआयामी हो गया है—जाति, वर्ग, लैंगिकता, धर्म, पर्यावरण, शिक्षा, ग्रामीण-शहरी द्वंद्व, पलायन, बेरोजगारी और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे मुद्दे मुखर हो रहे हैं तो समकालीन लेखन भी इन्हीं विषयों को अपनी रचनाओं में स्थान दे रहा है।

हमने देखा है कि दलित साहित्य, स्त्री विमर्श, आदिवासी साहित्य, श्रमिक साहित्य तथा यथार्थवादी लेखन के नए रूप सामने आए हैं। ये धारणाएँ किसी विचारधारा के आग्रह मात्र नहीं, बल्कि हमारे समय की सामाजिक सच्चाइयों की साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ हैं। इस अंक में प्रकाशित कई लेख, कविताएँ, आलोचनात्मक लेख और साक्षात्कार इन्हीं विचारधारात्मक और यथार्थमूलक आधारों पर टिके हैं।

आलोचना और समालोचना की भूमिका

समकालीन साहित्यिक विमर्श में आलोचना केवल साहित्यिक सौंदर्य पर बात करने तक सीमित नहीं रह गई है। आलोचना अब सत्ता, संस्कृति, समाज और समय की भी परतें उधेड़ती है। आज के युग में जब कई बार साहित्य राजनीति का साधन बनता दिखाई देता है, तब आलोचना का काम केवल "कथ्य" और "शिल्प" तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि वह यह भी देखती है कि कौन बोल रहा है, किसके लिए बोल रहा है और किसे चुप करवा रहा है।

'शोध समालोचन' का यह अंक विचारधारा की बहुलता का स्वागत करता है और एक समावेशी आलोचना दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है। इसमें प्रकाशित आलेखों में आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता, उत्तर-साम्राज्यवाद और भूमंडलीकरण जैसे विमर्शों की छाया भी स्पष्ट देखी जा सकती है।

नारी लेखन और स्त्री दृष्टि

नारी लेखन अब केवल स्त्री विषयक लेखन नहीं रह गया है, बल्कि यह एक वैकल्पिक दृष्टिकोण के रूप में उभरा है जो समाज की सत्ता संरचनाओं, पितृसत्ता, लिंगभेद और लैंगिक न्याय जैसे मुद्दों को केंद्र में रखता है। इस अंक में प्रकाशित

स्त्री लेखन केंद्रित लेखों में यह देखा जा सकता है कि स्त्री अब केवल विषय नहीं, स्वयं लेखन की दिशा बदलने वाली दृष्टि बन चुकी है।

यह नारी दृष्टि केवल कविताओं में भावुकता या पीड़ा के रूप में नहीं आती, बल्कि वह राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक हस्तक्षेप भी करती है। विशेष रूप से ग्रामीण पृष्ठभूमि की स्त्रियों के लेखन में जो आत्मकथात्मक स्वर उभरते हैं, वे समकालीन हिंदी साहित्य को नई पहचान दे रहे हैं।

क्षेत्रीयता और भाषाई विविधता

भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी ताकत उसकी भाषाई विविधता है। हिंदी के साथ-साथ भोजपुरी, हरियाणवी, मराठी, पंजाबी, बांग्ला, मैथिली, राजस्थानी, अवधी, ब्रज जैसी भाषाओं में भी विपुल साहित्य रचा जा रहा है। क्षेत्रीय साहित्य समाज के वास्तविक अनुभवों को, उनकी जड़ों और संघर्षों को जिस आत्मीयता से सामने लाता है, वह मुख्यधारा की साहित्यिक दुनिया को एक नया नजरिया देता है।

इस अंक में हरियाणवी लोक साहित्य, राजस्थानी जनकथाओं और भोजपुरी कविता पर केंद्रित लेख इस दृष्टिकोण को सशक्त बनाते हैं।

नई पीढ़ी की लेखनी

तकनीक और डिजिटल क्रांति के इस युग में साहित्य का स्वरूप भी बदल रहा है। फेसबुक, ब्लॉग, यूट्यूब, पोडकास्ट और ई-पत्रिकाओं के माध्यम से एक नई रचनाकार पीढ़ी साहित्य में प्रवेश कर रही है। ये लेखक पारंपरिक संस्थाओं से बाहर रहकर भी एक बड़ा पाठक वर्ग तैयार कर रहे हैं।

'शोध समालोचन' इस बदलाव को स्वीकारते हुए नई पीढ़ी की रचनाशीलता को भी उचित मंच प्रदान कर रहा है। इस अंक में प्रकाशित युवा लेखकों की कविताएँ और समीक्षाएं इस बात का प्रमाण हैं कि हिंदी साहित्य का भविष्य जागरूक, प्रखर और सजग हाथों में है।

साहित्य और समकालीन संकट

यह युग राजनीतिक उथल-पुथल, सांस्कृतिक विखंडन, जलवायु संकट, तकनीकी गुलामी और मानसिक अवसादों का युग है। ऐसे समय में साहित्य की भूमिका केवल सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं रह सकती। साहित्य को इन संकटों की पहचान करनी होगी और उनके समाधान की दिशा में नैतिक एवं वैचारिक हस्तक्षेप भी करना होगा।

इस अंक में जलवायु परिवर्तन, युद्ध, नैतिक पतन, सांस्कृतिक संकट और मनोवैज्ञानिक पीड़ा पर आधारित लेख साहित्य को एक संवेदनशील सामाजिक अभ्यास के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष : साहित्य संवाद का माध्यम

हम यह मानते हैं कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि संवाद, साक्षात्कार और आत्ममंथन भी है। 'शोध समालोचन' का यह अंक इन्हीं उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ा है। हम साहित्य को न तो किसी विचारधारा के बंधन में बांधना चाहते हैं, और न ही उसे केवल सजावटी प्रयोगों तक सीमित करना चाहते हैं। हम उसे संवाद, विचार और परिवर्तन की दिशा में देखना चाहते हैं।

आशा है कि यह अंक हमारे पाठकों को चिंतन की दिशा में प्रेरित करेगा और साहित्य-संवेदना के नए आयामों की खोज में सहायक सिद्ध होगा। हम सभी लेखकों, समीक्षकों, शोधार्थियों और सुधि पाठकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपने समय, श्रम और दृष्टिकोण से इस अंक को सार्थकता प्रदान की।

आपके सुझाव और आलोचनाएँ ही हमारी दिशा और दृष्टि को प्रखर बनाती हैं। अतः हम आपके सुसंवादी सहयोग की सतत अपेक्षा रखते हैं।

संपादक

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय : भारतीय समाज और साहित्य : विचार, विमर्श और वैचारिक पुनर्पाठ का समय 6

डॉ. राजेन्द्र टोकी की कहानी 'अमानुषी' में नारी का विचित्र स्वरूप 11
चन्द्रशेखर
डॉ. अरविंदर कौर

Study of Improvement of Compressive Strength in Pervious Concrete 15
Dr Preetesh Saxena
Mr. Utkarsh Singh

मध्यकालीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 22
सुनीता जैन

हिंदी साहित्य में लिंग, जाति, वर्ग और धर्म जैसे सामाजिक मुद्दों का अध्ययन 24
मिनाक्षी पुत्री श्री ओटाराम

अंतर्जाल पर प्रकाशित डॉ. नरेश सिहाग 'एडवोकेट' की रचनाएँ : एक बहुआयामी साहित्यिक दृष्टि 27
डॉ. रेखा रानी

समकालीन कविता में सांप्रदायिकता विरोधी स्वर 31
शगुफ्ता यास्मीन

सेवासदन : नारी जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण 38
रीता मौर्य

द्वेषपूर्ण भाषा, वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बाधक के रूप में : एक आलोचनात्मक अध्ययन 41
Dr. Tai Chourasiya
Abhinesh Kumar Jain

भारतीय लोकतंत्र में 18 वीं लोकसभा चुनाव : मतदान व्यवहार का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 43
आदित्य राज

Reimagining English Language Education: The New Pedagogical Structure of NEP 2020 47
Dr. Sunita Yadav

समवायस्य विषये दर्शनान्तराणां मतम् 51
एकलव्यः रुंगटा

सूरदासजीश्रृंगार और वात्सल्य रस के सम्राट 55
रामुराम

HDI रिपोर्ट में भारत की स्थिति 58
Nena Ram Prajapat

उच्च शिक्षा में नवाचारी गतिविधियों की भूमिका 60
डॉ. सतीश चन्द मंगल
डॉ. मुकेश कुमार शर्मा/श्रीमती रूकमणी शर्मा

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियाँ एवं सुझाव 67
डॉ. कुमुद श्रीवास्तव
आयुषी गोल्हानी
भारत में पंचायती राज संरचना का विकास एवं कार्यप्रणाली 72
सुरेश चन्द
परमात्मनः सविशेषप्रकाशैकस्वरूपत्वसाधनम् 75
डॉ. वी. बालाजी
उत्तराखण्ड राज्य के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 78
दीपक सोराड़ी
डॉ. देबकी सिरोला
हिंदी आलोचना को डॉ. विजय महादेव गाड़े का योगदान 85
डॉ. नरेश कुमार सिहाग
पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त तथा उसकी सम-सामयिक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता 88
पूजा शर्मा
मन्जू देवी
डॉ. मनोज कुमार
मानविकी शिक्षा में खेल-आधारित शिक्षण की प्रभावशीलता 92
डॉ. वैशाली सिंह
श्रीगंगानगर (राजस्थान) जिले का प्राकृतिक भूगोल 96
छविंद्र सिंह
सामाजिक यथार्थ की पड़ताल : डॉ. नरेश सिहाग की कविताएँ 101
डॉ. लता एस पाटिल
नासिरा शर्मा के पारिजात उपन्यास में राम छवि 105
सुशीला कुलरिया
लेखन कला और उसकी विधाएँ 109
डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'
वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद की उपादेयता 114
प्रतिष्ठा सिंह
वैदिक कालीन शिक्षा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता 119
केशव मिश्रा
हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : संभावनाएँ, चुनौतियाँ और भविष्य 122
डॉ. संजय धोटे
उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में कोचिंग का प्रभाव 130
अनिता शर्मा
प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' में निहित नारी-अस्मिता और उसकी संघर्ष की वास्तविक झलक 133
शशि नाथ प्रसाद

Rural-Urban Disparities in Child Sex Ratio and Its Determinants in Haryana 137
Santosh Kumar
Dr Satyaveer Yadav
शैलेश मटियानी के कहानी संग्रह 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' में दांपत्य जीवन का अध्ययन 149
सुनीता
डॉ. रेखा चौधरी
Online Gambling in India: The Dark Reality Behind Digital Entertainment 155
Soundara Rajendren Nayagi
स्मार्ट मशीन लर्निंग प्रणाली द्वारा हृदय रोग का पूर्वानुमान : एक व्यवहारिक अध्ययन 159
के के इश्विन्ता श्री
Smartwatch-Based Monitoring System for Parkinson's Patients Using AI 164
K K Ishvitha Shree
भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ और मानवतावाद 170
प्रो. ज्योति किरण
Angling Cleopatra, Drawn Antony: The Shades of A New Politics of Gender in Antony and Cleopatra 176
Anas Tabraiz
THE CONCEPT OF GOD: CONTINUITY AND CHANGE 184
Dr. Kumari Soni Rekha
Breaking Social Barriers: Sri Chaitanya's Role in Promoting Equality 190
Shampa Banerjee
कृष्ण बिहारी मिश्र की आलोचना दृष्टि 196
रुद्र प्रताप सिंह

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

डॉ. राजेन्द्र टोकी की कहानी 'अमानुषी' में नारी का विचित्र स्वरूप

चन्द्रशेखर
(शोधार्थी)
देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब
मोबाइल नंबर- 8727886999, ईमेल- shekhar198324@gmail.com

डॉ. अरविंदर कौर
सहायक प्राध्यापक,
देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब

प्रस्तावना- डॉ. टोकी की कहानियों में ग्रामीण समाज, शहरी रीति-रिवाजों और नारी के स्वरूप का वर्णन समाज की अनेक समस्याओं के साथ दिखाया गया है। उनकी कहानियाँ देश प्रेम और सामाजिक चेतना को भी उजागर करती है। डॉ. टोकी परिवार के महत्व को भी दिखाते हैं, तो हास्य व्यंग्य को सुंदर ढंग से भी पेश करते हैं। उनकी कहानियाँ समाज से सरोकार रखती हैं, अपनी रचनाओं में उन्होंने अपने पात्रों से बातें की हैं और उनकी जिज्ञासा का सही आंकलन करते हुए दिखाई देते हैं। उनकी कहानियाँ समाज का मार्गदर्शन करती हैं। डॉ. टोकी की संवेदना की अंतर्धारा बहुत ही सूक्ष्म और कई परतों की गहराई तक जाने वाली भी है। करुणा और व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक सरोकारों पर उनकी दृष्टि केंद्रित रही है। उन्होंने पात्रों की चारित्रिक खूबियों का भी खूब जायजा लिया है। डॉ. टोकी की कहानियों में समाज में फैली बुराइयां, कुरीतियां, जो लगातार बढती जा रही है पर कटू आलोचनात्मक शैली से प्रहार किया गया है। समाज में सभी लोग विकास करना चाहते हैं, चाहे उसके लिए रास्ता कोई भी हो, मानव ही नियम बनाता हैं और मानव ही उन नियमों को तोड़ता है। समाज की दुर्दशा का मुख्य कारण राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक तौर पर हो रहा भ्रष्टाचार है। डॉ. टोकी ने अपनी कहानियों में धर्म, राजनीति और आर्थिक पक्ष को व्यंग्यों के माध्यम से उठाया है। 'अमानुषी' कहानी में नारी का विचित्र स्वरूप पारंपरिक मान्यताओं और आधुनिक सोच के बीच संघर्ष को दर्शाता है। नारी माँ भी है, बहन भी है, पत्नी भी है, नारी शक्ति भी है, तो नारी लक्ष्मी भी है। परन्तु डॉ. टोकी ने नारी के अलग ही रूप को पेश किया है जो धार्मिक होने का पाखंड करती है और व्यर्थ के रीतिरिवाजों की दुहाई देती है। 'अमानुषी' कहानी एक लंबी कहानी है, इस कहानी में पात्र तो अधिक नहीं है, परंतु नारी के चरित्र को केंद्र में रखकर लेखक ने परस्पर विरोधी मनोभावों को सटीक रूप से पेश किया है। कहानी की नायिका को क्रूर, असंवेदनशील और अमानवीय दिखाया गया है। उसके पति के मित्र की माता की मृत्यु पर शव-दाह के बाद रात में अपने पति को घर में नहीं रहने देती क्योंकि वह शव-दाह में गया था। पति को घर में ताड़ना भी देती है। लेखक अपने मित्र को मौत के सूने घर में अकेला नहीं छोड़ना चाहता, परन्तु अपनी पत्नी के सामने विवश है। लेखक ने 'अमानुषी' कहानी में उस पाखंड और जड़ संसार में उजागर झूठे रीति-रिवाजों और संस्कारों को भी पूरी तरह उजागर किया है। डॉ. टोकी ने अमानुषी कहानी में नारी के विचित्र स्वरुप को दिखाने में पूर्ण सफलतम प्रयास किया है।

बीज शब्द- अमानुषी, रीति-रिवाजों, क्रूर, असंवेदनशील, अमानवीय, दुर्दशा, अंतर्धारा, करुणा, व्यंग्य, आलोचनात्मक।

डॉ. राजेन्द्र टोकी की कहानी 'अमानुषी' में नारी का विचित्र स्वरूप।

कहानी 'अमानुषी' भारतीय मर्द प्रधान समाज की कहानी है। नायक की पत्नी धार्मिक विचारों और रीति-रिवाजों को

मानने वाली या नायक के अनुसार अभिनय करने वाली अभिनेत्री कहना उचित होगा। ऐसी धार्मिक पत्नी पाकर नायक बड़ा ही परेशान है। वह अपनी पत्नी का दास मात्र बनकर रह गया है। वह पहले ही जान जाता है कि उसकी पत्नी अब क्या कहेगी। नायक अपनी पत्नी के अभिनय का कायल भी है। वह मन ही मन उसे कोसता भी है। परंतु उसके मुंह पर कुछ नहीं कह सकता, उसे वह पाखंडन मानता है। मित्र की माता की मृत्यु पर वह निर्मल के सामने बड़ा अच्छा अभिनय निभाती है। नायक हैरान रह जाता है कि कैसे वह निर्मल की माता की मृत्यु पर शोक व्यक्त करती है और पचास रूपये के साथ नाश्ता भी करवाती है। पत्नी का ऐसा रूप उसे हज़म नहीं हो रहा था। परंतु नायक अपनी पत्नी को कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। निर्मल की मां का दाह-संस्कार करने के बाद नायक निर्मल को अपने साथ अपने घर ले आता है तो वह अपनी पत्नी का नया रूप ही देखा है। वह उसके मित्र को अपने साथ लाने पर खरी-खोटी सुनाती है। यहां पर लेखक स्त्री के रूपों का वर्णन करता है। वह स्थिति के अनुसार अपने आप को बदलना जानती है, यहां लेखक ने स्त्री और पुरुष का मध्यवर्गीय परिवारों में चल रही खींच तान को भी बड़े भावानुकूल ढंग से पेश किया है। नायक मानता है कि कोई ऐसा यंत्र होना चाहिए, जिससे वह सुंदर औरतों के अंदर की भावनाओं और चरित्र को समझ सके।

'मैंने बड़े प्यार से उस 'पति को परमेश्वर' मानने वाली सती साध्वी पत्नी से पति होते हुए मूर्खतावश नाजायज सा सवाल पूछ लिया—

'क्या तुम्हारे सपनों में मैं भी कभी आता हूं?'

'क्या यह क्या सवाल हुआ?' आप तो साथ ही रहते हैं। आंखों के सामने।'

उसका जवाब सुनकर मैं समझ गया कि नहीं आता।

'कौन आता है फिर सपनों में?' मैंने मुस्कुरा कर पूछा।

'कोई नहीं।'

'झूठी।'

'नहीं सच।'

'तुम्हारे वे महाराज नहीं आते?' मेरे मुंह से अचानक निकला।

'हां, वह तो रोज आते हैं।' फिर उसने सपनों में आने वाले अपने तीनों परमेश्वरों के नाम बता दिए महाराज, राम, कृष्ण।'[01]

डॉ. टोकी की कहानी 'अमानुषी' में समाज की एक गंभीर समस्या को उजागर किया है। आज समाज में लगातार धार्मिक पाखंड बढ़ता जा रहा है। नायक की पत्नी के माध्यम से व्यर्थ की रीति-रिवाजों पर कटाक्ष किया गया है। डॉ. टोकी ने समाज को धार्मिक पाखंडों से निकालने का प्रयास भी किया है। इस कहानी में धर्म के नाम पर झूठे संतो, झूठे रीति-रिवाजो के कारण ही समाज के असली मूल्यों से मानव को दूर जाते दिखाया हैं।

'हम भारतीय कितने महान है- दिनों के नामों तक में भेदभाव करते हैं। आदमी में क्यों ना करेंगे। मेरी पाखंडन जो आज व्रत रखेंगी और मोहल्ले की अन्य अनपढ़, गंवार, असुंदर औरतों के संग पहले मंदिर में जाएगी और गंदा पानी चरणामृत समझकर पाएगी और फिर मेले में जाकर शगुन के तौर पर कुछ खरीदेंगी। फिर घर आकर वही नौकर को गालियां, पड़ोसनों की चुगलियां ,जिन्हें सुनकर कोई भी यह दावा कर देगा कि यह औरतें और कुछ भले ही हो धार्मिक नहीं हो सकती।'[02]

'अमानुषी' कहानी में नायक अपनी पत्नी की झूठी धार्मिकता और पाखंडवाद पर बार-बार व्यंग्य करता है। नायक द्वारा अपने आप से बातें करना और मन ही मन बातें करके अपनी पत्नी को कोसना बड़ा ही हास्यपूर्ण वातावरण बना देता है। अपनी पत्नी को देखते ही उसमें अचानक ही मानसिक भावनाएं उत्पन्न होने लगती है और वह अपने आप से बातें करने लगता है। जिसका एक स्पष्ट उदाहरण यह है—

'सुबह उठते ही ऐसा संवाग भरती है, जैसे सात जन्मों से कुंवारी हो, साली पाखंडन। अपने इन विचारों पर मैं मुस्कुरा दिया। मुझे उसका यह नाम उसके व्यक्तित्व पर बिल्कुल सटीक लगता है। इससे बढ़िया उसका कोई और नाम हो ही नहीं

सकता।'[03]

रिश्तों का बनावटीपन 'अमानुषी' कहानी में भी दिखता है। जब नायक अपने मित्र की माता के देहांत पर दुनिया का रूप देखा है, मित्र की माता की मौत पर आस-पड़ोस के लोग तमाशा देखने खड़े हैं, औरतें इस समय भी शर्त रखती हैं। आज ऐसी दुनिया रच ली गई है, मानव के द्वारा की चार कंधे अर्थी को उठाने के लिए भी रिश्तेदारों और पड़ोसियों के नहीं मिलते, क्या कभी ऐसी सामाजिक व्यवस्था के बारे में मानव ने सोचा होगा। दुरूख में तो दुश्मन भी दर्द बांटने चले आते हैं। आज की सामाजिक व्यवस्था इतनी भयंकर बन गई है कि कोई किसी को नहीं पहचानता। डॉ. टोकी ने इस कहानी में शव उठाने का दृश्य कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

"विजय की पत्नी निर्मल के पास आई और बोली, 'काके मोहल्ले की औरतें शमशान घाट चलने को तैयार है। तुम बस एक बार उनसे कह दो।

'नहीं मैं नहीं कहूंगा। निर्मल ने दृढ़ता से कहा। 'जिंदगी भर जिनसे नाता नहीं रखा, अब इस घड़ी में मैं उनके सामने हाथ नहीं जोड़ूंगा। 'वे नहीं जाती तो ना सही।'

'बिल्कुल ठीक। यह कोई मौका है, नखरा करने का, ऐसे मौके पर तो बिन कहे ही चलना चाहिए था। वर्मा साहब के इस कथन से वह औरत मायूस दिखी।

मैं क्योंकि पत्नी पारायण होने के कारण समझौतापरस्त हो गया हूं, इसलिए निर्मल को उन महिलाओं को साथ ले चलने की सलाह देने ही जा रहा था कि वर्मा साहब की बात सुनकर, निर्मल के चेहरे पर आई दृढ़ता को देखकर चुप हो गया।"[04]

नायक अपनी पत्नी का असली रूप तब देखा है, जब निर्मल को दाह-संस्कार के बाद अपने घर लाता है और अपनी पत्नी से कहता है कि—

"सुनो, निर्मल आज रात यही रहेगा। बड़ी मुश्किल से बचा कर लाया हूँ।'

'क्या?'

मेरी बीवी ने मंत्रोच्चारण रोक कर कहा, 'उस मनहूस को यहां ले आए हो? राम-राम। दिन त्यौहार तो देख लिया करो। उसकी मां मर गई है, तो मैं क्या करूं? मैंने क्या उसका ठेका ले रखा है। आज त्यौहार के दिन उसे ले आए। उसे दफा करो वरना मुझसे बुरा कोई ना होगा, समझे!'

मेरी बीवी बोल रही थी और कभी मत्रोंचचारण के कारण शांत, सौम्य मुखड़े के स्थान पर क्रोध से तमतमाए उसके चेहरे को देख रहा था तो कभी उसके हाथ में पकड़े थाल को, जिसमें गंगाजल के साथ पूजा का सामान सजा था और एक दीपक निष्कम्प, निर्लिप्त भाव से जल रहा था।"[05]

समाज में आज ऐसे-ऐसे झूठे पाखंडी साधु संत बैठे हैं, जो बड़े-बड़े डॉक्टरों को भी पीछे छोड़ देने का आश्वासन देते हैं। झाड़-पोंछ से बीमारियों को ठीक करने से जैसे पाखंड रचे जाते हैं। लोग भी इनका कहना मान कर अपने जीवन से हाथ धो बैठते है। डॉ. टोकी ने कहानी अमानुषी में इसका भी जिक्र किया है—

"चार-पांच महीने पहले निर्मल की मां को मलेरिया हुआ तो सदा की तरह उन्होंने दवाइयां नहीं ली और साधुओं का आशीर्वाद प्राप्त करने लगी। लेकिन वह कमजोर होती चली गई। वे कई साधुओं के डेरों पर जा आई। शरीर के लिए घातक, मगर धार्मिक दृष्टि से पवित्र राख वे फांक चुकी थी। जब कोई फायदा ना हुआ। तब जाकर डॉक्टर वर्मा की होम्योपैथी की शरण ली गई।"[06]

निष्कर्ष

डॉ. राजेंन्द्र टोकी आधुनिक समय के प्रतिभाशाली लेखक हैं। उन्होंने अपने परिवेश और अनुभव में जो भी महसूस किया उसी में अपनी रचनाओं की है। डॉ. टोकी का गहन अनुभव सूक्ष्म-दृष्टि और जीवन को व्यापकता में देखने की सार्थकता साफ सामने दिखाई देती है। भाषा को भी उन्होंने उन्नत रूप से प्रस्तुतीकरण किया है। मनोभावनाओं और मनोवैज्ञानिक चित्रण

होने पर भी जिंदगी की सही तस्वीर उन्होंने अपनी कहानियों में निकाली है। उनकी कहानी अमानुषी में उन्होंने आम मध्यवर्गीय जीवन को अभिव्यक्त किया है। समाज की सही तस्वीर दिखाना एक लेखक का सबसे पहला कर्तव्य होता है, डॉ. टोकी समाज को सही दर्पण दिखाने में अग्रसर रहे हैं। मुश्किल समय में परिवार, रिश्ते-नातों, सगे-संबंधी, मित्र और पड़ोसी कोई साथ नहीं देता। सामाजिक समस्याओं में अंधविश्वासों के साथ-साथ झूठे रीति रिवाज, झूठे संस्कारों को भी दिखाया है। डॉ. टोकी ने 'अमानुषी' के माध्यम से नए, सुंदर और सुसंगठित समाज की कल्पना की है और सामाजिक बुराइयों, पाखंड, व्यर्थ के रीतिरिवाजों को जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया है। उन्होंने अमानुषी कहानी के माध्यम से पारिवारिक रिश्तों को सुधारने की कोशिश और अंधविश्वासों को खत्म करने का भी पूरा प्रयास किया है।

सन्दर्भ सूची

01. डॉ. राजेन्द्र टोकी 'कथा एक बौड़म की' 1998, नीलाभ प्रकाशन, खुसरो बाग़ रोड , इलाहबाद, कहानी- 'अमानुषी', पृष्ठ सं.- 74
02. डॉ. राजेन्द्र टोकी 'कथा एक बौड़म की' 1998, नीलाभ प्रकाशन, खुसरो बाग़ रोड , इलाहबाद, कहानी- 'अमानुषी', पृष्ठ सं.- 69
03. डॉ. राजेन्द्र टोकी 'कथा एक बौड़म की' 1998, नीलाभ प्रकाशन, खुसरो बाग़ रोड , इलाहबाद, कहानी- 'अमानुषी', पृष्ठ सं.- 67,
04. डॉ. राजेन्द्र टोकी 'कथा एक बौड़म की', 1998, नीलाभ प्रकाशन, खुसरो बाग़ रोड , इलाहबाद, कहानी- 'अमानुषी', पृष्ठ सं.- 83,84
05. डॉ. राजेन्द्र टोकी 'कथा एक बौड़म की,' 1998, नीलाभ प्रकाशन, खुसरो बाग़ रोड , इलाहबाद, कहानी- 'अमानुषी', पृष्ठ सं.- 91,92
06. डॉ. राजेन्द्र टोकी 'कथा एक बौड़म की,' 1998, नीलाभ प्रकाशन, खुसरो बाग़ रोड, इलाहबाद, कहानी- 'अमानुषी', पृष्ठ सं.- 72

Study of Improvement of Compressive Strength in Pervious Concrete

Dr Preetesh Saxena
(Director)

Mr. Utkarsh Singh
(Head Of Department)

Himalayan Institute Of Technology And Management, Lucknow, U.P.

ABSTRACT

Pervious concrete offers environmental benefits—stormwater infiltration, reduced runoff, and groundwater recharge—but its inherently high porosity compromises compressive strength, limiting structural applications. This study systematically investigates mix-design modifications and supplementary treatments to enhance the compressive strength of pervious concrete while retaining adequate permeability. Four strategies were evaluated: (1) optimizing aggregate gradation; (2) introducing supplementary cementitious materials (SCMs) such as fly ash and silica fume; (3) using polymeric admixtures (PVA fibers, superplasticizers); and (4) applying post-casting treatments (lithium silicate surface densification). Control and modified mixes were cast as 150 mm cubes and cured for 7, 28, and 90 days. Compressive strength, permeability coefficient, and porosity were measured per ASTM C39, C1701, and C1754, respectively. Results indicate that a ternary blend of 10% silica fume and 15% Class F fly ash, combined with a 0.5% volume fraction of PVA fibers, increased 28 d compressive strength by 35% (from 20 MPa to 27 MPa) while maintaining a permeability > 1.0 cm/s. Surface densification with lithium silicate further improved strength by 8% without significantly reducing infiltration rates. ANOVA (á = 0.05) confirms the statistical significance of each strategy.

KEYWORDS : Pervious concrete; compressive strength; permeability; silica fume; fly ash; PVA fibers; surface densification.

1. INTRODUCTION

Urbanization intensifies impervious surface areas, exacerbating stormwater runoff, flooding, and water quality degradation (Dietz, 2007; Pitt et al., 2008). Pervious concrete—characterized by interconnected voids (15–30% porosity)—mitigates these effects by allowing rapid infiltration (Bean et al., 2007). However, the high void content reduces compressive strength (commonly 10–25 MPa at 28 d), restricting pervious concrete primarily to low-traffic pavements and landscaping (Day, 2006; Poon et al., 2009). To expand the structural applicability of pervious concrete, researchers have explored mix-design adjustments (aggregate gradation, water–cement ratio), SCM incorporation, fiber reinforcement, admixtures, and post-casting treatments (Nepomuceno et al., 2017; Chen &

Wu, 2014). Yet, a comprehensive comparison of these strategies—balancing strength enhancement and permeability retention—is lacking. This study addresses this gap by systematically evaluating four improvement approaches:

i. **Aggregate Optimization:** Refining coarse-aggregate size distribution to maximize stone-to-stone contact while preserving void connectivity (Thomas & Matthews, 2006).

ii. **SCM Blends:** Partial cement replacement with fly ash (Class F) and silica fume to refine pore structure and increase matrix strength (Ghafoori & Dhir, 1999; Mehta, 1993).

iii. **Polymeric Admixtures:** Incorporation of PVA fibers for crack bridging (Ozbay et al., 2015) and high-range water-reducing superplasticizers for lower w/c ratios (Hossain & Lachemi, 2009).

iv. **Surface Densification:** Application of lithium silicate sealers to densify pore walls and improve near-surface strength without clogging voids (Rashad, 2013).

Objectives:

1. Quantify the effects of each improvement strategy on 28 d and 90 d compressive strength.
2. Assess corresponding changes in permeability and porosity.
3. Identify an optimized pervious concrete mix achieving e" 25 MPa compressive strength with permeability e" 1.0 cm/s.
4. Provide guidelines for practical implementation in sustainable pavement design.

2. LITERATURE REVIEW

2.1 Aggregate Gradation

Pervious concrete typically employs single-sized coarse aggregates (10–12 mm) to create uniform voids (Day, 2006). Thomas and Matthews (2006) demonstrated that blending two aggregate sizes (e.g., 10 mm and 14 mm at 70:30 ratio) increases interparticle contact area, enhancing strength by up to 12% while maintaining porosity. Similarly, Nepomuceno et al. (2017) found that a 50:50 blend of 8 mm and 12 mm aggregates improved compressive strength by 15% with minimal permeability loss.

2.2 Supplementary Cementitious Materials (SCMs)

SCMs refine the hydration products and occlude capillary pores, strengthening the cementitious matrix (Mehta, 1993).

i. **Fly Ash:** Class F fly ash at 15–25% cement replacement reduces void connectivity and improves strength up to 20% in pervious mixes (Ghafoori & Dhir, 1999; Ferretti et al., 2019).

ii. **Silica Fume:** Nano-scale silica particles densely pack around cement grains, boosting 28 d strength by 25–35% at 5–10% replacement, though excessive silica disrupts void continuity (Neville, 2012; Khatib & Peethamparan, 2012).

iii. **Ternary Blends:** Combining silica fume (5–10%) and fly ash (15–20%) leverages synergies—early strength from silica fume and long-term pozzolanic reactions from fly ash (Turk, 1998; Lago et al., 2020).

2.3 Polymeric Admixtures

i. **PVA Fibers:** Polyvinyl alcohol fibers (length 6–12 mm, diameter 40–100 μm) effectively bridge microcracks, improving residual strength by 20–30% (Ozbay et al., 2015; Malkoç & Özyurt, 2006).

ii. **Superplasticizers:** High-range water reducers enable w/c ratios as low as 0.30, increasing paste strength; Hossain and Lachemi (2009) reported a 15% compressive strength gain at 0.5% dosage, with no significant permeability reduction.

2.4 Surface Densification Treatments

Lithium silicate sealers penetrate near-surface pores and chemically react with calcium hydroxide, forming calcium silicate hydrate (C S H) gels that densify pore walls (Rashad, 2013; Li et al., 2017). Studies show strength improvements of 5–10% and negligible clogging when applied per manufacturer guidelines.

3. METHODOLOGY

3.1 Materials

i. **Cement:** OPC 43 grade (IS 8112:2013).

ii. **Aggregates:**

❖ **Single Size Control:** 10 mm crushed granite.

❖ **Blended Gradation:** 70:30 (10 mm:14 mm) and 50:50 (8 mm:12 mm).

iii. **SCMs:** Class F fly ash (ASTM C618) and silica fume (ASTM C1240).

iv. **Fibers:** PVA fibers, 12 mm length, 50 μm diameter, tensile strength 1,600 MPa.

v. **Admixtures:** Polycarboxylate ether superplasticizer (1% by weight of cement).

vi. **Surface Treatment:** Lithium silicate solution (40 g/L, 1.5 kg/m² application).

3.2 Mix Proportions & Specimen Casting

Thirteen mixes were prepared (Table 1), including:

i. **Control (M0):** Single-size aggregate, no SCMs, no fibers, w/c = 0.35.

ii. **Aggregate Variants (M1, M2):** Blended gradations.

iii. **SCM Variants (M3–M5):** Fly ash at 15% (M3), silica fume at 10% (M4), ternary blend 15% fly ash + 10% silica fume (M5).

iv. **Fiber Variant (M6):** 0.5% PVA fibers.

v. **Admixture Variant (M7):** 1% superplasticizer.

vi. **Combined Variant (M8):** M5 + M6 + M7.

vii. **Surface Densified (M9):** M8 + lithium silicate.

viii. **Permeability Control (M10–M12):** Selected mixes for permeability-only tests.

All mixes maintained a paste-to-aggregate ratio of 0.28 by mass. Specimens (150 mm cubes) were cast in three layers, each compacted by rodding, and demolded after 24 h. Curing occurred in water

at 23 ± 2 °C.

Table 1. Mix Proportions

(C = cement; FA = fly ash; SF = silica fume; PVA = fibers; SP = superplasticizer)

Mix	C (kg)	FA (%)	SF (%)	PVA (%)	SP (%)	Aggregate Gradation
M0	5.0	0	0	0	0	100% 10 mm
M1	5.0	0	0	0	0	70%10 mm+30%14 mm
M2	5.0	0	0	0	0	50%8 mm+50%12 mm
M3	5.0	15	0	0	0	100%10 mm
M4	5.0	0	10	0	0	100%10 mm
M5	5.0	15	10	0	0	100%10 mm
M6	5.0	0	0	0.5	0	100%10 mm
M7	5.0	0	0	0	1	100%10 mm
M8	5.0	15	10	0.5	1	100%10 mm
M9	5.0	15	10	0.5	1	100%10 mm (densified)
M10	5.0	—	—	—	—	100%10 mm
M11	5.0	—	—	—	—	70%10 mm+30%14 mm
M12	5.0	—	—	—	—	50%8 mm+50%12 mm

3.3 Testing Procedures

i. **Compressive Strength:** ASTM C39 at 7, 28, 90 d (three specimens per age).

ii. **Porosity:** ASTM C1754 (vacuum saturation method).

iii. **Permeability Coefficient:** ASTM C1701 (falling-head permeameter).

iv. **Surface Depth of Densification:** Measured by microhardness profiling per Rashad (2013).

v. **Statistical Analysis:** One-way ANOVA and Tukey HSD (á = 0.05) via SPSS v25.

4. RESULTS AND ANALYSIS

4.1 Compressive Strength

Mix	7 d (MPa)	28 d (MPa)	90 d (MPa)
M0	14.8 ± 1.2	20.3 ± 1.4	21.5 ± 1.3
M1	16.0 ± 1.1 (+8%)	22.2 ± 1.3 (+9%)	23.4 ± 1.2 (+9%)
M2	15.6 ± 1.3 (+5%)	21.8 ± 1.5 (+7%)	22.9 ± 1.4 (+6%)
M3	16.9 ± 1.2 (+14%)	23.8 ± 1.6 (+17%)	25.1 ± 1.5 (+17%)
M4	17.2 ± 1.0 (+16%)	24.5 ± 1.3 (+21%)	26.0 ± 1.2 (+21%)

M5	18.5 ± 1.3 (+25%)	25.6 ± 1.4 (+26%)	27.1 ± 1.5 (+26%)
M6	16.3 ± 1.4 (+10%)	22.5 ± 1.5 (+11%)	23.8 ± 1.2 (+11%)
M7	15.8 ± 1.2 (+7%)	21.5 ± 1.3 (+6%)	22.6 ± 1.4 (+5%)
M8	19.9 ± 1.1 (+35%)	27.3 ± 1.5 (+35%)	29.2 ± 1.3 (+36%)
M9	20.8 ± 1.2 (+41%)	29.6 ± 1.6 (+46%)	31.9 ± 1.5 (+48%)

i. **ANOVA:** Significant differences among mixes ($F = 42.7$, $p < 0.001$).

ii. **Tukey HSD:** M5, M8, and M9 > others ($p < 0.05$); M9 > M8 ($p = 0.02$).

4.2 Porosity and Permeability

Mix	Porosity (%)	Permeability (cm/s)
M0	22.4 ± 0.8	1.25 ± 0.07
M5	20.1 ± 0.9 (“10%)	1.10 ± 0.05 (“12%)
M8	19.8 ± 0.7 (“12%)	1.05 ± 0.06 (“16%)
M9	19.5 ± 0.8 (“13%)	1.02 ± 0.04 (“18%)

Porosity reductions correlate with strength gains; however, permeability remains e— 1.0 cm/s, satisfying ACI pervious concrete design thresholds (ASTM C1701).

4.3 Surface Densification Depth

Microhardness tests show C-S-H penetration to 2.5 mm depth for M9, indicating effective densification (Rashad, 2013).

5. DISCUSSION

5.1 Aggregate Optimization

Blending aggregates (M1, M2) marginally improves strength by increasing stone contact, echoing Thomas and Matthews (2006). However, SCMs and fibers yield far greater enhancements.

5.2 SCM Effects

Silica fume (M4) outperforms fly ash (M3) in early-age strength, consistent with Mehta (1993). The ternary blend (M5) leverages both: early pozzolanic densification from silica fume and long-term strength from fly ash (Turk, 1998; Lago et al., 2020).

5.3 Fiber and Admixture Synergy

PVA fibers (M6) improve residual strength but are less effective alone. Superplasticizer (M7) permits lower w/c, modestly boosting strength. The combined mix (M8) synergizes matrix densification (SCMs), crack bridging (fibers), and improved workability (SP), achieving a 35% strength gain without permeability compromise.

5.4 Surface Treatment

Lithium silicate densification (M9) further refines near-surface pores, adding an 8% strength increment (Rashad, 2013), with minimal impact on permeability due to limited penetration depth.

5.5 Optimized Mix Performance

M9 meets the target of e" 25 MPa compressive strength and e" 1.0 cm/s permeability, positioning it for structural paving applications (e.g., light-traffic roads, sidewalks).

5.6 Practical Considerations

i. **Cost:** SCMs and fibers increase unit cost by 15–25% (Lago et al., 2020); however, lifecycle benefits (reduced maintenance, improved durability) offset initial investments.

ii. **Constructability:** Superplasticizers ease placement; PVA fibers require careful dispersion to avoid clumping (Malkoç & Özyurt, 2006).

iii. **Durability:** Future research should assess freeze–thaw resistance, sulfate attack, and clogging potential (Smith et al., 2018).

6. CONCLUSIONS AND RECOMMENDATIONS

1. **Mix Optimization:** A ternary SCM blend (15% fly ash + 10% silica fume) with 0.5% PVA fibers and 1% superplasticizer significantly enhances compressive strength (× 1.35 at 28 d) while maintaining permeability.
2. **Surface Densification:** Lithium silicate treatment adds an additional 8% strength gain with negligible clogging risk.
3. **Structural Viability:** The optimized pervious concrete (M9) achieves 29.6 MPa at 28 d and 1.02 cm/s permeability—suitable for light-duty pavements.
4. **Recommendations:**

❖ Implement M9 in pilot projects for sidewalks and parking lots.

❖ Conduct long-term performance monitoring (clogging, durability).

❖ Perform cost-benefit analyses to guide large-scale adoption.

REFERENCES

1. ASTM C39/C39M-18. (2018). *Standard Test Method for Compressive Strength of Cylindrical Concrete Specimens*. ASTM International.
2. ASTM C1701/C1701M-09. (2014). *Standard Test Method for Infiltration Rate of In Place Pervious Concrete*. ASTM International.
3. ASTM C1754/C1754M-12. (2012). *Standard Test Method for Measuring the Void Content of Hardened Pervious Concrete*. ASTM International.
4. Bean, E. Z., Hunt, W. F., & Bidelspach, D. A. (2007). "Evaluation of Four Permeable Pavement Sites in Eastern North Carolina for Runoff Reduction and Water Quality Impacts." *Water, Air, & Soil Pollution*, 183(1–4), 95–107.
5. Chen, Z., & Wu, X. (2014). "Effects of Fly Ash and Silica Fume on Properties of Pervious Concrete." *Construction and Building Materials*, 63, 185–190.
6. Day, K. (2006). "Permeable Interlocking Concrete Pavements." *Concrete International*, 28(6), 35–41.
7. Dietz, M. E. (2007). "Low Impact Development Practices: A Review of Current Research and Recommendations for Future Directions." *Water, Air, & Soil Pollution*, 186(1–4), 351–363.

8. Ferretti, D., di Prisco, M., & Savoia, M. (2019). "Influence of Fly Ash on the Mechanical Properties of Pervious Concrete." *Materials*, 12(17), 2708.
9. Ghafoori, N., & Dhir, R. K. (1999). "Development of Pervious Concrete with Optimum Performance." *Journal of Materials in Civil Engineering*, 11(2), 129–137.
10. Hossain, K. M. A., & Lachemi, M. (2009). "Performance of Pervious Concrete Pavement with Glass Cullet." *Journal of Materials in Civil Engineering*, 21(4), 153–164.
11. Khatib, J. M., & Peethamparan, S. (2012). "Utilization of Silica Fume and Fly Ash to Produce Ultra-High-Performance Pervious Concrete." *AACI Transactions*, 29(1), 109–117.
12. Lago, M. A., Klanènik, G., & Šiler, T. (2020). "Performance-Based Mix Design for Pervious Concrete." *Materials*, 13(8), 1903.
13. Li, X., Wang, Y., & Zhang, J. (2017). "Lithium Silicate Surface Treatment on Concrete: Microstructural and Performance Improvements." *Construction and Building Materials*, 144, 142–150.
14. Malkoç, M., & Özyurt, N. (2006). "Mechanical Properties of PVA Fiber Reinforced Concrete." *Building and Environment*, 42(3), 246–251.
15. Mehta, P. K. (1993). "Influence of Fly Ash on Portland Cement Systems." *Cement, Concrete and Aggregates*, 15(1), 39–47.
16. Mehta, P. K., & Monteiro, P. J. M. (2014). *Concrete: Microstructure, Properties, and Materials* (4th ed.). McGraw-Hill.
17. Mendez, J., & Pavía, S. (2015). "Improved Mechanical Behavior of Pervious Concrete by Addition of Polymer Fibers." *Materials and Structures*, 48(6), 1839–1851.
18. Mehta, P. K. (1993). *Properties of Fly Ash in Concrete* (Vol. 1). Materials Research Laboratory, University of California.
19. Nepomuceno, M. B., Bosco, E. F., & Toledo Filho, R. D. (2017). "Optimization of Aggregate Gradation in Pervious Concrete." *Journal of Cleaner Production*, 140, 1316–1324.
20. Neville, A. M. (2012). *Properties of Concrete* (5th ed.). Pearson.
21. Ozbay, E., Tan, Y., & Wiguna, P. (2015). "Performance of PVA Fiber-Reinforced Pervious Concrete." *Proceedings of the Second International Conference on Concrete Repair, Rehabilitation and Retrofitting*, 117–124.
22. Pitt, R., Brown, M., & Morquecho, R. (2008). "National Stormwater Quality Database (NSQD, Version 1.1)." *Water Environment Research Foundation*.
23. Poon, C. S., Kou, S. C., & Lam, L. (2009). "Effect of Fly Ash as a Cement Replacement on PPC and Pervious Concrete." *Construction and Building Materials*, 23(9), 3270–3276.
24. Rashad, A. M. (2013). "A Brief on Potential Use of Lithium Compounds for Concrete Treatment—A Review." *Construction and Building Materials*, 40, 1133–1147.
25. Smith, D. R., Schwartz, C. W., & Turner, A. (2018). "Long-Term Durability of Pervious Concrete Exposed to Deicing Salts." *Journal of Cold Regions Engineering*, 32(3), 04018008.
26. Thomas, J., & Matthews, M. (2006). "Development of High-Strength Pervious Concrete." *ACI Materials Journal*, 103(1), 67–74.
27. Turk, K. (1998). "Performance of Ternary Blends of High-Volume Fly Ash and Silica Fume in Concrete." *Materials and Structures*, 31(1), 11–16.

मध्यकालीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी

सुनीता जैन
सहायक आचार्य, इतिहास (VSY)
राजकीय महाविद्यालय देवली (टोंक)

प्रस्तावना

भारत का वैज्ञानिक इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है, जिसकी जड़ें प्राचीन काल तक फैली हुई हैं। यद्यपि मध्यकाल को अक्सर "अंधकार युग" या "ठहराव के दौर" के रूप में चित्रित किया जाता है, परंतु ऐतिहासिक प्रमाण यह सिद्ध करते हैं कि इस काल में भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनेक क्षेत्रों में विकास होता रहा। यह शोध-पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि मध्यकालीन भारत में वैज्ञानिक चेतना, तकनीकी नवाचार, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, धातुकर्म, स्थापत्य और सैन्य विज्ञान के क्षेत्रों में क्या योगदान रहा।

1. गणित और खगोलशास्त्र - मध्यकाल में भारत ने गणित और खगोल विज्ञान में अद्वितीय उन्नति की।

भास्कराचार्य द्वितीय (1114-1185 ई.) - कर्नाटक में जन्मे भास्कराचार्य ने 'लीलावती', 'बीजगणित', 'गोलाध्याय' और 'ग्रहगणित' जैसे ग्रंथों की रचना की। उन्होंने अंकगणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति और खगोलशास्त्र को समाहित किया। उनके ग्रंथों में शून्य (०), ऋणात्मक संख्याएँ, अनंत, और गुरुत्वाकर्षण जैसी अवधारणाओं के उल्लेख मिलते हैं।

केरल स्कूल ऑफ ज्योमैटिक्स (14वीं—16वीं सदी) - इस परंपरा के संस्थापक माधवाचार्य थे। उन्होंने च (पाई) का अंशतः दशमलव तक सटीक मान निकाला और गणितीय श्रेणियाँ (series) विकसित कीं। नीलकंठ सोमयाजी ने "तंत्रसंग्रह" और "अर्यभटीय भाष्य" में खगोल विज्ञान को व्याख्यायित किया।

2. आयुर्वेद और चिकित्सा विज्ञान - मध्यकालीन भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा का विकास जारी रहा। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता के सिद्धांतों को वैद्य आज भी मानते थे। चिकित्सा विज्ञान में पंचकर्म, जड़ी-बूटियाँ, धातु-औषधियाँ आदि का उपयोग प्रचलन में था। दिल्ली सल्तनत और मुग़ल काल में यूनानी चिकित्सा पद्धति का प्रभाव भी बढ़ा। शाही दरबारों में चिकित्सकों (हकीमों/वैद्यों) को सम्मान मिला।

3. रसायन विज्ञान (रसविद्या) - रसायन विज्ञान मुख्यतः धातु शोधन, इत्र निर्माण और औषधि निर्माण में प्रयुक्त हुआ। पारंपरिक श्रसशास्त्रश में पारा, अभ्रक और अन्य खनिजों को शोधित करने की विधियाँ दी गईं। रसायन का प्रयोग "धातु से अमृत बनाने" की प्रक्रिया तक विस्तार पा गया था।

4. धातुकर्म और हथियार निर्माण - भारत के पारंपरिक धातु विज्ञान की धाक दूर देशों तक थी। दिल्ली के लौह स्तंभ (हालाँकि गुप्तकालीन है) में जंग-रोधी तकनीक का अद्भुत उदाहरण है। मध्यकाल में तलवारें, भाले, तोपें, कवच आदि उच्च गुणवत्ता के बनते थे। मुग़ल शासन में तोपों और बारूद का व्यवस्थित प्रयोग आरंभ हुआ।

5. वास्तुकला और अभियांत्रिकी - मुग़ल, राजपूत, और दक्षिण भारतीय साम्राज्यों ने भव्य इमारतों, दुर्गों, बावड़ियों का निर्माण करवाया। महमूद बेगड़ा द्वारा बनवाए गए स्टेपवेल्स (बावड़ियाँ) जलसंचयन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विजयनगर साम्राज्य में जल-प्रबंधन के लिए भूमिगत सुरंगें, पत्थर के पाइप आदि उपयोग किए गए।

6. सैन्य विज्ञान और बारूद तकनीक - मोहम्मद बिन तुगलक और बाबर जैसे शासकों ने विदेशी सैन्य तकनीक को भारत में लाया। 1526 के पानीपत के प्रथम युद्ध में बारूद और तोपों का उपयोग भारत में पहली बार संगठित रूप से हुआ। किलेबंदी में रणनीतिक इंजीनियरिंग का उपयोग (गोलकुंडा, चित्तौड़ आदि) किया गया।

7. सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव - संस्कृत, अरबी और फारसी भाषा में वैज्ञानिक ग्रंथों का लेखन हुआ। विद्वान भारत और इस्लामी विश्व के बीच सेतु बने, जैसे अल-बीरूनी ने भारत के गणित और खगोलशास्त्र का वर्णन किया। हिंदू-मुस्लिम विद्वानों ने ज्ञान को साझा किया, जिससे विज्ञान में बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण आया।

निष्कर्ष

मध्यकालीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यद्यपि कुछ क्षेत्रों में ठहराव देखा गया, लेकिन गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, धातुकर्म, स्थापत्य और सैन्य तकनीकों में निरंतर विकास होता रहा। यह विकास स्थानीय परंपराओं और विदेशी प्रभावों के मेल से संभव हुआ। यह स्पष्ट है कि भारत की वैज्ञानिक चेतना कभी पूरी तरह मंद नहीं हुई बल्कि उसने नवाचारों के लिए नई दिशाएँ तैयार कीं।

संदर्भ सूची (Bibliography)

1. Joseph, George Gheverghese. The Crest of the Peacock: Non-European Roots of Mathematics, Princeton University Press, 2000.
2. Zysk, Kenneth G. Asceticism and Healing in Ancient India, Oxford University Press, 1991.
3. Ray, P.C. History of Hindu Chemistry, Indian Chemical Society, 1902.
4. Srinivasan, Sharada. ßWootz Crucible Steel: A Newly Discovered Production Site in South Indiaß, MRS Proceedings, 1994.
5. Michell, George. Architecture and Art of Southern India, Cambridge University Press, 1995.
6. Gommans, Jos. Mughal Warfare, Routledge, 2002.
7. Sachau, Edward C. (Tr.). Alberuni's India, London: Kegan Paul, 1910.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

हिंदी साहित्य में लिंग, जाति, वर्ग और धर्म जैसे सामाजिक मुद्दों का अध्ययन

मिनाक्षी पुत्री श्री ओटाराम

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज बहुस्तरीय, बहुवर्णीय और बहुसांस्कृतिक संरचना वाला समाज है। इसमें लिंग, जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर सामाजिक संरचना जटिल रही है। हिंदी साहित्य ने न केवल इस जटिलता को अभिव्यक्त किया है, बल्कि समाज को बदलने की दिशा में विचारशील हस्तक्षेप भी किया है। इस शोध का उद्देश्य हिंदी साहित्य में इन सामाजिक विषयों की साहित्यिक प्रस्तुति और उसके प्रभाव का अध्ययन करना है।

2. लिंग विमर्श और हिंदी साहित्य

2.1 प्रारंभिक युग की स्त्री छवि - काव्य युग में स्त्रियों को आदर्श नायिका, पतिव्रता, त्यागमूर्ति के रूप में चित्रित किया गया। तुलसीदास की रामचरितमानस में सीता को "पतिव्रता धर्म" का आदर्श बनाया गया। सूरदास के पदों में राधा प्रेम की प्रतीक हैं, परंतु स्वतंत्र व्यक्तित्व से वंचित।

2.2 आधुनिक युग और स्त्री चेतना - प्रेमचंद की कहानियों में स्त्री जीवन की व्यथाएँ और यथार्थ झलकता है (निर्मला)।

महादेवी वर्मा ने स्त्री की अंतर्वेदना को भावात्मक सौंदर्य में ढाला।

मन्नू भंडारी की आपका बंटी जैसे उपन्यासों ने टूटते परिवारों और स्त्री अस्मिता की पीड़ा को उठाया।

2.3 समकालीन नारी लेखन - मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएँ ग्रामीण स्त्रियों की जटिलता और विद्रोह को सामने लाती हैं (चाक, इदन्नमम)।

अनामिका, नासिरा शर्मा, गीतांजलि श्री ने स्त्री को विचारशील, विद्रोही और आत्मनिर्भर रूप में प्रस्तुत किया।

LGBTQ+ विमर्श भी हालिया साहित्य में प्रवेश कर चुका है।

3. जाति प्रश्न और हिंदी साहित्य

3.1 जातिगत शोषण का यथार्थ चित्रण - प्रेमचंद की कहानियों (सद्गति, ठाकुर का कुआँ) में अस्पृश्यता और जातिवाद का प्रखर चित्रण है।

दलित पात्रों को पहली बार साहित्य में गरिमा और अधिकार मिला।

3.2 दलित साहित्य की शुरुआत - ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा जूठन एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। कंवल भारती, जयप्रकाश कर्दम, सुबोधरा अली जैसे लेखकों ने दलित अनुभवों को केन्द्रीय विषय बनाया। दलित कविता में आक्रोश,

प्रतिरोध और आत्मगौरव का स्वर प्रमुख है।

3.3 स्त्री-दलित दृष्टि - दलित नारी की दोहरी पीड़ा—जाति और लिंग आधारित शोषण। बबीता राही, शिल्पा शेखर, रंजना जयप्रकाश की कविताएँ इस दिशा में उल्लेखनीय हैं।

4. वर्ग संघर्ष और हिंदी साहित्य

4.1 किसान, मजदूर और निम्नवर्ग का चित्रण - गोदान में प्रेमचंद ने किसान जीवन की विषमता को मार्मिकता से दर्शाया। रेणु के मैला आँचल में ग्रामीण समाज का यथार्थ उभरता है।

4.2 मार्क्सवादी साहित्य - यशपाल, अज्ञेय, सचिन भौमिक, मुक्तिबोध जैसे लेखक वर्ग-संघर्ष को मुख्य विषय बनाते हैं। हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाएँ पूंजीवाद की विडंबनाओं को उजागर करती हैं।

4.3 स्त्री और वर्ग - महिलाओं का आर्थिक रूप से वंचित होना उनके दोहरे शोषण का कारण है। समकालीन कहानियों में घरेलू कामगार, मजदूरिनें, सिलाई करने वाली स्त्रियाँ प्रमुख पात्र बन रही हैं।

5. धर्म और सांप्रदायिकता का साहित्यिक दृष्टिकोण

5.1 धर्म और समाज - तुलसी, कबीर, नानक जैसे संत कवियों ने धर्म की सामाजिक भूमिका को जनचेतना से जोड़ा। कबीर ने पाखंड और आडंबर पर करारा प्रहार किया—पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।

5.2 विभाजन और सांप्रदायिकता - राही मासूम रज़ा की आधा गाँव में मुस्लिम समुदाय की व्यथा है। भीष्म साहनी का तमस सांप्रदायिकता के इतिहास को उधेड़ता है। कमलेश्वर की कितने पाकिस्तान में धर्म, राजनीति और सत्ता की साजिशें बेनकाब होती हैं।

5.3 धर्मनिरपेक्ष चेतना - समकालीन साहित्य में मानवतावादी दृष्टिकोण की प्रधानता है। मानव धर्म ही सर्वोच्च धर्म है—इस विचार को कई रचनाओं ने प्रतिष्ठित किया।

6. समकालीन हिंदी साहित्य में सामाजिक मुद्दे

युवा लेखक जैसे नीलोत्पल मृणाल, हंसदा सोवेंदर शेखर, अनु सिंह चौधरी, प्रेमपाल शर्मा आदि आज के भारत में सोशल मीडिया, जातिगत राजनीति, स्त्री सुरक्षा, धार्मिक ध्रुवीकरण जैसे मुद्दों को उठा रहे हैं। हंस, कथादेश, नई धारा, तद्भव, प्रेमचंद की कहानियाँ आदि पत्रिकाओं ने विचार-विमर्श को धार दी है।

7. निष्कर्ष

हिंदी साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण और परिवर्तन का उपकरण है। लिंग, जाति, वर्ग और धर्म जैसे मुद्दों को साहित्य ने न केवल उजागर किया, बल्कि समाधान की दिशा में वैचारिक क्रांति भी लाई। समकालीन लेखन अब इन विमर्शों को और अधिक समावेशी और जमीनी बना रहा है। हिंदी साहित्य, सामाजिक न्याय और समता की दिशा में अनवरत संघर्षरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन
2. प्रेमचंद, गोदान, निर्मला, सद्गति, ठाकुर का कुआँ
3. राही मासूम रज़ा, आधा गाँव

4. भीष्म साहनी, तमस
5. महादेवी वर्मा, शृंखला की कड़ियाँ
6. मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, चाक
7. यशपाल, दिव्या, मेरी तेरी उसकी बात
8. मन्नू भंडारी, आपका बंटी
9. नामवर सिंह, हिंदी के विकास में अपभ्रंश
10. हंस, तद्भव, कथादेश, विविध लेख
11. "दलित साहित्य का विमर्श", रामनाथ साव
12. "नारी विमर्श की नई दिशाएँ", कविता वर्मा
13. "धर्म और साहित्य", डॉ. रवींद्र सिंह

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

अंतर्जाल पर प्रकाशित डॉ. नरेश सिहाग 'एडवोकेट' की रचनाएँ : एक बहुआयामी साहित्यिक दृष्टि

डॉ. रेखा रानी
हिन्दी विभाग, रणवीर कॉलेज संगरूर, पंजाब

परिचय

वर्तमान डिजिटल युग में साहित्य का स्वरूप निरंतर विस्तार पा रहा है। अंतर्जाल (इंटरनेट) न केवल रचनाकारों के लिए एक स्वतंत्र मंच बन चुका है, बल्कि पाठकों को भी साहित्य से जोड़ने का सशक्त माध्यम सिद्ध हो रहा है। इस डिजिटल दुनिया में डॉ. नरेश सिहाग 'एडवोकेट' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हरियाणा के भिवानी जनपद के गांव बोहल में जन्मे डॉ. सिहाग ने अपनी रचनात्मक यात्रा को सीमित मंचों तक नहीं रखा, बल्कि सोशल मीडिया, ब्लॉग्स, ऑनलाइन पत्रिकाओं और फेसबुक जैसे मंचों पर अपनी साहित्यिक उपस्थिति दर्ज कराते हुए समकालीन कविता, शायरी, सामाजिक विमर्श और जनभावनाओं को शब्द प्रदान किए हैं।

उनकी रचनाएँ प्रेम, पीड़ा, संघर्ष, सामाजिक न्याय, मानवीय रिश्तों और आत्मचिंतन जैसे विविध पक्षों को स्पर्श करती हैं। इस लेख में हम उनके अंतर्जाल पर प्रकाशित साहित्य का समीक्षात्मक अवलोकन करेंगे।

1. अंतर्जाल पर सक्रियता और साहित्यिक पहचान

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' फेसबुक पर 'Naresh Sihag Bohal' और 'Bohal Shodh Manjusha' जैसे प्लेटफार्मो के माध्यम से निरंतर साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न हैं। इन मंचों पर उनकी शायरी, मुक्तक, छंदबद्ध कविताएँ, सामाजिक टिप्पणी और वैचारिक लेख नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं। उनका लेखन न केवल भावपूर्ण है, बल्कि पाठक से संवाद करने में भी सफल रहता है।

रचनात्मक विविधता

शायरी : प्रेम, विरह, आत्ममंथन
काव्य : सामाजिक चेतना, यथार्थ चित्रण
व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ : राजनीतिक और सामाजिक विसंगतियों पर
संपादकीय लेख : साहित्यिक विमर्शों पर दृष्टिपात

2. सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति

डॉ. सिहाग की कविताओं में समकालीन समाज की विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। वे गाँव, गरीब, किसान,

बेरोज़गारी, शिक्षा, भ्रष्टाचार जैसे विषयों को लेकर जिस तीव्रता से लिखते हैं, वह उन्हें जनकवि का दर्जा दिलाता है।

उदाहरण

> **''जिस देश का शासक व्यापारी,**
> **उस देश की जनता भिखारी...।''**

यह पंक्ति केवल एक व्यंग्य नहीं, बल्कि व्यवस्था पर गहरी चोट है।

उनकी कविता 'साहब की कलम' में प्रशासनिक तंत्र और जनविरोधी फैसलों की तीखी आलोचना देखने को मिलती है :

> **''खाता न बही, दूध न दही,**
> **साहब जो कहे वही सही!''**

यह रचना आमजन की विवशता को बड़ी ईमानदारी से प्रस्तुत करती है।

3. भावनात्मक गहराई और आत्मचिंतन

डॉ. सिहाग की रचनाएँ केवल बाहरी दुनिया पर केंद्रित नहीं हैं, वे आत्मा के भीतर झाँकने का प्रयास भी करती हैं। वे प्रेम को केवल रोमांटिक भाव नहीं मानते, बल्कि उसे एक गूढ़ आत्मिक अनुभव के रूप में देखते हैं।

प्रसिद्ध रचना

> **'शायरी सा पढ़ मुझे...'**
> **''मुझे भी तो पढ़, कभी शायरी की तरह,**
> **हर हर्फ़ में छुपा हूँ, किसी लफ़्ज़ की तरह''**

यह रचना एक प्रेम की नहीं, अधूरे संवाद की कविता है। जहाँ प्रेमी कह नहीं पाता, लेकिन महसूस कराता है।

4. प्रतीकात्मकता और लोक-संस्कृति का प्रयोग

उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन की झलक मिलती है। 'नोहरा', 'कसौटी', 'हुक्का', 'नरमदा', 'खाट', जैसे प्रतीकों का प्रयोग करते हुए वे अपनी कविताओं को स्थानीय स्पर्श देते हैं, जिससे पाठक को अपनापन महसूस होता है।

नोहरे पर कविता

> **"नोहरा अब भी वहीं है,**
> **जहाँ दादा की छड़ी रखी थी,**
> **पर अब वहाँ बैठने वाला**
> **कोई 'बूढ़ा सा साया' नहीं दिखता..''**

यह पंक्तियाँ केवल एक आँगन की याद नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक मूल्यों की पीड़ा हैं।

5. संघर्ष और हौसले का स्वर

उनकी रचनाओं में हताशा नहीं, बल्कि जुझारूपन है। वे नकारात्मकता को आत्मबल से काटने की प्रेरणा देते हैं।

> **'' 'फैसला मैदान में होगा' कविता से''**
> **"मौत कल आनी है, आज आ जाए डरता कौन है,**
> **फैसला मैदान में होगा कि मरता कौन है।"'**

यह रचना वीरता और आंतरिक शक्ति का प्रतीक बन जाती है।

6. जीवन-दर्शन और समय की चेतावनी

समय और जीवन के संबंध पर आधारित उनकी कविताओं में गहरी दार्शनिकता दिखाई देती है।

"वक्त चलता है तेरे इशारों से,
रक्त बहता है तेरे करारों से।"

यह पंक्ति बताती है कि डॉ. सिहाग समय को केवल घड़ी में नहीं देखते, वह उनके लिए नियंता है—जो समाज और व्यक्ति दोनों पर शासन करता है।

7. रिश्तों की मार्मिकता और संवेदनशीलता

डॉ. सिहाग की कविताएँ परिवार, संबंधों और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी उभारती हैं। पितृत्व, मातृत्व, भाईचारा, पीढ़ियों का संवाद उनकी रचनाओं का हिस्सा है।

पितृ दिवस पर कविता

"तेरी उँगली पकड़ के चला था,
आज भी लड़खड़ाता हूँ,
तेरे होने का साहस
अब भी मेरी रीढ़ बना है..."

इस रचना में भावनाओं की तीव्रता और अपनत्व स्पष्ट झलकता है।

8. भाषिक वैशिष्ट्य और शैली

उनकी भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और प्रभावकारी है। कहीं-कहीं ग्रामीण ठेठ शब्दों का प्रयोग उनकी कविताओं को जनभाषा का स्पर्श देता है। वे जटिलता से दूर रहते हुए, गहन अर्थवत्ता को सरल ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

शैलीगत विशेषताएँ

- दोहेनुमा छंद
- मुक्त शैली में गहराई
- प्रतीकों और रूपकों का प्रयोग
- लाक्षणिकता और संक्षिप्तता

9. अंतर्जाल और पाठकीय संवाद

डॉ. सिहाग केवल लिखते ही नहीं, वे पाठकों से संवाद भी करते हैं। फेसबुक पर उनकी प्रत्येक कविता पर प्रतिक्रियाएँ आती हैं, और वे उन पर स्वयं विचार रखते हैं। इससे वे लोकप्रिय कवि नहीं, लोक-संवादक बन जाते हैं।

10. विषयगत विविधता

विषय	प्रमुख रचना	संदेश
प्रेम	शायरी सा पढ़ मुझे	मौन का संवाद
राजनीति	साहब की कलम	सत्ता पर व्यंग्य

सामाजिक पीड़ा	व्यापारी शासक...	जनविरोधी नीति की आलोचना
समय	वक्त चलता है...	जीवन की अस्थिरता
संघर्ष	फैसला मैदान में	जुझारूपन
रिश्ते	पितृ दिवस कविता	अपनत्व और स्मृति

निष्कर्ष

डॉ. नरेश सिहाग 'एडवोकेट' की रचनाएँ इंटरनेट के माध्यम से जिस प्रभावशाली ढंग से पाठकों तक पहुँच रही हैं, वह केवल तकनीक की नहीं, बल्कि उनके विचारों की ताकत है। वे न तो किसी खास वाद से बंधे हैं, न ही किसी कृत्रिम आडंबर से। उनका साहित्य मौलिक है, अनुभूत है और समकालीन है। वे पाठकों के दिल तक पहुँचते हैं, क्योंकि वे स्वयं आम आदमी के दिल से लिखते हैं।

डिजिटल साहित्य की इस नई यात्रा में डॉ. सिहाग जैसे रचनाकारों की उपस्थिति साहित्य की गरिमा को नई ऊँचाई देती है। उनकी कविताएँ न केवल आज की पीढ़ी को जोड़ रही हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए विचार, चेतना और संवेदना का भंडार भी बन रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ एवं लिंक

1. फेसबुक पेज : Naresh Sihag Bohal
2. डिजिटल पत्रिका : Bohal Shodh Manjusha
3. प्रतिलिपि पोर्टल पर उपलब्ध रचनाएँ
4. व्हाट्सएप व सोशल मीडिया मंचों पर साझा कविताएँ
5. 'फिक्र से कश्ती तक' संकलन।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

समकालीन कविता में सांप्रदायिकता विरोधी स्वर

शगुफ्ता यास्मीन
शोध छात्रा, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय,
बारासात, कोलकाता

शोध सारांश : मौजूदा समय में फासीवाद अपने चरम पर है। धर्म की राजनीति का हर ओर बोलबाला है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि सांप्रदायिक उन्माद, धर्मांधता तथा आतंकवाद हमारे समाज का क्रूर, घृणित किन्तु स्थायी यथार्थ बन चुका है। सांप्रदायिकता देश की राजनीतिक दांव-पेंच का एक अहम हिस्सा बन गई है। इन प्रतिकूल परिस्थितियों के तहत सांप्रदायिकता विरोधी वैचारिकी को विकसित करने में समकालीन कविता की अपनी विशेष भूमिका रही है। समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के मार्फत फासीवादी उत्थान के विरुद्ध वैविध्यपूर्ण स्वरों का संधान किया है। समकालीन कविता सांप्रदायिक के कारक तत्वों की न केवल गहराई से शिनाख्त करती है बल्कि उसके विरुद्ध प्रतिपक्ष की रचना भी करती है। प्रस्तुत शोध आलेख में समकालीन कविता में निहित उक्त संदर्भों की संवीक्षा का गंभीर उपक्रम किया गया है।

मुख्य बिन्दु : सांप्रदायिकता, अर्थव्यवस्था, फासीवाद, युगद्रष्टा, संविधान, राष्ट्रियता, डिक्टम, साम्राज्यवाद, प्रेजेंटेशन, इन्टरनेट, सोशल मीडिया, त्रासदी, कोर्पोरेटिभ, प्रोटोकॉल, आतंकवाद, तानाशाहियत, इंडिविजुअलिटी।

"हमारे समय की यह विडम्बना ही है कि जिस आग को मनुष्य ने रोशनी और रोटी बनाने के लिए खोजा था आज उसी आग का हत्यारे निर्दोष नागरिकों, स्त्रियों और मासूम बच्चों को जिंदा जलाने, उनके घर द्वार और काम धंधों को खाक करने के लिए निर्लज्जता और बर्बरता के साथ इस्तेमाल कर रहे हैं... हमारी अर्थव्यवस्था में बढ़ रही अपस्फीति भूख, बेरोजगारी और हिंसा का एक ऐसा अध्याय लिख रही है, जो फासीवाद की खुराक बन रहा है। सांप्रदायिक फासीवाद हमारी देहरी लांघ चुका है। यह एक ऐसा दलाल फासीवाद है जो वित्त पूँजी के प्रपंचों से नाभिनालबद्ध है।"[1]

सत्ता और पूँजी द्वारा निर्मित जटिल चक्रव्यूह में फासीवाद के बढ़ते स्पेस की संभावनाओं को व्यक्त करती अधोलिखित पंक्तियाँ समकालीन कवि राजेश जोशी के वर्ष 2002 साहित्य अकादमी सम्मान के अवसर पर दिये गए वक्तव्य से उद्धृत है। कवि वाचित उक्त परिस्थितियाँ हमारे समकालीन परिदृश्य से हूबहू मिलती-जुलती है। साहित्यकार को युगद्रष्टा यूँ ही नहीं कहा जाता।

मौजूदा समय में फासीवाद अपने पूरे शबाब पर है। धर्म की राजनीति का चंहुओर बोलबाला है। व्यवस्था के पास 'धर्म निरपेक्षता' और 'सांप्रदायिकता' की अपनी व्याख्याएँ हैं अपने तर्क हैं। 'देशभक्ति' तथा 'देशद्रोह' की मनमानी परिभाषाएँ निर्धारित की जा रही हैं। नये भारत में नये संविधान के प्रारूप निश्चित करने की पुरजोर कोशिशें जारी हैं, जिसमें सत्तासीन वर्ग की सोच से असहमत हर व्यक्ति देशद्रोही है और उसके डिक्टम को मानने वाला देशभक्त। इस सन्दर्भ में जितेंद्र भाटिया के आलेख 'धर्मांधता के संधिकाल में' से निम्न अंश उल्लेखित करना अप्रासंगिक न होगा—"देशभक्ति वह अमूर्त लेकिन जीती जागती व्यापक अनुभूति है जिसे गांधी बाबा ने लोगों के सुख-दुख में जीते हुए, लंबी मशक्कत के बाद अपने सारे परिधान को त्याग कर एक अदद लंगोटी में देखा था। गला फाड़कर 'भारत माता' का नारा लगाने से आपका देशप्रेम सिद्ध नहीं हो

जाता और न ही नारा लगाने से इंकार करते ही आप देशद्रोही साबित हो जाते हैं।"[2] यहाँ देशभक्ति को गाँधीवादी चश्मे से देखना और दिखाना अभीष्ट हरगिज नहीं है बल्कि देशभक्ति तथा राष्ट्रवाद के तथोक्त स्थूल एवं जड़ प्रोफॉर्मा को तोड़ना उसे एक प्रगतिशील सोच से आबद्ध करना ही मूल अभिप्राय है।

साम्राज्यवादी मानसिकता के तहत सांप्रदायिकता एक कारगर राजनीतिक अस्त्र है। सत्ता हथियाने और उसपर बने रहने के लिए अंग्रेजों के शासन काल से लेकर स्वाधीन भारत में आज तक इसका प्रयोग बदस्तूर जारी है। वस्तुतः सांप्रदायिकता धर्म का विकृतीकरण है। यह धर्म की आड़ में हिंसा एवं विद्वेष पर आधारित एक मिथ्या चेतना है। आलोचक मधुरेश के शब्दों में—"सांप्रदायिकता साम्राज्यवाद की कोख से जन्मी उसकी अवैध संतान है, जिसका एकमात्र उद्देश्य साम्राज्यवाद के हितों को पोषित करके जनतंत्र और स्वाधीनता की चेतना एवं संघर्ष को बंद करना होता है।"[3]

सांप्रदायिक दंगों के इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालने पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि बदलते समय के अनुरूप सांप्रदायिक चेतना में भी पर्याप्त बदलाव आया है। विभाजन पूर्व एवं विभाजन कालीन सांप्रदायिकता से भिन्न, विकराल तथा बहुरंगी रूप में रूप में विद्यमान है, आज की सांप्रदायिकता। समकालीन कविता इस बदली हुई सांप्रदायिकता के बहुरूपियेपन को शिद्दत से उघाड़ती है।

जाति व धर्म से परे मनुष्य की कल्पना संबंधी अवधारणा को सांप्रदायिकता की रणनीति ने हमेशा चुनौती दी है, फिर चाहे देश विभाजन के समय होने वाला नरसंहार हो अथवा सत्तर के दंगे, बाबरी मस्जिद विध्वंश हो या गोधरा-गुजरात हत्याकांड। इसका सबसे ताजा तरीन उदाहरण 2019 के आम चुनावों के दौरान होने वाले सांप्रदायिक दंगे हैं जो अभी तक रुकने और थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। भारतीय राजनीति में सांप्रदायिक मनोवृत्ति का चलन इन दिनों खूब फल-फूल रहा है। जिम्मेदार विजित दल हो या विजेता इन सबके बीच घुट-पीस, मर-कलप रहा है वह एक अदद नागरिक जिसके पास संसाधन कम है, अर्थाभाव है तथा जो रोज़मर्रा की जिंदगी जीने में बदहाल बेहाल है। देवी प्रसाद मिश्र की कविता 'भाई मैं भारतीय नागरिक की भूमिका से हलकान हूँ' इसी एक अदद नागरिक का आत्मगत संलाप है जो पराभव के कगार पर खड़े हिंदुस्तान की मार्मिक दास्तान बयां करती है—

"मैं भारतीय नागरिक के पात्र की भूमिका से ही हलकान हूँ, मुक्तिबोध की तरह
सबको नंगा देखता और और उसकी सजा पाता कंगले बनारसी बुनकर की कबीरी थकान हूँ
नरोदा में एक के बाद दूसरा जलाया गया मकान हूँ
कह लीजिये अपने को कोसता हिंदुस्तान हूँ।"[4]

सवाल उठना लाज़मी है कि क्या यही वह मानव सापेक्ष राजनीति का असली मॉडल है जिसकी रूप-रेखा भारतीय संविधान द्वारा निर्मित की गई है। दूसरी तरफ मीडिया जो जनतंत्र का प्रमुख आधार स्तम्भ है, सरकार की मुद्राओं पर कत्थक कलि के समान नृत्य करना ही अपने कर्म की इतिश्री मान बैठा है सूचनाओं के नाम पर दिखावटी विकास, राजनीतिक आकाओं के यशोगान, इतिहास और संस्कृति के भ्रामक प्रेजेंटेशन, सांप्रदायिक भड़काऊ डिबेट इत्यादि न्यूज जगत के महत्वपूर्ण सरोकार बन गए हैं। यह भी बेहद चिंता का विषय है कि सांप्रदायिक संक्रमण को द्रूत गति से फैलाने के लिए संचार के अत्याधुनिक उपकरणों को माध्यम बनाया जा रहा है—"हाल के वर्षो में सोशल मीडिया, इंटरनेट और मोबाइल को जहरीले सांप्रदायिक प्रोपगैंडा के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया गया है। इसके तहत बहुत सुनियोजित और संगठित तरीके से मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया और वाट्सएप के जरिये अफवाहों, फजी खबरों और तोड़ी-मरोड़ी गई सूचनाओं को आगे बढ़ाया गया, जिनके कारण देश के कई हिस्सों में दंगे भड़कने, अल्पसंख्यक समुदाय या कमजोर वर्गो पर भीड़ के हमले और हत्या और सामूहिक पलायन तक की घटनाएँ हुई हैं।"[5]

मनुष्य तथा मनुष्यता को शर्मसार करती सांप्रदायिकता विरोधी वैचारिकता को विकसित करने में समकालीन कविता की अपनी भूमिका रही है। राजेश जोशी, कात्यायनी, मदन कश्यप, देवी प्रसाद मिश्र, जितेंद्र श्रीवास्तव, पंकज चतुर्वेदी इत्यादि समकालीन रचनाकारों की रचनाओं में फासीवादी उत्थान के विरुद्ध वैविध्यपूर्ण स्वरों का संधान है।

सांप्रदायिकता मानव मन में घृणा का बीजारोपन कर उसे भीतर से अच्छाई और मानवीय मूल्यों से पूर्णतरू कंगाल कर एक वहशी दरिंदा बना देती है। इस दरिंदगी की बड़ी ही भयावह एवं वीभत्स्य तस्वीरें समय-समय पर होने वाले सांप्रदायिक दंगों में नुमाया है—

"गंदगी और समस्त मानवीय चीजों से घृणा का सैलाब सा
गुजर जाता है हमारे ऊपर से
और हम देखते है अपने चारों ओर, सड़कों पर, गलियों में फैले
मलबे में दबे जले अधजले शरीर, बिखरे हुए मांस के लोथड़े
गर्भवती स्त्री का पेट चीरकर निकले गए शिशु की छितराई बोटियाँ।"[6]

दरअसल सांप्रदायिक दंगों की चपेट में आकर अकारण अपने प्राण गँवाने वाले अधिकतर साधारण लोग ही होते हैं , जिनका इन सबसे दूर-दूर तक कोई राब्ता नहीं होता। आए दिन इस तरह के प्री-प्लांड हादसों की बढ़ती खबरें इस आशंका को पुष्ट करती है कि हम में से कोई भी, कहीं भी इसके शिकार हो सकते हैं। अनगिनत सपनों, आशाओं, आकांक्षाओं, आस्था, सौंदर्य और रागात्मकता से भरपूर जीवन का इतना सस्ता हो जाना अपने आप में बहुत बड़ी त्रासदी है। इस त्रासदी की अत्यंत कारुणिक छवि असद जैदी 'आसान हिंसा' कविता में उतारते हैं—

"हिंसा इतनी आसान हो गयी है जितना कि हिंसा का ख्याल
बेख्याली में भी लोगों को मारा जा सकता है
जानवर को हम खाने के लिए मारते हैं सोच-समझकर काटते हैं
मनुष्य को बस मारने के लिए
एक धब्बा जो जल्दी ही फीका पड़ कर उड़ जाता है एक परछाई
जो गायब हो जाती है सदी की धूप की तरह।"[7]

संविधान द्वारा प्रस्तावित सेक्युलर राष्ट्र भारत को हिन्दू राष्ट्र में परिवर्तित करने की माँग या मंशा ने सांप्रदायिकता की भावना को बढ़ावा दिया है। 'हिन्दू राष्ट्र' अवधारणा के जनक वी डी सावरकर रहे हैं, जिसे आगे चलकर एस एस गोलवरकर ने दृढ़ वैचारिक आधार प्रदान किया। इस अवधारणा के तई नस्लगत श्रेष्ठता और विशेषाधिकार तथा आहत, अपमानित राष्ट्रियता की दुहाई देकर इसके लिए दूसरे समुदायों को दोषी बताकर 'हिन्दू राष्ट्र' के लक्ष्य को प्राप्त करने की भरसक कोशिशें की गईं। इसकी प्रस्तावना बहुत कुछ हिटलरी फासीवाद से मिलती जुलती है। आश्चर्य की बात तो यह है कि आज इक्कीसवीं सदी में ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, तर्क, बौद्धिकता को दरकिनार कर इस विचारधारा की इतिवृत्तात्मकता का महिमामंडन किया जा रहा है। यद्यपि सांप्रदायिक अंधकार को घनीभूत करने में मुस्लिम तत्ववाद की भूमिका को भी नहीं नकारा जा सकता है तथापि एक खास समुदाय के प्रति भयंकर पूर्वग्रह की भावना लोगों में बड़ी तेजी से घर करती जा रही है। देवी प्रसाद मिश्र की प्रख्यात कविता 'मुसलमान' उन सभी पूर्वग्रहों का तथ्यात्मक निराकरण तो करती ही है साथ ही भारतीय मुसलमानों के इतिहास—भूगोल को तटस्थता से खंगालते हुए उनके सांस्कृतिक अवदान को भी रेखांकित करती है—

"वे न होते तो उपमहाद्वीप के संगीत को सुनने वाला खुसरो न होता
वे न होते तो पूरे देश के गुस्से से बेचौन होने वाला कबीर न होता
वे न होते तो भारतीय उपमहाद्वीप के दुख को कहनेवाला गालिब न होता
मुसलमान न होते तो अट्ठारह सौ संतावन न होता।"[8]

राजनीतिक महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए धर्म को इस्तेमाल करने का चलन आज बहुत आम हो चला है। धर्म और राजनीति का घालमेल किसी भी देश की शांति, समृद्धि और प्रगतिशीलता में कितना बड़ा बाधक है इसका श्रेष्ठतम उदाहरण पड़ोसी देश पाकिस्तान है। ध्यातव्य है कि इस मुद्दे पर उसके सबसे बड़े निंदक होने के बावजूद आज हमारा देश भी उसी राह पर बड़ी तेजी से चल निकला है। पाकिस्तान के सादृश्य धर्मांधता एवं तानाशाहियत के जद में जकड़े भारत के परिवर्तित

भाव-भंगिमा को चर्चित पाकिस्तानी कवयित्री फहमिदा रियाज़ व्यंगात्मक शैली में उघाड़ कर रख देती हैं–

"तुम बिलकुल हम जैसे निकले
अब तक कहाँ छिपे थे भाई
वो मूरखता, वो घामड़पन
जिसमें हमने सदी गंवाई
अर्रे भाई बहुत बधाई।"[9]

धर्मोन्माद और सांप्रदायिकता का लाभ आज केवल राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गया है। औद्योगिक घरानों की साख भी इसकी बदौलत खूब फल-फूल रही है। धर्म, सत्ता, राजनीति कॉर्पोरेटिभ जगत से मिलकर जिस प्रोटोकॉल का निर्माण करते हैं, उसे अनावृत्त करने में समकालीन कविता कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती। पंकज चतुर्वेदी के यहाँ अभिव्यक्ति का सामर्थ्य देखते ही बनता है–

"देश के सबसे बड़े
पूँजीपति की अर्धांगिनी से
हाथ मिलते हुए राष्ट्र नेता
इतने गदगद और उपकृत हैं
गोया वह किसी साम्राज्य की
महारानी है।
उसी समय
शाबाशी या कि अंतरंगता में
राष्ट्र नेता की पीठ पर
पूँजीपति ने अपना हाथ
रखा हुआ है।"[10]

राजनीति का साम्प्रदायीकरण और सांप्रदायिकता का राजनीतिकरण वर्तमान भारत का वास्तविक राजनीतिक परिदृश्य है। इसकी निर्मिति में राजनीतिक चेतना शून्य आपराधिक तत्वों की बड़ी अहम भूमिका रही है। आज राजनीति सेवा न रहकर पेशा बन गई है। सत्ता का कामधेनु रूप सबको लुभा-ललचा रहा है। सत्ता सुख और भोगवाद की प्रचंड मादकता इन आपराधिक राजनीतिज्ञों से क्या कुछ नहीं करवाती। छोटे-बड़े भ्रष्टाचार घोटालों से लेकर हत्या, अपहरण, बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों तक में इन्हें विशेष छूट प्रदत्त है। सच में विलक्षण और महान है हमारा भारत देश जहां ऐसे आपराधिक बैक ग्राउंड वाले अपढ़, अर्धशिक्षित राजनीतिज्ञ भारत भाग्य विधाता बने हुए हैं। सत्ता में बने रहने हेतु चुनाव जीतना इनकी प्राथमिक अनिवार्यता है और सांप्रदायिक हिंसा, दंगे-फसाद इसके सर्वोत्तम विकल्प। चुनावों में शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा, सड़क, बिजली, पानी, गरीबी इत्यादि विकास संबंधी मुद्दों को विस्थापित कर उनके स्थान पर धर्म, जाति, मंदिर, मस्जिद जैसे गैर जरूरी मुद्दों को वरीयता दी जा रही है। नब्बे के दशक से ही सियासत और चुनावी दंगल का प्रमुख केंद्र अयोध्या हो गया है। शाब्दिक दृष्टि से देखा जाए तो अयोध्या का अर्थ है जहाँ युद्ध न हो। अयोध्या जो अपनी गरिष्ठ सांस्कृतिक विरासत, शांति, आस्था एवं विश्व वाङ्मय में स्थान पाने वाली मानस की आधार भूमि रही है, वह आज सांप्रदायिक राजनीति का सबसे संवेदनशील हिस्सा बन गई है। लोकमंगल की सतत साधना की पवित्र नगरी आज महज चुनावी एजेंडे में जीवित है। अयोध्या के इस सांस्कृतिक विचलन एवं अर्थ संकुचन पर कुँवर नारायण की 'अयोध्या 1992' की कुछ पंक्तियाँ विशेष रूप से द्रष्टव्य है–

"इससे बड़ा क्या हो सकता है
हमारा दुर्भाग्य
एक विवादित स्थल में सिमटकर

रह गया है तुम्हारा साम्राज्य
अयोध्या इस समय तुम्हारी अयोध्या नहीं
योद्धाओं की लंका है
'मानस' तुम्हारा चरित नहीं
चुनाव का डंका है।"[11]

सांप्रदायिक हिंसा या दंगे-फसाद के साधारणीकरण की प्रक्रिया मानवीय ट्रेजेडी का एक बिल्कुल ही नया अध्याय है। अब यह न तो हमारे लिए कोई अपवादात्मक स्थिति रह गई है और न ही इसकी व्याप्ति किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित है। 'एक भाई का पत्र' शीर्षक कविता में अहमदाबाद शहर को रूपक बनाकर इसकी सार्वदेशिकता को बखूबी व्यंजित किया गया है—

"जब भी देखता हूँ देश का नक्शा
इस किनारे
उस किनारे
यहाँ, वहाँ
जहाँ, तहाँ
दिखता है बस अहमदाबाद, अहमदाबाद
अहमदाबाद इस देश में अब
महज एक जगह का नाम नहीं है भाई।"[12]

भारत जैसे बहुलतावादी धार्मिक-भाषिक एवं सांस्कृतिक देश में 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की अवधारणा को भारतीय मानस में जबर्दस्ती चस्पाँ करने के पीछे सत्ताधारियों के अपने राजनीतिक निहितार्थ हैं। समय-समय पर इन निहितार्थों के क्रियान्वन हेतु उठाए गए निर्णयों ने बहुत व्यापक स्तर पर सामाजिक अव्यवस्था, असुरक्षा, अशांति और भय का संचार किया है। इसका सबसे अद्यतन नमूना NRC, CAB, CAA, NPR आदि आदि है जिसका पूरा नाम तक बहुत कम लोग जानते हैं या होंगे। ऐसे में इसकी आवश्यक शर्तों की जानकारी कुछ खास वर्ग तक ही सीमित है। देश का वह तबका जो सब भाँति सबल-समर्थ-सक्षम है उसके लिए नागरिकता साबित करना तो क्या खरीदना तक भी चुटकी बजाने जितना सरल है। किन्तु मंहगाई, बेरोजगारी एवं दंगे-फसाद की तरह इस नये प्रपंच के भुक्तभोगी देश में हाशियेकृत जीवन ढो रहे अधिसंख्य जन ही बनेंगे।

अच्छे दिन के इंतजार में अपने समय के सबसे बुरे दिन से गुजरते हुए मानव नियति के प्रति समकालीन कविता में गहरी चिंता है। नागरिकता के बरक्स मनुष्य का इस कदर बेमानी हो जाना कितना विनाशक है असम में हुई भयंकर तबाही इसका ज्वलंत प्रमाण है। राजेश जोशी मानवीय मूल्यों और अधिकारों के उद्गाता कवि हैं। उन्होंने कहा है—"मार्क्स ने कविता को मनुष्यता की भाषा कहा है। मैं मनुष्यता की इस बोली-बानी के पक्ष में बोलना चाहता हूँ, क्योंकि कविता ही मेरी नागरिकता है।"[13] हाल ही में इंटरनेट पर वायरल उनकी कविता 'नागरिक और सरकार' अपने ही देश में 'पहचान के संकट' की पीड़ा से उपजे दर्द का महाख्यान बन जाती है—

"मैं कहाँ तलाश करूँ अपनी नागरिकता
मैं इसी देश की मिट्टी में घूमा हूँ नंगे पाँव
पर कहाँ छपे हैं मेरे पाँव के निशान
मुझे याद नहीं
मुझे क्या खबर थी कि भूल जाने की आदत
मेरी ही जमीन पर अनागरिक बना देगी

मुझे एक दिन
ओ हुक्मरानों
मैं स्वर्ग भूल कर ही आया हूँ इस धरती पर
तुम अगर मुझे नागरिक मानने से इंकार करते हो
तो मैं भी इंकार करता हूँ
इंकार करता हूँ तुम्हें सरकार मानने से।"[14]

उल्लेख करना बेहद जरूरी है कि एक बहुलतावादी राष्ट्र के व्यापक परिप्रेक्ष्य में नागरिकता की कोई जातीय पहचान नहीं होती। इसके साथ ही हमें आतंकवाद और सांप्रदायिकता की पहचान को भी जाति से अलग कर देखना होगा। समसामयिक राजनीति के संदर्भ में राष्ट्र एवं सत्ता की इंडीविजुअलिटी का अद्वैतवादी अवधारणा में तब्दील होना लोकतन्त्र की लचरता और विफलता का सर्वप्रमुख कारण है, इसका खंडन भी अति आवश्यक है।भारत की जनवादी धर्मनिरपेक्ष परंपरा को चिरंजीवी बनाए रखने के लिए हमें तानाशाहियत का प्रतिरोध करना ही होगा फिर चाहे वह देश की व्यवस्था में किसी भी रूप में मौजूद हो क्योंकि फासीवादी असहिष्णुता किसी को नहीं बक्शती। प्रसिद्ध जर्मन बुद्धिजीवि पास्तर निमोलर ने लिखा है–

"पहले वे यहूदियों के लिए आये
और मैं नहीं बोला
क्योंकि मैं नहीं था यहूदी।
फिर वे कम्युनिस्टों के लिए आये
तब मैं नहीं बोला
क्योंकि मैं नहीं था कम्युनिस्ट
फिर वे कैथोलिकों के लिए आये
फिर भी मैं नहीं बोला
मैं नहीं था कैथोलिक।
फिर वे मेरे लिए आये
और कोई नहीं था
जो मेरे हक में बोलता।"[15]

अंतोगत्वा समकालीन कविता सांप्रदायिकता के कारक तत्वों की न केवल गहराई से पड़ताल करती है बल्कि उसके विरुद्ध प्रतिपक्ष की रचना भी करती है। सत्ता प्रतिष्ठानों की निर्ममता और आतंक को अपने निशाने पर लेती ये कविताएं हमारे समकालीन क्रूर भयावह यथार्थ की निर्भीक एवं निडर अभिव्यक्ति है। इसमें धर्म, संस्कृति तथा इतिहास के राजनीतिक दुरुपयोग पर भी जमकर नोटिस ली गई है। कहना न होगा कि समकालीन कविता सांप्रदायिक संक्रमण और लोकतंत्र की विरोधाभाषी परिस्थितियों के बीच मानवीय अस्तित्व की बेदखली के विरुद्ध अंतहीन वैचारिक संघर्ष का उद्घोष करती है।

संदर्भ सूची

1. जोशी, राजेश, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ. सं. 8
2. भाटिया, जितेंद्र, धर्मांधता के संधिकाल में (आलेख से, पहल 104, सं. ज्ञानरंजन, राजकुमार केशवानी, जुलाई 2016, पृ. सं. 107
3. मधुरेश, सांप्रदायिकता, पृ. सं. 184 और हिन्दी कहानी, सापेक्ष, सं. महावीर प्रसाद दुर्ग, जनवरी-जून - 1989

4. मिश्र, देवीप्रसाद, भाई मैं भारतीय नागरिक के पात्र की भूमिका से हलकान हूँ, पहल 115, सं. ज्ञानरंजन, राजकुमार केशवानी, जनवरी 2019, पृ. सं. 78
5. आनंद प्रधान, सत्य पर भारी पड़ता झूठ , पहल 106, सं. ज्ञानरंजन, राजकुमार केशवानी, जनवरी 2017, पृ. सं. 66
6. कात्यायनी, कवि ने कहा, गुजरात 2002, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ. सं.
7. जैदी, असद, आसान हिंसा, पहल 106, सं. - ज्ञानरंजन, राजकुमार केशवानी, जनवरी 2017, पृ. सं. 87
8. http-//kawitakosh.org/kk/»E0»A4»AE
9. https:/./sabrangindia.in/ann/tum&bilkul&hum&jaise&nikle&pakistani&poets&message
10. चतुर्वेदी, पंकज, सपने में एक तस्वीर, पहल 115, सं. - ज्ञानरंजन, राजकुमार केशवानी, जनवरी 2019, पृ. सं. 93
11. नारायण, कुँवर, कोई दूसरा नहीं, अयोध्या-1992, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथी आवृत्ति 2011, पृ. सं. 70
12. श्रीवास्तव, जितेंद्र, उजास, एक भाई का पत्र, सेतु प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ. सं. 220
13. जोशी, राजेश, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ. सं. 9
14. https://youtu-be/WBPZBLKGyk
15. येचुरी, सीताराम, घृणा की राजनीति, वाणी प्रकाशन, आवृत्ति 2010, पृ. सं. 104

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

सेवासदन : नारी जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण

रीता मौर्य
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
मोबा. : 8004251060
E.mail- ritumaurya1060@gmail.com

शोध सार

सेवासदन उपन्यास में प्रेमचन्द ने सामाजिक समस्याओं को यथार्थवादी ढंग से दिखाया है जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्रेमचन्द के समय में था। नारी का जीवन स्तर समाज में विभिन्न क्षेत्रों में अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है जिसका मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास सेवासदन में किया है।

सेवासदन में प्रेमचन्द ने नारी की पराधीनता दहेज प्रथा की समस्या, वेश्या जीवन और मध्यम वर्ग की आर्थिक, सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास किया है। सेवासदन में प्रेमचन्द ने मानव मन के अनेक आवरणों को खोला है। 'सेवासदन' उपन्यास में प्रेमचन्द ने समाज के धर्माचार्यों, मठाधीशों, धनपतियों, सुधारकों के आडम्बर, दंभ, ढोंग, पाखण्ड, चरित्रहीनता दहेज प्रथा, बेमेल विवाह पुलिस की घूसखोरी, वेश्यागमन, मनुष्य के दोहरे चरित्र आदि सामाजिक बुराइयों का चित्रण किया है।

प्रेमचन्द की नारी भावना की खूब चर्चा हुई है लेकिन इस नारी भावना के पीछे छुपे दृष्टिकोण में प्रेमचन्द का नारी मनोविज्ञान बहुत महत्त्वपूर्ण है जिसे नजदीक से देखने में शायद कम ही लोगों ने कोशिश की हो। मनोविज्ञान की शुरूआत प्रेमचन्द की कहानियों से उपन्यासों से शुरू हो जाती है। प्रेमचन्द की नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण के बारे में अक्सर कहा जाता है कि प्रेमचन्द नारी को छूट देते है लेकिन एक हद तक। जहाँ नारी थोड़ी आगे बढ़ी तो झट से उसकी डोर खींच लेते हैं। नारी को एक आदर्श पैमाने पर रखते हैं। इन सभी बातों से बढ़कर महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रेमचन्द नारी मन को कहाँ तक पकड़ पाते है और कितने सफल हुए हैं- उनकी महत्ता इस बात पर निर्भर करती है। प्रेमचन्द के 'सेवासदन' उपन्यास में सुमन, जाह्नवी, सुभद्रा, शान्ता, गंगाजली, भोली, भामा, आदि स्त्री पात्रों की मनोदशा, मनोव्यथा, मनोभावना को बड़ी बारीकी से पकड़ा है। ऐसा लगता है प्रेमचन्द नारी मन को टोह आये हो। 'सेवासदन' की सुमन कभी विद्रोहिणी, कभी स्वार्थी, गर्वीली, कभी त्याग-ममता की छवि, कभी असहाय, कभी शक्तिशाली बन जाती है। सुभद्रा कभी नीरस कभी प्रेमभरी शान्ता कभी शान्त, कभी इच्छाओं से भरी जाह्नवी कभी लड़ाकू, कभी प्रेम ममतामयी, भोली कभी भली कभी स्वाथी गंगाजली कभी हतोत्साहित, कभी उत्साह भरी। भामा कभी क्रोध कभी क्षमा ये सभी मनोभाव 'सेवासदन' के स्त्री पात्रों में किया। व्यक्ति को उसकी सम्पूर्ण विकृतियों, विसंगतियों एवं मनोविकारों के साथ साहित्य में प्रस्तुत किये जाने लगा।

'सेवासदन' के स्त्री पात्रों की बात करें तो सर्वप्रथम सुमन के मनोविज्ञान की बात करेंगे क्योंकि यह 'सेवासदन' का केन्द्रिय पात्र है। सुमन की इच्छायें एवं आकांक्षायें बहुत ऊँची हैं। वह बहुत गवीली स्त्री है। अपने पिता के घर में वह ठाठ से रहती है। दारोगा कृष्णचन्द्र उसके पिता अपनी दोनों बेटी सुमन और शान्ता की भी इच्छाएं पूरी करते। सुमन जो चीज पसन्द कर लेती उसे लेती और शान्ता को जो मिलता वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेती। सुमन का जीवन शुरू से अन्त तक उतार-चढ़ाव देखता है इसके पीछे छिपा नारी मनोविज्ञान ही है जो कभी दृढ़ और कभी द्वन्द भरा चलता रहता है। संघर्ष उसके जीवन में जीवन पर्यन्त चलता रहता है। पिता के घर रहते हुए सुमन के जीवन में ऐसा मोड़ आता है उसके पिता कृष्णचन्द्र रिश्वत के आरोप में जेल चले जाते हैं। इसके बाद सुमन के मामा सुमन के लिए लड़का ढूंढते हैं तथा एक दोहाजू वर से सुमन का विवाह कर देते हैं। उसका नाम गजाधर था। सुमन बहुत सुन्दर थी गला सुरीला था, लेकिन सुमन को सम्मान नहीं मिला। उसका पति गजाधर उसके चरित्र पर मिथ्या दोष लगाता है और उसे घर से निकाल देता है। गजाधर- चल छोकरी, मुझे न चरा। ऐसे-ऐसे कितने भले आदमियों को देख चुका हूं। वह देवता हैं, उन्हीं के पास जा। यह झोपड़ी तेरे रहने योग्य नहीं है तेरे हौंसले बढ़ रहे हैं। अब तेरा गुजर यहां न होगा। सुमन स्वाभिमानी थी। सुमन अपने पति के पैरों पर न गिरती है, न गिड़गिड़ाती है उसके स्वर में भारत का नवजाग्रत नारीत्व उत्तर देता है। हाँ यों कहो कि मुझे रखना नहीं चाहता मेरे सिर पर पाप क्यों लगाते हो? क्या तुम्ही मेरे अन्नदाता हो? जहाँ मजूरी करूंगी, वही पेट पाल लूंगी। सुमन का यही नारी मनोविज्ञान ही दृढ़ बनाता है। सुमन गृहस्थी चलाने में निपुण नहीं है।वह एक महीने की धनराशि बीस दिन में खतम कर देती है। सुमन बिना सोचे समझे खर्च करती है और उसका पति कृपण व्यक्ति है। दोनों का स्वभाव अलग-अलग है। सुमन अपनी सुन्दरता से अपने पति को आकर्षित करती है, लेकिन गृह प्रबन्ध में कुशल नहीं है इसलिए दोनों में झगड़े होते रहते हैं। दहेज-प्रथा अनमेल विवाह ही वेश्यावृत्ति की ओर नहीं ले जाते हैं बल्कि उपर्युक्त शिक्षा का अभाव और प्रतिकूल परिवेश भी इसके लिए उत्तरदायी हैं। मध्य वर्ग की झूठी मर्यादाएँ भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं। इस मर्यादा को प्रेमचन्द निरन्तर तोड़ते रहे। सुमन बचपन से ही आराम चीजों की शौकीन है, चंचल है और गजाधर अनुभवी है। गजाधर का दो विवाह हुआ है उम्र से सुमन से दुगुना है। वह गृहस्थ जीवन में निपुण है इसीलिए दोनों में अलगाव हो जाता है। सुमन सहनशील नहीं है धन की प्यास है जो सन्तुष्टि गजाधर में नहीं मिल पाती वह सदन में खोजती है। नवयौवना है लेकिन विवाहित होने के कारण और ठोकर लगने के कारण सम्भलकर चलती है। यहाँ भी सुमन के मन में द्वन्द चलता है। सुमन दालमण्डी छोड़कर जब विधवाश्रम में रहती है तब सदन से मिलने के लिए व्याकुल रहती है इसके पीछे नारी मनोदशा ही है जो लगाव महसूस करती है। सदन के आने का समय महसूस हुआ। सुमन आज उससे मिलने के लिए बहुत उत्साहित थी। आज सुमन का और सदन का अन्तिम मिलन होगा। आज यह प्रेम का अभिनय समाप्त हो जायेगा। फिर सदन के दर्शन नहीं होंगे। वह मोहिनी मूर्ति दोबारा देखने को न मिलेगी। वह प्रेम से भरी बातें सुनसे में न आयेगी। जीवन नीरस हो जायेगा। यह प्रेम सच्चा था। भगवान मुझे यह वियोग सहने की शक्ति दे। इस समय सदन मिलने न आये तो अच्छा है, उससे न मिलने में ही कल्याण है। कौन जाने चरणों में अवश्य ही आश्रय पाऊँगी पर आज अपने विवाह की या पुनर्विवाह की बातें सुनकर उसका अनुरक्त हृदय काँप उठा। उसने निःसंकोच होकर जान्हवी से विनय की कि मुझे पति के घर भेज दो। यही तक उसकी सामर्थ्य थी। इसके सिवा वह और क्या करती? पर जान्हवी की निर्दयतापूर्ण उपेक्षा देखकर उसका धैर्य हाथ से जाता रहा। मन की चंचलता बढ़ने लगी रात को जब सब सो गये तो उसने पद्म सिंह को एक विनय पत्र लिखना शुरू किया यह उसका अन्तिम साधन था पद्मसिंह ने उसकी प्रार्थना सुन ली।

यहाँ उपन्यास हमें यह सोचने को मजबूर कर देती है कि सुमन को वेश्या बनाने के लिए आखिर जिम्मेदार कौन है? क्या वह समाज जहाँ पर वह जन्मी और उसने अपने यौवन की दहलीज पर पाँव रखा। पद्मसिंह इस समस्या के लिए उत्तरदायी मध्यवर्गीय समाज को मानते हैं। उनके कथनानुसार लोग वेश्याओं को बुलाते हैं, उन्हें धन देकर उनके सुख विलास की सामग्री जुटाते और उन्हें ठाठ-बाट से जीवन व्यतीत करने योग्य बनाते हैं, वे उस कसाई से कम पाप के भागी नहीं हैं जो बकरे की गर्दन पर छुरी चलाता। सैकड़ों स्त्रियाँ जो हर रोज बाजार में झरोखे में बैठीं दिखाई देती हैं जिन्होंने अपनी लज्जा और सतीत्व

को भ्रष्ट कर दिया है, उनके जीवन का सर्वनाश करने वाले हमीं लोग है। उपन्यास का एक अन्य पात्र अनिरूद्ध सिंह इसका दोष शिक्षित मध्यवर्ग को ही मानती है। हमारे शिक्षित भाइयों की बदौलत दालमण्डी आबाद है, चौक में चहल-पहल है, चकलों में रौनक है? वह मीना बाजार हम लोगों ने ही सजाया है। वेश्या रूप से सुमन को जीवन के कटु यथार्थ का आभास होता है। उसका सामना समाज के खोखलेपन और झूठे दिखावेपन से होता है। वह यह भली-भांति देख लेती है कि- जितना आदर मेरा अब हो रहा है उसका शतांश भी तब नहीं होता था। एक बार मैं सेठ चिम्मन लाल के ठाकुर द्वारे में झूला देखने गई थी सारी रात बाहर खड़ी भीगती रही, किसी ने भीतर नहीं जाने दिया लेकिन कल उसी ठाकुर द्वारे में मेरा गाना हुआ तो ऐसा जान पड़ा था मानो मेरे चरणों से वह मंदिर पवित्र हो गया। विट्ठलदास सुमन से मिलने जाते हैं और उसे समझाने का प्रयास करते हैं कि वह जो कुछ कर रही है वह ठीक नहीं है, उसकी वजह से हिन्दू जाति का सिर नीचा कर दिया है। इस पर सुमन उन्हें इस प्रकार उत्तर देती है- आप ऐसा समझते होंगे, और तो कोई ऐसा नहीं समझता अभी कई सज्जन यहाँ से मुजरा सुनकर गये हैं, सभी हिन्दू थे, लेकिन किसी का सिर नीचा नहीं मालूम होता था। वह मेरे यहाँ आने से बहुत प्रसन्न थे। फिर इस मण्डी में मैं ही एक ब्राह्मणी नहीं हूं दो चार का नाम तो मैं अभी ले सकती हूँ, जो बहुत ऊँचे कुल की हैं, पर जब बिरादरी में अपना निर्वाह किसी तरह न देखा तो विवश होकर यहाँ चली आयी। जब हिन्दू जाति को खुद ही लाज नहीं है तो फिर हम जैसी अबलायें उसकी रक्षा कहाँ तक कर सकती हैं। भारतीय समाज में नारी के आत्मसम्मान के लिए कोई स्थान नहीं है, उसके जीवन से तो वेश्याओं का जीवन बेहतर है। सुमन यह सोचकर वेश्या बन जाती है, लेकिन सुमन का चरित्र वेश्या के रूप में प्रामाणिक नहीं है।

सुमन के जीवन के सन्दर्भ में इस आर्थिक उत्पीड़न के साथ-साथ दहेज की समस्या भी सामने आती है। ऐसे समाज में जहाँ नारी पराधीन है और वेश्या स्वाधीन है, पुरूष अपनी पत्नी को पीटता है, वेश्या की पूजा करता है, वहाँ किसी औरत का वेश्या बन जाना मुश्किल नहीं है। दरअसल प्रेमचन्द ने 'सेवासदन' में उन परिस्थितियों का वर्णन किया है, जिनके कारण स्वाभिमानी नारी या तो आत्महत्या करने पर उतारू होती हैं या वेश्या बनने के लिए तैयार हो जाती हैं। सुमन की कथा के सहारे प्रेमचन्द इस बात की जांच करना चाहते हैं।

सुमन की इस कथा के साथ-साथ प्रेमचन्द ने समाज के अन्य वर्गों का चित्रण भी किया है। आधुनिक साहित्य में सर्वप्रथम नारी की मुक्ति का सवाल ही मुखर रूप में सामने आया था और प्रेमचन्द से पूर्व भी रचनाकारों की दृष्टि इस ओर गयी थी, लेकिन प्रेमचन्द का यथार्थवाद और वैज्ञानिक जीवन दृष्टि, उन लोगों के पास नहीं थी 'सेवासदन' की सफलता इस बात में है कि समस्या को केन्द्र बनाकर भी इसमें साहित्यिक सरसता को बचाये रखा गया है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1. International Journal of Multidisciplinary Research and Development https://www.allsubject journal.com
2. https://sahityacinemasety. com
3. 'सेवासदन'- प्रेमचन्द- लोक भारती प्रकाशन, पेपर बैक संस्करणः 2022
4. डॉ. बच्चन सिंह- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन।
5. प्रेमचन्द- रामवृक्ष जाट- सेतु प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2021

द्वेषपूर्ण भाषा, वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बाधक के रूप में : एक आलोचनात्मक अध्ययन

Dr. Tai Chourasiya
Dean, Faculty of Law
Mansarovar Global University
Contact :9301017951
facultyoflaw@mguindia.com

Abhinesh Kumar Jain
(Enrollment No. 2022MGU0560)
Contact :9589350523

वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, किसी भी लोकतांत्रिक समाज की नींव है। यह स्वतंत्रता न केवल व्यक्तियों को अपने विचार, मत, आस्था, असहमति या आलोचना प्रकट करने का अधिकार देती है, बल्कि सामाजिक संवाद, समरसता और विवेकशीलता का भी आधार बनती है। परंतु जब यह स्वतंत्रता दुर्भावनापूर्ण, घृणा से भरी अथवा हिंसा को उकसाने वाली भाषा का रूप ले लेती है, तब यही स्वतंत्रता अपने ही उद्देश्य के विपरीत कार्य करने लगती है। यही स्थिति द्वेषपूर्ण भाषा की है जो समाज में विद्वेष फैलाती है और अंततः वाक् की स्वतंत्रता को स्वयं बाधित कर देती है।

भारत के संविधान में अनुच्छेद 19(1)(क) के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गई है। यह स्वतंत्रता व्यक्ति को अपनी बात कहने, लिखने, प्रचार करने और सूचना प्राप्त करने का अवसर देती है। लेकिन यह अधिकार पूर्णतः निरंकुश नहीं है। अनुच्छेद 19(2) के अंतर्गत राज्य इस स्वतंत्रता पर सीमाएँ लगा सकता है कृ जैसे राष्ट्र की सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था, शिष्टाचार, नैतिकता, न्यायालय की अवमानना, अपराध उद्दीपन, इत्यादि। इस प्रकार संविधान स्वयं यह स्पष्ट करता है कि वाक् स्वतंत्रता का प्रयोग सामाजिक जिम्मेदारी और सामूहिक सद्भाव को ध्यान में रखते हुए ही किया जाना चाहिए। द्वेषपूर्ण भाषा वह अभिव्यक्ति है, जो किसी विशेष समुदाय, धर्म, जाति, भाषा, लिंग या वर्ग के प्रति घृणा, हिंसा, या सामाजिक बहिष्कार को बढ़ावा देती है। यह भाषा वाणी, लेखन, चित्र, संकेत या डिजिटल मंचों के माध्यम से किसी भी रूप में व्यक्त हो सकती है। किसी जाति या धर्म विशेष के प्रति अपमानजनक टिप्पणी। अल्पसंख्यकों के प्रति घृणात्मक भाषण। महिलाओं या स्ळठज्फ़ समुदाय के प्रति अपमान। राजनीतिक विरोधियों पर आधारहीन आरोप और उत्तेजक वक्तव्य। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक ट्रेंड, हैशटैग, मीम या वीडियो।

जब समाज में कुछ समूह या व्यक्ति द्वेषपूर्ण भाषा के शिकार होते हैं, तो वे स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं और फिर अपनी बात कहने से कतराते हैं। इससे उनकी वाक् स्वतंत्रता स्वतः ही कुंठित हो जाती है। द्वेषपूर्ण भाषा विशेष रूप से अल्पसंख्यक समूहों को लक्षित करती है। परिणामस्वरूप वे संवाद, लेखन या सार्वजनिक विमर्श में भाग नहीं लेते कृ जो वाक् स्वतंत्रता का सीधा हनन है। स्वस्थ संवाद का स्थान जब घृणा, आरोप-प्रत्यारोप और धार्मिक कट्टरता ले लेती है, तब लोकतांत्रिक विमर्श का पतन होता है। यह लोकतांत्रिक मूल्यों और वाणी की गरिमा के लिए खतरा है। आज मीडिया के एक वर्ग द्वारा भी जानबूझकर द्वेषपूर्ण विषयों को प्राथमिकता देना आम हो गया है। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ पत्रकारिता की स्वतंत्रता को भी अपवित्र करता है। शाह बानो केस (1985) अभिव्यक्ति की सीमा और धार्मिक भावनाओं के

संतुलन पर विचार किया गया। प्रवीण तोगड़िया केस (2003) अदालत ने भाषण में सांप्रदायिक उत्तेजना को असंवैधानिक ठहराया।

भारतीय दंड संहिता की धारा 153-धर्म, जाति आदि के आधार पर शत्रुता को उकसाने पर दंडनीय। धारा 295 -धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली कृत्य। धारा 505- अफवाह या असत्य बातों से जनसामान्य में भय फैलाने वाले बयान। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 चुनाव के समय नफरत फैलाने वाले भाषणों पर रोक। अमिश देवगन केस (2020) सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि विवेकपूर्ण आलोचना और हेट स्पीच में स्पष्ट अंतर होता है।

प्रभाव—सामाजिक समरसता-सामूहिक तनाव, दंगे, सामाजिक विघटन, अल्पसंख्यक समूह-भय, असहिष्णुता, आत्मसेंसरशिप, लोकतंत्र-अभिव्यक्ति की विविधता का ह्रास, युवा वर्ग-मानसिक असंतुलन, कट्टरता की ओर झुकाव, मीडिया जनमत को असत्य दिशा में प्रभावित करना।

समाधान की दिशा में संभावनाएँ

1. विधिक परिभाषा का अद्यतन- द्वेषपूर्ण भाषा की संकीर्ण और स्पष्ट कानूनी परिभाषा होनी चाहिए।

2. सोशल मीडिया निगरानी- ऑनलाइन मंचों को जवाबदेह बनाना और कड़ी निगरानी रखना आवश्यक है।

3. शिक्षा प्रणाली में संवैधानिक मूल्यों को शामिल करना- छात्रों को अभिव्यक्ति के अधिकार और उत्तरदायित्व की शिक्षा देना।

4. सार्वजनिक संवाद को विवेकपूर्ण बनाना- राजनेताओं, धार्मिक नेताओं और मीडिया को संयम और उत्तरदायित्व के साथ भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

5. दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही- नफरत फैलाने वाले भाषणों पर तुरंत दंडात्मक कार्यवाही की जाए, जिससे अनुकरण की प्रवृत्ति रुके।

वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, केवल अधिकार नहीं है, यह एक सामाजिक दायित्व भी है। द्वेषपूर्ण भाषा इस अधिकार का एक ऐसा विकृत रूप है, जो न केवल दूसरों के अधिकारों को प्रभावित करता है, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा को भी ठेस पहुँचाता है। यदि समाज को स्वतंत्र, समरस और न्यायपूर्ण बनाए रखना है, तो वाक् स्वतंत्रता के साथ-साथ द्वेषपूर्ण भाषा पर नियंत्रण अनिवार्य है। यह नियंत्रण कानून से भी आ सकता है, नैतिकता से भी और समाज के सामूहिक विवेक से भी।

संदर्भ सूची

1. भारत का संविधान, अनुच्छेद 19(1)(क), 19(2)
2. भारतीय दंड संहिता 1860, की धाराएँ 153, 295, 505
3. Representation of PeopleAct, 1951
4. सुप्रीम कोर्ट एवं उच्च न्यायालयों के निर्णय।
5. मानवाधिकार एवं सामाजिक न्याय से संबंधित भारतीय रिपोर्टें।

भारतीय लोकतंत्र में 18 वीं लोकसभा चुनाव : मतदान व्यवहार का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

आदित्य राज
शोधार्थी, (NET), राजनीति विज्ञान विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा
Email : araj4677@gmail.com

सारांश

लोकतंत्र आज दुनिया की सबसे लोकप्रिय शासन प्रणाली बन चुकी है क्योंकि इसमें हर व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता, अधिकार, सामाजिक न्याय और गरिमा को सबसे ज़्यादा महत्व दिया जाता है। यही कारण है कि भारत ने आज़ादी के बाद लोकतंत्र को अपनाया। भारत ने पहले आम चुनाव से लेकर हाल ही में हुए 18वें लोकसभा चुनाव तक एक मज़बूत और सफल लोकतंत्र का उदाहरण पूरी दुनिया के सामने रखा है। 18वें लोकसभा चुनाव ने एक बार फिर देश-विदेश के लोगों का ध्यान खींचा। इस चुनाव में भारत की बड़ी राष्ट्रीय पार्टियां, 58 राज्यीय पार्टियां और हजारों अन्य दल दो मुख्य धड़ों में बंटे दिखाई दिए एक एनडीए (NDA) और दूसरा इंडिया गठबंधन (I.N.D.I.A.)। चुनाव प्रचार में दोनों गुटों ने जनता के सामने अपने-अपने मुद्दे रखे। इंडिया गठबंधन ने मोदी सरकार पर पिछले 10 सालों में बेरोजगारी, महंगाई और संविधान को खतरे में डालने जैसे आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि सरकारी संस्थानों का गलत इस्तेमाल हो रहा है और समाज के कमजोर वर्गों के अधिकार छीने जा रहे हैं। वहीं एनडीए और उनके नेता जैसे नरेंद्र मोदी, अमित शाह, योगी आदित्यनाथ आदि ने सरकार की योजनाओं जैसे उज्ज्वला योजना, आयुष्मान योजना, किसान सम्मान निधि को गिनाते हुए बताया कि ये योजनाएं गरीबों और जरूरतमंदों तक मदद पहुंचा रही हैं और देश को विकास की राह पर ले जा रही हैं। हालांकि चुनाव प्रचार के दौरान कई नेताओं के द्वारा भाषा की मर्यादा भी तोड़ी गई। आखिरकार, जून 2024 में मतदान प्रक्रिया पूरी हुई और 4 जून को नतीजे आए। इसमें एनडीए ने 293 सीटें जीतकर बहुमत प्राप्त कर लिया। हालांकि बीजेपी को 63 सीटों का नुकसान हुआ और वह 240 सीटों पर सिमट गई। वहीं इंडिया गठबंधन को 115 सीटों का फायदा हुआ और वह 234 सीटों तक पहुँच गया। कांग्रेस की सीटें भी 52 से बढ़कर 99 हो गईं।

मुख्य शब्द : लोकतंत्र, मतदान, सामाजिक न्याय, गठबंधन।

प्रस्तावना

भारत विविधताओं में एकता का प्रतीक है, जहाँ अनेक धर्म, जातियाँ, भाषाएँ, बोलियाँ, त्योहार और सांस्कृतिक परंपराएँ समाहित हैं। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी जैसे विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग मिल-जुलकर एक लोकतांत्रिक ढांचे में रहते हैं। इसी विविधता और समावेशिता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान निर्माताओं ने संसदीय

लोकतंत्र को अपनाने का निर्णय लिया था की जिससे देश के हर वर्ग और समुदाय को प्रतिनिधित्व मिल सके। भारत के इस निर्णय पर विश्व ने आश्चर्य व्यक्त किया। कई विद्वानों ने यह आशंका व्यक्त की कि इतनी भिन्नताओं वाले देश में लोकतंत्र की स्थापना और सफलता संभव नहीं है। लेकिन भारत ने इन सभी शंकाओं को पीछे छोड़ते हुए 25 अक्टूबर 1951 से 21 फरवरी 1952 के बीच अपने पहले आम चुनाव का सफल आयोजन किया। इस ऐतिहासिक चुनाव में 14 राष्ट्रीय और 53 क्षेत्रीय दलों ने भाग लिया। कुल 489 सीटों के लिए मतदान हुआ, जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 45% मतों के साथ 364 सीटें जीतकर भारी बहुमत प्राप्त किया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने 16 सीटें जीतकर मुख्य विपक्षी दल की भूमिका निभाई। यह चुनाव केवल इसलिए ऐतिहासिक नहीं था कि उसने आलोचकों की शंकाओं को झुठला दिया, बल्कि इसलिए भी कि विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग छठवाँ भाग करीब 17.2 करोड़ मतदाता इसमें शामिल हुए, और भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बना दिया।

भारत में लोकतंत्र की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं, इसका प्रमाण हमें प्रथम आम चुनाव से लेकर 18वीं लोकसभा चुनाव तक के सफर में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। चाहे वह एकदलीय प्रभुत्व का दौर रहा हो, गठबंधन की सरकारें रही हों या वर्तमान बहुदलीय प्रतिस्पर्धा का स्वरूप, भारतीय लोकतंत्र ने प्रत्येक परिस्थिति में अपनी मजबूती बनाए रखी है। 18वीं लोकसभा चुनाव का विश्लेषण इसी लोकतांत्रिक यात्रा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जो न केवल भारतीय लोकतंत्र की सफलता का संकेत देता है बल्कि इसकी विविधता और जीवंतता को भी रेखांकित करता है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार शुक्ला द्वारा 16 मार्च 2024 को 18वीं लोकसभा चुनाव की घोषणा करते हुए यह स्पष्ट किया गया कि चुनाव कुल सात चरणों में होंगे, जिनका आरंभ 19 अप्रैल से होगा और अंतिम चरण का मतदान 1 जून को संपन्न होगा। परिणाम की घोषणा 4 जून को निर्धारित की गई। इसके साथ ही आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश की विधानसभा चुनावों की भी घोषणा की गई। चुनाव आयोग द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार, भारत में कुल 96.8 करोड़ पंजीकृत मतदाता हैं, जिनमें 49.72 करोड़ पुरुष और 47.1 करोड़ महिलाएं शामिल हैं, वहीं पहली बार मतदान करने वाले 1.82 करोड़ नए मतदाताओं में 85 लाख महिलाएं हैं। जैसे ही यह घोषणा हुई, देशभर में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई।

प्रथम चरण में 21 राज्यों की 102 संसदीय सीटों पर 19 अप्रैल को मतदान हुआ। इस दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नागरिकों से लोकतंत्र में भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील करते हुए कहा कि हर वोट देश को सुरक्षित, विकसित और आत्मनिर्भर बनाने की शक्ति रखता है। विपक्ष के प्रमुख नेताओं जैसे अखिलेश यादव, मायावती और कांग्रेस प्रमुख ने भी लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए अधिक से अधिक संख्या में मतदान की अपील की। चुनाव के दौरान जब मीडिया ने मतदाताओं से बातचीत की तो कई मतदाताओं ने सरकार के विकास कार्यों की सराहना की, वहीं बेरोजगारी और महंगाई जैसे मुद्दों पर चिंता भी जताई। इस प्रकार मतदाताओं के मिले-जुले रुझानों के कारण राजनीतिक दलों की बेचौनी स्वाभाविक थी। चुनाव आयोग द्वारा शाम सात बजे तक 63.89 प्रतिशत मतदान की घोषणा के साथ प्रथम चरण शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। इस चुनाव में जहां एनडीए विकास के मुद्दे को लेकर आगे बढ़ रही थी, वहीं विपक्षी पार्टियां आई. एन. डी. आई. ए. (इंडियन नेशनल डेमोक्रेटिक इंक्लूसिव एलाइंस) के तहत एकजुट होकर लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के मुद्दे को प्रमुखता से उठा रही थीं। प्रथम चरण में अपेक्षा से कम मतदान प्रतिशत को देखते हुए राजनीतिक दलों ने दूसरे चरण में विशेष रूप से महिलाओं को केंद्र में रखकर प्रचार किया, जिससे मतदान प्रतिशत में वृद्धि हुई। हालांकि यह प्रतिशत अभी भी 2019 के चुनावों से कम रहा, जिसने सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के लिए चिंता का विषय उत्पन्न कर दिया। सत्ताधारी दल ने कम मतदान को विपक्ष की हार स्वीकारने की निशानी बताया, जबकि विपक्ष ने इसे परिवर्तन की लहर का संकेत माना।

प्रथम दो चरणों के मतदान सम्पन्न होने के बाद जैसे-जैसे तीसरे चरण की ओर देश बढ़ा, चुनावी माहौल में मुद्दों की दिशा में बदलाव स्पष्ट रूप से देखने को मिला। 7 मई 2024 को होने वाले तीसरे चरण के मतदान से पहले एनडीए ने कांग्रेस के 'न्याय पत्र' को अपने राजनीतिक हमलों का केंद्र बना लिया। कांग्रेस द्वारा प्रस्तुत 'न्याय पत्र' को उन्होंने तुष्टिकरण की राजनीति से प्रेरित बताया और यह आरोप लगाया कि कांग्रेस धर्म और जाति के आधार पर देश को बांटने का प्रयास कर

रही है। हालाँकि, कांग्रेस ने 'न्याय पत्र' को एक समावेशी दस्तावेज़ बताया जिसमें युवाओं को रोजगार प्रदान करने, महिलाओं को सशक्त बनाने, किसानों के हित, संवैधानिक अधिकारों की रक्षा, आर्थिक-सामाजिक न्याय जैसे विषयों को प्राथमिकता दी गई थी। इसके विपरीत भाजपा ने अपने 'संकल्प पत्र' को 'मोदी की गारंटी' नाम देते हुए इसे विकास की दृष्टि से तैयार किया गया दस्तावेज़ बताया। इस पत्र में गरीब कल्याण, महिला सशक्तिकरण, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, किसान सम्मान निधि, समान नागरिक संहिता, CAA जैसे मुद्दों को प्रमुखता से जगह दी गई थी। एनडीए के इस घोषणापत्र को विपक्ष ने ध्रुवीकरण का औजार कहा और उसे जनता का ध्यान असल मुद्दों से भटकाने की रणनीति बताया। इसी दौरान चुनावी बहस में विपक्ष ने कुछ बेहद प्रभावशाली मुद्दों को मजबूती से उठाया। 'अग्निवीर' योजना युवाओं के लिए एक बड़ा चिंता का विषय बनी रही, जिस पर सरकार की मंशा को लेकर संदेह जताया गया। बेरोजगारी एक अन्य गंभीर मसला था, जो देश के युवाओं के भविष्य को लेकर गहरी चिंता पैदा कर रहा था। पेपर लीक जैसे घटनाएं विशेषकर NEET और UGC-NET जैसी परीक्षाओं से जुड़ी मुद्दो ने शिक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए।

चुनावी सरगमी के बीच 'आरक्षण' का मुद्दा इस तरह उछला कि विपक्ष ने इसे जनता के बीच इस भांति पहुँचाया कि सत्ता पक्ष की जड़ें हिलती नजर आईं। हालांकि, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इस मुद्दे को अपने अंदाज में संभालते हुए कहा, **"अगर स्वयं बाबा साहब भीमराव अंबेडकर प्रकट होकर आरक्षण समाप्त करने को कहें, तब भी यह समाप्त नहीं किया जाएगा''**। प्रधानमंत्री के इस बयान ने न केवल सत्तारूढ़ दल को एक मज़बूत राजनीतिक संबल दिया, बल्कि 'इस बार 400 पार' जैसे नारों के माध्यम से उन्होंने चुनावी हवा को अपने पक्ष में मोड़ने का प्रयास भी किया। परिणामस्वरूप, विपक्ष अपने मूल मुद्दों से भटकता हुआ दिखाई देने लगा। शेष वर्गो के वोटों को प्रभावित करने की कोशिश में वे '400 पार' के नारे के इर्द-गिर्द ही घूमते नजर आए। विपक्ष के नेता जहाँ एक ओर EVM पर सवाल उठाने लगे, वहीं दूसरी ओर चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर भी संदेह जताते रहे। कभी धीमे मतदान की शिकायतें की गईं, तो कभी मतदाता सूची में गड़बड़ी के आरोप लगे। इस पूरे परिदृश्य में विपक्ष के महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे निजीकरण, किसान आंदोलन, इलेक्ट्रोरल बॉन्ड, संविधान और संस्थाओं के दुरुपयोग चुनावी विमर्श में पीछे छूटते नजर आए।

आम चुनाव 2024 के सातवें और अंतिम चरण का मतदान 1 जून को संपन्न हुआ, जिसमें 8 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 57 सीटों पर वोट डाले गए। इसके साथ ही भारत में 18वीं लोकसभा चुनाव का समापन हुआ। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने इस प्रक्रिया को विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक आयोजन बताते हुए कहा कि इस बार 64.2 करोड़ मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया, जिनमें 31.2 करोड़ महिलाएं शामिल थीं। कुल मतदान प्रतिशत 65.79% रहा, जो भारतीय लोकतंत्र की सजीवता को दर्शाता है।

मतदान परिणाम 4 जून को घोषित हुआ। इस चुनाव परिणाम ने राजनीतिक विश्लेषकों और आम जनमानस को चौंका दिया। भाजपा का "चार सौ पार" का नारा अधूरा रह गया, वहीं विपक्षी इंडिया गठबंधन भी सरकार बनाने में असफल रहा। इसके बावजूद 2019 की तुलना में इंडिया गठबंधन ने उल्लेखनीय सुधार करते हुए 115 सीटों की बढ़त के साथ कुल 234 सीटें हासिल कीं। इसमें समाजवादी पार्टी को 37, तृणमूल कांग्रेस को 29 और डीएमके को 21 सीटें मिलीं, जबकि गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस को 99 सीटों पर विजय मिली। कांग्रेस ने अपने वोट शेयर में भी बढ़त दर्ज की, 2019 में 19. 49% वोटों के मुकाबले इस बार उसे 21.19% वोट मिले, जो 1.70% की वृद्धि है। 2019 में केवल 52 सीटें जीतने वाली कांग्रेस ने अब अपनी ताकत लगभग दोगुनी कर ली थी। दूसरी ओर भाजपा और एनडीए गठबंधन को बड़ा झटका लगा। जहां 2019 में एनडीए ने 360 सीटें जीती थीं, वहीं 2024 में उसे 67 सीटों का नुकसान झेलते हुए केवल 293 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। भाजपा की अपनी संख्या 303 से घटकर 240 पर आ गई। पार्टी के वोट प्रतिशत में भी थोड़ी गिरावट देखी गई, 2019 के 37.7% के मुकाबले इस बार उसे 36.56% वोट मिले। हालांकि सीटों में गिरावट के बावजूद एनडीए को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। इसमें तेलुगू देशम पार्टी की 16, जनता दल यूनाइटेड की 12 और लोक जनशक्ति पार्टी की 5 सीटों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नरेंद्र मोदी ने इस जीत को ऐतिहासिक और अद्वितीय बताया तथा अपने सहयोगी दलों और कार्यकर्ताओं को मेहनत को श्रेय दिया। उन्होंने आश्वासन दिया कि एनडीए एक स्थिर और मजबूत सरकार देगी। दूसरी ओर, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इसे मोदी की नैतिक और राजनीतिक हार बताया और कहा कि जनता ने विपक्ष को ताकत देकर सरकार को स्पष्ट संदेश दिया है। 5 जून को एनडीए घटक दलों की बैठक में नरेंद्र मोदी को पुनः प्रधानमंत्री पद के लिए समर्थन दिया गया। 7 जून को उन्हें सर्वसम्मति से बहुमत दल का नेता चुना गया और 9 जून को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई। इसके साथ ही नरेंद्र मोदी पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने वाले दूसरे नेता बन गए। उधर विपक्ष की ताकत में भी थोड़ी वृद्धि हुई। दो निर्दलीय विधायक, पप्पू यादव और विशाल पाटिल के समर्थन से विपक्षी गठबंधन की प्रभावी संख्या 236 तक पहुँच गई। 8 जून को कांग्रेस पार्टी ने सर्वसम्मति से राहुल गांधी को विपक्ष का नेता नामित किया। यह पद 2014 से खाली था, जिसे उन्होंने 25 जून को औपचारिक रूप से संभाल लिया। यह घटनाक्रम देश की राजनीति में एक नए दौर की शुरुआत का संकेत है, जहां सत्ता और विपक्ष दोनों को जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की बड़ी चुनौती है। 18वीं लोकसभा चुनाव में मतदान व्यवहार बहुआयामी रहा। पारंपरिक कारकों जैसे जाति-धर्म के साथ-साथ विकास, कल्याणकारी योजनाएं, नेतृत्व की छवि और मीडिया का प्रभाव भी महत्वपूर्ण रहा। यह चुनाव यह दर्शाता है कि भारत का मतदाता अब अधिक जागरूक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से मतदान कर रहे है।

निष्कर्ष

लोकतंत्र ऐसी शासन व्यवस्था है जो जनता द्वारा, जनता के लिए और जनता के माध्यम से संचालित होती है। यह केवल शासन की एक प्रणाली नहीं, बल्कि लोगों के अधिकारों और स्वतंत्रता का रक्षक है। लोकतंत्र रूढ़िवाद, सामंतवाद और तानाशाही के विरुद्ध एक शांतिपूर्ण हथियार की तरह कार्य करता है। इसकी सफलता के लिए केवल मतदान करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि नागरिकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। यदि लोकतंत्र को केवल चुनाव तक सीमित कर दिया जाए तो यह उसी तरह का बनकर रह जाता है जैसा रूसो ने कहा था "लोग हर पाँच साल में एक बार स्वतंत्र होते हैं।" भारत में चुनाव को लोकतंत्र का उत्सव माना जाता है। चुनाव के समय लोग सामाजिक व डिजिटल मंचों पर बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। चुनाव आयोग भी प्रसिद्ध व्यक्तियों को जोड़कर लोगों को जागरूक करने का प्रयास करता है। हालांकि, 18वीं लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत में गिरावट देखी गई, जिसका मुख्य कारण अत्यधिक गमी और लू बताया गया। इससे स्पष्ट है कि केवल जागरूकता ही नहीं, बल्कि सुविधाजनक व्यवस्था भी आवश्यक है। भारत के लोकतंत्र को और सुदृढ़ करने के लिए निर्वाचन आयोग को संसाधनों से सुसज्जित करना होगा तथा राजनीतिक दलों की अमर्यादित भाषा, धर्म के नाम पर राजनीति, और अव्यावहारिक वादों पर रोक लगानी होगी। चुनाव परिणाम राजनीतिक दलों के लिए आत्ममंथन का अवसर हैं। लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब जनता जागरूक और शासन पारदर्शी होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. www.india.gov.in
2. कांग्रेस द्वारा जारीः न्याय पत्र (2024)
3. भाजपा द्वारा जारीः संकल्प पत्र (2024)
4. www.eci.gov.in
5. The Hindu Newspaper. 18 Apr. 2024
6. Navbharat Times Newspaper. 25 June 2024
7. Pitroda, Sam (2024) The Idea of Democracy: Penguin Business
8. Sardesai, Rajdeep (2024) The Election that Surprised India: Harper Collins India

Reimagining English Language Education: The New Pedagogical Structure of NEP 2020

Dr. Sunita Yadav
Associate Professor of English
R.D.S Public Girls College, Rewari

Abstract

The National Education Policy (NEP) 2020 has introduced a transformative vision for India's education system, including a restructuring of the school curriculum into the 5+3+3+4 format. This shift reflects a move away from rote learning toward experiential, competency-based education. In relation to English language learning, this structural reform presents new opportunities and challenges across foundational, preparatory, middle, and secondary stages. This paper critically examines the impact of NEP 2020's pedagogical restructuring on English Language Teaching (ELT) in India, highlighting its implications for language acquisition, multilingualism, digital integration, and teacher training. The paper also outlines strategic recommendations for effective implementation of the policy in linguistically diverse classrooms.

Keywords: NEP 2020, English Language Teaching, 5+3+3+4 Structure, Multilingualism, Foundational Literacy, Competency-Based Education, Pedagogy

Introduction

The National Education Policy 2020 marks a historic overhaul of the Indian education system after more than three decades. A significant feature of the policy is the redesign of the curricular and pedagogical structure from the traditional 10+2 format to a new 5+3+3+4 structure. This model aligns with the cognitive developmental stages of children and aims to make learning more engaging and skill-oriented.

In this context, English as a subject and medium of instruction holds crucial importance. English is not only a global language but also a key to higher education and employment in India. However, the conventional model of English Language Teaching (ELT) has often relied on rote memorization and textbook-based learning. The NEP 2020 opens up a new paradigm for reimagining ELT by emphasizing early language exposure, multilingualism, foundational literacy, and the integration of modern pedagogical methods.

The 5+3+3+4 Structure: A Cognitive and Pedagogical Shift

The new 5+3+3+4 structure corresponds to four stages of school education:

Foundational Stage (5 years): 3 years of preschool + Grades 1-2

Preparatory Stage (3 years): Grades 3-5

Middle Stage (3 years): Grades 6-8

Secondary Stage (4 years): Grades 9-12

This model is designed to be flexible, learner-centric, and rooted in the developmental psychology of children.

Implications for English Language Teaching (ELT)

Foundational Stage (Ages 3–8): Building Language Foundations

The foundational stage focuses on play-based, activity-based, and experiential learning. For English, this stage emphasizes oral language development, phonemic awareness, and listening and speaking skills.

Introduction to English should be through songs, rhymes, stories, and pictures.

The focus must be on comprehension rather than grammar.

Code-switching and use of mother tongue as scaffolding are encouraged.

Preparatory Stage (Ages 8–11): Literacy and Exposure

This stage emphasizes reading and writing, making it a critical phase for English language learning.

English textbooks should be contextualized and culturally relevant.

Teachers need training in phonics, vocabulary building, and sentence formation.

Emphasis on interactive classroom strategies like storytelling, role-play, and group reading.

Middle Stage (Ages 11–14): Developing Complexity and Competence

Here, the focus shifts to grammar, comprehension, creative writing, and functional usage.

Integration of critical thinking and language across the curriculum.

Use of project-based learning, language labs, and digital tools.

Emphasis on multilingualism, where students build bridges between languages.

Secondary Stage (Ages 14–18): Academic and Professional Proficiency

At this stage, students are expected to demonstrate higher-order skills in English, including academic writing, literature analysis, and oral communication.

Focus on functional English for careers and higher education.

Elective English courses, literary studies, and digital communication skills should be offered.

Students must be encouraged to explore global Englishes, understanding varieties and cultural contexts.

Multilingualism and English: A Complementary Approach

NEP 2020 emphasizes the Three Language Formula, advocating for regional languages along with

English and Hindi (or another Indian language). This policy supports additive multilingualism, wherein English is taught not at the cost of mother tongues but alongside them.

English should not replace regional languages, but rather act as a bridge to global knowledge.

Code-mixing strategies can aid in cross-linguistic transfer, improving comprehension.

Multilingual classrooms can foster inclusive and culturally sensitive pedagogy.

Teacher Training and Curriculum Reform

The success of this pedagogical model depends largely on teacher preparedness and curriculum innovation.

Teachers need training in child psychology, bilingual methods, and digital tools.

Curriculum should be flexible, modular, and inclusive.

Continuous Professional Development (CPD) programs are essential to keep teachers updated.

National Curriculum Frameworks (NCFs) must reflect NEP's vision with a focus on language across disciplines.

Technology and ELT in the NEP Framework

The policy promotes the use of technology in education, which can enhance English learning:

Use of language learning apps, audio-visual content, and virtual classrooms.

Digital assessments for formative feedback and skill mapping.

Government platforms like DIKSHA and SWAYAM offer resources for English teachers and learners.

Challenges in Implementation

Despite its forward-looking vision, the implementation of NEP 2020 faces several hurdles:

Infrastructure gaps in rural and underprivileged schools.

Shortage of trained English teachers, especially in foundational grades.

Resistance to multilingual practices in traditionally monolingual schools.

Assessment redesign to reflect language competencies rather than rote performance.

Recommendations

Invest in early English exposure through audio-visual and play-based methods.

Train teachers in multilingual pedagogies and digital tools.

Design curriculum materials in multiple languages with English as an added support, not replacement.

Encourage contextualized content rooted in students' lived realities.

Build inclusive digital platforms for language learning in both urban and rural settings.

Conclusion

The NEP 2020 offers an unprecedented opportunity to revolutionize English Language Teaching in India through its reimagined pedagogical structure. By aligning English education with developmental stages, integrating multilingual and technological approaches, and emphasizing competency over content, the policy has the potential to make English learning more inclusive, engaging, and future-ready. However, effective implementation will require sustained investment in teacher training, infrastructure, and curriculum design.

References

Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020.

NCERT. (2021). Position Paper on English Language Teaching.

Agnihotri, R. K. (2007). Multilinguality and the Teaching of English in India.

Kumar, K. (2004). What Is Worth Teaching? Orient Black swan.

Mohanty, A. K. (2009). Multilingual Education for Social Justice: Globalising the Local.

NCERT. (2022). National Curriculum Framework for Foundational Stage (NCF-FS).

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

समवायस्य विषये दर्शनान्तराणां मतम्

एकलव्यः रुंगटा
पितुः नाम - नितिन रुंगटा
Gmail id – Eklavya5000@gmail.com
Mob- 8302682912

वैशेषिकसूत्रम्

तर्कसंग्रहकारेण समवायस्य लक्षणविषये उच्यते -

"नित्यसम्बन्धः समवायः।"

अत्र लक्ष्यं समवायः, लक्षणम् नित्यसम्बन्धः। अत्र प्रश्नः भवति नित्यं नाम किम्? तदुत्तररुपेण प्राप्यते - नित्यं नाम उत्पत्तिविनाशरहितत्वम्। अर्थात् समवायसम्बन्धः तादृशः सम्बन्धः यस्य उत्पत्तिविनाशौ न भवतः। एवञ्च सम्बन्धत्वं नाम विशेषणविशेष्यभावनियामकत्वम्। अर्थात् निष्कृष्टलक्षणं प्राप्यते नित्यत्वे सति सम्बन्धत्वं।

समवायस्य लक्षणम्। यथा- तन्तुपटयोः सम्बन्धः। तस्मिन् च सम्बन्धे नित्यत्वमस्ति सम्बन्धत्वमपि अस्ति। इति कृत्वा दृष्टान्ते समन्वयः। इदानीं सम्बन्धत्वम् इति एतावन्मात्रोक्तौ संयोगेऽतिव्याप्तिः भवति। कुतः इति चेत्, संयोगे सम्बन्धत्वमस्ति। तद्वारणाय नित्यत्वम् इति विशेषणं देयम्। संयोगे सम्बन्धत्वस्य सत्वादपि नित्यत्वं नास्ति इति कृत्वा इयम् अतिव्याप्तिः वार्यते। इदानीं नित्यत्वम् इति एतावन्मात्रोक्तौ आकाशादौ अतिव्याप्तिः भवति। कुतः इति चेत्, आकाशादौ नित्यत्वमस्ति। तद्वारणाय सम्बन्धत्वम् इति विशेषणं देयम्। आकाशादौ नित्यत्वस्य सत्वादपि सम्बन्धत्वं नास्ति इति कृत्वा इयम् अतिव्याप्तिः वार्यते।

समवायस्य विषये - दर्शनान्तराणां मतम्-

सांख्यमतम्

सांख्यस्य कारणसिद्धान्तः सत्कार्यवादः, वैशेषिकैः स्वीकृतस्य असत्कार्यवादस्य सर्वथा विरुद्धः एव अस्ति। अतः कार्यकारणभेदरूपस्य आरम्भवादस्य व्याख्यानार्थं परिकल्पितः 'समवायः' इति पदार्थः अपि सांख्य-दर्शनस्य कृते सर्वथा निरर्थकः अस्ति। अत एव सांख्यसूत्रकारस्य वचनं प्राप्यते यत् 'न समवायोऽस्ति प्रमाणाभावात् इति। सांख्यदर्शनानुसारं एतादृशद्रव्यसिद्धौ न प्रत्यक्षं प्रमाणं नापि अनुमानप्रमाणम् उपयुज्यते। यतो हि उभयथापि स्वरूपेणेव अन्यथा सिद्धिर्भवति। अस्य आशयः यत्, अनवस्थादोषभयात् यथा समवायसम्बन्धः स्वयं तस्य अनुयोगिनि स्वरूपसम्बन्धेन तिष्ठति इति मन्यते, तद्वत् गुणगुण्यादीनामपि विशिष्टबुद्धिः समवायः स्वरूपसम्बन्धेनैव तिष्ठति इति किमर्थं न मन्यते? अतः समवायस्य पृथक्त्वरूपेण पदार्थत्वेन ग्रहणस्य आवश्यकता नास्ति इति सांख्यानां मतम्।

अद्वैतवेदान्तमतम्

समाधानत्वेन वेदान्तमतेन समवायखण्डनम् - सिद्धान्तो तावत् एवं वदति, भवताम् अयं न्यायः यः वर्तते सः

सार्वजनीनः नास्ति, तत्र भवतामेव पक्षे कुत्रचित् स्थलेषु तत्रास्ति। पुनः पूर्वपक्षिभिः द्व्यणुकरुपकार्यं प्रति समवायिकारणं भवति परमाणुः। अस्मिन् विषये वैशेषिकाणां मतं यत्, समवायसम्बन्धस्य सततं समवायिना सह नित्यसम्बद्धत्वात् तस्य कृते पुनः सम्बन्धस्वीकरणस्य आवश्कता न भवति। तदानीं वेदान्तिभिः पुनः पृच्छ्यते, तर्हि संयोगसम्बन्धः तस्य अधिकरणे द्रव्ये कथं समवायसम्ब्धेन तिष्ठति इति कथं वैधर्म्यम्। वैशेषिकाणाम् उत्तरं यथा संयोग इति गुणः, तस्मात् तस्य कृते समवायसम्बन्धस्य आवश्यकता भवति। समवायस्य तु तथा न भवति अगुणत्वात्। अथ वेदान्तिभिः, भवतु समवायः अगुणः, किन्तु संयोगसमवायौ द्वौ एव सम्बन्धौ स्वस्वसम्बन्धिनः अत्यन्तभिन्नौ वर्तते, वैशेषिकाभिमतासत्कार्यवादबलात। तेन इति साम्याद् तयो द्वयोः वैशिष्ट्यमपि समानं भवितव्यम्। सम्बन्धस्य आश्रयस्य कृते सम्बन्धः स्वीक्रियते चेत् संयोगवत् समवायस्यापि सम्बन्धः स्वीक्रियेत अन्यथा समवायवत् संयोगस्य कृतेऽपि समवायिना सह नियतसम्बद्धत्वमेव मन्तव्यम्। एवं समवायसिद्धेः अभावात् तद्भावः अर्थात् सृष्टिप्रलययोः अभावः इति शङ्कराचार्यस्य मतम्। यथात्तेनोक्तम्- “ननु इहप्रत्ययग्राह्यः समवायः नित्यसम्बन्धः एव समवायिभिः गृह्यते, न असम्बद्धः, सम्बन्धान्तापेक्षः वा। ततश्च न तस्य अन्यः सम्बन्धः कल्पयितव्यः, येन अनवस्था प्रसज्येत इति। न इति उच्यते, संयोगः अपि सति संयोगिभिः नित्यसम्बन्धः एव इति समवायवत् न अन्यं सम्बन्धम् अपेक्षते। अथ अर्थान्तरत्वात् सम्बन्धान्तरम् अपेक्षते। न च गुणत्वात् संयोगः सम्बन्धान्तरम् अपेक्षते, न समवाय अगुणत्वात् इति युज्यते वक्तुम्, अपेक्षाकारणस्य तुल्यत्वात्। गुणपरिभाषायाश्च अतन्त्रत्वात्। तस्मात् अर्थान्तरं समवायम् अभ्युपगच्छतः प्रसज्येत एव अनवस्था। प्रसज्यमानायां च अनवस्थायाम् एकासिद्धौ सर्वासिद्धेः द्वाभ्याम् अणुभ्यां द्व्यणुकं नैव उत्पद्येत्।

इति इत्थं समवायनिराकरणद्वारेण वैशेषिकाभिमतपरमाणुकारणवादः निराकृतः। उक्तञ्च शङ्कराचार्येण “तस्मादपि अनुपपन्नः परमाणुकारणवादः।” अतः दृश्यते समवायस्य खण्डनपूर्वकं वैशेषिकाणां जगतसृष्टेः वादः निराक्रियते।

उक्तश्च भामतीकारेण

“व्याचष्टे - “समवायाभ्युपगमाच्च“ इति। न तावत् स्वतस्त्रः समवायोऽत्यन्तं भिन्नः समवायिभ्यां समवायिनौ घटयितुमर्हत्यतिप्रसङ्गात्। तस्मादनेन समवायिसम्बन्धिना सता समवायिनौ घटनीयौ। तथा च समवायस्य सम्बन्धान्तरेण समवायिसम्बन्धेऽभ्युपगम्यमानेऽनवस्था। अथासौ सम्बन्धिभ्यां सम्बन्धे न सम्बन्धान्तरमपेक्षते, सम्बन्धिसम्बन्धनपरमार्थत्वात्। तथा हि नासौ भिन्नोऽपि तस्मात् समवायवत् संयोगोऽपि न सम्बन्धान्तरमपेक्षते। यद्युच्येत, सम्बन्धिनावसौ घटयति नात्मानमपि सम्बन्धिभ्यां, तत् किमसमवायसम्बन्धः एव सम्बन्धिभ्याम्, एवञ्चेदत्यन्तभिन्नोऽसम्बन्धः कथं सम्बन्धिनौ सम्बन्धयेत्। सम्बन्धेन वा हिमवद्विन्ध्यावपि सम्बन्धयेत। तस्मात् संयोगः संयोगिनोः समवायेन सम्बन्ध इति वक्तव्यम्। तदेतत् समवायस्यापि समवायि सम्बन्धे समानमन्यत्राभिनिवेशात। तथा चानवस्थेति भावः।”

मीमांसकानां मतम्

प्राभाकरमीमांसकः ‘समवाय’ इति पदार्थं द्रव्यरूपेण स्वीकरोति, परन्तु वैशेषिकसमवायसिद्धान्तात् तस्य मतं भिन्नमस्ति। तस्य मतेन ‘समवायः’ न नित्यः, यतो हि अनित्येषु विषयेषु अपि सः तिष्ठति, तेषां विनाशकाले स्वयं विनश्यति च। सम्बन्धः नित्यः भवितुं नार्हति, समवायश्च सम्बन्धः अस्ति एवञ्च नित्यरूपेणैव स्वीक्रियते। अतः प्रभाकरमतेन समवायः सम्बद्ध्यमानवस्तूनां स्वरूपाधारेण जन्यः अपि भवति अजन्यः अपि भवति। तथा च प्रत्यक्षः अपि भवति अप्रत्यक्षः अपि भवति। च परोक्षः। तेषां मते तु समवायः एकः नास्ति, अपि तु अनेकः एव।

भाट्टमीमांसकस्तु ‘समवायं पृथक्पदार्थत्वेन अपि न स्वीकरोति, अपि तु समवायस्य स्थाने ‘भेदभेदं’ ‘तादात्म्यं’ वा स्वीकरोति। कुमारिलभट्टस्तु एवं कथयति यत् अयुत्सिद्धद्रव्याणां मध्ये वर्तमानत्वात् तेभ्यः पदार्थेभ्यः भिन्नः ‘समवायः’ कश्चित् पृथक् पदार्थः नास्ति।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां नैयायिकाः द्रव्यगुणयोः मध्ये क्रियाक्रियावतोः वा मध्ये समवायसम्बन्धः स्वीकुर्वन्ति। अन्यत्र तथापि मीमांसकाः ‘स्वरूपसम्बन्धं’ स्वीकुर्वन्ति। ते समवायं न स्वीकुर्वन्ति एवं च तेषां मतमस्ति यत्, गुणक्रियादिविशिष्टबुद्धिः

इति येन अनुमानेन समवाय सिद्धिः नैयायिकैः कृता तत्र अर्थान्तरसिद्धसाधने इति दोषद्वयं वर्तते। कुतः इति चेत्, येन अनुमानेन समवायस्य सिद्धिः क्रियते तेन वस्तुनः स्वरूपसम्बन्धस्य सिद्धिः जाता। तस्य स्वरूपसम्बन्धस्य सिद्धिस्तु आदावेव कृता इति कृत्वा तत्र सिद्धसाधनदोषरू वर्तते। पुनश्च कस्यचिद् अन्यस्य सिद्धिम् आरभ्य अन्यस्य सिद्धिः कृता, इति कृत्वा अर्थान्तरदोषः जातः। नैयायिकाः एतस्य उत्तररूपेण वदन्ति, यदि सामवायस्य स्थाने स्वरूपसम्बम्धं स्वीक्रियते, तर्हि बहवः सम्बन्धाः स्वीकरणीयाः भविष्यन्ति। यथा रक्तघटयोः मध्ये स्वरूपसम्बन्धः स्वीक्रियते चेत्, सः सम्बन्धः भविष्यति घटानुघ्योगिकरक्तप्रतियोगिकस्वरूपसम्बन्धः, एवम् अन्यत्रापि अपरः सम्बन्धः स्वीकरणीयः। तेन बहवः सम्बन्धः स्वीकरणीयः इति गौरवकारणात् एकसमवायग्रहणे लाघवः भवति। इति कृत्वा नैयायिकैः संयोगादिबाधात् रक्तघटयोः मध्ये समवायः इति नित्यसम्बन्धः स्वीकृतः। इदानीं पूर्वपक्षिभिः पुनः प्रश्नः क्रियते यत्, एकसमवायस्वीकारे लाघवः भवति इति सिद्धान्तीनाम् आशयः। तथा सति वायौ समवायसम्बन्धेन स्पर्शः अस्ति, एवम् घटे तेनैव समवायसम्बन्धेन रूपमस्ति, स्पर्शसमवायः वायौ अस्ति चेत् रूपसमवायः अपि वायौ स्यात् समवायस्य एकत्वात्। किन्तु वायौ रूपस्य प्रत्यक्षं न भवति। तर्हि समवायः एकः इति कथं वक्तुं शक्यते? - इति पूर्वपक्षीनाम् आशयः। इदानीं पुनः प्रश्नो भवति, अभावग्रहणार्थमपि स्वरूपसम्बन्धं विहाय समवायः इव एक 'वैशिष्ट्यः' इति कश्चित् सम्बन्धः किमर्थं न स्वीक्रियते? इति।

बौद्धमतम्

समवायविषये बौद्धदर्शनस्य मतं सर्वथा वैशेषिकमतात् विरुद्धम् अस्ति यतोहि बौद्धदर्शने कश्चिदपि सम्बन्धः न स्वीकृतः। बौद्धविदुषः शान्तरक्षितस्य मतं यत् अयं संसारः सर्वथा असम्बद्धासम्पृक्तपृथक्तत्त्वैः परिपूर्णः अस्ति, यत् वयं 'क्षणम्' इति वदामः, तेषां क्षणानाम् मध्ये कोऽपि वास्तविकः सम्बन्धः सम्भ वा नास्ति। अतः यदि तादृशः कोऽपि सम्बन्धः स्वीक्रियते तर्हि सः सम्बन्धः मानसिकः अथवा केवलम् आरोपितः एव भविष्यति। 'इदम् अत्र अस्ति' इत्यादिप्रतीतिः केवलं वैशेषिकैः एव स्वसिद्धान्तप्रेमकारणात् स्वीकर्तुं शक्यते, अन्यथा सामान्यजनस्य कदापि 'इह तन्तुषु पटः', 'शाखायां वृक्षः' इत्यादयः प्रतीतयः कदापि न भवति, अपि तु 'पटे तन्तवः', 'वृक्षे शाखा', 'पर्वते शिला' इत्यादयः विपरीतरूपप्रतीतयः एव भवति। तस्मात्, उपर्युक्तव्यवहारस्य आधारेण समवायं साधयितुं न शक्यते, इति बौद्धमतम्।

जैनमतम्

जैनदर्शने अपि अनेनैव आधारेण समवायस्य निराकरणं कृतम्। 'पटे तन्तवः', 'वृक्षे शाखाः' इत्यादिरूपेण प्रतीयमानेन ज्ञानेन 'इह तन्तुशु पटः' इति प्रतीतिः बाध्यते। अतः अनेन आधारेण समवायस्य सिद्धिः न शक्या।

रामानुजमतम्

श्रीरामानुजाचार्यस्य विशिष्ठाद्वैतदर्शने अपि 'अपृथक्-सिद्धि' इति कश्चित् सम्बन्धः स्वीकृतः। यः आपातदृष्ट्या वैशेषिकसम्मतसमवायसदृशः भाति। परन्तु उभययोः दर्शनयोः मौलिकमतभेदाधारेण उभये एव दर्शने कानिचन मूलभूतपार्थक्यानि अपि सन्ति। यथा - अपृथकसिद्धौ अपि द्वयोः सम्बन्धिनोः मध्ये वास्तविकभेदः, अपृथकरणीयता च स्वीकृते। परन्तु समवायात् भिन्नः तस्य वैशिष्ट्यमिदम् अस्ति यत् तेषु सम्बन्धिषु विशिष्टैक्यमपि स्वीकृतं वर्तते। अतः एतस्य ऐक्यत्वस्य, परस्परसम्बन्धतायाः च कारणात् अन्येषु विषयेषु सामवायसदृशत्वेऽपि अपृथक्-सिद्धिः एकः आभ्यन्तरसम्बन्धः अस्ति। यदा तु समवायसम्बन्धश्च बाह्यसम्बन्धः अस्ति। तथा च सामवायस्य विशिष्टाद्वैतीयप्रस्तुतिकरणमेव अपृथक्-सिद्धिः। एवं वैशेषिकविशिष्ठद्वैतसम्प्रदाययोः सम्बन्धिनः सम्बन्धाश्च च समानाः एव सन्ति। किन्तु तेषां व्याख्याविषये अस्ति भिन्नत्वम्। बहुत्ववादिवैशेषिकदर्शनानुसारं समवायस्य सम्बन्धिद्वयस्य अयुत्सिद्धत्वेऽपि वस्तुतः पृथक् भवति। यदा त अन्ते एकत्ववादी विशिष्टद्वैतः 'अपृथक्-सिद्धि' इत्यनेन सम्बन्धीनानाम् एकतां स्वीकरोति। अनेनैव आधारेण रामानुजाचार्येन समवायस्य खण्डनं कृतम् अस्ति।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1, अन्नंभट्टः, तर्कसङ्ग्रहः, सम्पादकः गोविन्दाचार्यः, प्रकाशनम् चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, वाराणसी, पुनर्मुद्रितसंस्करणम्, 2019।

2, कपिल, सांख्यसूत्रम्, सम्पादकः रामशंकर भट्टाचार्य, प्रकाशनम् भारतीयविद्याप्रकाशनम्, वाराणसी, द्वितीयसंस्करणम्, 1977।

3, विज्ञानभिक्षुः, सांख्यप्रवचनभाष्य, सम्पादकः रामशंकरभट्टाचार्यः, प्रकाशनम् भारतीयविद्याप्रकाशनम्, वाराणसी, द्वितीयसंस्करणम्, 1977।

4, शङ्कराचार्य, ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य, सम्पादकः हनुमानदास षट्ध्शास्त्री, प्रकाशनम् चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, वाराणसी, प्रथमसंस्करणम्, 1969।

5, शालिकनाथ, प्रकरणपञ्जिका, सम्पादकः ए, सुब्रह्मण्यशास्त्री, प्रकाशनम् बनारसहिन्दुविश्विद्यालयः, द्वितीयसंस्करणम्,1963।

6, कुमारिलभट्ट, श्लोकवार्तिकम्, सम्पादकः द्वारिकादास शास्त्री, प्रकाशनम् तारापब्लिकेशन्सः, वाराणसी, पुनर्मुद्रितसंस्करणम्, 1978।

7, शान्तरक्षित, तत्वसंग्रहः, सम्पादकः स्वामीद्वारिकादासशास्त्री, प्रकाशनम् बौद्धभारती, वाराणसी, 1968।

8, प्रभाचन्द्राचार्य, प्रमेयकमलमार्ताण्डः, सम्पादकः महेन्द्रकुमार शास्त्री, प्रकाशनम् निर्णयसागरप्रेसः, बम्बई, द्वितीयसंस्करणम्, 1941।

9, रामानुजाचार्य, श्रीभाष्य, सम्पादकः पी, बी, अनङ्गाचार्यः, प्रकाशनम् श्रीभगवत् रामानुजग्रन्थमाला, काञ्चीवरम्, द्वितीयसंस्करणम्, 1956।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

सूरदासजी श्रृंगार और वात्सल्य रस के सम्राट

रामुराम
पिता का नाम- रतना राम
Gmail Id: Ramuram41297@gmail.com
Mo- Number:& 8005820932

सूरदासजी : सूरदासजी का वृत्त "चौरासी वैष्णवों की वार्ता" से केवल इतना ज्ञात होता है कि वे पहले गऊघाट (आगरे और मथुरा के बीच) पर एक साधु या स्वामी के स्वरूप में रहा करते थे और शिष्य किया करते थे। गोवर्द्धन पर श्रीनाथजी का मंदिर बन जाने के पीछे एक बार जब वल्लभाचार्य जी गऊघाट पर उतरे तब सूरदास उनके दर्शन को आए और उन्हें अपना बनाया एक पद गाकर सुनाया। आचार्यजी ने उन्हें अपना शिष्य किया और भागवत की कथाओं को गाने योग्य पदों में करने का आदेश दिया। उनकी सच्ची भक्ति और पद-रचना की निपुणता देख वल्लभाचार्यजी ने उन्हें अपने श्रीनाथजी के मंदिर की कीर्त्तन सेवा सौंपी। इस मंदिर को पूरनमल खत्री ने गोवर्द्धन पर्वत पर संवत् १५७६ में पूरा बनवाकर खड़ा किया था। मंदिर पूरा होने के ११ वर्ष पीछे अर्थात् संवत् १५८७ में वल्लभाचार्यजी की मृत्यु हुई। श्रीनाथजी के मंदिर-निर्माण के थोड़ा ही पीछे सूरदासजी वल्लभ-संप्रदाय में आए, यह 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' के इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है—

"औरहु पद गाए तब श्रीमहाप्रभुजी अपने मन में विचार जो श्रीनाथजी के यहाँ और तो सब सेवा को मंडान भयो है, पर कीर्त्तन को मंडान नहीं कियो है; तातें अब सूरदास को दीजिए।"

अतः संवत् १५८० के आस-पास सूरदासजी वल्लभाचार्य के शिष्य हुए होंगे और शिष्य होने के कुछ ही पीछे उन्हे कीर्त्तन सेवा मिली होगी। तब से वे बराबर गोवर्द्धन पर्वत पर ही मंदिर की सेवा में रहा करते थे, इसका स्पष्ट आभास 'सूरसारावली' के भीतर मौजूद है। तुलसीदास के प्रसंग में हम कह आए हैं कि भक्त लोग कभी कभी किसी ढंग से अपने को अपने इष्टदेव की कथा के भीतर डालकर उनके चरणो तक अपने पहुँचने की भावना करते हैख१,। तुलसी ने तो अपने को कुछ प्रच्छन्न रूप में पहुँचाया है, पर सूर ने प्रकट रूप में। कृष्ण-जन्म के उपरांत नंद के घर बराबर आनंदोत्सव हो रहे हैं। उसी बीच एक ढाढी आकर कहता है

नंद जू मेरे मन आनंद भयो, हौं गोवर्द्धन ते आयो।
तुम्हरे पुत्र भयो, मैं सुनिकै अति आतुर उठि धायो॥
जब तुम मदन मोहन करि टेरी, यह सुनि कै घर जाउँ।
हौं तौ तेरे घर को ढाढी, सूरदास मेरो नाउँ ॥

वल्लभाचार्यजी के पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथ के सामने गोवर्द्धन की तलहटी के पारसोंली ग्राम में सूरदास की मृत्यु हुई, इसका पता भी उक्त वार्ता से लगता है। गोसाई विट्ठलनाथ की मृत्यु सं० १६४२ में हुई। इसके कितने पहले सूरदास को परलोकवास हुआ, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

'सूरसागर' समाप्त करने पर सूर ने जो 'सूरसागर-सारावली' लिखी है उसमें अपनी अवस्था ६७ वर्ष की कही है—

गुरु-परसाद होत यह दरसन सरसठ बरस प्रवीनतात्पर्य यह कि ६७ वर्ष के कुछ पहले वे 'सूरसागर' समाप्त कर चुके थे। सूरसागर समाप्त होने के थोड़ा ही पीछे उन्होंने 'सारावली' लिखी होगी। एक और ग्रंथ सूरदास का 'साहित्य लहरी' है, जिसमें अलंकारों और नायिका-भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करनेवाले कूट पद है। इसका रचनाकाल सूर ने इस प्रकार व्यक्त किया है

मुनि सुनि रसन के रस लेख।
दसन गौरीनंद को लिखि सुबल संबत पेख।

इसके अनुसार संवत् १६०७ में 'साहित्य-लहरी' समाप्त हुई। यह तो मानना ही पड़ेगा कि साहित्य-क्रीड़ा का यह ग्रंथ 'सूरसागर' से छुट्टी पाकर ही सूर ने संकलित किया होगा। उसके दो वर्ष पहले यदि 'सूरसारावली' की रचना हुई, तो कह सकते हैं संवत् १६०५ में सूरदासजी ६७ वर्ष के थे। अब यदि उनकी आयु ८० या ८२ वर्ष की माने तो उनका जन्मकाल सं० १५४० के आसपास तथा मृत्युकाल सं० १६२० के आसपास ही अनुमित होता है।

'साहित्य-लहरी' के अंत में एक पद है जिसमे सूर अपनी वंशपरंपरा देते हैं। उस पद के अनुसार सूर पृथ्वीराज के कवि चंदबरदाई के वंशज ब्रह्मभट्ट थे। चदंकवि के कुल में हरीचंद हुए जिनके सात पुत्रों में सबसे छोटे सूरजदास या सूरदास थेख्२,। शेष ६ भाई जब मुसलमानों से युद्ध करते हुए मारे गए तब अंधे सूरदास बहुत दिनों तक इधर-उधर भटकते रहे। एक दिन वे कुएँ में गिर पड़े और ६ दिन उसी में पड़े रहे। सातवें दिन कृष्ण भगवान् उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें दृष्टि देकर अपना दर्शन दिया। भगवान् ने कहा कि दक्षिण के एक प्रबल ब्राह्मण-कुल द्वारा शत्रुओं का नाश होगा और तू सब विद्याओं में निपुण होगा। इसपर सूरदास ने वर माँगा कि जिन आँखो से मैंने आपका दर्शन किया उनसे अब और कुछ न देखूँ और सदा आपका भजन करूँ। कुएँ से जब भगवान् ने उन्हें बाहर निकाला तब वे ज्यों के त्यों अंधे हो गए और ब्रज में आकर भजन करने लगे। वहाँ गोसाईजी ने उन्हें 'अष्ट-छाप' में लिया।

हमारा अनुमान है कि 'साहित्य-लहरी' में यह पद पीछे किसी भाट के द्वारा जोड़ा गया है। यह पंक्ति है :

'प्रबल दच्छिन विप्रकुल तें सत्रु ह्वैहै नास।'

इसे सूर के बहुत पीछे की रचना बता रही है। 'प्रबल दच्छिन विप्रकुल' से साफ पेशवाओं की ओर संकेत है। इसे खींचकर अध्यात्म-पक्ष की ओर मोड़ने का प्रयत्न व्यर्थ है। सारांश यह कि हमें सूरदास का जो थोड़ा-सा वृत्त 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' में मिलता है उसी पर संतोष करना पड़ता है। यह 'वार्ता' भी यद्यपि वल्लभाचार्यजी के पौत्र गोकुलनाथजी की लिखी कही जाती है, पर उनकी लिखी नहीं जान पड़ती। इसमें कई जगह गोकुलनाथजी के श्रीमुख से कही हुई बातों का बड़े आदर और संमान के शब्दों में उल्लेख है और वल्लभाचार्यजी की शिष्या न होने के कारण मीराबाई को बहुत बुरा भला कहा गया है और गालियाँ तक दी गई हैं। रंगढंग से यह वार्ता गोकुलनाथजी के पीछे उनके किसी गुजराती शिष्य की रचना जान पड़ती है।

'भक्तमाल' में सूरदास के संबंध में केवल एक ही छप्पय मिलता है

उक्ति चीज अनुप्रास बरन अस्थिति अति भारी।

श्रीवल्लभाचार्यजी के पीछे उनके पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथजी गद्दी पर बैठे। उस समय तक पुष्टिमागी कई कवि बहुत से सुंदर सुंदर पदों की रचना कर चुके थे। इससे गोसाईं विट्ठलनाथजी ने उनमें से आठ सर्वोत्तम कवियों को चुनकर 'अष्टछाप' की प्रतिष्ठा की। 'अष्टछाप' के आठ कवि ये हैं—सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास।

कृष्णभक्ति-परंपरा में श्रीकृष्ण की प्रेममयी मूर्ति को ही लेकर प्रेमतत्व की बड़े विस्तार के साथ व्यंजना हुई है; उनके लोकपक्ष का समावेश उसमें नहीं है। इन कृष्णभक्तों के कृष्ण प्रेमोन्मत्त गोपिकाओं से घिरे हुए गोकुल के श्रीकृष्ण हैं, बड़े बड़े भूपालों के बीच लोकव्यवस्था की रक्षा करते हुए द्वारका के श्रीकृष्ण नहीं हैं। कृष्ण के जिस मधुर रूप को लेकर ये भक्त कवि चले है वह हासविलास की तरंगों से परिपूर्ण अनंत सौंदर्य को समुद्र है। उस सार्वभौम प्रेमालंबन के सन्मुख मनुष्य का हृदय निराले प्रेमलोक में फूला फूला फिरता है। अतः इन कृष्णभक्त कवियों के संबध में यह कह देना आवश्यक है कि ये अपने

रंग में मस्त रहने वाले जीव थे; तुलसीदासजी के समान लोकसंग्रह का भाव इनमें न था। समाज किधर जा रहा है, इस बात की परवा ये नहीं रखते थे, यहाँ तक कि अपने भगवत्प्रेम की पुष्टि के लिये जिस शृंगारमयी लोकोत्तर छटा और आत्मोत्सर्ग की अभिव्यंजना से इन्होंने जनता को रसोन्मत्त किया, उसका लौकिक स्थूल दृष्टि रखनेवाले विषय-वासनापूर्ण जीवों पर कैसा प्रभाव पड़ेगा इसकी ओर इन्होंने ध्यान न दिया। जिस राधा और कृष्ण के प्रेम को इन भक्तों ने अपनी गूढ़ातिगूढ़ चरम भक्ति का व्यंजक बनाया उसको लेकर आगे के कवियों ने शृंगार की उन्मादकारिणी उक्तियों से हिंदी काव्य को भर दिया।

कृष्णचरित के गान में गीत-काव्य की जो धारा पूरब में जयदेव और विद्यापति ने बहाई उसी का अवलंबन ब्रज के भक्त कवियों ने भी किया। आगे चलकर अलंकार काल के कवियों ने अपनी शृंगारमयी मुक्तक कविता के लिये राधा और कृष्ण का ही प्रेम लिया। इस प्रकार कृष्ण-संबधिनी कविता का स्फुरण मुक्तक के क्षेत्र से ही हुआ, प्रबंध-क्षेत्र में नहीं। बहुत पीछे संवत् १८०६ में ब्रजवासीदास ने रामचरितमानस के दंग पर दोहा चौपाइयों में प्रबंध-काव्य के रूप में कृष्णचरित वर्णन किया, पर ग्रंथ बहुत साधारण कोटि का हुआ और उसका वैसा प्रसार न हो सका। कारण स्पष्ट है। कृष्णभक्त कवियों ने श्रीकृष्ण भगवान् के चरित का जितना अंश लिया वह एक अच्छे प्रबंध-काव्य के लिये पर्याप्त न था। उसमें मानव-जीवन की वह अनेकरूपता न थी, जो एक अच्छे प्रबंध-काव्य के लिये आवश्यक है। रामचरितमानस के दंग पर दोहा चौपाइयों में प्रबंध-काव्य के रूप में कृष्णचरित वर्णन किया, पर ग्रंथ बहुत साधारण कोटि का हुआ और उसका वैसा प्रसार न हो सका। कारण स्पष्ट है। कृष्णभक्त कवियों ने श्रीकृष्ण भगवान् के चरित का जितना अंश लिया वह एक अच्छे प्रबंध-काव्य के लिये पर्याप्त न था। उसमें मानव-जीवन की वह अनेकरूपता न थी, जो एक अच्छे प्रबंध-काव्य के लिये आवश्यक है। कृष्णभक्त कवियों की परंपरा अपने इष्टदेव की केवल बाललीला और यौवनलीला लेकर ही अग्रसर हुई जो गीत और मुक्तक के लिये ही उपयुक्त थी। मुक्तक के क्षेत्र में कृष्णभक्त कवियों तथा आलंकारिक कवियों ने शृंगार और वात्सल्य रसों को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया इसमें कोई संदेह नहीं। पहले कहा गया है कि श्रीवल्लभाचार्यजी की आज्ञा से सूरदासजी ने श्रीमद्भागवत की कथा को पदों में गाया। इनके सूरसागर में वास्तव में भागवत के दशम स्कंध की कथा ही ली गई है। उसी को इन्होंने विस्तार से गाया है। शेष स्कंधों की कथा संक्षेपतः इतिवृत्त के रूप में थोड़े से पदों में कह दी गई है। सूरसागर में कृष्णजन्म से लेकर श्रीकृष्ण के मथुरा जाने तक की कथा अत्यंत विस्तार से फुटकल पदों में गाई गई है। भिन्न भिन्न लीलाओं के प्रसंग लेकर इस सच्चे रसमग्न कवि ने अत्यंत मधुर और मनोहर पदों की झड़ी सी बाँध दी है। इन पदों के संबंध में सबसे पहली बात ध्यान देने की यह है कि चलती हुई ब्रजभाषा में सबसे पहली साहित्यिक रचना होने पर भी ये इतने सुडौल और परिमार्जित है। यह रचना इतनी प्रगल्भ और काव्यांगपूर्ण है कि आगे होने वाले कवियों की शृंगार और वात्सल्य की उक्तियाँ सूर की जूठी सी जान पड़ती है!

संदर्भ ग्रंथ्

सूरसागर, पृ० ५६४, (वेंकटेश्वर)

सूरसारावाली (सूरदास)

भक्तमाल (नाभदास)

कबीर ग्रंथावली, पृ० १६० (श्याम सुंदर दास)

मुंशियात अब्बुलफजल’

हिन्दी साहित्य का इतिहास (रामचंद्र शुक्ल)

हिन्दी साहित्य साहित्य का उद्भव और विकास (हजारी प्रसाद द्विवेदी)।

HDI रिपोर्ट में भारत की स्थिति

Nena Ram Prajapat
Father's Name - Shree Ram Prajapat
Gmail. Id - nrprajapat721@gmail.com
M. No. - 88240-46864

प्रस्तावना

HDI रिपोर्ट में विगत वर्षो में भारत की रेंक में सुधार हुआ है पिछली रिपोर्ट में जहां भारत की रेंक 134 थी वही इस बार इसमें सुधार हुआ है तथा इस बार ये 130 (0.685) है

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा जारी मानव विकास रिपोर्ट, 2025 के अनुसार भारत ने वर्ष 2023 के मानव विकास सूचकांक (HDI) में तीन स्थानों की छलांग लगाते हुए 193 देशों में 130वाँ स्थान प्राप्त किया है।

यह प्रगति भारत के सतत विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जीवन स्तर में हो रहे सुधारों को दर्शाती है। हालाँकि, असमानता एवं लैंगिक असंतुलन जैसे मुद्दे अभी भी चुनौती बने हुए हैं।

मानव विकास सूचकांक (HDI) के बारे में

क्या है HDI एक समग्र सांख्यिकीय माप है जो किसी देश के नागरिकों की औसत उपलब्धियों को विभिन्न आयामों में मापता है।

प्रमुख संकेतक

स्वास्थ्य : जन्म के समय जीवन प्रत्याशा

शिक्षा : स्कूली शिक्षा की प्रत्याशित अवधि एवं औसत स्कूली शिक्षा अवधि

जीवन स्तर : प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (ळछप् च्मत ब्ंचपजं), च्च्च समायोजित

अवधारणा : यह सूचकांक पहली बार वर्ष 1990 में महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन के नेतृत्व में प्रस्तुत किया गया था।

HDI रिपोर्ट 2023 के मुख्य निष्कर्ष

भारत की स्थिति

HDI रैंक (2023) : 130वाँ स्थान (2022 में 133वाँ)

HDI मान (Value) : 0.685 (2022 में 0.676)

वर्गीकरण : भारत मध्यम मानव विकास श्रेणी में बना हुआ है। हालाँकि, यह उच्च मानव विकास (HDI = 0. 700) की सीमा के निकट पहुँच रहा है।

भारत के पड़ोसी देशों की स्थिति : चीन (75वें), श्रीलंका (78वें) एवं भूटान (127वें) भारत से ऊपर हैं जबकि बांग्लादेश (130वें) की रैंकिंग बराबर है।

नेपाल (145वें), म्यांमार (149वें), पाकिस्तान (168वें) भारत से नीचे हैं।

संकेतक	2022	2023
जीवन प्रत्याशा	67.7 वर्ष	72 वर्ष
प्रत्याशित शिक्षा अवधि	12.6 वर्ष	13 वर्ष
औसत शिक्षा अवधि	6.57 वर्ष	9 वर्ष
प्रति व्यक्ति आय (GNI)	$ 6,951	$ 9,046.76

भारत की प्रगति के संकेत

इन आँकड़ों से स्पष्ट है कि भारत ने शिक्षा एवं स्वास्थ्य में ठोस प्रगति की है। साथ ही, आय स्तर में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया है।

वर्ष 1990 के बाद से भारत के एच.डी.आई. मूल्य में 53% से अधिक की वृद्धि हुई है जो वैश्विक एवं दक्षिण एशियाई औसत दोनों से अधिक तेजी से बढ़ रहा है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य

शीर्ष प्रदर्शन करने वाले देश

- आइसलैंड (0.972)
- नॉर्वे, स्विट्ज़रलैंड (दोनों 0.970)
- डेनमार्क
- जर्मनी
- स्वीडन
- निचले स्थान पर : दक्षिण सूडान (193वाँ स्थान), सोमालिया, मध्य अफ्रीकी गणराज्य

सन्दर्भ ग्रन्थ

United Nation Development Programme (UNDP)

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

उच्च शिक्षा में नवाचारी गतिविधियों की भूमिका

डॉ. सतीश चन्द मंगल
(शोध परियोजना निर्देशक)
उप-प्राचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सीटीई, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर
सम्पर्क : 8005508625
EMail: satishmangal009@gmail.com

डॉ. मुकेश कुमार शर्मा
(प्रमुख अन्वेषक) सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग,
जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
सम्पर्क : 9636460039
EMail: sharmamukeshg85@gmail.com

श्रीमती रूकमणी शर्मा
(सह-अन्वेषक) सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग,
जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
सम्पर्क : 7733889006
Email: sharmarukmanig@gmail.com

शोध सारांश

यह अनुसंधान पत्र 21वीं सदी में उच्च शिक्षा की परिवर्तित भूमिका और उसमें नवाचारी गतिविधियों की आवश्यकता को केन्द्र में रखकर प्रस्तुत किया गया है। वैश्वीकरण, डिजिटल क्रांति और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के इस युग में शिक्षा मात्र सूचना प्राप्ति का माध्यम न रहकर नवाचार, उद्यमशीलता, रचनात्मकता और समस्या समाधान जैसे मूल्यों पर आधारित एक सक्रिय प्रणाली बन गई है। इस परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा संस्थानों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे विद्यार्थियों को वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों हेतु तैयार करें। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य उच्च शिक्षा में प्रचलित नवाचारी गतिविधियों- नवाचारी प्रबंधकीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम (IMCBP), सतत मार्गदर्शन एवं कैरियर परामर्श कार्यक्रम (CGCCP) और नवाचारी शिक्षण-अधिगम संसाधन (ITLR) की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना था। परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि नवाचारी गतिविधियाँ छात्रों की अधिगम रुचि, आत्मविश्वास, करियर स्पष्टता एवं संवाद कौशल को बढ़ावा देती हैं। शिक्षकों द्वारा नवाचारी तकनीकों का अपनाना शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाता है। अतः यह अनुसंधान इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि नवाचार आधारित उच्च शिक्षा व्यवस्था, भारत को एक गुणवत्तापूर्ण और प्रतिस्पर्धात्मक समाज में रूपांतरित करने की दिशा में एक प्रभावी माध्यम बन सकती है।

मुख्य शब्दावली : नवाचार, उच्च शिक्षा, शिक्षण-अधिगम संसाधन, प्रबंधकीय क्षमता, करियर परामर्श, डिजिटल शिक्षा।

प्रस्तावना

21वीं सदी का परिदृश्य सूचना, संचार, तकनीक और नवाचार के तीव्र प्रसार का है, जिसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा, विशेषतः उच्च शिक्षा, इन परिवर्तनों से अछूती नहीं रही है। आज के युग में उच्च शिक्षा केवल ज्ञान के हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों को वैश्विक नागरिक, कुशल पेशेवर और उत्तरदायी मानव बनने के

लिए तैयार करने का माध्यम बन चुकी है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक हो गया है, जहाँ नवाचारी गतिविधियाँ एक केंद्रबिंदु के रूप में उभरती हैं।

'नवाचार' का सामान्य अर्थ है—किसी भी प्रक्रिया, उत्पाद या पद्धति में नवीनता लाना। जब शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को अपनाया जाता है, तो यह न केवल अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है, बल्कि शिक्षण को भी छात्र-केंद्रित, संवादात्मक और अनुभवजन्य बना देता है। उच्च शिक्षा संस्थानों को अब आवश्यकता है कि वे 'ज्ञान प्रदाता' से आगे बढ़कर 'ज्ञान निर्माता' और 'समस्या समाधानकर्ता' की भूमिका निभाएं। यह तभी संभव है जब नवाचार को संस्थागत ढांचे, पाठ्यक्रम, अध्यापन विधियों, मूल्यांकन प्रणाली और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में समाहित किया जाए।

भारत जैसे देश में, जहाँ जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवाओं का है, वहाँ नवाचारी शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 नवाचार को उच्च शिक्षा की आत्मा मानती है। यह नीति नवाचारी पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, शोध, मूल्यांकन और शैक्षणिक प्रशासन की स्थापना पर बल देती है। नीति यह भी स्पष्ट करती है कि विद्यार्थियों को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने हेतु नवाचार आवश्यक है।

उच्च शिक्षा संस्थानों में नवाचार का समावेश विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से किया जा रहा है। इनमें सबसे प्रभावशाली कार्यक्रमों में नवाचारी प्रबंधकीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम (IMCBP), सतत मार्गदर्शन एवं कैरियर परामर्श कार्यक्रम (CGCCP) और नवाचारी शिक्षण-अधिगम संसाधन (ITLR) है। इन नवाचारी गतिविधियों का प्रभाव बहुआयामी है। एक ओर जहाँ यह छात्रों के आत्मविश्वास, समस्या समाधान कौशल, निर्णय लेने की क्षमता और करियर स्पष्टता को बढ़ाता है, वहीं दूसरी ओर यह शिक्षकों की नवीन शिक्षण रणनीतियों को प्रोत्साहित करता है। यह समग्र शैक्षिक वातावरण को संवादात्मक, रचनात्मक और सृजनात्मक बनाता है। भारत में भी इस दिशा में प्रयास प्रारंभ हो चुके हैं, परंतु इसे और अधिक गति और गहराई प्रदान करने की आवश्यकता है।

नवाचार को केवल नीति के स्तर पर स्वीकार कर लेने से अपेक्षित परिवर्तन नहीं आएगा। जब तक इसे शिक्षा की संस्थागत संस्कृति का अभिन्न अंग नहीं बनाया जाएगा, तब तक यह सीमित प्रभाव ही छोड़ पाएगा। नवाचारी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को न केवल अकादमिक रूप से सशक्त बनाती हैं, बल्कि उन्हें सामाजिक, नैतिक और व्यावसायिक रूप से भी तैयार करती हैं।

इस प्रकार, उच्च शिक्षा में नवाचारी गतिविधियाँ वर्तमान युग की अनिवार्यता बन चुकी हैं। ये गतिविधियाँ केवल सूचना के स्थानांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया को साकार करती हैं। यह शोधपत्र इन्हीं विचारों, संदर्भों और आवश्यकताओं को स्पष्ट करते हुए यह तर्क प्रस्तुत करता है कि उच्च शिक्षा में नवाचार विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य हेतु एक सशक्त आधार तैयार कर सकते हैं। उच्च शिक्षा को नवाचार, अनुसंधान और विकास आधारित बनाना, 21वीं सदी की मांग है। यह शोधपत्र नवाचारी गतिविधियों की उच्च शिक्षा में भूमिका का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध का औचित्य

21वीं सदी के शैक्षणिक परिवेश में केवल विषय आधारित अधिगम पर्याप्त नहीं माना जा रहा है, बल्कि रचनात्मकता, डिजिटल साक्षरता, समस्या समाधान क्षमता, मानसिक सशक्तता, संवाद कौशल और नेतृत्व जैसे गुणों को भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना गया है। ऐसे में उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका केवल शैक्षणिक डिग्री प्रदान करने तक सीमित नहीं रह सकती। वे विद्यार्थियों को सामाजिक, मानसिक और व्यावसायिक रूप से तैयार करने के उत्तरदायित्व से भी जुड़े हैं। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए नवाचारी गतिविधियाँ एक सशक्त उपकरण बनकर उभरी हैं।

नवाचारी प्रबंधकीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम (IMCBP) शिक्षकों और प्रशासनिक कार्मिकों को नेतृत्व, डिजिटलीकरण, समस्या समाधान और समावेशी प्रबंधन जैसी दक्षताओं से सुसज्जित करता है। वर्तमान में कई उच्च शिक्षण संस्थान केवल परंपरागत प्रशासनिक प्रक्रियाओं में संलग्न हैं, जिससे शिक्षकों का नवाचार के प्रति दृष्टिकोण सीमित रहता है। IMCBP

शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें 21वीं सदी की शैक्षणिक चुनौतियों के अनुरूप तैयार करता है। यह नवाचार की नींव सुदृढ़ करता है और शिक्षण के स्तर पर बदलाव लाता है।

दूसरी ओर, सतत मार्गदर्शन एवं कैरियर परामर्श कार्यक्रम (CGCCP) विद्यार्थियों को न केवल करियर मार्गदर्शन प्रदान करता है, बल्कि वह मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, संवाद कौशल एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में भी मदद करता है। भारत में अधिकांश उच्च शिक्षा संस्थानों में कैरियर परामर्श की सुव्यवस्थित व्यवस्था का अभाव है। इस स्थिति में CGCCP छात्रों के समग्र विकास हेतु एक नवाचारी समाधान प्रस्तुत करता है, जो विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

तीसरा स्तंभ है, नवाचारी शिक्षण-अधिगम संसाधन (ITLR), जो शिक्षण प्रक्रिया को डिजिटल, संवादात्मक एवं अनुभवाधारित बनाते हैं। परंपरागत कक्षा आधारित व्याख्यान प्रणाली अब विद्यार्थियों की सीखने की जिज्ञासा को पूर्णतः संतुष्ट नहीं कर पाती। ITLR जैसे संसाधन, जैसे- ई-कंटेंट, वर्चुअल लैब्स, स्वै प्लेटफ़ॉर्म, ऑडियो-विजुअल शिक्षण, इंटरएक्टिव गतिविधियाँ आदि अधिगम को अधिक प्रभावी और व्यावसायिक बनाते हैं।

NEP 2020 में स्पष्ट रूप से नवाचार, लचीलापन और गुणवत्ता को प्राथमिकता दी गई है, परंतु नवाचारी कार्यक्रमों की व्यवहारिक प्रभावशीलता, स्वीकार्यता और दीर्घकालिक लाभों पर आधारित शोध सीमित हैं। यह शोध उस रिक्त स्थान को भरता है जहाँ नीति, प्रयोग और मूल्यांकन के बीच संतुलन की आवश्यकता है। भारत जैसे विकासशील देश में उच्च शिक्षा प्रणाली को अधिक सशक्त, व्यावसायिक, प्रयोगात्मक और अनुसंधानपरक बनाए बिना वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ना कठिन है। वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय पारंपरिक ढर्रे पर कार्य कर रहे हैं, जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता, उद्यमशीलता और समस्या समाधान की क्षमता का अभाव रहता है। इस शोध का औचित्य इस विचार में निहित है कि नवाचार के माध्यम से न केवल शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

शोध के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में नवाचारी प्रबंधकीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रमों (IMCBP) का विश्लेषण करना।
2. सतत मार्गदर्शन एवं कैरियर परामर्श कार्यक्रम (CGCCP) की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
3. नवाचारी शिक्षण-अधिगम संसाधनों (ITLR) के प्रयोग का मूल्यांकन करना।

नवाचार की अवधारणा और उच्च शिक्षा में इसकी प्रासंगिकतारू

'नवाचार' शब्द का शाब्दिक अर्थ है : 'नव अर्थात नया' और 'आचार अर्थात व्यवहार या कार्य'। अर्थात, नवाचार वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी कार्य, सोच, दृष्टिकोण, प्रणाली या उत्पाद में नवीनता लाई जाती है ताकि समस्याओं का प्रभावी समाधान प्राप्त हो सके या गुणवत्ता में वृद्धि की जा सके। यह केवल तकनीकी आविष्कारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और प्रबंधन के क्षेत्रों में भी उतना ही महत्वपूर्ण है। विशेषकर उच्च शिक्षा में नवाचार की भूमिका बहुआयामी और अत्यंत प्रासंगिक है।

उच्च शिक्षा केवल विषयवस्तु के ज्ञान तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह छात्रों को रचनात्मक, विश्लेषणात्मक, नैतिक एवं व्यावसायिक रूप से सक्षम नागरिक बनाने का माध्यम बन गई है। ऐसे में, नवाचार ही वह तत्व है जो शिक्षा को जीवंत, प्रासंगिक और परिणामोन्मुखी बनाता है। यह पाठ्यक्रम की रूपरेखा, अध्यापन की विधियाँ, मूल्यांकन की प्रक्रिया, अनुसंधान की दिशा, और यहां तक कि शैक्षणिक संस्थानों के प्रशासन तक में लागू किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नवाचार को शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन का केंद्रीय तत्व माना गया है। इस नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षकों को स्वायत्तता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाए जिससे वे नवीन अध्यापन विधियों को अपनाने हेतु प्रेरित हो सकें। इसी प्रकार छात्रों को स्व-निर्देशित अधिगम, जिज्ञासा-आधारित शिक्षण और समस्या समाधान आधारित परियोजनाओं में संलग्न

किया जाना चाहिए।

उच्च शिक्षा में नवाचार का दायरा बहुत व्यापक है। इसमें फ्लिप्ड क्लासरूम, ई-लर्निंग, MOOC, इंटरडिसिप्लिनरी पाठ्यक्रम, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित मूल्यांकन, वर्चुअल लैब्स, स्किल सेंटर आदि जैसे नवाचारों को सम्मिलित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, संस्थानों के प्रशासनिक क्षेत्र में ई-गवर्नेंस, डिजिटल फाइल प्रबंधन, डैशबोर्ड विश्लेषण आदि नवाचारों का भी समावेश किया जा रहा है। नवाचार न केवल शैक्षणिक गुणवत्ता को बढ़ाता है, बल्कि यह विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने में भी सहायक होता है। उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए आवश्यक है कि वे नवाचार को अपनी संस्कृति का अभिन्न अंग बनाएं और इसे केवल प्रयोगात्मक न मानकर नियमित प्रणाली का हिस्सा बनाएं।

प्रमुख नवाचारी गतिविधियाँ

1. नवाचारी प्रबंधकीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम (IMCBP)

यह कार्यक्रम शिक्षकों, विभागाध्यक्षों और प्रशासकीय अधिकारियों को नवीनतम प्रबंधन विधियों का प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसमें ई-गवर्नेंस, डिजिटल फाइलिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित निर्णय प्रणाली, डेटा विश्लेषण, टीम नेतृत्व और संकट प्रबंधन जैसी क्षमताओं को उन्नत किया जाता है। IMCBP के माध्यम से शैक्षिक संस्थानों में प्रशासन अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और तकनीकी रूप से सक्षम बनता है। इससे नीति निर्धारण में सटीकता आती है और संस्था की रैंकिंग, मूल्यांकन एवं शैक्षणिक वातावरण में सुधार होता है।

2. सतत मार्गदर्शन एवं कैरियर परामर्श कार्यक्रम (CGCCP)

CGCCP का उद्देश्य विद्यार्थियों को करियर संबंधित स्पष्टता, आत्म-विश्लेषण, मानसिक सुदृढ़ता एवं रोजगार हेतु तैयार करना है। इसमें साक्षात्कार की तैयारी, समूह चर्चा, व्यक्तित्व विकास, जीवन कौशल तथा करियर विकल्पों की जानकारी दी जाती है। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को केवल डिग्रीधारी नहीं बल्कि आत्मनिर्भर एवं उद्देश्यपूर्ण नागरिक बनाने में सहयोग करता है। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के छात्रों के लिए यह मार्गदर्शन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

3. नवाचारी शिक्षण-अधिगम संसाधन (ITLR)

ITLR के अंतर्गत शिक्षण को अधिक संवादात्मक, रुचिकर और प्रासंगिक बनाया जाता है। इसमें स्मार्ट बोर्ड, ई-कंटेंट, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (स्डै), मासिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOC), आभासी प्रयोगशालाएँ, फ्लिप्ड क्लासरूम और ऑडियो-विजुअल सामग्री का प्रयोग किया जाता है। ये सभी संसाधन छात्र को पारंपरिक कक्षा की सीमाओं से निकालकर वैश्विक और व्यावहारिक अधिगम की दिशा में प्रेरित करते हैं।

शोध पद्धति व नमूना चयन

इस शोध में मिश्रित विधि का प्रयोग किया गया। नमूना चयन के लिए कुल 270 विद्यार्थी और 30 शिक्षकों को सुलभ नमूना तकनीक से चयनित किया गया।

डेटा संग्रहण उपकरण

- छात्रों और शिक्षकों के लिए समान संरचना वाली प्रतिपुष्टि प्रश्नावली
- पर्यवेक्षण
- साक्षात्कार
- मौलिक लेखअध्ययन।

आंकड़ों का संकलन, ग्राफीय निरूपण एवं विश्लेषण

- प्राप्त आंकड़ों को एक्सेल में संकलित कर बार ग्राफ के माध्यम से विश्लेषण किया गया।

तालिका 1. नवाचारी गतिविधियों की उपयोगिता पर प्रतिभागियों द्वारा प्रतिपुष्टि प्रतिक्रियाएँ

नवाचार विधि	सहमत (%)	असहमत (%)	अनिश्चित (%)
स्मार्ट क्लास	90%	5%	5%
ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म	87%	8%	5%
परियोजना आधारित अध्ययन	85%	10%	5%

तालिका 1. नवाचारी गतिविधियों की उपयोगिता पर प्रतिभागियों द्वारा प्रतिपुष्टि प्रतिक्रियाएँ

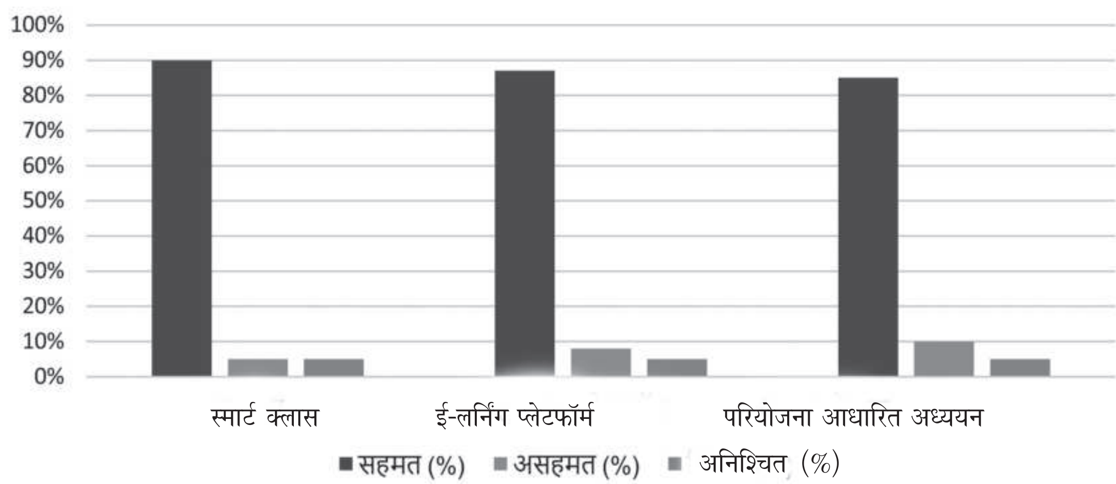

तालिका संख्या-1 में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार स्मार्ट क्लास को 90%, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म को 87% और परियोजना आधारित अध्ययन को 85% प्रतिभागियों ने उपयोगी और प्रभावी माना है। केवल 5-10% प्रतिभागी ही असहमत या अनिश्चित हैं, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश शिक्षार्थी और शिक्षक नवाचारी उपायों को सकारात्मक रूप में ग्रहण कर रहे हैं। उच्च शिक्षा में नवाचारी गतिविधियाँ जैसे स्मार्ट क्लास, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म तथा परियोजना आधारित अध्ययन शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

तालिका 2. प्रमुख नवाचारी गतिविधियों पर प्रतिभागियों द्वारा प्रतिपुष्टि प्रतिक्रियाएँ

आयाम	सकारात्मक (%)	नकारात्मक (%)	अनिश्चित (%)
CGCCP कार्यक्रम	70%	20%	10%
IMCBP की जानकारी	60%	25%	15%
ITLR का अनुभव	82%	10%	8%

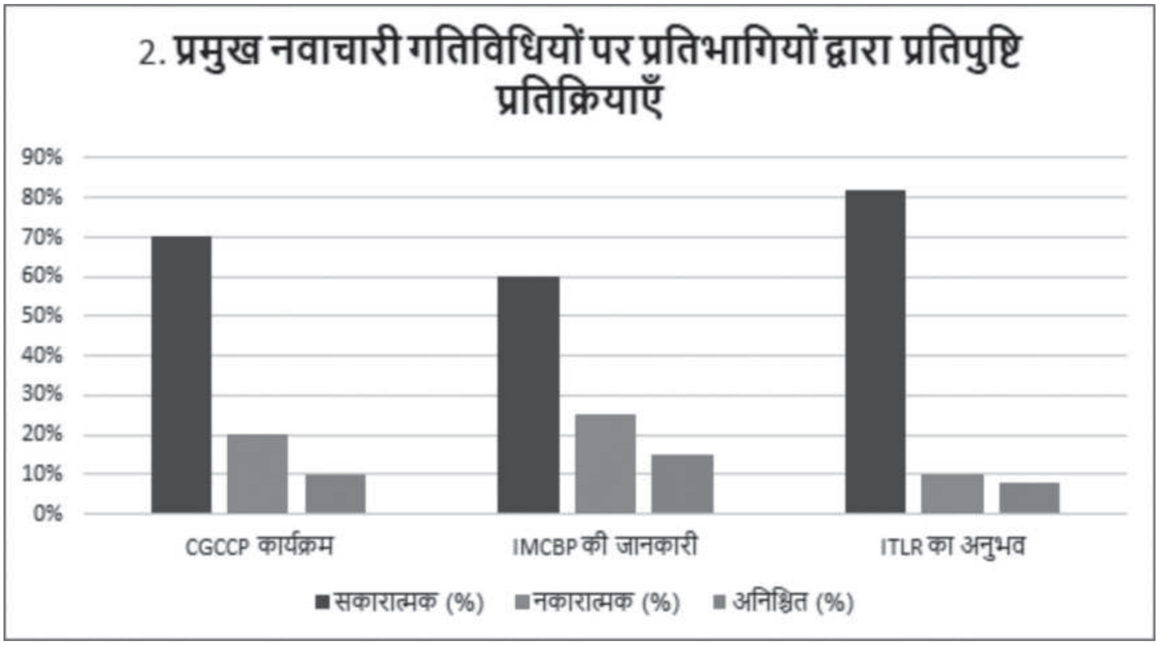

तालिका संख्या-2 में CGCCP को 70% प्रतिभागियों ने सहायक माना, जिससे स्पष्ट है कि सतत मार्गदर्शन छात्रों के करियर निर्माण में सहायक है, हालांकि 20% असहमत और 10% अनिश्चित प्रतिभागी इसकी पहुँच या प्रभावशीलता पर सवाल उठाते हैं। IMCBP की जानकारी 60% को थी, परंतु 25% असहमत और 15% अनिश्चित प्रतिक्रियाएँ बताती हैं कि नवाचार विधियों के प्रति प्रशिक्षण व जागरूकता की आवश्यकता है। वहीं ITLR को 82% प्रतिभागियों ने सकारात्मक अनुभव बताया, जिससे यह सिद्ध होता है कि नवाचारी संसाधन शिक्षा को प्रभावी व सहभागी बनाते हैं। केवल 10% असहमत व 8% अनिश्चित रहे। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि अधिकांश छात्र नवाचारों को सकारात्मक रूप में स्वीकारते हैं, परन्तु समावेशिता हेतु निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार ITLR नवाचार सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं।

शोध की उपलब्धियाँ

1. गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की पुष्टि- शोध ने यह सिद्ध किया कि नवाचारी गतिविधियाँ जैसे IMCBP, CGCCP एवं ITLR उच्च शिक्षा में शिक्षण की गुणवत्ता, सहभागिता और प्रभावशीलता को बेहतर बनाती हैं।

2. नेतृत्व एवं प्रबंधकीय क्षमता का विकास- IMCBP कार्यक्रमों के अंतर्गत छात्रों में नेतृत्व, समस्या समाधान और संवाद-क्षमता जैसी व्यावसायिक दक्षताओं का संवर्धन हुआ।

3. करियर मार्गदर्शन की प्रभावशीलता- CGCCP के माध्यम से विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक और व्यावसायिक निर्णयों में सहायता मिली, जिससे उनकी दिशा और दृष्टि दोनों स्पष्ट हुई।

4. डिजिटल संसाधनों के प्रभाव का आकलन- ITLR के प्रयोग ने छात्रों के अधिगम को अधिक संवादात्मक, तकनीकी-सक्षम और व्यक्तिगत बनाया, जिससे अधिगम की गहराई व रोचकता बढ़ी।

5. शिक्षकों में नवाचार की स्वीकृति- शिक्षकों ने नवाचारी गतिविधियों को अपनाकर अपनी शिक्षण पद्धति में विविधता, प्रयोगशीलता और परिणामोन्मुखी दृष्टिकोण को आत्मसात किया।

6. शोधार्थियों एवं नीति निर्माताओं हेतु मार्गदर्शन- यह शोध उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों के नियोजन, क्रियान्वयन व मूल्यांकन के लिए ठोस सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक आधार प्रदान करता है।

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा वर्तमान समय में केवल सूचना देने का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह एक समग्र, नवाचारी और समावेशी विकास की दिशा में गतिशील प्रक्रिया बन चुकी है। प्रस्तुत शोध में यह स्पष्ट हुआ कि नवाचारी गतिविधियाँ उच्च शिक्षा संस्थानों की शिक्षण-पद्धति, विद्यार्थी सहभागिता, मूल्यांकन प्रणाली तथा व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका निभा रही हैं। शिक्षण कक्षाओं में प्रयोग होने वाली नवाचारी गतिविधियाँ जैसे कि स्मार्ट क्लास, ई-लर्निंग, परियोजना-आधारित अध्ययन, सतत मार्गदर्शन कार्यक्रम, नवाचारी अधिगम संसाधन आदि छात्रों को न केवल अकादमिक रूप से सक्षम बनाती हैं, बल्कि उनमें समस्या समाधान, रचनात्मकता, संवाद क्षमता एवं निर्णय लेने की योग्यता भी विकसित करती हैं।

शोध में सम्मिलित प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं से यह स्पष्ट होता है कि नवाचार-आधारित गतिविधियाँ शिक्षण को अधिक रुचिकर, व्यावहारिक और प्रासंगिक बनाती हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की जटिलताओं को समझने, विचार करने और कार्यान्वयन करने हेतु प्रेरित करती हैं। शिक्षकों द्वारा नवाचारी गतिविधियों के उपयोग से शिक्षण प्रक्रिया अधिक संवादात्मक और प्रेरक बनती है, जिससे छात्र केवल श्रोता नहीं, बल्कि सहभागी और सृजनात्मक बन जाते हैं। विशेषज्ञों के दृष्टिकोण से भी यह निष्कर्ष निकलता है कि नवाचार की प्रवृत्ति एक सतत प्रक्रिया है, जिसे केवल तकनीक तक सीमित नहीं किया जा सकता। यह पाठ्यचर्या, मूल्यांकन, शिक्षण रणनीतियों, संस्थागत वातावरण और नीति-निर्माण तक फैली हुई एक समग्र दृष्टि है। नवाचारी गतिविधियाँ संस्थानों की प्रतिस्पर्धात्मकता, गुणवत्ता और उत्तरदायित्व को बढ़ाती हैं तथा उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक बनाने में सहायक होती हैं। हालाँकि, यह भी देखा गया कि इन गतिविधियों के प्रभावी क्रियान्वयन में कुछ बाधाएँ विद्यमान हैं, जैसे—प्रशिक्षण की कमी, तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता, समय का अभाव एवं संस्थागत स्तर पर नवाचार के प्रति स्पष्ट नीति का अभाव। फिर भी, इन सीमाओं के बावजूद, यह शोध इस तथ्य को दृढ़ता से प्रमाणित करता है कि यदि नवाचारी गतिविधियों को व्यवस्थित, सुसंगत और सशक्त रूप से अपनाया जाए, तो वे उच्च शिक्षा को केवल डिग्री-आधारित नहीं, बल्कि ज्ञान और कौशल पर आधारित गुणवत्तापूर्ण बनाने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ सूची

1. आचार्य, जे. टी. (2022). भारतीय उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और नवाचार. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
2. एनसीईआरटी. (2023). शिक्षण अधिगम संसाधनों का नवाचार एवं विकास. नई दिल्ली : एनसीईआरटी प्रकाशन.
3. चौधरी, आर. के. (2024). कैरियर परामर्श और सतत मार्गदर्शन के नवीन आयाम. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 18(2), 88-95.
4. गोयल, वी., - त्रिपाठी, एस. (2022). डिजिटल अधिगम संसाधनों का समावेश और चुनौतियाँ. तकनीकी शिक्षा पत्रिका, 15(4), 67-75.
5. मेहता, ए. (2025). उच्च शिक्षा में नवाचार आधारित प्रशासनिक रणनीतियाँ. शिक्षा एवं अनुसंधान पत्रिका, 20(1), 11-20.
6. मिश्रा, एस. (2023). शिक्षण अधिगम में तकनीकी नवाचार : एक मूल्यांकन. अंतरराष्ट्रीय शिक्षा शोध पत्रिका, 12(1), 45 53.
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी). (2020). नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय.
8. सिंह, पी. (2023). ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म का उच्च शिक्षा में प्रभाव : एक अध्ययन. शैक्षिक नवाचार जर्नल, 10(3), 101-110.
9. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी). (2021). भारतीय उच्च शिक्षा में नवाचार की दिशा, नई दिल्ली : यूजीसी प्रकाशन.
10. https://www.educationalvip.com

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियाँ एवं सुझाव

डॉ. कुमुद श्रीवास्तव
(प्राध्यापक शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा मध्य प्रदेश)

आयुषी गोल्हानी
(शोधार्थी)

सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों की भूमिका विकास, नवाचार और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। हालाँकि, उद्यमिता में महिलाओं को कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो आर्थिक विकास में पूरी तरह से योगदान करने की उनकी क्षमता को बाधित करती हैं। ये चुनौतियाँ सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत कारकों से और भी जटिल हो जाती हैं। यह शोधपत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में महिला उद्यमियों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों का पता लगाता है, व्यापार प्रदर्शन और विकास पर उनके प्रभाव की जाँच करता है, और इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि इन बाधाओं को कैसे कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, शोधपत्र महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने और उन्हें अर्थव्यवस्था में कामयाब होने में सक्षम बनाने में नीतिगत हस्तक्षेप और सामाजिक परिवर्तनों के महत्व पर प्रकाश डालता है। मौजूदा साहित्य और केस स्टडीज़ के गहन विश्लेषण के माध्यम से, शोधपत्र उन रणनीतियों की पहचान करता है जो उद्यमशीलता के उपक्रमों में लैंगिक समानता और संधारणीयता को बढ़ावा दे सकती हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। महिला उद्यमियों की धीमी प्रगति के कारण और सतत अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के विकास के लिए सुझाव।

शब्दकोष : महिला उद्यमी, सतत अर्थव्यवस्था, लैंगिक समानता, चुनौतियाँ, नीतिगत हस्तक्षेप, सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ, नवाचार, स्थिरता, कौशल, प्रशिक्षण, विकास।

परिचय

आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए उद्यमिता के महत्व को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है, और अधिक टिकाऊ अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण में यह भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्थाएं स्थिरता की ओर बढ़ रही हैं, महिला उद्यमियों की भूमिका न केवल आर्थिक प्रगति के लिए बल्कि सामाजिक समानता, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

महिला उद्यमिता, विशेष रूप से एक स्थायी अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक परिणामों को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वैश्विक स्तर पर उद्यमशीलता के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के बावजूद, महिलाओं को अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो एक स्थायी अर्थव्यवस्था में पूरी तरह से शामिल

होने और योगदान करने की उनकी क्षमता को कमजोर करती हैं। ये चुनौतियाँ बहुआयामी हैं और इनमें लिंग आधारित भेदभाव से लेकर वित्तीय संसाधनों, शिक्षा और नेटवर्किंग अवसरों तक पहुँच की कमी तक शामिल है।

यह आलेख इन चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा इन पर काबू पाने के लिए समाधान सुझाता है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि महिला उद्यमी एक स्थायी आर्थिक ढांचे के भीतर फल-फूल सकें।

महिला उद्यमिता से आशय

महिला उद्यमिता से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा महिलाएँ व्यवसायों को संगठित, प्रबंधित और संचालित करती हैं, अक्सर वित्तीय लाभ के अलावा सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करते हुए। महिला उद्यमियों के पास अक्सर व्यवसाय पर एक अनूठा दृष्टिकोण होता है, जो सामाजिक कल्याण, सामुदायिक विकास और स्थिरता को प्राथमिकता देता है। उद्यमिता में महिलाएँ, विशेष रूप से टिकाऊ व्यावसायिक प्रथाओं के संदर्भ में, पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों, सेवाओं और व्यवसाय मॉडल में नवाचार का नेतृत्व कर सकती हैं।

समान अवसर, अनंत संभावनाएं

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के सामने आने वाली मुख्य बाधाओं को पहचानें।
2. प्रभावी समाधान तैयार करें तथा भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के विकास के लिए कुछ सुझाव दें।
3. महिला उद्यमियों को उनके व्यवसाय प्रबंधन और नेतृत्व कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम प्रदान करना।
4. प्रौद्योगिकी का उचित उपयोग, आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण सत्र लें और नई चीजें सीखें।

शोध तकनीक

अध्ययन के लिए प्रयुक्त डेटा द्वितीयक डेटा है, जिसमें आधिकारिक वेबसाइट, जर्नल, पत्रिकाएं और लेखक द्वारा समीक्षा किए गए विभिन्न शोध पत्रों पर आधारित लेख शामिल हैं, क्योंकि डेटा द्वितीयक है, यह अधिक भरोसेमंद और विश्वसनीय है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के सामने चुनौतियाँ

1. लिंग आधारित भेदभाव

लिंग आधारित भेदभाव कई समाजों और कारोबारी माहौल में एक व्यापक मुद्दा बना हुआ है। यह भेदभाव महिला उद्यमियों को कई तरह से प्रभावित करता है :

रूढ़िबद्धता और पूर्वाग्रहः महिलाओं को अक्सर व्यवसाय में कम सक्षम या कम योग्य माना जाता है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जिन्हें पुरुष-प्रधान माना जाता है, जैसे प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग या स्वच्छ ऊर्जा।

सांस्कृतिक बाधाएं : कुछ संस्कृतियों में, महिलाओं से घरेलू जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करने की अपेक्षा की जाती है, जिससे उद्यमशीलता के क्षेत्र में आगे बढ़ने या अपने व्यवसाय को बढ़ाने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है।

उच्च-स्तरीय नेटवर्क तक सीमित पहुँच : व्यावसायिक नेटवर्क अक्सर पुरुष-प्रधान होते हैं, जो महिलाओं को महत्वपूर्ण जानकारी, संसाधनों और मार्गदर्शन तक पहुँचने से रोक सकते हैं। यह एक स्थायी अर्थव्यवस्था में अपने व्यवसाय को बढ़ाने की उनकी क्षमता को सीमित करता है।

2. वित्त तक पहुंच

महिला उद्यमियों के लिए पूंजी तक पहुंच सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक बनी हुई है, विशेष रूप से टिकाऊ अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकियां और टिकाऊ कृषि।

फंडिंग गैप : महिला उद्यमियों को अक्सर पारंपरिक स्रोतों, जैसे कि वेंचर कैपिटल, बैंक या सरकारी अनुदान से फंडिंग प्राप्त करने में संघर्ष करना पड़ता है। वित्तीय संस्थान अक्सर महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों को उच्च जोखिम वाले उद्यम के रूप में देखते हैं या इन व्यवसायों की दीर्घकालिक स्थिरता को कम आंकते हैं।

3. सीमित मेंटरशिप और नेटवर्किंग के अवसर

उद्यमियों की सफलता में मेंटरशिप और नेटवर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, सलाह, व्यावसायिक संपर्क और संसाधन प्रदान करते हैं। हालाँकि, महिला उद्यमियों को अक्सर इन प्रमुख तत्वों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैः

पुरुष-प्रधान व्यावसायिक नेटवर्क : कई उद्यमशील नेटवर्क पर पुरुषों का प्रभुत्व है, जो महिलाओं की संभावित सलाहकारों, साझेदारों और निवेशकों से जुड़ने की क्षमता को सीमित करता है।

सांस्कृतिक और सामाजिक चुनौतियाँ : कुछ क्षेत्रों में, महिला उद्यमियों को सामाजिक अपेक्षाओं और मानदंडों के कारण सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ता है, जो उन्हें उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र में पूरी तरह से भाग लेने से रोकता है।

4. शैक्षिक और कौशल अंतराल

कई महिला उद्यमियों के पास व्यवसाय शुरू करने और उसे बढ़ाने के लिए आवश्यक शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच का अभाव है, विशेष रूप से स्थिरता से संबंधित क्षेत्रों में।

शिक्षा तक कम पहुंच : कई देशों में, ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की पुरुषों की तुलना में शिक्षा तक कम पहुंच रही है, जिससे उद्यमिता के लिए आवश्यक कौशल हासिल करने की उनकी क्षमता सीमित हो गई है, विशेष रूप से तकनीकी या उच्च विकास वाले उद्योगों जैसे स्वच्छ ऊर्जा या टिकाऊ कृषि में।

स्थिरता पर सीमित प्रशिक्षण : जबकि महिलाओं में उद्यमशीलता की आकांक्षाएँ हो सकती हैं, उन्हें स्थायी व्यवसाय प्रथाओं में प्रशिक्षण तक पहुँच नहीं हो सकती है। इसमें टिकाऊ आपूर्ति श्रृंखला, हरित प्रौद्योगिकी, पर्यावरण विनियमन और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी को समझना शामिल है।

उद्यमशीलता कौशल : महिलाओं में व्यवसाय प्रबंधन, वित्त और विपणन से संबंधित कौशल की भी कमी हो सकती है, जो टिकाऊ व्यवसायों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आवश्यक हैं।

5. प्रौद्योगिकी तक पहुंच का अभाव

एक स्थायी अर्थव्यवस्था में, तकनीकी नवाचार महत्वपूर्ण है, खासकर स्वच्छ ऊर्जा, कृषि और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में। हालाँकि, महिला उद्यमियों के पास अक्सर इन नवाचारों को अपनाने और लागू करने के लिए आवश्यक तकनीक और संसाधनों तक पहुँच कम होती है।

प्रौद्योगिकी विभाजन : कई विकासशील देशों में, महिलाओं की डिजिटल प्रौद्योगिकियों तक पहुंच कम है, जिससे उनकी तकनीक -आधारित उद्यमशीलता में शामिल होने या अपने व्यवसाय मॉडल में प्रौद्योगिकी को शामिल करने की क्षमता सीमित हो जाती है।

तकनीकी साक्षरता : महिलाओं में तकनीकी साक्षरता का स्तर कम हो सकता है, जिससे उनके लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाना और उनका उपयोग करना कठिन हो सकता है, जो टिकाऊ व्यवसाय चलाने के लिए आवश्यक हैं।

6. टिकाऊ उत्पादों के लिए बाजार पहुंच और मांग

महिला उद्यमियों को बाजार तक पहुंचने या अपनी टिकाऊ पेशकशों के लिए मांग का निर्माण करने में चुनौतियों का

सामना करना पड़ सकता है।

सीमित बाजार दृश्यता : महिला उद्यमियों को नए बाजारों में प्रवेश करने या अपने स्थायी उत्पादों और सेवाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने में कठिनाई हो सकती है। यह सीमित विपणन संसाधनों या बाजार तक पहुंच की कमी के कारण हो सकता है।

मूल्य संवेदनशीलता : कुछ बाज़ारों में, स्थिरता और सामर्थ्य के बीच एक समझौता होता है। स्थायी अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों को पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों की पेशकश करने की आवश्यकता और उन्हें व्यापक दर्शकों के लिए किफ़ायती बनाने की चुनौती के बीच संतुलन बनाना होगा।

7. पर्यावरण संबंधी बाधाएं

अर्थव्यवस्था में व्यवसाय चलाने के लिए अक्सर पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए नवीन दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है। हालाँकि, नवीकरणीय ऊर्जा या संधारणीय कृषि जैसे क्षेत्रों में महिला उद्यमियों को अपने उद्योग के लिए अद्वितीय चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है :

संसाधनों तक पहुँच : संधारणीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों को संधारणीय कच्चे माल या पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों तक पहुँचने में संघर्ष करना पड़ सकता है। यह छोटे पैमाने के व्यवसायों के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है, जिनके पास पर्यावरण के अनुकूल संसाधनों तक पहुँचने की क्रय शक्ति नहीं हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन प्रभाव : कमजोर क्षेत्रों में महिला उद्यमियों को जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों का भी सामना करना पड़ सकता है, जो आपूर्ति शृंखलाओं, उत्पादन प्रक्रियाओं और टिकाऊ वस्तुओं की बाजार मांग को बाधित कर सकता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के विकास के लिए सुझाव

1. लिंग- समावेशी नीतियों को प्रोत्साहित करना
2. वित्त तक पहुंच बढ़ाना
3. शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों में सुधार
4. टिकाऊ उपभोग और हरित नवाचार को बढ़ावा देना
5. सहायक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना
6. नेतृत्वकारी भूमिकाओं में महिला प्रतिनिधित्व को प्रोत्साहित करना

निष्कर्ष

महिला उद्यमी सतत आर्थिक विकास की महत्वपूर्ण चालक हैं, फिर भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र में उनकी पूर्ण भागीदारी को बाधित करती हैं। लिंग भेदभाव, वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच, मार्गदर्शन की कमी और अपर्याप्त शिक्षा महत्वपूर्ण बाधाएं हैं जिन्हें अधिक समावेशी और टिकाऊ अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है। महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने वाली नीतियों और कार्यक्रमों को बनाने में सरकारों, वित्तीय संस्थानों और शैक्षिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

महिला उद्यमियों की पूरी क्षमता को उजागर करने के लिए, उन्हें आवश्यक संसाधन, नेटवर्क और शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है, साथ ही उन प्रणालीगत बाधाओं को भी समाप्त करना है जो ऐतिहासिक रूप से उनकी प्रगति में बाधा डालती रही हैं। महिलाओं के लिए समावेशी और सहायक उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि महिलाएँ एक स्थायी अर्थव्यवस्था के विकास में पूरी तरह से योगदान दें जिससे समाज के सभी सदस्यों को लाभ हो।

संदर्भ ग्रंथसूची

जोनाथन पोरिट द्वारा लिखित द सस्टेनेबल इकॉनमी : द हिडन कॉस्ट्स ऑफ द वर्ल्ड्स ग्रेटेस्ट चैलेंज
एलेक्स निकोल्स और चार्लोट ओपल द्वारा 'सस्टेनेबल एंटरप्रेन्योरशिप : सस्टेनेबिलिटी' के माध्यम से व्यावसायिक सफलता
एक स्थायी अर्थव्यवस्था में लिंग और उद्यमिता, एलिसिया एच. एम. एफ. मोफैट, आर. एम. ब्लैकवुड द्वारा
'महिला उद्यमियों का उदय : लोग, प्रक्रियाएँ और वैश्विक रुझान', पेट्रीसिया जी. ओशे और करेन एल. बुरचर्ड द्वारा
अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (आईएफसी) द्वारा 'महिला उद्यमियों का सशक्तिकरण'

वेबसाइटें -

संयुक्त राष्ट्र महिला
(www.unwomen.org)
एनएडब्लूबीओ
(www.nawbo.org)
संयुक्त राष्ट्र एसडीजी
(https://sustainabledevelopment.un.org)

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भारत में पंचायती राज संरचना का विकास एवं कार्यप्रणाली

सुरेश चन्द
Father Name : Oma Ram Tetarwal
VPO- Jarau Kallan, Tehsil- Riyan Badi, Dist- Nagaur (Rajasthan) : 341513
M-No- 9672948551

प्रस्तावना

भारत गांवों का देश है। भारत की आत्मा गांवों मे बसती है और गांवों का विकास स्थानीय स्वाशासन से ही संभव है। स्थानीय स्वशासन ग्रामों के शासन से संबंधित अवधारणा है। स्थानीय स्वशासन से तात्पर्य शासन की उस प्रणाली से है, जिसमें निचले स्तर पर लोगों को भागीदार बनाकर लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण को सुनिश्चित किया जाता है तथा लोगों को अपनी समस्याएं स्वयं हल करने के लिए सक्षम बनाया जाता है। स्थानीय स्वशासन पंचायती राज व्यवस्था को ही दूसरा नाम है। स्थानीय लोगों के द्वारा स्वयं पर किया गया शासन ही स्थानीय स्वशासन है। पंचायती राज व्यवस्था के द्वारा ही देश के प्रत्येक हिस्से में निवास करने वाले लोगों का विकास हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में ही देश का विकास निहित है। इस दृष्टिकोण से पंचायती राज की अवहेलना करने का अर्थ है-विकास की गति के एक पहिए को रोकना। किसी भी देश के लिए ग्रामों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विकासों को नजरअंदाज करना सम्पूर्ण देश के विकास को अवरूद्ध करने के समान है। अतः ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज को एक ही सिक्के के दो पहलू कहा जा सकता है। महात्मा गांधी ने पंचायत का शाब्दिक अर्थ गांव के लोगो द्वारा चुने हुए पांच व्यक्तियों की सभा से लिया है।

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय सलाहकार परिषद को अधिक सशक्त बनाते हुए, अन्य विभागों के साथ इसका पूर्ण समन्वय हो। इसके निर्णय सभी विभागों को मंजूर होने चाहिए। ग्रामसभा को अधिक प्रभावशाली बनाते हुए इन्हें सशक्त किया जाना चाहिए।

जिला स्तर पर गठित पंचायत का नाम स्वायतशासी जिला परिषद हों। छठीं सूची में डिस्ट्रिक्ट काउंसिल्स को अपने क्षेत्र में कार्यपालिका, विकास एवं वित्तीय के अतिरिक्त विधायी शक्तियां भी प्राप्त है। पचास प्रतिशत से अधिक जनजाति वाले क्षेत्रों में स्वायत शासनीय उप जिला परिषद की स्थापना की जानी चाहिए।

पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996

जनजाति समुदाय की भावनाओं और दिलीप सिंह भूरिया समिति की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए दिसम्बर 1996 में संसद में इससे संबंधित विधेयक पेश हुआ जो कि राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद 24 दिसम्बर 1996 को लागु हुआ। इसका नाम पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 रखा गया। यह अधिनियम पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 रखा गया। यह अधिनियम पीसा या पेशा नाम से पुकारा जाता है। यह उन आठ राज्यों में लागू

है, जहां अनुच्छेद 244(1) के अन्तर्गत पांचवी अनुसूची के प्रावधान प्रवर्तित है। छठीं अनुसूची में शामिल मिजोरम, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड तथा त्रिपुरा के जनजाति क्षेत्रों पर यह लागु नहीं होता है। जनजाति संस्कृति को सुरक्षित रखना भी इसका लक्ष्य है। ग्रामसभा को सक्षत बनाकर प्रजातंत्र के मूल्यो का बढ़ाना भी इसका ध्येय है।

1996 के पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 के मुख्य प्रावधान निम्न है।

जनजाति क्षेत्रों के लिए बनने वाले निम्न ग्राम सभा के सदस्य सभी व्यस्क पारम्परिक नागरिक होंगे। तथा ग्राम की सभी योजनाओं का अनुमोदन इसके द्वारा किया जायेगा। गरीब लोगों के चयन का कार्य भी इसी को करना होगा। प्रत्येक योजना में व्यय राषि का ब्यौरा भी ग्राम सभा प्रदान कर सकेंगी।

यह ग्राम सभा बाजार-हाटर का प्रबंध करेगी। वन क्षेत्र से प्राप्त अनेक उपजों जैसे गोंद, तेंदु आदि पर ग्राम सभा का स्वामित्व होगा। अनाधिकृत जमीन के कार्य का जिम्मा भी इसी को दिया गया।

ऐसे क्षेत्रों में महिलाओं को पचास प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया जाना अनिवार्य किया गया। सभी स्तर की संस्थाओं के अध्यक्ष जनजाति समुदाय के व्यक्ति ही हो सकते है।

मध्य स्तर तथा जिला स्तरीय पंचायतों में अगर जनजातियों के प्रतिनिधि निर्वाचित होकर नहीं आते तो राज्य सरकार कुल निर्वाचित सदस्यों के 1/10 स्थानों पर जनजाति के लोगों को मनोनीत करेगी।

इन क्षेत्रों में जमीन अधिग्रहण के मामलों को फैसला ग्राम सभा ही कर सकती है।

सर्वप्रथम मध्य प्रदेश राज्य ने अपने पंचायती राज अधिनियम में संषोधन कर इसे 5 दिसम्बर, 1997 को लागू किया। सन् 1998 में आंध्र प्रदेश, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र तथा उड़ीसा ने अपने पंचायती राज कानून संशोधित किए। राजस्थान ने इसे 26 जून, 1999 को राजस्थान पंचायती राज (उपबंधों को अनुसूचित क्षेत्रों में लागु होने के संबंध मं उपांतरण) अध्यादेश, 1999 जारी कर लागू किया था जिसे 30 दिसम्बर, 1999 को राज्यपाल की स्वीकृति मिलने से अधिनियम बनाया जा चुका है।

पंचायती राज की भूमिका एवं उत्तरदायित्व

भारत ग्रामों का देश कहलाता है। जिसकी अधिकांश आबादी गांवों मे रहती है। इसलिए देश के विकास की कल्पना गांवों के संग करना ही सार्थक हो सकता है। हमारे पूरे देश के गांवों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में पंचायती की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि यदि हमारी स्वाधीनता को जनता की आवाज की प्रतिध्वनि बनना है तो पंचायतों को जितनी अधिक शक्ति मिले, जनता के लिए उतना ही लाभदायक है। नेहरू जी के इस कथन को सार्थकता संवैधानिक संषोधन के द्वारा प्राप्त हुई है। संवैधानिक दर्जा मिलने से पंचायतों के संदर्भ में एकरूपता, वित्तीय सुदृढ़ता एवं व्यावहारिकता दिखाई देती है। वित्तीय अधिकारी को गारंटी भी इससे प्राप्त की गई है। इस प्रकार अब पंचायतों को सशक्त और प्रभावशाली विकास में योगदान निश्चित है। पंचायती राज व्यवस्था ने निम्नलिखित योगदान दिया है।

पंचायती राज व्यवस्था को सामान्यतः Grassroot Democracy के नाम से जाना जाता है। इसने धरातल के स्तर पर प्रजातंत्र की अवधारण को साकार किया है। जिससे विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया भी आसान हो गई है।

संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार 33 प्रतिशत स्थान महिलाओं के लिए सुरक्षित रखे गए है। फिर कुछ राज्यों ने जैसे मध्य प्रदेश, केरल, बिहार, राजस्थान ने इसे बढ़ाकर 50 प्रतिशत करके महिला सशक्तिकरण को गति प्रदान की है। महिलाओं को आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हुए है। इसी प्रावधानों के कारण महिलाएं पर्दे से बाहर आ सकी है।

देश में 1952 में लागू किए गये सामुदायिक विकास कार्यक्रम की असफलता का प्रमुख बिन्दुजन सहभागिता का अभाव था। इस अधिनियम के बाद केन्द्र और राज्य सरकारों के द्वारा योजनाओं का क्रियान्वयन पंचायतों के जरिये किया जाने लगा है जिससे विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला है देश की सबसे बड़ी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना

का सफल संचालन इसे साबित करता है।

अनेक पंचायतों ने समाज सुधार के कार्य भी किए है। जैसे नशाखोरों पर प्रतिबंध, मृत्यु भोज तथा दहेज प्रथा को बंद करना। समाज के सभी वर्गो को प्रतिनिधित्व मिलने से सामाजिक और आर्थिक स्तर में भी काफी सुधार हुआ है। प्राचीन समय की समस्याएं जातिवाद, भाई-भतीजावाद, वंशवाद, अंधविष्वास आदि को पंचायतों के द्वारा बहुत कम कर दिया गया है जो कि एक सराहनीय कार्य कहा जा सकता है।

आज की बढ़ती आबादी पर रोकथाम करना, भविष्य के लिए जरूरी है। पंचायतों के द्वारा इस क्षेत्र में भी कार्य किया जा सकता है। जैसे-जैसे से अधिक संताने वाले व्यक्ति चुनाव नहीं लड़ सकते हैं। उदाहरण-राजस्थान, हरियाणा। छोटा परिवार-सुखी परिवार अवधारणा में भी पंचायतों की भूमिका अहम है।

आरक्षण के प्रावधानों के कारण समाज के पिछड़े सम हों, शोषित समहों को पर्याप्त राजनीतिक सहभागिता भी मिली है।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

परमात्मनः सविशेषप्रकाशैकस्वरूपत्वसाधनम्

डॉ. वी. बालाजी
Assistant Professor & Head,
Department of Sanskrit
National College (Autonomous)
Karumandapam, Tiruchirapalli – 620 001, Ph : 9791699411
Email : balbalram1990@gmail.com

अत्र "जन्माद्यस्य यत"[1] इत्यस्मिन् सूत्रे "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते"[2] इत्यादिकारणवाक्येन प्रतिपन्नस्य जगज्जन्मादिकारणस्य ब्रह्मणः सकलेतरव्यावृत्त- स्वरूपमधिकृत्याभिधीयते "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म"[3] इति।

सत्यपदस्यार्थः

तत्र सत्यपदं निरुपाधिकयोगि ब्रह्मऽऽह। तेन विकारास्पदमचेतनं तत्संसृष्टचेनश्च व्यावृत्तः। नामान्तरभजनार्हावस्थान्तरयोगेन तयोः निरुपाधिकसत्तायोगरहितत्वं ज्ञानपदं नित्यासंकुचितज्ञानैकाकरमाह तेन कदाचित् संकुचितज्ञानत्वेन मुक्ताः व्यावृत्ताः। अनन्तपदं देशकालवस्तुपरिच्छेदरहितं स्वरूपेण गुणैश्च अनन्त्यम्। तेन पूर्वपदद्वयव्यावृत्त कोटिद्वियविलक्षणाः सातिशयस्वरूपगुणाः नित्याः व्यावृत्ताः, विशेषणानां व्यावर्तकत्वात् इति।

ज्ञानपदस्यार्थः

ननु ज्ञानपदस्य विषयावगाहिज्ञानत्वं प्रवृत्तिनिमित्तं चेत्, स्वरूपस्यातादृशत्वात् ज्ञानमित्यस्य ज्ञानगुणकत्वमित्यर्थः पर्यवस्येत् , न तु स्वरूपस्य ज्ञानत्वम्, स्वप्रकाशतारूपं ज्ञानत्वं प्रवृत्तिनिमित्तं चेत्, स्वरूपस्य ज्ञानत्वमात्रं सिद्ध्येत् , न तु ज्ञानगुणकत्वम्। "तद्गुणसारत्वात्तु तद्व्यपदेशः प्राज्ञवत्" इति सूत्रे, यथा "सत्यं ज्ञानम्" इति ब्रह्मणो ज्ञानगुणसारत्वात् ज्ञावमिति व्यपदेशः , इति भाव्यं विरुध्यते इति चेत्

उच्यते स्वप्रकाशत्वमेव प्रवृत्तिनिमित्तत्वम् तत्र ज्ञानत्वाश्रयत्वमसंकोचात् स्वरूपतो गुणतश्च सिद्ध्यति, ब्रह्मशब्दात् प्रतीयमानं बृहत्वं यथा स्वरूपतो गुणतश्च सिद्ध्यति, तद्वत् अत्रापि स्वरूपतो गुणतश्च सिद्ध्यति। वस्तुतस्तु सत्यं ज्ञानमित्यस्यान्तोदात्तात्वात् आर्षाद्यजन्तत्वेन ज्ञानगुणकत्वमेवार्थः, "प्रज्ञानघन एवानन्दमयः"[4] "नित्यं विज्ञानम्" इति श्रुत्यन्तरात् ब्रह्मणो ज्ञानस्वरूपत्वमप्यस्तीति द्रष्टव्यम्।।

---

1. ब्रह्मसूत्रम्.1.1.2
2. तैत्तरीय.भृगुवल्ली.1
3. तैत्तरीय.आनन्दवल्ली.1
4. माण्डूक्योपनिषत्.5

अनन्तपदस्यार्थः

इहेदम् नान्यत्र इति परिच्छेत्तुम् अशक्यत्वं देशपरिच्छेदः, एवं इदमिदानीं नान्यदा इति परिच्छेदायोग्यत्वं कालपरिच्छेदः, एवं इदं न इति परिच्छेदानर्हत्वलक्षणं सर्ववस्तु सामानाधिकरण्यार्हत्ववस्त्वपरिच्छेदः इति त्रिविधपरिच्छेदराहित्यं ब्रह्म इति।।

यद्वा वस्तुस्वभावतः परिच्छेदो वस्तुपरिच्छेदः, तथा तुल्यकालत्वे अपि, तुल्यपरिमाणत्वे अपि दशवर्णसुवर्णापेक्षया कलधौतादेरपकर्षः, तद्राहित्यं वस्त्वपरिच्छेदः, समाभ्यधिकराहित्यनिदानभूतो गुणैः निरतिशयप्रकर्षः वस्त्वपरिच्छेदः इत्युक्तं भवति।।

"नान्तं गुणानां गच्छन्ति तेनानन्तोऽयमुच्यते"[1] इति स्मरणात् गुणानन्त्यमनन्तशब्दार्थः, अत्र रूढिवशात् देवताविशेषनिर्णयः। न च अनन्तपदस्य नारायणवाचिनः पुंलिङ्गत्वं स्यादिति वाच्यम् इष्टापत्तेः। तस्य द्वितीयान्तत्वेन पुंलिङ्गत्वस्येष्टत्वात्। द्वितीयान्तत्वाभावे च, "यो वेदनिहितं गुहायाम्" इत्यत्र तच्छब्दाध्याहारप्रसङ्गात् , अनध्याहारेणोपपत्तौ अध्याहारस्यन्याय्यत्वात्। यदि च अनन्तपदयोगिकार्थस्य त्रिविधपरिच्छेदराहित्यस्य नारायणादन्यत्राप्रसक्त्या श्रीपत्यादिशब्देष्विव न रूढिः कल्पनीया इत्युच्येत।

अत्र "सत्यं ज्ञानमन्तं ब्रह्म"[2] इत्यनेन ब्रह्मशब्दार्थो विवृतः। हृदयगुहानिहिततत्प्रकारकज्ञानप्रतिपादकेन "यो वेदनिहितं गुहायाम्"[3] इत्यनेन विच्छब्दार्थः उक्तः। "परमे व्योमन् सो अश्नुत"[4] इत्यंशेन आप्नोति शब्दार्थः उक्तः। "परमे व्योमन्" अप्राकृताकाशशब्दिते परमपदे इत्यर्थः। "सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति"[5] इत्यनेन प्राप्यमुक्तं। काम्यन्त इति कामाः कल्याणगुणाः। मुक्तस्य सर्वविषयविरक्तस्य तद्व्यतिरिक्तकाम्यान्तरासंभवात्। "अथ य इहात्मानमनुविद्य व्रजन्ति, एतांश्च सत्यान् कामान्"[6] इत्यादौ कामशब्दस्य कलयाणगुणेष्वेव प्रयोगात्। विविधं पश्यन्ती चित् यस्येति बहुब्रीहिः निरुपाधिक-अनन्याधीनासंकुचितसर्वविषयकज्ञानवत्वं विपश्चित्वम्। अतः अयं च गणः नित्यमुक्तादिव्यातर्कपरः भवति।।

ब्रह्मापेक्षयापि तद्गुणानां फलदशायां प्राधान्यं प्रतिपादयितुं "ब्रह्मणा सह" इति निर्दोषः कृतः। "सहयुक्तेऽप्रधाने" इति हि पाणिनिस्मृतिः। न च भोग्यतायां गुणापेक्षया ब्रह्मणोऽप्राधान्यं दोषाय इति शङ्क्यम्। "श्रियं त्वत्तोऽप्युच्चौर्वयमिह भणामः श्रुणुतराम्" इतिवत् परमात्मापेक्षयाऽपि तत्कल्याणगुणानां भोग्यतातिशयप्रतिपादनस्य परमात्मातिशयपर्यवसायित्वेन एतादृशाप्राधान्यस्य गुणत्वेन दोषत्वाभावात्। अत एव "पुत्रेण सहौदनं भुङ्क्ते" इतिवत् भोक्तृत्वसाहित्यपरत्वे ब्रह्मणो अप्राधान्यप्रसङ्गात् तत्परित्यज्य, "पयसा सहौदनं भुङ्क्ते" इतिवत् भोग्यसाहित्यपरत्वमेव। नात्र च, पक्षे ब्रह्मणोऽप्राधान्यं दोषाय इति भोग्यसाहित्य पक्ष एव भगवता रामानुजाचार्येणाऽपि समाश्रितः।।

ननु "तेषामृकृ यत्रार्थवशेन पादव्यवस्था"[7] इति जैमिनिना अर्थवशाधीन- पादव्यवस्थावत्वस्य ऋक् लक्षणतयोक्तत्वात् "सह" इत्यस्य पादान्तरस्थस्य ब्रह्मणा इति पादान्तरस्थेनान्वयो न संभवति। ततश्च ब्रह्मणा इति न सहयोगे तृतीया अपि तु इत्थंभूतलक्षणे तृतीया, सह इत्यस्य च युगपदित्यर्थः। सर्वान् कामान् युगपदनुभवति ब्रह्मणा इति। अत एव स्कान्देऽपि "सोश्नुते सकलान् कामान् अक्रमेण सुरर्षभाः। विदितब्रह्मरुपेण जीवन्मुक्तो न संशयः"[8] इत्युपंबृहितमिति चेत् न - तेषामृक् यत्रार्थवशेन इत्यस्य उपलक्षणमात्रत्वात्, उपलक्षणत्वमभ्युपगम्यैव तद्व्याव्यातृभिरपि अर्थवशेन वा वृत्तवशेन वा पादव्यवस्था इति व्याख्यातत्वात्। अभियुक्तानां मन्त्रप्रसिद्धिविषयत्वं मन्त्रत्वमितिवत् अभियुक्तानां ऋक्पदप्रसिद्धिविषयत्वमेव ऋक्त्वम्। ततश्च पादान्तरस्थेनापि पादान्तरस्थपदान्वयो युक्तः। ब्रह्मणा इत्यस्य इत्थम्भूतलक्षणत्वाश्रयणे ब्रह्मभूतः इत्यर्थोऽपि न संभवति। श्वेतच्छत्रेण राजा इत्यादौ

---

1. विष्णुपुराणम्.2.5.24
2. तैत्तरीय.आनन्दवल्ली.1
3. तैत्तरीय.आनन्दवल्ली 2
4. तैत्तरीय.आनन्दवल्ली 3
5. तैत्तरीय.आनन्दवल्ली 4
6. छान्दोग्योपनिषत्.8.1.6
7. उपनिषद्भाष्यव्याख्या
8. तत्रैव

तथाऽभेदादर्शनात्, त्वदुक्तस्कान्दवचनस्य पूर्वैः संप्रतिपन्नैरनुदाहृतत्वाच्च नैष दोषः संभवति। अतः सविशेषप्रकाशैकस्वरुपमेव ब्रह्म इति निश्चितम्।।

BIBLIOGRAPHY

पुस्तकसूची

1. श्रीमद्भगवद्रामानुजविरचितब्रह्मसूत्रश्रीभाष्यम्
   सुदर्शनसूरिप्रणीतश्रुतप्रकाशिकाव्याख्योपेतम्
   श्रीमद्रङ्गरामानुजमुन्युपज्ञभावप्रकाशिकाव्याख्योपेतम् च
   श्री नृसिंहप्रिया ट्रस्ट्, चेन्नै, 2006.
2. श्रीमद्भगवद्गीता
   श्रीमद्भगवद्रामानुजविरचितभाष्येण
   श्रीकवितार्किकसिंहसर्वतन्त्रस्वतन्त्र-श्रीमद्वेदान्तदेशिकविरचितया तात्पर्यचन्द्रिकया,
   श्रीमदभिनवदेशिक-वीरराघवार्यमहादेशिकयविरचित-विशेषभूमिका-टिप्पणेन च समेता
   Sri Uttamur Viraraghavachariar Centenary Trust, Chennai, 2004-
3. उपनिषद्भाष्यम्
   श्रीरङ्गरामानुजमुनिप्रभृति विरचित केनाद्युपनिषदुपेतम्
   श्रीमदभिनवदेशिक-वीरराघवार्यमहादेशिकविरचित-परिष्कर-उपनिषदर्थकारिका सहितम्
   Sri Uttamur Viraraghavachariar Centenary Trust, Chennai, 2003-
4. सिद्धान्तसंरक्षणम्
   प्रकाशिका, श्रीवैष्णवसभा, बैङ्गळूरु 560021, 2000.
5. श्रीमन्निगमान्तमहादेशिकानुगृहीता अधिकरणसारावलिः
   कुमारवेदान्ताचार्यानुगृहीतेन चिन्तामणिना समेता च
   श्रीवण्शठकोपश्रीलक्ष्मीनृसिंहशठकोपयतीन्द्रमहादेशिकदिव्यनियमनानुसारेण
   कुरुच्चि. लक्ष्मीनृसिंहाचार्येण प्रकाशिता, 1940.

6- Visistadvaita Kosa
   Compiled by Panditaraja Shri- U.Ve.D.J. Tatacharya
   D.T. Swamy Publications, Tirupati, 2001-

7. सर्वार्थसिद्धिव्याख्या सहितः तत्वमुक्ताकलापः
   आनन्ददायिनी भावप्रकाशाभ्यां व्याख्याटिप्पणीभ्यां संवलितः (Vol I & II)
   Mysore, Printed at The Government Branch Press, 1993-
8. श्रीरामानुजाचार्यविरचितवेदार्थसंग्रहः
   संस्कृतसंशोधनसंसत्, यादयाद्रिः (मेलुकोटे) 571 431, 1991.
9. महर्षिप्रवरपतञ्जलिप्रणीतम् योगसूत्रम्
   चौखम्भा संस्कृतसंस्थन, वाराणसी, 2004.

10- Brahma Sutra Sri Bhashya by Sri Bhagavad Ramanuja And its Commentary amed Bhashyartha Darpana By Abhinava Desika Sri Uttamur T. Viraraghavacharya Volume 1-2 Published by Srirangam Srimad Andavan Ashramam, 1997-

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

उत्तराखण्ड राज्य के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दीपक सोराड़ी
शोधार्थी

डॉ. देबकी सिरोला
सहायक प्राध्यापक
शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

शोध सार

यह शोध पत्र उत्तराखण्ड राज्य के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (DIET) की वर्तमान स्थिति तथा उससे जुड़ी चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। प्रस्तुत अध्ययन में राज्य भर में संचालित सभी 13 DIETS को शामिल किया गया है। इसमें संस्थागत दस्तावेजों, संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार और प्रत्यक्ष अवलोकन का उपयोग कर आंकड़ों का संकलन किया गया था। द्वितीयक डेटा स्रोतों में NCTE रिपोर्ट, NCERT प्रकाशन और उत्तराखंड शिक्षा विभाग के सरकारी दस्तावेज़ शामिल थे। प्रस्तुत शोध कार्य के मुख्य निष्कर्षों में भौतिक बुनियादी ढांचे की कमी, भर्ती में देरी, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विविधता की कमी और नवीन प्रथाओं की कमी सहित प्रणालीगत मुद्दे सामने आए हैं। यह अध्ययन DIET की दक्षता और कामकाज में सुधार के लिए ठोस सिफारिशों के साथ समाप्त होता है।

मुख्य शब्द : DIETS, उत्तराखण्ड, शिक्षक शिक्षा, संस्थागत संसाधन, प्रशासनिक चुनौतियाँ।

1. प्रस्तावना

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) की अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के तहत शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य संरचित शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना था। शैक्षिक नियोजन और क्षमता निर्माण को विकेंद्रीकृत करने के लिए जिला स्तर पर DIETS की स्थापना की गई थी। वर्तमान में, उत्तराखण्ड राज्य में कुल 13 DIETS कार्यान्वित हैं, जो कि प्रत्येक जिले की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये संस्थान न केवल सेवा-पूर्व एवं सेवा-कालीन शिक्षक प्रशिक्षण के लिए जिम्मेदार हैं, बल्कि पाठ्यक्रम विकास, शैक्षणिक नवाचार, शैक्षिक अनुसंधान और मूल्यांकन में भी योगदान देते हैं। हालाँकि, विभिन्न मूल्यांकनों और क्षेत्र अवलोकनों ने इन संस्थानों के प्रदर्शन को प्रभावित करने वाली कई प्रशासनिक, शैक्षणिक और अवसंरचनात्मक चुनौतियों का खुलासा किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य उनकी वर्तमान कार्यप्रणाली का मूल्यांकन करना और उनकी प्रभावशीलता में बाधा डालने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना है। उत्तराखण्ड, एक पहाड़ी एवं शैक्षिक रूप से आकांक्षी राज्य होने के नाते, अपने 13 जिलों में से प्रत्येक में DIET स्थापित किए है। हालाँकि, भौगोलिक चुनौतियाँ, प्रशासनिक बाधाएँ और बुनियादी ढाँचे की कमी इसके अभीष्ट प्रदर्शन में बाधा डालती हैं। यह अध्ययन इन DIETS की वर्तमान स्थिति और मौजूदा चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है तथा व्यावहारिक समाधान सुझाने का प्रयोजन रखता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

उत्तराखण्ड राज्य भौगोलिक रूप से विविधतापूर्ण और पहाड़ी राज्य है, जहाँ शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता सुनिश्चित करना बड़ी चुनौतियाँ हैं। यदि DIET को उचित रूप से मजबूत किया जाए, तो वे इन मुद्दों को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन के संदर्भ में, DIET जिला-स्तरीय शैक्षणिक संसाधन संस्थानों के रूप में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन निम्नलिखित कारणों से अध्ययन आवश्यक हो जाता हैः

- राज्य में प्रत्येक DIET की वस्तुनिष्ठ स्थिति का आकलन करना।
- परिचालन और संस्थागत चुनौतियों की पहचान करना।
- सूचित नीति-निर्माण और सुधारों के लिए अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करना।

3. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

वर्तमान शोध के लिए आधार तैयार करने हेतु राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों की समीक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न विद्वानों और संगठनों ने जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के कामकाज और प्रभाव पर कई अध्ययन किए हैं। इनमें से कुछ प्रमुख का विवरण इस प्रकार है :

शिक्षा आयोग (1964-66) ने शिक्षक शिक्षा संस्थानों को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

पाठक और पांडे (2007) ने देखा कि कई DIETS में बुनियादी ढाँचे और शैक्षणिक संसाधनों की कमी है।

NCERT (2012) की रिपोर्ट ने अधिकांश DIETS में खराब नवाचार और सीमित कार्यक्रम विविधता का संकेत दिया।

बत्रा, पी. (2014) ने पेशेवर शिक्षक विकास में डाइट की भूमिका में विसंगतियों को उजागर किया।

शर्मा (2017) ने DIET के कामकाज में एक बड़ी बाधा के रूप में शैक्षणिक स्वायत्तता की कमी की पहचान की।

सिंह और शर्मा (2018) ने उत्तराखण्ड में DIET पर ध्यान केंद्रित किया और कर्मचारियों की कमी, स्थायी नेतृत्व की कमी और सीमित वित्तीय स्वायत्तता जैसे मुद्दों की रिपोर्ट की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास के लिए DIET को महत्वपूर्ण मानता है और उन्हें जीवंत शैक्षणिक केंद्रों के रूप में विकसित करने की सिफारिश करता है।

जोशी और रावत (2020) ने पाया गया कि उत्तरी राज्यों में केवल कुछ DIET ही NCTE के बुनियादी ढाँचे के मानदंडों को पूरा करते हैं।

NCTE रिपोर्ट (2022) ने अपनी रिपोर्ट में बताया गया कि कई DIET में प्रशिक्षित संकाय और डिजिटल बुनियादी ढाँचे की कमी है। ये अध्ययन दर्शाते हैं कि DIET शैक्षिक सुधार के लिए केंद्रीय हैं, लेकिन उनका प्रदर्शन प्रणालीगत अक्षमताओं से बाधित है, जिसके लिए रणनीतिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है। यह अध्ययन उत्तराखण्ड में DIET की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए बुनियादी पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं।

4. शोध प्रश्न

1. उत्तराखण्ड में बुनियादी ढांचे, कर्मचारी वर्ग एवं शैक्षणिक प्रदर्शन के सन्दर्भ में DIETS की वर्तमान स्थिति क्या है?
2. इन संस्थानों को अपने निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करने में किन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
3. उत्तराखण्ड में DIETS की कार्यक्षमता और प्रभाव को बढ़ाने के लिए क्या कदम सुझाए जा सकते हैं?

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. उत्तराखण्ड में DIETS की वर्तमान संरचनात्मक स्थिति का अध्ययन करना।
2. उत्तराखण्ड में DIETS की वर्तमान शैक्षणिक एवं मानव संसाधन स्थिति का अध्ययन करना।

3. DIET के कामकाज एवं प्रबंधन में प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।

6. शोध प्रविधि

यह अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य में DIETS के वर्तमान परिदृश्य और चुनौतियों को समझने के लिए एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों विधियों को अपनाया गया है।

6.1 जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनसंख्या में उत्तराखण्ड के सभी 13 DIETS शामिल हैं। सीमित संख्या के कारण इस अध्ययन में जनगणना पद्धति का उपयोग किया गया है। इस प्रकार, सभी 13 DIETS से आंकड़ों को एकत्र किया गया है।

6.2 आंकड़े संग्रह के उपकरण

- संस्थागत रूपरेखा प्रारूप- बुनियादी ढाँचा, कर्मचारी, कार्यक्रम डेटा एकत्र करने के लिए।
- साक्षात्कार कार्यक्रम- प्राचार्यों, संकाय और कर्मचारियों के लिए।
- द्वितीयक दस्तावेज़- SCERT रिपोर्ट, NCTE मानदंड और राज्य-स्तरीय योजना रिपोर्ट।

6.3 आंकड़ों के स्रोत

- **प्राथमिक स्रोत :** संस्थागत दौरे, साक्षात्कार और संस्थागत प्रपत्रों के माध्यम से एकत्र किया गया।
- **द्वितीयक स्रोत :** एससीईआरटी प्रकाशन, एनसीटीई दिशानिर्देश, समग्र शिक्षा रिपोर्ट, पिछले शोध अध्ययन।

6.4 आंकड़ों के विश्लेषण की तकनीक

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सांख्यिकी (प्रतिशत, ग्राफ) का उपयोग करके मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण किया गया है। मुख्य चुनौतियों और सुझावों की पहचान करने के लिए विषयगत सामग्री विश्लेषण का उपयोग करके गुणात्मक प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है।

7. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

यह खण्ड संस्थागत रूपरेखा, प्रधानाध्यापकों एवं संकाय सदस्यों के साथ संरचित साक्षात्कार व प्रत्यक्ष क्षेत्र अवलोकन के माध्यम से उत्तराखण्ड राज्य के सभी 13 DIETS से एकत्र किए गए आंकड़ों का विस्तृत व मूल विश्लेषण प्रस्तुत करता है। DIET की वर्तमान स्थिति की बहुआयामी वास्तविकता के अन्वेषण हेतु मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों आयामों को एकीकृत किया गया है।

7.1 भवन- उत्तराखण्ड के डी.आई.ई.टी. में निर्मित क्षेत्र की उपलब्धता का विश्लेषण (प्रतिशत में)

पाई आरेख-7.1 (A)

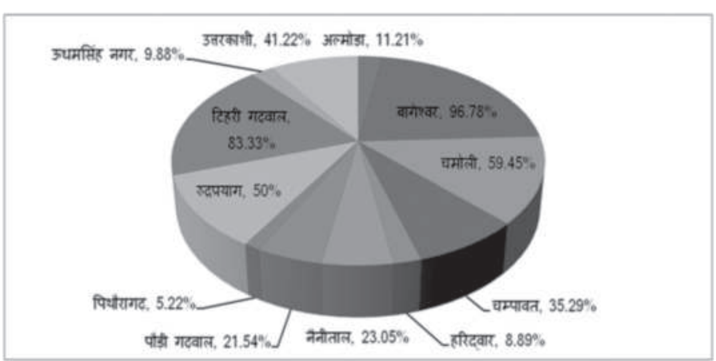

भवनों एवं निर्मित भूमि की उपलब्धता के आधार पर संस्थानों का प्रतिशत दर्शाता पाई आरेख

यह पाई आरेख उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न जिलों में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (DIETS) में निर्मित क्षेत्र का प्रतिशत उनकी कुल आवंटित भूमि के संबंध में दर्शाता है। पाई का प्रत्येक टुकड़ा किसी विशेष जिले के DIET के भीतर निर्मित बुनियादी ढांचे (जैसे भवन और सुविधाएं) के अनुपात को दर्शाता है। यह चार्ट उत्तराखण्ड में DIET के बीच बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण भिन्नता को दर्शाता है। कुछ जिलों ने अपनी निर्माण क्षमता को अधिकतम कर लिया है, जबकि अन्य आवंटित भूमि का कम उपयोग दिखाते हैं, जो नियोजन, वित्त पोषण या निष्पादन में संभावित अंतराल को दर्शाता है। ये निष्कर्ष राज्य भर में संतुलित शैक्षिक विकास सुनिश्चित करने के लिए पिछड़े जिलों में संसाधन आवंटन और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता देने में मदद कर सकते हैं।

बागेश्वर 96.78% के साथ महत्वपूर्ण रूप से आगे है, जो दर्शाता है कि लगभग पूरी आवंटित भूमि का उपयोग निर्माण के लिए किया गया है। टिहरी गढ़वाल 83.33% के साथ दूसरे स्थान पर है, जो बुनियादी ढांचे के विकास के उच्च स्तर का भी संकेत देता है। चमोली 59.45% उपयोग दिखाता है, जो मध्यम रूप से उच्च है। रुद्रप्रयाग (50%) और चंपावत (35. 29%) मध्यम उपयोग दर्शाते हैं। पौड़ी गढ़वाल (21.54%) और नैनीताल (23.05%) जैसे जिले अपेक्षाकृत कम निर्माण कवरेज दर्शाते हैं। उत्तरकाशी (41.22%) और अल्मोड़ा (11.21%) विकास के विभिन्न स्तरों को दर्शाते हैं। उधम सिंह नगर (9.88%), हरिद्वार (8.89%), और पिथौरागढ़ (5.22%) निचले छोर पर हैं, जो उनके DIET में खराब निर्माण विकास को दर्शाते हैं।

ग्राफ 7.1 (B) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कक्षाओं की संख्या का विवरण

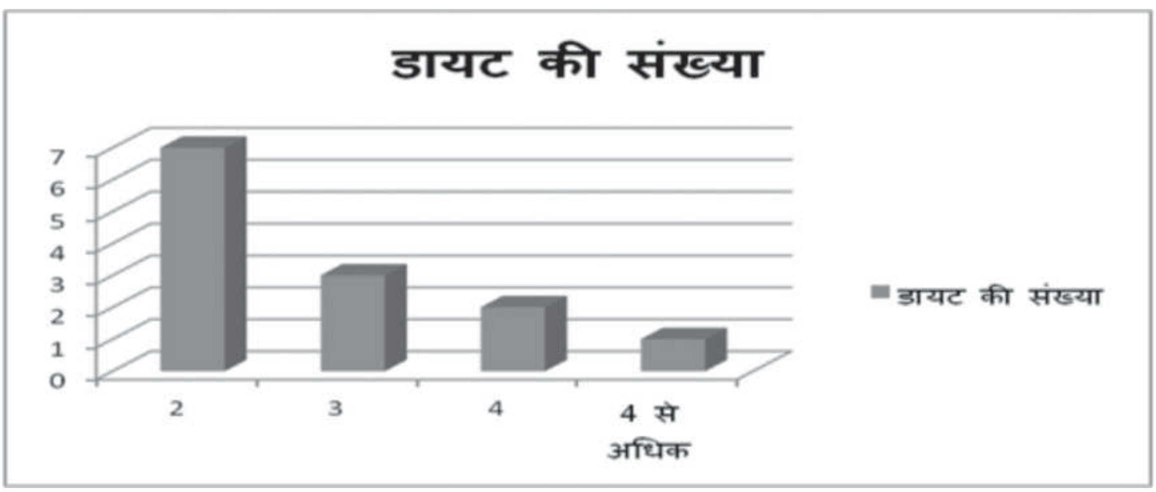

ग्राफ विवरण

यह ग्राफ प्रदर्शित करता है कि कितने DIET (जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान) एक अनिर्दिष्ट चर (संभावित शैक्षणिक कार्यक्रमों, विभागों या कक्षाओं की संख्या) के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में आते हैं। X-अक्ष सीमा (2, 3, 4, 4 से अधिक) का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि ल-अक्ष प्रत्येक श्रेणी में DIET की संख्या दर्शाता है। 7 DIET 2 की श्रेणी में आते हैं, जो कि सबसे अधिक संख्या है। 4 DIET 3 की श्रेणी में आते हैं। 3 DIET 4 की श्रेणी में आते हैं तथा केवल 1 DIET 4 से अधिक की श्रेणी में आता है।

व्याख्या : अधिकांश DIET (आधे से अधिक) में विचारित पैरामीटर (जैसे, कार्यक्रम, प्रयोगशालाएँ, कक्षाएँ, आदि) की केवल 2 इकाइयाँ हैं, जो सीमित क्षमता या संसाधनों को दर्शाता है। बहुत कम संस्थानों (केवल 1) में 4 से अधिक हैं, जो दर्शाता है कि राज्य में उन्नत या अच्छी तरह से विकसित DIET दुर्लभ हैं। डेटा DIET के बीच बुनियादी ढाँचे, संसाधनों

या क्षमताओं में महत्वपूर्ण असमानता को दर्शाता है। यह ग्राफ बताता है कि उत्तराखण्ड में अधिकांश DIET न्यूनतम संसाधनों या क्षमता के साथ काम कर रहे हैं। बढ़ती शैक्षिक और प्रशिक्षण मांगो को पूरा करने के लिए अधिकांश DIET में सुविधाओं को उन्नत और विस्तारित करने की तत्काल आवश्यकता है।

ग्राफ 7.2 शिक्षण संकाय एवं कर्मचारी वर्ग (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों की स्थिति)

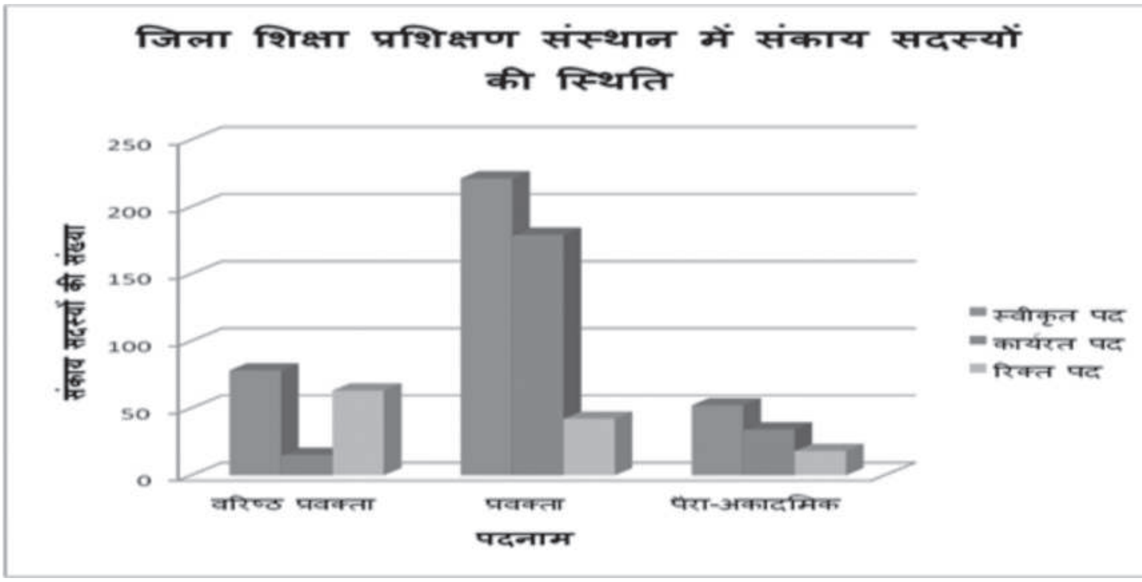

ग्राफ विवरण : प्रस्तुत बार ग्राफ उत्तराखण्ड राज्य के DIET (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान) में संकाय सदस्यों की स्थिति को तीन श्रेणियों में प्रस्तुत करता है : वरिष्ठ व्याख्याता व्याख्याता शैक्षणिक सहायक कर्मचारी प्रत्येक श्रेणी तीन डेटा बिंदु प्रदर्शित करती हैरू - स्वीकृत पद - नीले रंग में दिखाए गए हैं, कार्यरत वाले पद - लाल रंग में दिखाए गए हैं तथा रिक्त पद - हरे रंग में दिखाए गए हैं। विश्लेषण :

1. व्याख्याता : इस श्रेणी में सभी श्रेणियों में स्वीकृत और कार्यरत पदों की संख्या सबसे अधिक है। स्वीकृत पद लगभग 225 हैं, जबकि कार्यरत पद लगभग 180 हैं। रिक्तियां भी महत्वपूर्ण हैं, जो लगभग 45 व्याख्याताओं की कमी को दर्शाती हैं, जो शिक्षण गुणवत्ता और कार्यभार वितरण को प्रभावित कर सकती हैं।

2. वरिष्ठ व्याख्याता : लगभग 90 स्वीकृत पद हैं, लेकिन केवल 35-40 पर ही कब्जा है। रिक्त पद लगभग 50 हैं, यानी आधे से अधिक खाली हैं। यह DIET में वरिष्ठ-स्तरीय शैक्षणिक नेतृत्व और अनुभव में एक गंभीर अंतर को दर्शाता है।

3. शैक्षणिक सहायक कर्मचारी : स्वीकृत पद लगभग 60 हैं, जिनमें से लगभग 40 पर काम चल रहा है। रिक्तियां लगभग 20 हैं, जो गैर-शिक्षण शैक्षणिक सहायक कार्यो, जैसे पाठ्यक्रम डिजाइन, मूल्यांकन, प्रशिक्षण समन्वय आदि को प्रभावित करती हैं। ग्राफ सभी श्रेणियों में, विशेष रूप से वरिष्ठ व्याख्याताओं और व्याख्याताओं के बीच रिक्तियों की एक बड़ी संख्या को दर्शाता है, जो DIET में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को गंभीर रूप से बाधित कर सकता है।

7.3 DIET में वित्तीय एवं प्रशासनिक चुनौतियाँ

1. वित्तीय चुनौतियाँ : (a) अपर्याप्त बजट आवंटन- अधिकांश DIET को सीमित और अक्सर अनियमित बजट मिलता है, जो रखरखाव, प्रशिक्षण कार्यक्रम, अनुसंधान गतिविधियों और कर्मचारियों के विकास जैसे आवर्ती खर्चों को कवर

करने के लिए अपर्याप्त है। वित्तीय निर्णय लेने में स्वायत्तता का अभाव है; राज्य स्तर पर निधियों पर कड़ा नियंत्रण है।

(b) निधि जारी करने में देरी-अनुदान और निधियों के वितरण में महत्वपूर्ण देरी कार्यक्रमों के समय पर निष्पादन, बुनियादी ढांचे के रखरखाव और संसाधनों की खरीद में बाधा डालती है। वित्तीय वर्ष की शुरुआत में धन की अनुपलब्धता के कारण प्रशिक्षण गतिविधियाँ अक्सर प्रभावित होती हैं।

(c) नवाचार और आईसीटी के लिए अपर्याप्त निधि- अधिकांश डाइट में नवाचार, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के लिए निधि लगभग नगण्य है। खराब वित्तपोषण के कारण स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर और इंटरनेट कनेक्टिविटी जैसे डिजिटल बुनियादी ढांचे की कमी एक सतत मुद्दा बनी हुई है।

2. प्रशासनिक चुनौतियाँ

(a) स्वायत्तता और केंद्रीकृत निर्णय लेने की कमी- DIET को क्षेत्र-विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना बनाने और उन्हें लागू करने की प्रशासनिक स्वतंत्रता नहीं दी जाती है। सभी महत्वपूर्ण निर्णय राज्य-स्तरीय नौकरशाही प्रणालियों के माध्यम से लिए जाते हैं, जिससे देरी और हतोत्साहन होता है। b) रिक्त नेतृत्व और संकाय पद- कई DIET पूर्णकालिक प्राचार्य या वरिष्ठ शैक्षणिक नेतृत्व के बिना काम करते हैं। व्याख्याता और शैक्षणिक समन्वयक जैसे पद रिक्त रहते हैं, जिससे कामकाज और प्रशिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

(c) अपर्याप्त प्रशासनिक कर्मचारी- प्रशासनिक कार्यों को संभालने के लिए लिपिक और सहायक कर्मचारियों की कमी है, जिससे काम का बोझ और अकुशलता बढ़ती है। गैर-तकनीकी और अत्यधिक बोझ वाले कर्मचारियों के कारण रिकॉर्ड रखने, योजना बनाने, रिपोर्टिंग और समन्वय में बाधा आती है।

क) क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण की कमी- प्रशासनिक प्रमुख और सहायक कर्मचारियों को शायद ही कभी शैक्षिक योजना, नेतृत्व या प्रौद्योगिकी के उपयोग का प्रशिक्षण मिलता है। इससे संस्थान के कामकाज में निगरानी, मूल्यांकन और नवाचार प्रभावित होता है।

म) एससीईआरटी, एसएसए और राज्य विभागों के साथ खराब समन्वय - कमजोर संस्थागत संपर्क और डीआईईटी और अन्य निकायों (जैसे, एससीईआरटी, एसएसए, आरएमएसए) के बीच समन्वय की कमी से प्रयासों का दोहराव और संसाधनों का अकुशल उपयोग होता है।

3. संस्थागत कामकाज पर संयुक्त प्रभाव : वित्तीय और प्रशासनिक बाधाओं के कारण, कई नियोजित शैक्षणिक कार्यक्रम अधूरे या आंशिक रूप से लागू रह जाते हैं। शिक्षकों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है, बुनियादी ढांचा अविकसित रहता है, और नवाचार को दबा दिया जाता है। शिक्षक शिक्षा की रीढ़ होने के बावजूद, आहार जीवंत, संसाधन-समृद्ध शैक्षणिक केंद्रों के रूप में कार्य करने में असमर्थ हैं।

8. परिणाम

1. बुनियादी ढांचा और निर्मित क्षेत्र : जिलों में निर्मित क्षेत्र में काफी असमानता है। बागेश्वर (96.78%), टिहरी गढ़वाल (83.33%), और चमोली (59.45%) ने अपनी आवंटित भूमि का अधिकांश उपयोग कर लिया है। इसके विपरीत, पिथौरागढ़ (5.22%), हरिद्वार (8.89%), और उधम सिंह नगर (9.88%) जैसे जिले बुनियादी ढांचे के विकास में बहुत पीछे हैं। कई DIET में बहुउद्देशीय हॉल, कंप्यूटर लैब या पर्याप्त कक्षाओं जैसे आवश्यक बुनियादी ढांचे का अभाव है।

2. संकाय और स्टाफिंग की स्थिति : अधिकांश DIET में बड़ी संख्या में पद, विशेष रूप से वरिष्ठ व्याख्याताओं और व्याख्याताओं के पद रिक्त हैं। स्वीकृत बनाम कार्यरत संकाय का अनुपात एक गंभीर अंतर को दर्शाता है, जो प्रशिक्षण वितरण को प्रभावित करता है। शिक्षा-शैक्षणिक (शैक्षणिक सहायता) पदों का भी कम प्रतिनिधित्व है, जो अकादमिक योजना और नवाचार में बाधा डालता है।

3. कक्षा और संसाधन उपलब्धता : अधिकांश DIET में केवल 2-3 कार्यात्मक कक्षाएँ हैं, जो NCTE मानदंडों के अनुसार अपर्याप्त हैं। कई संस्थानों में CT संसाधन, डिजिटल कक्षाएँ, पुस्तकालय और प्रयोगशालाएँ या तो अपर्याप्त हैं या गैर-कार्यात्मक हैं।

4. वित्तीय चुनौतियाँ : DIET अपर्याप्त, अनियमित और केंद्र द्वारा नियंत्रित निधि से ग्रस्त हैं। कई संस्थानों को फंड जारी करने में देरी का सामना करना पड़ता है, जिससे कम उपयोग होता है। सीमित वित्तीय स्वायत्तता के परिणामस्वरूप प्रशासनिक निर्भरता और कार्यक्रम निष्पादन में लचीलेपन की कमी होती है।

9. निष्कर्ष

उक्त अध्ययन से पता चलता है कि उत्तराखण्ड में DIET शिक्षक शिक्षा के आवश्यक स्तंभ हैं, लेकिन उनकी वर्तमान स्थिति तत्काल हस्तक्षेप की मांग करती है। भौतिक बुनियादी ढांचे, प्रशिक्षित संकाय, प्रासंगिक प्रशिक्षण सामग्री और तकनीकी उन्नयन में गंभीर कमी है। जब तक इन संस्थानों को अकादमिक और प्रशासनिक रूप से सशक्त नहीं किया जाता, NEP 2020 के लक्ष्यों का कार्यान्वयन सीमित रहेगा। उत्तराखंड में DIET के विश्लेषणात्मक अध्ययन से प्रगति और ठहराव की मिश्रित तस्वीर सामने आती है। जबकि कुछ जिले अच्छे बुनियादी ढांचे के विकास और संकाय की ताकत दिखाते हैं, अधिकांश DIET बुनियादी ढांचे की अपर्याप्तता, संकाय की कमी, वित्तीय निर्भरता और प्रशासनिक अक्षमताओं से ग्रस्त हैं। शिक्षक शिक्षा में अपनी मूलभूत भूमिका के बावजूद, DIET राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत शैक्षिक नेतृत्व के गतिशील और विकेन्द्रीकृत संस्थानों के रूप में कार्य करने से बहुत दूर हैं।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, जे.सी. (2010). एक विकासशील समाज में शिक्षक और शिक्षा। नई दिल्ली : विकास प्रकाशन हाउस।
2. जोशी, एम. और रावत, वी. (2020). "शिक्षक शिक्षा में डीआईईटी की भूमिका : राज्य-स्तरीय विश्लेषण।" शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, खंड 14(2), पृष्ठ 25-34।
3. पांडे, के. (2017). भारत में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के सामने चुनौतियों का एक अध्ययन। भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 55(1), 17 28।
4. यादव, एस. (2018). भारत में शिक्षक शिक्षा : नीतियां, अभ्यास, और संभावनाएं। नई दिल्ली : एपीएच प्रकाशन निगम।
5. राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एनसीटीई)। (2014). जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (डीआईईटी) के लिए मानक और मानदंड। एनसीटीई, नई दिल्ली।
6. शिक्षा मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।
7. एससीईआरटी उत्तराखण्ड (2023). वार्षिक संस्थागत रिपोर्ट।
8. समग्र शिक्षा पोर्टल उत्तराखण्ड।
9. समग्र शिक्षा उत्तराखण्ड। (2022). राज्य कार्यान्वयन योजना और वित्तीय रिपोर्ट। उत्तराखण्ड सरकार।

हिंदी आलोचना को डॉ. विजय महादेव गाड़े का योगदान

डॉ. नरेश कुमार सिहाग
गुगन निवास 26 पटेल नगर भिवानी हरियाणा
मो 8708822674, 9466532152

परिचय

हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक अनुशीलन में महाराष्ट्र के विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मराठी भाषी क्षेत्र में रहते हुए भी अनेक साहित्यकारों ने हिंदी भाषा व साहित्य के संवर्धन और विकास में अप्रतिम योगदान दिया है। इसी क्रम में डॉ. विजय महादेव गाड़े का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने एक प्रोफ़ेसर, सजग चिंतक, विचारक, अनुवादक, संपादक, शोध निदेशक और गंभीर आलोचक के रूप में हिंदी आलोचना को समृद्ध किया, बल्कि अपने लेखन, शिक्षण और सम्पादन के माध्यम से हिंदी साहित्य को नई दृष्टि भी प्रदान की। डॉ. गाड़े का कार्यक्षेत्र सांगली (महाराष्ट्र) होने के बावजूद उनकी रचनात्मक दृष्टि अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी आलोचना को दिशा देने वाली रही है।

जीवन-परिचय और शैक्षिक पृष्ठभूमि

डॉ. विजय महादेव गाड़े का जन्म महाराष्ट्र के सातारा जनपद में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा से ही उन्हें साहित्य में रुचि थी। उन्होंने हिंदी को अपने अध्ययन और चिंतन का माध्यम बनाया तथा उच्च शिक्षा के दौरान आलोचना को अपनी अभिरुचि का क्षेत्र चुना। एम.ए., एम.फिल. एवं पीएच.डी. के दौरान उन्होंने हिंदी आलोचना के गूढ़ पक्षों पर शोध किया और समकालीन विमर्शों से अपने आपको जोड़ा।

वे लंबे समय तक महाविद्यालयीन शिक्षा से जुड़े रहे हैं और हजारों विद्यार्थियों को न केवल साहित्य पढ़ाया, बल्कि उनमें आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी विकसित किया। शिक्षण के साथ-साथ उन्होंने लेखन, अनुवाद, व्याख्यान, कार्यशालाओं और संपादन जैसे क्षेत्रों में भी योगदान दिया।

आलोचना का मूल स्वर : संतुलन, संवाद और सृजनशीलता

डॉ. विजय गाड़े की आलोचना का मूल स्वभाव संतुलित, संवादात्मक और सृजनशील है। वे न तो अंध-प्रशंसक हैं, न अकारण विरोध करने वाले। उनके द्वारा लिखे गए आलोचनात्मक लेखों में तथ्यों की प्रमाणिकता, गहरी साहित्यिक समझ और विषय की गहन अंतर्दृष्टि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

उनकी आलोचना में दो विशेषताएँ विशेष रूप से उभरती हैं

1. 'संवाद की चेतना' वे रचनाकार, पाठक और आलोचक तीनों के मध्य संवाद को आवश्यक मानते हैं। उनकी दृष्टि में आलोचना का कार्य रचना को काटना-छाँटना नहीं, बल्कि उसकी भीतरी संरचना को समझना और उसे पाठक तक

सही रूप में पहुँचाना है।

2. 'सृजनशीलता' : डॉ. गाड़े की आलोचना में केवल तर्क नहीं, भाव भी हैं। वे विचार और संवेदना दोनों को सम भाव से महत्व देते हैं। यही कारण है कि उनकी आलोचना नीरस नहीं होती, बल्कि रचनात्मक होती है।

प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ

डॉ. विजय गाड़े ने अनेक आलोचनात्मक कृतियाँ लिखी हैं, जिनमें कुछ उल्लेखनीय ग्रंथ इस प्रकार हैं :

1. आलोचना की संवादधर्मिता

इस कृति में उन्होंने समकालीन हिंदी आलोचना के विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है। शुक्ल, रामचंद्र शुक्ल से लेकर नामवर सिंह और विजयदेव नारायण साही तक के विचारों का तुलनात्मक दृष्टिकोण से परीक्षण किया गया है।

2. 'विमर्श के विविध आयाम'

यह पुस्तक विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। डॉ. गाड़े ने इसमें स्त्री लेखन, नारी विमर्श, पितृसत्ता और सामाजिक असमानताओं को आलोचनात्मक दृष्टि से देखा है।

3. 'कविता से संवाद'

इसमें उन्होंने समकालीन कविता की संवेदनात्मक दृष्टि का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि कविता आज केवल कला नहीं, संघर्ष का औजार बन चुकी है।

4. भारतीय साहित्य

यह शोधपरक कार्य भारत में हिंदी के प्रसार और आलोचनात्मक परंपराओं की खोज करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि डॉ. गाड़े का दृष्टिकोण क्षेत्रीय नहीं, अखिल भारतीय है।

आलोचना में विचारधारात्मक संतुलन

डॉ. विजय महादेव गाड़े का आलोचना दृष्टिकोण विचारधारात्मक जड़ता से मुक्त है। वे न तो किसी एक पंथ के प्रति आसक्त हैं, न ही किसी वाद के विरोध में। उन्होंने यथार्थवाद, प्रगतिवाद, अस्तित्ववाद, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श जैसे सभी महत्वपूर्ण धाराओं को उनके संदर्भ में समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

उनका मानना है कि :

''आलोचना को किसी पूर्वग्रह का शिकार नहीं होना चाहिए। वह रचना को उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक और वैचारिक संदर्भों में समझने का प्रयत्न करे यही उसकी भूमिका होनी चाहिए।''

यह कथन उनके आलोचना दर्शन को स्पष्ट करता है।

संपादन और शोध निर्देशन

डॉ. गाड़े एक कुशल संपादक भी हैं। उन्होंने 'साहित्य परिवार', 'बोहल शोध मंजूषा' कई शोध पत्रिकाओं का संपादन किया है, जिनमें समसामयिक मुद्दों पर विशेषांक प्रकाशित किए गए।

वे उच्च शिक्षा में शोध निर्देशन से भी जुड़े रहे हैं। अब तक उनके निर्देशन में अनेक शोधार्थियों ने पीएच.डी. और एम. फिल. पूर्ण की है। उनके शोधकार्य आधुनिक कविता, कथा-साहित्य, दलित साहित्य, तुलनात्मक साहित्य और लोक साहित्य जैसे विविध क्षेत्रों में हैं, जिससे उनकी आलोचना की व्यापकता का आभास होता है।

अनुवाद

दो काव्य संकलनों का हिन्दी से मराठी अनुवाद और शिंदे शाही की राजनीति का हिन्दी अनुवाद प्रगतिपथ पर 'व्याख्यान

और संगोष्ठियों में सक्रिय भागीदारी'

सांगली, पुणे, मुंबई, नागपुर, लातूर, हैदराबाद, वाराणसी, भोपाल, दिल्ली , अयोध्या, धारवाड़ आदि अनेक नगरों में डॉ. गाड़े ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में व्याख्यान दिए हैं। वे समय-समय पर विश्वविद्यालयों, साहित्य अकादमियों और शोध संस्थानों द्वारा आयोजित परिचर्चाओं में आमंत्रित किए जाते हैं।

उनके व्याख्यानों में केवल सूचनाएँ नहीं होतीं, अपितु दृष्टिकोण होता है। वे विद्यार्थियों और शोधार्थियों को आलोचना का अनुभवात्मक पक्ष सिखाते हैं, जो पुस्तकीय ज्ञान से कहीं अधिक उपयोगी होता है।

नवोदित आलोचकों के लिए प्रेरणास्रोत

डॉ. विजय गाड़े का योगदान केवल ग्रंथों और व्याख्यानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे नवोदित आलोचकों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत हैं। वे आलोचना को 'विद्वत्ता प्रदर्शन' नहीं, बल्कि 'साहित्य सेवा' मानते हैं। वे विद्यार्थियों को पाठक बनने, पाठ से जुड़े रहने और रचनाकार की दृष्टि को समझने की प्रेरणा देते हैं।

वे अक्सर कहते हैं :

"आलोचक का धर्म रचना को उसकी आत्मा के साथ पढ़ना है, न कि उसे अपने दृष्टिकोण के साँचे में ढालना।"

हिंदी-प्रेम और भाषायी समरसता

मराठी भाषी क्षेत्र में रहकर डॉ. गाड़े का हिंदी साहित्य में इतना गहरा योगदान देना स्वयं एक सांस्कृतिक उदाहरण है। वे भाषायी सीमाओं से परे जाकर हिंदी को न केवल अध्ययन का विषय मानते हैं, बल्कि उसके माध्यम से भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों को भी समझते हैं।

उनके लेखों में मराठी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, उर्दू , कन्नड़ तथा भारतीय लोकभाषाओं की छाया भी दिखती है, जिससे उनकी बहुभाषिक दृष्टि का संकेत मिलता है।

निष्कर्ष

डॉ. विजय महादेव गाड़े ने हिंदी आलोचना को विचारशीलता, संतुलन और सृजनशीलता की राह पर अग्रसर किया है। उन्होंने आलोचना को अकादमिक औपचारिकता से ऊपर उठाकर एक संवाद, एक चिंतन और एक आत्मीय साहित्यिक अभ्यास में बदलने का कार्य किया है। उनकी आलोचना न तो केवल प्रशंसा है, न केवल प्रतिक्रिया वह एक बौद्धिक यात्रा है जो रचना, पाठक और समाज तीनों के मध्य सेतु बनाती है।

हिंदी आलोचना के क्षेत्र में उनका योगदान विशेष रूप से निम्नलिखित कारणों से स्मरणीय रहेगा :

- विचारधारात्मक निर्भरतामुक्त संतुलन
- समकालीन विमर्शों की गहन समझ
- शोध और संपादन के माध्यम से ज्ञान-परंपरा का विस्तार
- नव आलोचकों का निर्माण और मार्गदर्शन
- हिंदी को अखिल भारतीय दृष्टि से देखने की क्षमता

इस प्रकार डॉ. विजय महादेव गाड़े का कार्य न केवल आलोचना को समृद्ध करता है, बल्कि हिंदी साहित्य की समूची परंपरा को ज्ञान, दृष्टि और विवेक के स्तर पर उन्नत करता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होंने हिंदी आलोचना के मानचित्र पर महाराष्ट्र के योगदान को नयी ऊँचाई दी है।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त तथा उसकी सम-सामयिक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

पूजा शर्मा
शोधकर्त्री
श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जयपुर
Email : Sharma.pooja09041990@gmail.com

मन्जू देवी
सहायक आचार्या,
श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जयपुर
Email : thorimanju82@gmail.com

डॉ. मनोज कुमार
सहायक आचार्य, श्री बालाजी पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर
ई-मेल : kumarmanoj381f@gmail.com

1. सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में 'पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त तथा उसकी सम-सामयिक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता' का वर्णन किया गया है। प्लेटो के लिए शिक्षा जीवन की महान चीजों में से एक थी। शिक्षा बुराई को उसके मूल में छूने तथा गलत जीवन जीने के तरीकों के साथ-साथ जीवन के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण को सुधारने का एक प्रयास था। प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत, जैसा कि उनके 'रिपब्लिक' में वर्णित है, एक व्यापक प्रणाली है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों और समाज दोनों को न्यायपूर्ण बनाना है। शिक्षा का मुख्य लक्ष्य ज्ञान और सद्गुण प्राप्त करना है, जिससे व्यक्ति और राज्य दोनों में सद्गुणों का विकास हो सके। शिक्षा को शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास को बढ़ावा देना चाहिए, और राज्य द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए।

2. प्रस्तावना

प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत, जो 'रिपब्लिक' में वर्णित है, न्याय, सद्गुण और ज्ञान की प्राप्ति पर केंद्रित है। यह सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए भी आवश्यक है। प्लेटो का मानना था कि शिक्षा, व्यक्ति को उसकी क्षमताओं के अनुसार ढालकर, उसे अपने कर्तव्यों का पालन करने और समाज में सद्गुणों को बढ़ावा देने में सक्षम बनाती है।

शिक्षा की महत्व पर विचार करते हुए प्रसिद्ध दार्शनिक पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो ने कहा - ''संसार में सबसे श्रेष्ठ और सुंदर कोई वस्तु यदि है तो वह है शिक्षा।'' शिक्षा का कार्य है व्यक्ति में निहित जन्मजात गुणों का विकास करना, सत्य का ज्ञान कराना तथा आदर्श समाज का निर्माण करना। शिक्षा की प्रकृति सरल, सहज, व्यापक और बहुवर्ती है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो विद्यालय और पुस्तकों तक सीमित नहीं रहती। व्यक्ति जीवन भर कुछ ना कुछ सीखता रहता है। शिक्षा की इस विशेषता में यह भी जोड़ने वाला बिंदू है कि यह विकास की एक प्रक्रिया है जो घर, विद्यालय तथा अन्य स्थानों

पर भी संपन्न होती रहती है। विकास की प्रकृति के आधार पर शिक्षा मनुष्य के व्यवहारों और विचारों में परिवर्तन और परिमार्जन करती है।

3. मुख्य तकनीकी शब्दावली : पाश्चात्य, शिक्षाशास्त्री, प्लेटो, शिक्षा सिद्धान्त, सम-सामयिक परिप्रेक्ष्य, उपादेयता

4. पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो के शिक्षा दर्शन संबंधी विचार दो प्रमुख कृतियों 'रिपब्लिक' तथा 'लॉज' में प्रकट हुए हैं। अन्य संवादों में भी छुटपुट विचार मिलते हैं। किंतु उपयुक्त दो पुस्तकों में तो शिक्षा पर विशेष विवेचन किया गया है। शिक्षा के इतिहास की दृष्टि से 'रिपब्लिक' शिक्षा संबंधी विचारों पर संसार में सबसे पहली पुस्तक है।

'रिपब्लिक' पहले लिखी गई और 'लॉज' बाद में। दोनों पुस्तकों को पढ़ने से यह विदित होता है। कि प्लेटो की शिक्षा संबंधित विचारों में एकरुपता नहीं है। 'रिपब्लिक' में वह नितांत आदर्शवादी होकर हमारे समक्ष आता है और स्पष्ट घोषणा करता है की अज्ञानता ही सारी बुराइयों की जड़ है किंतु 'लॉज' में वह अज्ञानता को इतना बुरा नहीं मानता। 'रिपब्लिक' की रचना प्लेटो ने अपनी यौवन काल में की थी तथा 'लॉज' वृद्धावस्था में रची गई पुस्तक है। ज्यों-ज्यों प्लेटों के विचार परिपक्व होते गये, त्यों-त्यों वह शिक्षा संबंधी विचारों में परिवर्तन करता गया। किंतु अपने सभी संवादों में प्लेटो शिक्षा की क्षमता को स्वीकार करता है और वह समाज के कल्याण का आधार शिक्षा को ही बताता है।

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का मानना था कि किसी भी श्रेष्ठ राजनीतिक जीवन के निर्माण हेतु श्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली का होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा का इस दार्शनिक ने जितना महत्व स्वीकार किया यह बात इस तथ्य से प्रकट होता है कि रिपब्लिक की लगभग चार पुस्तकों में उसने अपना ध्यान प्रमुख रूप से एक आदर्श राज्य के निर्माण हेतु एक उपयुक्त शिक्षा प्रणाली की विस्तृत रूपरेखा तैयार करने पर ही केन्द्रित किया है।

''प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत हमें उनकी 'रिपब्लिक' और 'दा लॉज' नामक पुस्तकों में देखने को मिलते हैं। पहले तो प्लेटो भी अपने गुरु सुकरात की तरह मानता था कि ज्ञान ही सदगुण है। लेकिन बाद में उसने माना कि ज्ञान व सदगुण अलग-अलग है तथा दोनों की शिक्षा दी जा सकती है। सदगुण ईश्वर द्वारा दिया गया रहस्यात्मक पुरस्कार है। गुण की तरह बुद्धि को प्लेटो ने प्रकृति द्वारा प्रदान की गई वस्तु माना है तथा कहा है कि बुद्धि विभेद के कारण मनुष्य में विभेद होता है। इसी के आधार पर उसने समाज का विभाजन तीन वर्गो में किया है -

- दार्शनिक :- जिसके पास ज्ञान का गुण होता है।
- सैनिक :- जो साहस व युद्ध कला का गुण रखते है।
- मजदूर :- जो उत्पादन व श्रम करते हैं।

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो ने इनकी तुलना क्रमश स्वर्ण, रजत व ताम्र धातुओं से की है। प्लेटो के अनुसार शिक्षा का दायित्व इसी बुद्धि मात्रा का पता लगाना तथा इसका विकास करके व्यक्ति को किसी भी वर्ग में रखने तथा वर्ग के अनुसार दोनों का विकास करना है।

5. पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो के शिक्षा सिद्धान्त की वर्तमान युग में उपादेयता

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो के शैक्षिक सिद्धान्त का अध्ययन करने के बाद शोधकर्त्री ने पाया कि इनके विचारों की वर्तमान युग में बहुत उपादेयता है जिनको निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर जाना जा सकता है–

- पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत वर्तमान युग में बहुत ही अधिक प्रासंगिक व उपयोगी है, क्योंकि उन्होंने शिक्षा को मानव जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना और वास्तविकता भी यही है कि 'बिना शिक्षा के मनुष्य पृथ्वी पर एक भार के समान है।'
- शिक्षा को उन्होंने किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखा बल्कि बालकों की शारीरिक, बौद्धिक, चारित्रिक, सामाजिक

विकास यानी कि सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान देने की कोशिश की।

- पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो ने ऐसी शिक्षा जो देशहित में उपयोगी न हो उसे व्यर्थ ही माना।
- आज के समय में हम देखते हैं कि सारी दुनिया में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। लोग इसलिए शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं कि इससे उसे अच्छी नौकरी मिल जाए, ज्यादा से ज्यादा धन अर्जन करना अब शिक्षा का उद्देश्य हो गया है। यही कारण है कि शिक्षा का स्तर दिनों-दिन गिरता ही जा रहा है। अतः शिक्षा के व्यवसायीकरण को रोका जाये।
- पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो के अनुसार नैतिक मूल्यों की शिक्षा कम दी जा रही है जिससे समाज में एक अजीब सा माहौल बन गया है। लोग रिश्तों को महत्व देना भूल गए हैं, अपने से बड़ों के लिए जो इज्जत होनी चाहिए वह कहीं नहीं दिखती। संपूर्ण सृष्टि बस स्वार्थवश आपस में एक दुसरे से जुड़ी हुई है। अतः नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर फिर से जोर दिया जाये।
- वर्तमान समय में हमें एक ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो मनुष्य में मनुष्यता का विकास करें और उसे स्वार्थ भरी दुनिया से बाहर निकलने का प्रयास करें। लोगों में देश के लिए प्रेम की भावना विकसित हो। नैतिक मूल्यों का विकास हो। इन सब दृष्टिकोण से अगर हम देखे तो पाते हैं कि प्लेटो की शिक्षण पद्धति आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस समय में थी।
- व्यायाम, संगीत, खेलकूद आदि को शिक्षा में स्थान देकर उन्होंने बालकों के मानसिक और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान देने का प्रयास किया।
- पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो ने महान विचारकों की रचनाओं, शिक्षाओं और विचारों आदि के द्वारा नैतिक शिक्षा देने की बात कहा।
- उनका शिक्षा सिद्धांत हमें बताता है कि एक शिक्षित शासक ही देश की शासन व्यवस्था का उचित संचालन कर सकता है।
- 'दार्शनिक शासक' की कल्पना कर शासन में उचित शिक्षा का कितना अधिक महत्व है, इससे उन्होंने दुनिया को रूबरू कराने का प्रयास किया जिसे अपनाने की आवश्यकता आज संपूर्ण विश्व को है।
- इसके अलावा उन्होंने नारी शिक्षा को भी अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। वो भी उस समय में जब नारियों को बहुत ही ज्यादा पर्दे में रखा जाता था। यह उनके प्रयास का ही प्रतिफल है कि आज विश्व के लगभग सभी देशों में महिलाओं को बराबरी का अधिकार प्राप्त है।
- पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो ने ही सर्वप्रथम 'अकादमी' की स्थापना करके शिक्षा का एक निश्चित स्थान तथा स्थायित्व प्रदान किया।
- पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का यह कहना सत्य ही जान पड़ता है कि समाज में शिक्षा द्वारा ही न्याय की स्थापना की जा सकती है।
- पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो के द्वारा किए गए समाज सुधार कार्यो जैसे- स्त्री शिक्षा, राश्ट्रवाद, जन शिक्षा आदि कार्य वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं तथा आज भी उनकी बहुत आवश्यकता है।

निष्कर्ष

प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत, जो उनके दार्शनिक विचारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है, का प्रमुख निष्कर्ष यही निकलता है कि शिक्षा न्याय प्राप्त करने का एक साधन है, जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों स्तरों पर लागू होता है। प्लेटो का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को उनके स्वाभाविक गुणों के अनुसार विकसित करना और उन्हें समाज के लिए उपयोगी बनाना है। इसके साथ ही, शिक्षा सत्य के प्रति प्रेम और ज्ञान की खोज को बढ़ावा देती है, जो व्यक्ति को बुराई से दूर ले जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. www.wikipedia.com
2. www.yourarticlelibrary.com
3. डॉ. एन. पी. सिंह, 'शिक्षा के दार्शनिक आधार' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या 2-3
4. डॉ. भटनागर ए.बी., डॉ. भटनागर अनुराग, 'शिक्षा के दार्शनिक, एवं समाजशास्त्रीय आधार' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2014, पृ.सं. 258
5. मेहता जीवन, 'पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तक, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि., आगरा, संस्करण 2007, पृ.सं. 1-2
6. डॉ. परवीन आबिदा, डॉ. सोलंकी रविबाला, मदेशिया प्रमोद कुमार, ''ज्ञान एवं पाठ्यक्रम'' ठाकुर पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर, संस्करण 2017, वृतं. 153-154
7. लाल एवं तोमर विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण प्रथम 2004, पृ.सं. 18-21
8. सक्सेना एन. आर. स्वरूप, चतुर्वेदी शिखा ''पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा दार्शनिक'' आर लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. सं. 17-18
9. डॉ. पाण्डेय रामशकल ''शिक्षा दर्शन और शिक्षा शास्त्री' श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण पंचम 2014, पृ. सं. 70

मानविकी शिक्षा में खेल-आधारित शिक्षण की प्रभावशीलता

डॉ. वैशाली सिंह
शिक्षा संकाय
Resercher in Education, Delhi India
Address- B 29A top floor Rameshwar nagar near main road MCD flates Ajadpur New Delhi 110033
ईमेल : Dolly6433@gmail.com, संपर्क : 7053199389

सारांश

यह शोध पत्र मानविकी शिक्षा में खेल-आधारित शिक्षण (गेमिफिकेशन) की प्रभावशीलता का विश्लेषण करता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में जहाँ रटने और परीक्षा-केंद्रित विधियाँ प्रचलित हैं, गेमिफिकेशन एक नवाचारी दृष्टिकोण के रूप में उभर रहा है। यह अध्ययन साहित्य, इतिहास और दर्शन जैसे विषयों में रोल-प्ले, सिमुलेशन और डिजिटल गेम्स के माध्यम से छात्र सहभागिता, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता पर इसके प्रभाव की पड़ताल करता है। दिल्ली विश्वविद्यालय और जेएनयू में किए गए केस स्टडी, 150 छात्रों और 30 शिक्षकों पर आधारित सर्वेक्षण, और साहित्य समीक्षा के माध्यम से यह पाया गया कि गेमिफिकेशन न केवल रुचिकर शिक्षण प्रदान करता है, बल्कि सांस्कृतिक प्रासंगिकता को भी बढ़ाता है। हालांकि, संसाधनों की कमी, तकनीकी सीमाएँ, और शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता इस पद्धति के समुचित क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती हैं। शोध निष्कर्ष गेमिफिकेशन को एक संभावनाशील शैक्षिक उपकरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

परिचय

मानविकी शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में आलोचनात्मक सोच, सहानुभूति और सांस्कृतिक समझ विकसित करना है। खेल-आधारित शिक्षण (गेमिफिकेशन) एक वैकल्पिक दृष्टिकोण है, जो रोल-प्ले, सिमुलेशन, और डिजिटल गेम्स जैसे इंटरैक्टिव तरीकों का उपयोग करता है। यह पेपर इस बात की जाँच करता है कि गेमिफिकेशन मानविकी शिक्षा में कितना प्रभावी है और यह कैसे छात्रों की प्रेरणा, रचनात्मकता, और सीखने के परिणामों को बढ़ा सकता है।

भारतीय संदर्भ में, जहाँ शिक्षा प्रणाली अक्सर परीक्षा-केंद्रित होती है, गेमिफिकेशन एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण हो सकता है। यह शोध विशेष रूप से साहित्य, इतिहास, और दर्शनशास्त्र जैसे विषयों में गेमिफिकेशन की भूमिका पर केंद्रित है। शोध प्रश्न हैंः (1) गेमिफिकेशन मानविकी शिक्षा में सहभागिता और आलोचनात्मक सोच को कैसे प्रभावित करता है? (2) भारतीय शैक्षिक संदर्भ में इसके लाभ और चुनौतियाँ क्या हैं? (3) स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों को शामिल करने से गेमिफिकेशन की प्रभावशीलता कैसे बढ़ती है? यह पत्र साहित्य समीक्षा, केस स्टडी, और सर्वेक्षण डेटा के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत करता है, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली में गेमिफिकेशन के संभावित प्रभाव को रेखांकित करता है।

कुंजी शब्द : गेमिफिकेशन, मानविकी शिक्षा, सहभागिता, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, भारतीय शिक्षा, रोल-प्ले, डिजिटल गेम्स।

साहित्य समीक्षा

खेल-आधारित शिक्षण पर शोध दशकों से शिक्षा के क्षेत्र में चर्चा में रहा है। गी (Gee, 2003) के अनुसार, गेमिफिकेशन सीखने को एक सक्रिय और अनुभवात्मक प्रक्रिया बनाता है, जो छात्रों को जटिल अवधारणाओं को समझने में मदद करता है। मानविकी शिक्षा में, रोल-प्ले और सिमुलेशन ऐतिहासिक घटनाओं या साहित्यिक चरित्रों को जीवंत करते हैं, जिससे छात्रों में सहानुभूति और आलोचनात्मक सोच विकसित होती है (Smith - Brown, 2018)। उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक सिमुलेशन जैसे "महाभारत रोल-प्ले" छात्रों को नैतिक दुविधाओं को समझने में मदद करते हैं। डिजिटल गेम्स, जैसे शैक्षिक ऐप्स, साहित्यिक ग्रंथों के विश्लेषण को इंटरैक्टिव बनाते हैं (Kumar & Sharma, 2020)।

भारतीय संदर्भ में, गेमिफिकेशन का उपयोग सीमित है, लेकिन प्रारंभिक अध्ययन (Gupta, 2022) सुझाते हैं कि यह रटने-आधारित शिक्षा को बदल सकता है। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित डिजिटल गेम्स ने प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया है। यह साहित्य समीक्षा दर्शाती है कि गेमिफिकेशन के सिद्धांत मानविकी शिक्षा में प्रभावी हो सकते हैं, लेकिन इसके लिए सांस्कृतिक और संसाधन-आधारित अनुकूलन की आवश्यकता है।

शोध पद्धति

यह शोध मिश्रित विधि दृष्टिकोण का उपयोग करता है। डेटा संग्रह के लिए तीन विधियाँ अपनाई गईं :

1. साहित्य विश्लेषण : मानविकी शिक्षा में गेमिफिकेशन पर मौजूदा शोध की समीक्षा, विशेष रूप से भारतीय और वैश्विक संदर्भों में।

2. केस स्टडी : दो भारतीय विश्वविद्यालयों (दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) में आयोजित रोल-प्ले और डिजिटल गेम्स आधारित कक्षाओं का अध्ययन। उदाहरण के लिए, प्रेमचंद की कहानी "ईदगाह" पर आधारित रोल-प्ले और महाभारत पर आधारित सिमुलेशन।

3. सर्वेक्षण : 150 स्नातक छात्रों और 30 शिक्षकों के बीच गेमिफिकेशन की प्रभावशीलता पर प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण।

डेटा विश्लेषण में थीमैटिक विश्लेषण (thematic analysis) का उपयोग किया गया, जिसमें सहभागिता, प्रेरणा, आलोचनात्मक सोच, और सांस्कृतिक प्रासंगिकता जैसे थीम्स की पहचान की गई। भारतीय संदर्भ में स्थानीय साहित्य (जैसे पंचतंत्र, रवींद्रनाथ टैगोर) और इतिहास (जैसे स्वतंत्रता संग्राम) पर आधारित गेम्स को प्राथमिकता दी गई। सर्वेक्षण में लिकर्ट स्केल (Likert Scale) का उपयोग किया गया ताकि छात्रों और शिक्षकों की धारणाओं को मापा जा सके।

विश्लेषण और चर्चा

सहभागिता और प्रेरणा में वृद्धि

सर्वेक्षण डेटा से पता चलता है कि 85% छात्रों ने गेमिफिकेशन-आधारित कक्षाओं में अधिक रुचि दिखाई, खासकर जब रोल-प्ले या डिजिटल क्विज़ जैसे "Kahoot" का उपयोग किया गया। उदाहरण के लिए, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित "महाभारत सिमुलेशन" में छात्रों ने कुरुक्षेत्र युद्ध की नैतिक दुविधाओं को समझने के लिए विभिन्न पात्रों (जैसे अर्जुन, द्रौपदी) की भूमिका निभाई। इस गतिविधि ने न केवल उनकी सहभागिता बढ़ाई बल्कि नैतिक चिंतन और सहानुभूति को भी प्रोत्साहित किया। यह गी (2003) के निष्कर्षों से मेल खाता है, जो बताते हैं कि गेम्स जटिल अवधारणाओं को सरल और आकर्षक बनाते हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रेमचंद की कहानी "ईदगाह" पर आधारित रोल-प्ले गतिविधि में छात्रों ने हामिद और अन्य पात्रों की भूमिका निभाकर सामाजिक-आर्थिक असमानताओं पर चर्चा की। सर्वेक्षण में 78% छात्रों ने बताया कि इस तरह की गतिविधियों ने उन्हें कहानी के भावनात्मक और सामाजिक संदेशों को गहराई से समझने में मदद की। यह दर्शाता है कि गेमिफिकेशन न केवल सहभागिता बढ़ाता है बल्कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता को भी विकसित करता है।

आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता

गेमिफिकेशन ने छात्रों की आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित एक डिजिटल गेम में छात्रों को नैतिक दुविधाओं पर आधारित विकल्प चुनने थे, जिससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता और नैतिक चिंतन में सुधार हुआ। सर्वेक्षण में 70% छात्रों ने बताया कि गेम-आधारित गतिविधियों ने उन्हें साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भों को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित किया। डिजिटल गेम्स, जैसे "Kahoot" पर आधारित साहित्यिक क्विज़, ने त्वरित विश्लेषण और सह-सहपाठी चर्चा को प्रोत्साहित किया, जिससे रचनात्मकता में वृद्धि हुई।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित एक सिमुलेशन में छात्रों ने ऐतिहासिक व्यक्तित्वों (जैसे गांधी, नेहरू) की भूमिका निभाई और स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों पर निर्णय लिए। इस गतिविधि ने न केवल ऐतिहासिक समझ को गहरा किया बल्कि नेतृत्व और सहयोग जैसे कौशलों को भी विकसित किया। यह Smith - Brown (2018) के अध्ययन से मेल खाता है, जो बताते हैं कि सिमुलेशन-आधारित शिक्षण आलोचनात्मक सोच को बढ़ाता है।

भारतीय संदर्भ में लाभ

भारत में, जहाँ शिक्षा प्रणाली अक्सर परीक्षा-केंद्रित और रटने पर आधारित होती है, गेमिफिकेशन एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रदान करता है। स्थानीय साहित्य और इतिहास पर आधारित गेम्स सांस्कृतिक प्रासंगिकता को बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, रवींद्रनाथ टैगोर की कहानी "काबुलीवाला" पर आधारित एक रोल-प्ले गतिविधि ने छात्रों में सामाजिक सहानुभूति और सांस्कृतिक विविधता की समझ को बढ़ाया। इसी तरह, पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित डिजिटल गेम्स ने प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा को रुचिकर बनाया। सर्वेक्षण में 65% शिक्षकों ने माना कि स्थानीय सामग्री पर आधारित गेम्स छात्रों को अधिक प्रासंगिक और आकर्षक लगते हैं।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

गेमिफिकेशन की प्रभावशीलता के बावजूद, कई चुनौतियाँ हैं। सर्वेक्षण में 60% शिक्षकों ने संसाधनों की कमी, जैसे डिजिटल उपकरण और इंटरनेट की अनुपलब्धता, को प्रमुख बाधा बताया। ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या और गंभीर है, जहाँ तकनीकी बुनियादी ढांचा सीमित है। इसके अतिरिक्त, गेमिफिकेशन को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए समय और योजना की आवश्यकता होती है। कुछ शिक्षकों (25%) ने बताया कि गेम-आधारित गतिविधियाँ तैयार करने में अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता होती है, जो व्यस्त शैक्षिक शेड्यूल में चुनौतीपूर्ण है।

सर्वेक्षण में 30% छात्रों ने डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करने में कठिनाई की शिकायत की। इसके अलावा, गेमिफिकेशन का दीर्घकालिक प्रभाव अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। Kumar - Sharma (2020) के अनुसार, गेम-आधारित शिक्षण अल्पकालिक सहभागिता में प्रभावी है, लेकिन दीर्घकालिक ज्ञान संरक्षण के लिए इसे अन्य विधियों के साथ संयोजित करने की आवश्यकता है।

तुलनात्मक विश्लेषण

पारंपरिक व्याख्यान-आधारित शिक्षण की तुलना में, गेमिफिकेशन ने 70% अधिक छात्र सहभागिता दिखाई। हालाँकि,

दीर्घकालिक ज्ञान संरक्षण में दोनों विधियों के बीच अंतर न्यूनतम था। यह दर्शाता है कि गेमिफिकेशन को हाइब्रिड मॉडल (पारंपरिक और गेम-आधारित शिक्षण का संयोजन) के रूप में लागू करना अधिक प्रभावी हो सकता है। उदाहरण के लिए, साहित्य कक्षाओं में रोल-प्ले के बाद व्याख्यान-आधारित चर्चा ने छात्रों की समझ को और गहरा किया।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए निहितार्थ

भारतीय संदर्भ में, गेमिफिकेशन को लागू करने के लिए सांस्कृतिक और क्षेत्रीय तत्वों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, क्षेत्रीय लोककथाओं (जैसे राजस्थानी कथाएँ या तमिल लोककथाएँ) पर आधारित गेम्स ग्रामीण छात्रों के लिए अधिक प्रासंगिक हो सकते हैं। इसके अलावा, कम लागत वाली ऑफलाइन गतिविधियाँ, जैसे रोल-प्ले और बोर्ड गेम्स, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी हो सकती हैं, जहाँ डिजिटल संसाधन सीमित हैं।

निष्कर्ष और सुझाव

यह शोध दर्शाता है कि खेल-आधारित शिक्षण मानविकी शिक्षा में सहभागिता, रचनात्मकता, और आलोचनात्मक सोच को बढ़ाने में प्रभावी है। भारतीय संदर्भ में, स्थानीय साहित्य और इतिहास पर आधारित गेम्स सांस्कृतिक प्रासंगिकता को बढ़ाते हैं और छात्रों को उनके सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ते हैं। हालाँकि, संसाधनों की कमी, शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता, और तकनीकी बुनियादी ढांचे की सीमाएँ इसकी व्यापक स्वीकार्यता में बाधा हैं।

सुझाव

1. शैक्षिक नीतियों में गेमिफिकेशन को एकीकृत करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाएँ, जिसमें रोल-प्ले और डिजिटल टूल्स के उपयोग पर कार्यशालाएँ शामिल हों।

2. स्थानीय और क्षेत्रीय साहित्य पर आधारित गेम्स विकसित किए जाएँ, जैसे पंचतंत्र, महाभारत, या क्षेत्रीय लोककथाओं पर आधारित डिजिटल और ऑफलाइन गेम्स।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में गेमिफिकेशन के लिए कम लागत वाली ऑफलाइन गतिविधियों, जैसे बोर्ड गेम्स और रोल-प्ले, पर ध्यान दिया जाए।

4. दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए अनुदैर्ध्य अध्ययन (longitudinal studies) किए जाएँ, जो गेमिफिकेशन के स्थायी प्रभाव को मापें।

5. सरकार और शैक्षिक संस्थानों को डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश करना चाहिए, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में।

गेमिफिकेशन मानविकी शिक्षा को अधिक इंटरैक्टिव, प्रासंगिक, और समावेशी बनाने की क्षमता रखता है, बशर्ते इसे सही संसाधनों, सांस्कृतिक अनुकूलन, और रणनीतियों के साथ लागू किया जाए।

संदर्भ

1. गी, जे. पी. (2003). वीडियो गेम्स हमें सीखने और साक्षरता के बारे में क्या सिखा सकते हैं। न्यूयॉर्क : पालग्रेव मैकमिलन।
2. स्मिथ, ए., और ब्राउन, आर. (2018). "मानविकी में गेम-आधारित शिक्षण : आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ाना।" जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 45(3), 123-134।
3. कुमार, एस., और शर्मा, पी. (2020). "भारतीय शिक्षा में डिजिटल गेम्स : अवसर और चुनौतियाँ।" इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन स्टडीज, 12(2), 56-67।
4. गुप्ता, आर. (2022). "भारतीय उच्च शिक्षा में गेमीकरण : एक केस स्टडी दृष्टिकोण।" जर्नल ऑफ इनोवेटिव टीचिंग, 8(1), 89-102।

श्रीगंगानगर (राजस्थान) जिले का प्राकृतिक भूगोल

छविंद्र सिंह
Geography, Sadulshahar Degree College,
Sadulshahar
qualification -M.A., B.ED.,NET Geography

परिचय

श्रीगंगानगर राजस्थान का एक प्रमुख जिला है, जिसे "राजस्थान का पंजाब" और "अन्न भंडार" कहा जाता है। यह राज्य के उत्तर-पश्चिमी कोने में स्थित है तथा इसकी सीमाएँ उत्तर में पंजाब, पश्चिम में पाकिस्तान (सिंध प्रांत), दक्षिण में बीकानेर और पूर्व में हनुमानगढ़ से लगती हैं। यह जिला भौगोलिक, ऐतिहासिक और कृषि की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

श्रीगंगानगर की स्थापना महाराजा गंगा सिंह ने 1927 में इंदिरा गांधी नहर (तब गंग नहर) के माध्यम से इस क्षेत्र को सिंचित करने के उद्देश्य से की थी। यह जिला पूर्व में रेगिस्तान था, किंतु सिंचाई व्यवस्था के विकास के बाद यह हराभरा कृषि क्षेत्र बन गया। इंदिरा गांधी नहर परियोजना ने श्रीगंगानगर को राजस्थान का सबसे उपजाऊ और समृद्ध जिला बना दिया।

भौगोलिक दृष्टि से यह जिला थार मरुस्थल और पंजाब के मैदानों के मध्य स्थित है। यहाँ की जलवायु अर्ध-शुष्क है, जिसमें गर्मियाँ तीव्र तथा सर्दियाँ अत्यंत ठंडी होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में तापमान 45ींB तक पहुँच जाता है जबकि सर्दियों में यह 0ींB तक गिर सकता है। औसत वार्षिक वर्षा लगभग 200-300 मिमी होती है।

श्रीगंगानगर जिले की मिट्टी रेतीली, दोमट तथा नहरों के जल से उपजाऊ बन चुकी है। यहाँ मुख्यतः गेहूँ, सरसों, कपास, गन्ना, मूँगफली, और चना जैसी फसलें उगाई जाती हैं। जिले का कृषि विकास पूरे राजस्थान में अग्रणी स्थान पर है।

जनसंख्या की दृष्टि से यह जिला विविधतापूर्ण है। यहाँ पंजाबी, राजस्थानी, मारवाड़ी, हरियाणवी और सिन्धी भाषाएँ बोली जाती हैं। सांस्कृतिक रूप से यह क्षेत्र पंजाब और राजस्थान दोनों की परंपराओं को समेटे हुए है।

यहाँ का प्रमुख नगर श्रीगंगानगर शहर एक नियोजित नगर है और व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा एवं परिवहन की दृष्टि से महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ रेलवे और सड़क मार्गों की अच्छी सुविधा है, जिससे यह पंजाब, हरियाणा और दिल्ली से सीधे जुड़ा हुआ है।

अंततः श्रीगंगानगर न केवल राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि इसकी भौगोलिक विशेषताएँ, सामाजिक विविधता और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इसे एक विशेष स्थान प्रदान करती हैं।

राजस्थान का उत्तर-पश्चिमी कोना, जिसे 'राजस्थान का अन्न भंडार' कहा जाता है वही है श्रीगंगानगर जिला। यह क्षेत्र

भले ही भौगोलिक दृष्टि से थार मरुस्थल की सीमा पर स्थित हो, परंतु इसकी प्राकृतिक स्थितियाँ इसे राजस्थान के अन्य जिलों से भिन्न बनाती हैं। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के कारण यहाँ हरियाली, जल और उपज का जो विकास हुआ है, उसने इसे एक कृषि प्रधान क्षेत्र के रूप में स्थापित कर दिया है।

1. भौगोलिक स्थिति और सीमाएँ

श्रीगंगानगर राजस्थान का उत्तरीतम जिला है, जिसकी अवस्थिति 28ीं 4श से 30ीं 6श उत्तरी अक्षांश और 72ीं 2श से 75ीं 3श पूवी देशांतर के बीच है। यह जिला उत्तर में पंजाब, पश्चिम में पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय सीमा, दक्षिण में बीकानेर और पूर्व में हनुमानगढ़ जिले से घिरा हुआ है।

2. स्थलाकृति और भू-रूप

श्रीगंगानगर का भू-भाग मुख्यतः समतल और विस्तृत मैदानों वाला है। इसकी स्थलाकृति को तीन प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है :

(क) 'नहर सिंचित उपजाऊ मैदान'

इंदिरा गांधी नहर के कारण इस क्षेत्र में हरे-भरे खेत, उर्वर भूमि और स्थायी जल उपलब्धता है। यहाँ की मिट्टी गहरी जलोढ़ (alluvial) है।

(ख) 'रेतीले मरुस्थलीय क्षेत्र'

पश्चिमी और दक्षिणी हिस्सों में अब भी रेत के टिब्बे और आंशिक मरुस्थलीय स्वरूप देखा जा सकता है, खासकर अनूपगढ़ व सूरतगढ़ क्षेत्र में।

(ग) 'नदीय समभूमि क्षेत्र'

घग्गर नदी के बहाव क्षेत्र में उथले नदी मैदान और वर्षा ऋतु में जलभराव वाले हिस्से आते हैं।

3. जलवायु

श्रीगंगानगर की जलवायु अर्ध-शुष्क (semi-arid) है, परंतु सिंचाई के साधनों के कारण यह अपेक्षाकृत अनुकूल बन गई है।

ग्रीष्मकाल : तापमान 45^0 तक

शीतकाल : 45^0 तक गिर सकता है

औसत वर्षा : लगभग 200-300 मिमी (अधिकतर मानसून में)

वर्षा स्रोत : दक्षिण-पश्चिम मानसून व कुछ पश्चिमी विक्षोभ

गर्मियाँ लू-युक्त और लंबी होती हैं, परंतु जल संसाधनों की उपलब्धता जीवन को संतुलित बनाए रखती है।

4. जल संसाधन

श्रीगंगानगर राजस्थान का एकमात्र ऐसा जिला है, जो प्राकृतिक जल संकट से काफी हद तक मुक्त माना जाता है। इसके पीछे मुख्य कारण है :

(क) इंदिरा गांधी नहर परियोजना

इस नहर ने मरुस्थल में हरियाली ला दी। पंजाब के हरिके बैराज से निकली यह नहर कृषि, पेयजल, औद्योगिक उपयोग सभी के लिए जीवनरेखा बन चुकी है।

(ख) घग्गर नदी

यह मौसमी नदी है जो मानसून में बहती है और हरियाली व जलभराव का स्रोत बनती है।

(ग) तालाब, कूंए, ट्यूबवेल

कई क्षेत्रों में भूजल दोहन द्वारा कृषि और घरेलू उपयोग संभव है, परंतु नहरों के कारण इस पर निर्भरता कम है।

5. मिट्टी और कृषि

यहाँ की मिट्टी मुख्यतः जलोढ़ प्रकार की उपजाऊ मिट्टी है। नहर सिंचाई और मिट्टी की उर्वरता के कारण यहाँ बहुफसली खेती होती है। प्रमुख फसलें हैं :

- गेहूँ, चना, सरसों (रबी फसलें)
- कपास, ग्वार, मूँगफली, मक्का (खरीफ)
- गन्ना, चना, बाजरा, अजवाइन, सब्जियाँ

कृषि की विशेषताएँ :

- उच्च उपज
- सिंचित कृषि
- बहुफसल प्रणाली
- आधुनिक यंत्रों का उपयोग

6. वनस्पति और वन क्षेत्र

पूर्व में यह क्षेत्र शुष्क और वनहीन था, परंतु नहर परियोजना के बाद वृक्षारोपण और हरियाली में वृद्धि हुई है :

- नीम, शिरीष, खेजड़ी, बबूल
- सड़क किनारे वृक्ष, सिंचित वृक्षारोपण क्षेत्र
- वन विभाग द्वारा संरक्षित वन क्षेत्र घोषित किए गए हैं

7. जीव-जंतु

वन्यजीवों की दृष्टि से श्रीगंगानगर समृद्ध नहीं है, फिर भी कुछ क्षेत्रीय जीव देखने को मिलते हैं :

- नीलगाय, सियार, लोमड़ी, सांभर
- पक्षियों में मोर, तोता, मैना, बाज, सारस
- नहर व जलाशयों के कारण आंशिक प्रवासी पक्षियों का आगमन

8. पर्यावरणीय चुनौतियाँ

हालाँकि यह जिला हरित है, फिर भी कुछ पर्यावरणीय समस्याएँ उभर रही हैं :

- भूमिगत जलस्तर में गिरावट - (कुछ क्षेत्रों में)
- जलभराव व क्षारीयता - ज़मीन की उपज कम होना
- मृदा अपरदन -अनूपगढ़ आदि में रेत के टीलों का विस्तार
- रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग

9. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

सरकार और समाज की संयुक्त पहल से प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं :

- ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई - जल बचत हेतु
- फसल चक्र परिवर्तन
- मृदा परीक्षण और जैविक खेती
- नदी-नहर जल प्रबंधन समितियाँ

10. मानव बसावट और जीवनशैली

श्रीगंगानगर की जनसंख्या मुख्यतः ग्रामीण है, परंतु आधुनिक कृषि और बेहतर सिंचाई के कारण जीवनस्तर ऊँचा है। यहाँ के लोग मेहनती, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले और खेती से गहराई से जुड़े हैं।

- **शहरीकरण** : श्रीगंगानगर शहर, रायसिंहनगर, सूरतगढ़ जैसे कस्बे।
- **परंपरा और नवाचार** : खेतों में ट्रैक्टर और त्योहार दोनों साथ चलते हैं।

निष्कर्ष

श्रीगंगानगर राजस्थान का वह जिला है, जहाँ प्राकृतिक भूगोल और मानव प्रयासों का आदर्श समन्वय देखने को मिलता है। यह क्षेत्र एक उदाहरण है कि किस प्रकार एक मरुस्थलीय प्रदेश को नियोजित जल संसाधनों, कृषि सुधारों और सामाजिक जागरूकता से हरा-भरा और समृद्ध बनाया जा सकता है। भविष्य में इस जिले की भूगोलिक पहचान न केवल राज्य में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर कृषि नवाचार और पर्यावरणीय संतुलन के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, बी.के. (2019). राजस्थान का भूगोल. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. गौड़, एस.पी. (2020). भारत एवं राजस्थान का भूगोल. नवीन पुस्तक भंडार, जयपुर।
3. Directorate of Economics and Statistics, Rajasthan. (2023). District Statistical Abstract: Sri Ganganagar. Government of Rajasthan, Jaipur.
4. Central Ground Water Board (2022). Ground Water Year Book – Rajasthan (Sri Ganganagar District). Ministry of Jal Shakti, Government of India.

5. India Meteorological Department (IMD). (2022). Climatological Normals of Sri Ganganagar District. IMD Publication, Pune.
6. Rajasthan State Remote Sensing Application Centre (RSAC). (2021). Land Use/Land Cover Atlas: Sri Ganganagar District. Jaipur: RSAC?
7. Chopra, R.N. (2018). Irrigation and Canal System in North-West Rajasthan: A Case Study of IGNP. Concept Publishing Company, New Delhi
8. Singh, R.L. (2015). India: A Regional Geography. National Geographical Society of India, Varanasi
9. Rajasthan State Archives. (2009). Sri Ganganagar District Gazetteer. Government of Rajasthan, Bikaner
10. Vyas, V.N. (2016). Ecological Transition of Thar to Punjab Plains: Focus on Sri Ganganagar. New Delhi: Concept Publishing Company.
11. IGNP Project Authority. (2020). Irrigation Impact Report on Sri Ganganagar and Hanumangarh. Government of Rajasthan.
12. Planning Department, Rajasthan Government. (2021). Human Development Report: Sri Ganganagar District Chapter. Jaipur
13. Rajasthan Pollution Control Board. (2022). Environmental Profile of Sri Ganganagar District. Jaipur: RPCB Publication.
14. Bhargava, M.L. (2003). Geography of Rajasthan. Kuldeep Publications, Jaipur
15. District Disaster Management Authority (DDMA), Sriganganagar (2022). District Environment and Climate Vulnerability Report?

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

सामाजिक यथार्थ की पड़ताल : डॉ. नरेश सिहाग की कविताएँ

डॉ. लता एस पाटिल
राजीव गांधी बी एड कॉलेज धारवाड़ कर्नाटक

परिचय

हिंदी कविता का मूल स्वभाव यथार्थ से गहरे स्तर पर जुड़ा रहा है। चाहे छायावादी काल की भावप्रवणता हो या प्रगतिशील कविता का जनपक्षधर दृष्टिकोण कविता सदैव समाज के भीतर की हलचलों को स्वर देती रही है। समकालीन हिंदी कविता में यह यथार्थबोध और अधिक सघन हुआ है, जहाँ कवि न केवल सामाजिक विडंबनाओं को चिन्हित करता है, बल्कि उनके पीछे की विचारधारात्मक संरचनाओं पर भी सवाल उठाता है। इस सन्दर्भ में डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' की कविताएँ एक विशेष विमर्श की मांग करती हैं, क्योंकि वे वर्तमान सामाजिक यथार्थ को बेबाकी, वैचारिक दृढ़ता और काव्यात्मक संवेदना के साथ अभिव्यक्त करती हैं।

डॉ. सिहाग की कविताएँ फ़ेसबुक, पत्रिकाओं और 'बोहल शोध मंजूषा' गीना शोध संगम, शोध समालोचन और शांति धर्मी, साहित्य कुंज जैसे मंचों पर निरंतर प्रकाशित हो रही हैं, और एक पाठकवर्ग के बीच तीव्र प्रभाव छोड़ रही हैं। उनका काव्य 'निजता' से अधिक 'समष्टि' की ओर उन्मुख है जहाँ आम जन की पीड़ा, संघर्ष, शोषण, विषमता और सवाल हैं।

1. डॉ. नरेश सिहाग : एक काव्य-यात्री

डॉ. नरेश सिहाग न केवल एक अधिवक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, बल्कि वे हिंदी कविता में जनपक्षधरता की मुखर आवाज़ भी हैं। उनका काव्य अनुभव और प्रतिरोध का ऐसा दस्तावेज़ है जो नारेबाज़ी से नहीं, बल्कि ठोस यथार्थ से संवाद करता है।

उनकी कविताओं में

- ग्रामीण जीवन की विद्रूपताएँ,
- जातिगत भेदभाव,
- स्त्री-वंचना,
- शोषित वर्गों की पीड़ा,
- किसानों की आत्महत्या,
- पूंजीवादी व्यवस्था का अनावरण

जैसे विषय प्रमुख हैं।

वे कविता को 'भावुकता' नहीं, बल्कि 'जिम्मेदारी' के रूप में देखते हैं।

2. सामाजिक यथार्थ की धार : विषयवस्तु का विस्तार

डॉ. सिहाग की कविताओं में सामाजिक यथार्थ केवल वर्णनात्मक नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक रूप में सामने आता है। वे सामाजिक असमानता को श्रृंगार की तरह नहीं बरतते, बल्कि उसके मूल स्रोतों की पहचान करते हैं।

उनकी कविता "मंच पर नहीं, खेत में उतर कविता" का अंश देखें–

- ''मंचों पर पढ़ी गई कविताओं से
- खेत की मिट्टी नहीं भीगती,
- जो पसीने की धार में बहे
- वही कविता है असली।''

यह कविता 'लोक' और 'अभिजात्य' के बीच अंतर स्पष्ट करती है। यहाँ कविता का मूल्य मंच पर नहीं, जीवन की कठिनाईयों से गुजरते श्रमिक के साथ खड़ा होने में है।

3. दलित विमर्श और हाशिए की आवाज़

डॉ. सिहाग की कविताएँ दलित विमर्श की भी सशक्त प्रतिनिधि हैं। वे किसी भी जातिगत अन्याय को छिपाते नहीं, बल्कि कविता के माध्यम से उसकी नंगी सच्चाइयों को सामने लाते हैं।

उनकी कविता "नफरत की नींव पर नहीं बनता संविधान" एक तीखा सवाल उठाती है–

- ''तुम्हारे देवता क्यों डरते हैं
- मेरे छूने भर से?
- मैंने तो किताब में पढ़ा था
- हम बराबर हैं!''

यह कविता जातिवादी सोच पर सीधा प्रहार करती है, जहाँ सामाजिक संरचना की खामियों को उजागर किया गया है।

4. किसान और श्रमिक की पीड़ा

डॉ. सिहाग के काव्य में किसान और श्रमिक वर्ग की उपेक्षा बार-बार उभरती है। उनकी एक प्रसिद्ध कविता है–"जो हल चलाता है, वही भूखा है" :

- ''जो फसल उगाता है,
- उसके घर में चूल्हा ठंडा क्यों है?
- जिसकी हथेली में धरती की नब्ज़ है,
- उसे मौत क्यों सस्ती पड़ती है?''

इस कविता में सिर्फ भाव नहीं, व्यवस्था के विरुद्ध रोष है। यहाँ कविता व्यवस्था के विरुद्ध एक दस्तावेज बन जाती है।

5. स्त्री-विमर्श और संवेदनशीलता

डॉ. सिहाग की कविताएँ स्त्री संघर्ष को भी मुखरता से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविता "औरत बस देह नहीं होती" में स्त्री के प्रति समाज की वस्तुवादी दृष्टि पर तीखी टिप्पणी की गई है।

- ''जिस देह से तुम्हारा घर बनता है,
- उसी देह को तुम गाली देते हो,
- औरत बस रसोई नहीं होती

● वो भी तो एक नाम, एक मन, एक आत्मा है।''

उनकी स्त्री-कविताएँ न केवल सहानुभूति से भरपूर हैं, बल्कि उनमें प्रतिरोध की गरिमा भी है।

6. राजनीति, सत्ता और भाषा का द्वंद्व

डॉ. सिहाग की कविता सत्ता और राजनीति की विसंगतियों को उजागर करने में साहसी भूमिका निभाती है। वे उन कवियों में से हैं जो सत्ता के 'कवियों के चुप्पी' पर भी सवाल उठाते हैं।

उनकी कविता "सरकार के शब्दकोष में भूख नहीं" एक प्रतीकात्मक रचना है, जहाँ शब्द और यथार्थ के बीच की खाई दिखती है।

● ''वे कहते हैं
● सब अच्छा है,
● और किसी भूखे बच्चे के
● पेट में हवा भरते हैं!''

यह कविता भाषा के छल और सत्ता के प्रचारतंत्र को उजागर करती है।

7. पर्यावरण और अस्तित्व का सवाल

डॉ. सिहाग की कविताओं में समकालीन संकट जैसे जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण विनाश, और मानव अस्तित्व के खतरे पर भी गहरी चिंता दिखाई देती है। उनकी कविता "सूखे पेड़ की आत्मकथा" में एक पेड़ के माध्यम से मनुष्य की स्वार्थपरता पर तीखा व्यंग्य किया गया है।

● ''मैं छाया देता रहा
● तुम कुल्हाड़ी तेज करते रहे,
● अब जब मैं गिर गया,
● तुम लकड़ी की कीमत पूछते हो।''

यह रचना मनुष्य और प्रकृति के संबंधों की त्रासदी का सटीक चित्रण है।

8. शैली और भाषा की विशिष्टता

डॉ. सिहाग की भाषा सहज, प्रवाहमयी और जनभाषा के निकट है। वे क्लिष्ट शब्दों या बौद्धिक जटिलताओं में विश्वास नहीं करते। उनकी शैली में संवादात्मकता है, जिससे पाठक उनके साथ खड़ा महसूस करता है।

उनकी भाषा में

● 'लोकोक्तियों का प्रयोग',
● 'प्रतीकों की तीव्रता',
● 'कटाक्ष और व्यंग्य',
● 'सरलता में गहराई' स्पष्ट दिखाई देती है।

9. अंतर्जाल पर कविता का विस्तार

डॉ. सिहाग की कविताएँ मुख्यतः फेसबुक, ब्लॉग, और ऑनलाइन पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों तक पहुँचती हैं। यह 'डिजिटल साहित्य' के युग में कविता की जनसुलभता का प्रमाण है।

उनकी कविताओं पर व्यापक प्रतिक्रियाएँ, पाठकीय विमर्श, और साझा करने की परंपरा उन्हें एक जनकवि की पहचान

देती है।

10. निष्कर्ष : यथार्थ की जमीन पर खड़ी कविता

डॉ. नरेश सिहाग की कविताएँ समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक यथार्थ की पड़ताल करने वाले उन दुर्लभ स्वरूपों में से हैं, जो न तो किसी विचारधारा से बंधे हैं, न ही 'कविता के सौंदर्य' का दिखावा करते हैं।

उनकी कविता

- प्रश्न पूछती है,
- प्रतिरोध करती है,
- विकल्प तलाशती है,
- और पाठक को सोचने पर विवश करती है।

आज जब कविता के मंचों पर सतही भावुकता, दिखावटी श्रृंगार और आत्ममुग्धता बढ़ रही है, ऐसे में डॉ. सिहाग की कविताएँ कविता को उसकी असली ज़मीन जनता के बीच पर पुनः प्रतिष्ठित करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिहाग, नरेश। फेसबुक अकाउंट 'Naresh Sihag Bohal' पर प्रकाशित कविताएँ
2. सिहाग, नरेश। बोहल शोध मंजूषा (विशेषांक)
3. रामविलास शर्मा। सामाजिक यथार्थ और हिंदी कविता
4. डॉ. नामवर सिंह। कविता के नए प्रतिमान
5. डॉ. अवधेश प्रधान। दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
6. डॉ. सुधा सिंह। स्त्री विमर्श और हिंदी कविता
7. डॉ. अशोक वाजपेयी। कविता का समय
8. आचार्य रामचंद्र शुक्ल। हिंदी साहित्य का इतिहास
9. कुमार विमल। समकालीन कविता का जनपक्ष
10. साक्षात्कार और संवाद : डॉ. नरेश सिहाग से प्राप्त अभिव्यक्तियाँ।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

नासिरा शर्मा के पारिजात उपन्यास में राम छवि

सुशीला कुलरिया
शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
झरना, जयपुर, राजस्थान
Email- sushilakulariya1@gmail.com

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की कथा अनादि काल से चली आ रही है। महर्षि वाल्मीकि से पूर्व राम कथा मौखिक रूप में ही प्रचलित थी। कहते है कि जब महर्षि वाल्मीकि को नारद मुनि ने रामकथा सुनाई तो महर्षि वाल्मीकि का हृदय राममय हो गया और उन्होंने फिर लव-कुश को रामकथा के श्लोक कण्ठस्थ करवाये। सर्वप्रथम रामकथा को लिपिबद्ध करने का कार्य महर्षि वाल्मीकि द्वारा ही किया गया, लेकिन न सिर्फ ये कथा लिपिबद्ध हुई वरन् महर्षि वाल्मीकि ने रामकथा का रामायण नाम से महान् ग्रन्थ की सृष्टि कर स्वयं तो आदिकवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए साथ ही राम को भी इस प्रकार चित्रित किया कि किस प्रकार एक सामान्य व्यक्ति जिम्मेदार आचरण के माध्यम से आध्यात्मिकता अपनाकर परिपूर्ण जीवन जी सकता है। वाल्मीकि के राम आदर्श, भ्रातृत्व भाव से ओत-प्रोत, आज्ञापालक ही नहीं, वरन् ये प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्त्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा भी देते हैं। रामायण के राम हाड-माँस के सांसारिक पुरुष है, जो गुणों-अवगुणों सहित उपस्थित होते हैं। ये राम अभिमान शून्य, दयालु मनुष्य, परोपकारी जैसे गुणों से युक्त एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई और आदर्श पति के रूप में चित्रित है। वाल्मीकि रामायण के राम दशरथ नंदन राम, सियापति राम ही रह जाते हैं, यहां भगवान का रूप नहीं ले पाते हैं। परन्तु धीरे-धीरे समय के साथ हर लोकनायक या तो अपना आदर्श स्थापित कर प्रसिद्धि प्राप्त करता है या फिर उसकी छवि धूमिल होकर नष्ट हो जाती है। परन्तु वाल्मीकि के आर्त स्वर में निकली रामायण अर्थात् रामकथा आगे चलकर भारतीय समाज में नैतिक, सामाजिक तथा पारिवारिक मूल्यों की स्थापना करती है। यही वजह है कि आदिकवि वाल्मीकि के राम रामायण से निकलकर अन्य भाषाओं में भी अपना वर्चस्व स्थापित करते है। राम की जो छवि हिन्दी साहित्य में तुलसीदास ने उपस्थित की, वह छवि वाल्मीकि के मानवीय राम को परमब्रह्म बना देती है। तुलसीदास ने राम की इस प्रकार महिमा लिखी कि अवध में जन्में राम जन-जन के भगवान श्री राम हो गए। यहां से राम भारत भूमि से प्रसिद्धि पाकर सम्पूर्ण विश्व में महिमान्वित हो गए। आज विश्व की अनेक भाषाओं में राम की महिमा लिखी जा रही है। तुलसी के राम जगत के राम दीनदुखियों के राम हो गए। राम की यहाँ ऐसी विराट छवि उपस्थित होती है कि सारा संसार राममय हो जाता है जैसे :

''सीयाराममय सब जगजानी''
करऊँ प्रणाम जोरि जुग पानी।''[1]

तुलसी की रामकथा भारतीय समाज को सत्कर्मो की ओर ले जाती है, मानव जीवन को आदर्श रूप सिखाती है और धर्म के उदात्त रूप की प्रेरणा देती है।

कैकेयी के मन में स्वार्थ भाव जागने पर राम अयोध्या से वन में गमन कर जाते हैं। कलह, बैर, अशांतिपूर्ण वातावरण से दूर राम दूसरों के सुख के लिए अपने सुखों का त्याग करने की सीख प्रदान करते हैं।

ऐसे राम की कथा तुलसी तक आकर समाप्त नहीं हो होती वरन् यह बदलते समयानुसार बदलती भाषा की विकसित होती विधाओं में अपना स्थान बनाती है। पहले हिन्दी साहित्य के काव्य में तुलसी राम-महिमा गाकर हिन्दी साहित्य के शशि पद पर सुशोभित हुए तो अब यह गद्य में भी विस्तार ले पा रही है। संस्कृत कवियों के बाद हिन्दी साहित्य में तुलसी के बाद रामकथा को आगे बढाने वालों में निराला, अमृतलाल नागर, विद्यानिवास मिश्र प्रमुख है। इन हिन्दी साहित्यकारों ने बदलते समयानुसार बदलती भाषा में रामकथा को सहज रूप में ढाला।

हिन्दी काव्य देखे या हिन्दी कथा साहित्य सभी जगह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में राम छवि पाठक के सामने उपस्थित हो ही जाती है। हिन्दी कथा साहित्य का प्रारम्भिक भाग नाटक में राम छवि मौलिक तथा अनुदिता रूप में मिलती है। नाटक विधा के बाद उपन्यास विधा में भी राम महिमा ने अपना वर्चस्व रखा है। आधुनिक युग के कुछ उपन्यासकारों ने राम को प्रत्यक्ष पात्र बनाया है तो कुछ ने अपने उपन्यास के पात्रों में अप्रत्यक्ष रूप से राम छवि उपस्थित की हैं। राम नाम की शक्ति निराशा, हताशा के शिकार पात्र में आशा का संचार कर नवजीवन के लिए प्रेरित करती हैं। आधुनिक उपन्यासकार अमृतलाल नागर के उपन्यास 'मानस के हंस' में तुलसी काम से विमुख होकर रामभक्ति में रमने लगते हैं तो कभी-कभार उन्हें पत्नी प्रेम रामभक्ति से भटकाने लगता है, परन्तु नागर जी बड़े ही सहज तरीके से तुलसी को राम भक्ति पथ पर सतत रखते हैं।

इसी तरह समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रख्यात साहित्यकार है 'नासिरा शर्मा' इनका उपन्यास 'पारिजात' है जो नए पुराने रिश्तों की दास्तान। जिसमें तीन परिवारों के सदस्यों की अतीत और वर्तमान की कथा है। इसमें प्रमुख पात्र है रोहन और रूही आगे चलकर प्रतीकात्मक चरित्र बन जाते हैं, जो भारतीय समन्यवादी और प्रगतिवादी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह वह पीढ़ी है जो जाति और धर्म से परे भारतीय मानवीय मूल्यों पर विश्वास करती है। रोहन और रूही का विवाह कई परिवारों की खुशी का कारण बनता है। यह उपन्यास तीन परिवारों के मानवीय सुख-दुख की कथा को अपने में समेटे हुए है।

'पारिजात' उपन्यास में यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से राम कथा के लम्बे-लम्बे प्रसंग नहीं आते, परन्तु गहन अध्ययन करने पर अप्रत्यक्ष रूप से इसके कथानक में राम छवि पाठक के समक्ष उभरकर आती है। उपन्यास के प्रधान पात्र रोहन जब अपनी पसंद की अंग्रेज लडकी ऐलेसन से प्रेम विवाह करते हैं परन्तु यह विवाह सफल नहीं हो पाता है। ऐलेसन अपने व रोहन के पुत्र पारिजात (टेसु) को लेकर तथा रोहन को गिरफ्तार करवाकर चली जाती है। सीता हरण पर राम का विलाप वन में पशु-पक्षियों, पेड़-फूलों के सामने प्रत्यक्ष प्रकट हुआ था फर्क इतना है कि रोहन अपनी पत्नी के चले जाने का दुःख किसी के सामने रोता नहीं, परन्तु उसके मन में गहरी अन्तर्भूत पीड़ा है जैसे पिता प्रहलाद दत्त के पास समय बिताने आए रोहन को रात-भर नींद नहीं आती तो सिगरेट का पैकेट तकिए के नीचे से निकालकर सिगरेट सुलगाई। सुलगती सिगरेट का लाल सिरा देख रात को एकांत में पत्नी की याद आ जाती है और गहरी वेदना में भरकर मन - ही - मन कहता है कि ''आग अपने रंग में कितना लुभाती है मगर जल जाती है तो ....''। [2]

रोहन यहाँ पत्नी के लिए विलाप नहीं करता वन-वन में भटकता नहीं फिरता, परन्तु पीड़ा यहां वही है जो राम की सीता हरण के समय होती है।

यह उपन्यास एक विराट आख्यान को अपने में समेटे हुए है, इसलिए इसमें पात्रों अधिकता स्वाभाविक है, यही कारण है कि परिवेश और कथा का विस्तार करते हुए इसमें पात्रों की भरमार हैं जो मुख्य कथा के विकास में सहायक हैं। इन अन्य पात्रों में प्रोफेसर प्रहलाद दत्त का शिष्य अशरद हुसैन का वार्तालाप इस उपन्यास में हल्की-सी राम-छवि को उभारता हैं। रोहन के पिता अपनी पत्नी प्रभा के स्वर्ग सिधारने के बाद तथा पुत्र का वैवाहिक जीवन टूटने पर दुखी हो कुछ दिन दिल की घबराहट कम करने तथा पुरानी यादों से निजात पाने के लिए सुल्तानपुर जाने का मन बना लेते हैं। वहीं पास में कुराली गाँव का विद्यार्थी अशरद हुसैन उन्हें बहुत दिनों से गाँव आने की दावत दे रहा था। तब प्रोफेसर प्रहलाद दत्त उसी के घर चलने तथा ठहरने का मन बना लेते हैं। शिष्य को गुरू के अचानक आने पर यकीन नहीं आ रहा था। मोहर्रम का समय था। रूखे बालों के साथ रोई सूजी आँखे, भर्राए बैठे गले जिसमें हँसना-मुस्काना तो दूर ज्यादा चहक कर बातें करना भी दुश्वार था। शहर में तो

बहुत कुछ बदल चुका हैं, मगर गाँव तो वैसे के वैसे ही है। अब ऐसे में अशरद सर की खातिर, मुयरात वैसी नहीं कर पाएगा, जैसी आम दिनों में कर सकता था। न मजेदार खाना पक सकता हैं, न ही कड़ाही चढाकर कुछ तला-भूना जा सकता हैं। गली से गुजरते प्रहलाद दत्त को किसी घर से सोज व गुदाज में डूबी हुई बच्चे की आवाज कानों में पड़ी तो यकायक प्रहलाद ठिठक गए। पूछने पर पता चला कि अनायत साहब का बेटा अपनी पत्नी व बेटे को छोड़कर लंदन में ईसाई लड़की से शादी करके विदेश बस गया, और अपने पोते को मर्सिया का रियाज करवाकर एक खानदान अपनी तर्ज पर बचाए रखने की कोशिश में है। शार्गिद की बात पर वालिद बदलाव को तो सही ठहराते हैं, परन्तु अनायत साहब का बेटा जो अपनी पहली पत्नी, पुत्र और पिता की जिम्मेदारी व कर्त्तव्यों से विमुख होकर लंदन में ईसाई लड़की के साथ घर बसाने की बात को स्वीकार नहीं कर पाते हैं और कह उठते है कि ''एक सच हैं कि राम कौन बनना चाहेगा?''[3]

अर्थात् जैसे त्रेतायुग में भगवान श्रीराम ने पिता के लिए अपने राजमहलों के सभी सुखों का त्यागकर यहाँ तक कि अपने राजा के पद को भी छोटे भाई के लिए छोडकर वन गमन कर गए थे। प्रोफेसर साहब राम बनने का अर्थ यहाँ अपने पिता के वचन की रक्षा करने के लिए तथा अपने खानदानी रीत बनाए रखने के लिए निज स्वार्थ से ऊपर उठना बताया है। अनायत साहब का पुत्र अपने पिता की बिना फिक्र किए सारे कर्त्तव्यों से विमुख होकर विदेश में बस जाता है। जहाँ राम अपनी -

''रघुकुल रीत सदा चली आई
प्राण जाये पर वचन ना जाई''[4]

वाली उक्ति की रक्षा करने के लिए अपने सारे सुखों, अधिकारों को त्यागकर वन में धूप, गमी, सदी, भूख, पुत्र वियोग से पिता दशरथ ने प्राण त्याग दिये, इन सब दुखों को सहने वाला पुत्र राम अब कौन बनना चाहेगा?

भगवान श्रीराम आधुनिक जीवन में पत्नी को अपने मार्ग की बाधा समझकर त्यागने वालों के सामने भी अपना आदर्श प्रस्तुत करते हैं। वे रघुकुल रीत को जीवित रखने के लिए जिस पथ पर चले थे, वह पथ कंटकों से भरा था। परन्तु फिर भी पति की जिम्मेदारी से विमुख नहीं होते हैं। राम के मुख से वन गमन की बात सुनकर सीता भी पति संग चलने की इच्छा रखती हैं, तो राम यहाँ स्वार्थी नहीं होते वनवास के संकटों के बारे में विचार कर सीता को राजमहलों में सुख भोगने की सलाह देते हैं। पिता की जिद के आगे श्रीराम को झुकना पड़ता हैं और पत्नी की रक्षा का भार वहन करते हुए चौदह वर्ष वन में दुःखों व अनेक कष्टों के साथ व्यतीत करते है, परन्तु पति धर्म से विमुख नहीं होते।

जहाँ अनायत साहब का पुत्र पति कर्त्तव्य से विमुख होकर अपने स्वार्थ से वशीभूत होकर विदेश में बसता है तो यहाँ भी प्रोफेसर साहब राम बनने का अर्थ लेते है कि कौन आज अपनी पत्नी को संग रखकर आर्थिक तंगी रूपी रावण से लड़ना चाहता है?

यहाँ रघुकुल रीत अर्थात् पोते को मर्सिया रियाज करवाना, अपनी खानदानी तर्ज को बचाए रखना, पुरानी अजादारी के तौर तरीके अपनाए रखना जैसे रीति-रिवाज निभाने की जिम्मेदारी पुत्र न करके पिता अनायत हुसैन ही निभाते हैं।

''प्रहलाद दत्त जब गली से गुजर रहे थे तो किसी घर से सोज व गुदाज में डूबी हुई बच्चे की आवाज उनके कानों में पड़ी तो यकायक वह ठिठक गए।''

''यह किसका घर है?''[5]

''अनायत साहब अपने पोते को मर्सिया का रियाज करवा रहे हैं। बेटा तो बागी होकर घर-बार छोड़कर लंदन बस गया हैं और वही किसी ईसाई लड़की से शादी कर ली है'' अशरद ने मजाक उड़ाने के अंदाज में कहा।[6]

भगवान श्रीराम की भूमिका यहां अनायत साहब के बेटे जैसे लोगों को आदर्श जीवन प्रदान करती है। राम भारतीय जनमानस के जीवन को नवोन्मेष देते है, और जिम्मेदारियों को वहन करने का मार्ग प्रशस्त करते है कि सही रास्ते का चयन करके किस प्रकार अपने जीवन को आनंदपूर्ण बना सकते है तथा दूसरे लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत बन सकते हैं।

आज के आधुनिकता भरे युग में लोग अपने स्वार्थों, सुख-सुविधाओं के लिए किस प्रकार अपनी जड़ों से दूर होते जा

रहे है और पुरानी भारतीय संस्कृति को भूलते जा रहे हैं।

बुद्धिजीवी मन तर्कों-वितर्कों से जीवन की नयी परिपाटी गढने में व्यस्त है। वे सांसारिक सुखों की श्रेष्ठता से अभिभूत हैं और स्वाभाविक जीवन की परिपाटी को विस्मृत कर रहा हैं। आधुनिक मन जो अनंत विषय विकारों से ग्रस्त है, उनके लिए राम का जीवन अनुकरणीय है तथा जीवन में स्वाभाविकता लाने में सहायक है। विषम परिस्थितियों में कुंठाओं, तनावपूर्ण माहौल में सार्थक जीवन कैसे जिया जाए, यह हम दशरथनंदन राम के जीवन से सीख सकते हैं।

सन्दर्भ

1. रामचरित मानस अरण्य काण्ड, तुलसीदास।
2. जन-जन के राम, विद्यानिवास मिश्र, दरियागंज।
3. पारिजात, नासिरा शर्मा, किताब घर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, छठा संस्करण -2020, पृ.सं.- 22
4. पारिजात, नासिरा शर्मा, दरियागंज, नई दिल्ली, छठा संस्करण पृ.सं. -409
5. राम कथा मेरे लिए विद्यानिवास मिश्र पृ.सं.- 25
6. तुलसी के राम आधुनिक संदर्भों में - डॉ. मधु लोमेश
7. तुलसी के राम - डॉ. भरत कुमार एन. सुथार।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

लेखन कला और उसकी विधाएँ

डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'
सदनिका क्रमांक 5, अवन्तिका रेजीडेंसी,
58/59, सोमवार पेठ, नागेश्वर मंदिर रोड,
पुणे-411011 (महाराष्ट्र)
मो. 9096222223, 9371010244
ईमेल : arshpune18@gmail.com

सारांश (Abstract)

यह शोध आलेख 'लेखन कला और उसकी विधाएँ' के अंतर्गत लेखन की मूल प्रेरणा-संवेदनशीलता और सृजनशीलता की भूमिका पर केंद्रित है। लेख में यह विश्लेषित किया गया है कि किस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक या मानवीय घटनाएं एक व्यक्ति के अंतर्मन को प्रभावित कर एक लेखक को जन्म देती हैं? सृजनात्मक लेखन की विभिन्न प्रवृत्तियों, विशेषकर ललित लेखन और अनुभव लेखन के माध्यम से लेखन विधा की सूक्ष्मताओं को समझाने का प्रयास इस शोध आलेख में किया गया है। यह शोध आलेख साहित्यिक विधाओं में कथा और कहानी की मौलिक पहचान को स्पष्ट करता है। कथा और कहानी में निहित अंतर, कथानक की भूमिका, तथा उपन्यास और ग्रंथ जैसी दीर्घ विधाओं के स्वरूप का विश्लेषण इस शोध आलेख का केंद्र बिंदु है। निश्चित ही इस विवेचन का उद्देश्य है यह कि एक लेखक कथा के स्वरूप को समझे और उसे अन्य गद्य विधाओं से भिन्न रूप में पहचान सके।

प्रस्तावना (Introduction)

लेखन न केवल विचारों की प्रस्तुति है, बल्कि यह एक संवेदनशील आत्मा की अनुभूतियों का बाह्य रूप है। जब व्यक्ति का अंतर्मन किसी घटना, अनुभूति या प्रेरणा से झंकृत होता है, तब उसकी लेखनी सक्रिय होती है। एक उत्तम लेखक वही होता है, जिसके भीतर संवेदनशीलता और सृजनशीलता दोनों विद्यमान हो। लेखन कला में कथा एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक शब्दों के माध्यम से दो बिंदुओं के मध्य की यात्रा को प्रस्तुत करता है। यह यात्रा केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि पात्रों की संवेदनाओं, मनोदशाओं और आंतरिक संघर्षों का गूढ़ चित्रण होती है। इस शोध आलेख में कथा और कहानी के बीच के सूक्ष्म किन्तु महत्वपूर्ण भेद को विश्लेषित किया गया है।

1. लेखन की प्रेरणा : सृजनशीलता का जन्म

हर व्यक्ति के भीतर रचनात्मक ऊर्जा होती है, जो किसी घटना विशेष, अनुभव या संवेदना से जागृत होती है। जैसे कि मई 2025 में ष्ऑपरेशन सिंदूरष जैसी घटनाएं एक लेखक को समाज की विडंबनाओं, वीरता और मानवता के पक्ष पर सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। लेखक भले प्रत्यक्ष सहभागी न हो, पर वह साक्षी होता है और उसकी यह साक्षी भावना सृजनशीलता

का बीज बोती है।

2. संवेदनशीलता : लेखन का मूल आधार

संवेदनशीलता एक लेखक के अंतर्मन की वह शक्ति है जो उसे गहन अनुभूतियों से जोड़ती है। यह संवेदनशीलता किसी घटना से प्रभावित होकर लेखक को विचारशील बनाती है। कभी आंसुओं के रूप में, कभी प्रसन्नता के झोंकों में। लेखन की पहली शर्त है कि लेखक का अंतर्मन भावनाओं से समृद्ध हो। यही संवेदनशीलता उसे सामान्य व्यक्ति से विशिष्ट रचनाकार में परिवर्तित करती है।

3. लेखन की दिशा : क्या और कैसे लिखें?

एक लेखक के लिए यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि उसे क्या लिखना है और कैसे लिखना है? नकल की प्रवृत्ति एक लेखक की मौलिकता को समाप्त कर देती है। विषयानुकूल स्वतंत्र विचारों का चयन, उपयुक्त भाषा, शैली और क्रमबद्ध प्रस्तुति लेखन की बुनियादी आवश्यकता है। लेखन एक सतत अभ्यास है, जिसमें साहित्यिक समझ और आत्मावलोकन की आवश्यकता होती है।

4. लेखन की विधाएँ : अनुभव लेखन और लघुलेखन

अनुभव लेखन : लेखक द्वारा देखी या अनुभव की गई घटनाओं का यथावत वर्णन करना। इसमें रचनात्मकता सीमित होती है।

लघुलेखन : किसी घटना का सारांश प्रस्तुत करना, जिसमें संक्षिप्तता और स्पष्टता प्रमुख होती है। यह विधा पाठक को तुरंत विषय से जोड़ने में सक्षम होती है।

5. ललित लेखन : सृजन की स्वतंत्रता

ललित लेखन में लेखक को विषय, शैली या शब्दों की कोई सीमा नहीं होती। यह आत्मा की सहज अभिव्यक्ति होती है। वर्षा में इंद्रधनुष के दृश्य को देखकर उपजा लेख या माता-पिता के आशीर्वाद पर भावनात्मक शब्दों में ढला लेख, दोनों ललित लेखन की श्रेष्ठ अभिव्यक्तियाँ हैं। उदाहरण के लिए :

''माता-पिता के आशीर्वाद से हम जीवन को मयूर की तरह मस्ती में पंखों को फैलाकर, आत्मविश्वास से नृत्य कर, जीवन जीते हैं...''

6. कथा और कथानक की परिभाषा

कथा वह रचना है जो व्यक्ति की मनःस्थिति और उसके जीवन की सजीव घटनाओं का सर्जनात्मक शब्दों में संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली चित्रण करती है। इसे शब्दों की एक ऐसी यात्रा कहा जा सकता है जो किसी अनुभव या बिंदु से आरंभ होकर किसी निष्कर्ष या भावनात्मक परिणति तक पहुँचती है।

कथानक, कथा की वह रूपरेखा है जिसमें घटनाओं का क्रम, पात्रों की भूमिका और विचारों की दिशा निश्चित होती है, परन्तु वह कहानी की तरह कालानुक्रमिक या पूर्ण विवरणात्मक नहीं होती।

7. कथा और कहानी में अंतर

कहानी, कालानुक्रम से घटनाओं को क्रमवार प्रस्तुत करती है। इसका प्रारंभ, मध्य और अंत स्पष्ट रूप से बंधा होता है। इसमें पाठक को घटना का तात्पर्य व बोध प्रत्यक्ष रूप से दिया जाता है।

वहीं, कथा एक बौद्धिक और भावनात्मक यात्रा है, जो पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करती है। इसमें शिक्षा अप्रत्यक्ष रूप से अंतर्निहित होती है। लेखक, पात्रों के माध्यम से मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक तहों को उजागर करता है।

उदाहरण

ध्रुव तारा की कहानी एक पूर्ण रूप से क्रमबद्ध बाल कहानी है, जबकि यदि उसी अनुभव को बालक ध्रुव की आंतरिक पीड़ा, मनोबल और साधना के भावनात्मक रूप में चित्रित किया जाए तो वह एक सशक्त कथा होगी।

8. कथा, दीर्घ कथा और उपन्यास

कथा : सीमित शब्दों में किसी अनुभव या पात्र की रेखा का प्रभावशाली चित्रण।

दीर्घ कथा : इसमें कथा के विस्तार और पात्रों की जटिलताओं को अधिक गहराई से चित्रित किया जाता है।

उपन्यास : यह विस्तृत गद्य विधा है जिसमें कई पात्र, उपकथाएं और परत-दर-परत कथानक होते है। पात्रों की सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का गहरा विश्लेषण इसमें होता है।

9. ग्रंथ : ज्ञान की चरम अवस्था

जब किसी विषय विशेष पर अत्यंत विस्तृत, अनुसंधानात्मक, काल-निरपेक्ष और गंभीर अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है, तो वह ग्रंथ कहलाता है।

ग्रंथ की विशेषताएं

- विषय की गहराई में जाकर निरूपण।
- पाठकों को ज्ञान की चरम सीमा तक ले जाने वाला प्रस्तुतीकरण।
- संरचनात्मक दृष्टि से संगठित और तार्किक।

धर्म, इतिहास, संस्कृति या किसी भी गूढ़ विषय पर आधारित गंभीर ग्रंथ कालजयी माने जाते हैं। धर्मग्रंथों में यह विशेषता और भी स्पष्ट होती है।

10. कथा लेखन की शिल्पगत विशेषताएँ

- संक्षिप्तता में प्रभावशीलता
- व्यक्ति रेखा का रेखांकन
- पात्रों के गुण, दोष, संवेदनशीलता का चित्रण
- घटनाओं के कारण और परिणाम की विवेचना
- न्यायोचित निष्कर्ष
- कथा में प्रत्येक पात्र को उसकी भूमिका के अनुसार न्याय प्रदान करना लेखक की जवाबदेही है।

निष्कर्ष (Conclusion)

कथा केवल घटनाओं का वर्णन नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन अनुभवों की गहराइयों में उतरने की एक कलात्मक यात्रा है। लेखक यदि कथा को कहानी का ही रूप समझकर प्रस्तुत करता है, तो वह उसकी प्रभावशीलता को सीमित कर देता है। एक परिपक्व लेखक को यह समझना होगा कि कथा, कहानी, उपन्यास और ग्रंथ—चारों की प्रकृति, उद्देश्य और शिल्प भिन्न हैं। इस भिन्नता को आत्मसात कर ही लेखन कार्य की परिपूर्णता संभव होती है।

लेखकों के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएं

1. लेखन एक साधना

साहित्यिक लेखन कोई आकस्मिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक साधना है, जो समाज के रचनात्मक मार्गदर्शन हेतु की जाती है। लेखक की भूमिका केवल मनोरंजन प्रदान करने तक सीमित नहीं होती, वह सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों और मानवता के प्रसार का माध्यम बनता है। इस शोध आलेख में लेखक की दृष्टि, चरित्र, और लेखन के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को केंद्र में रखा गया है।

2. लेखन : तपस्या और प्रतिबद्धता

सृजनात्मक साहित्य का जन्म केवल कल्पनाशीलता से नहीं, अपितु निरंतर अध्ययन, चिंतन और आत्ममंथन से होता

है। लेखक यदि गहन अध्ययन करेगा तो उसकी लेखनी स्वतः समृद्ध होगी। लेखक को चाहिए कि वह रचनाएँ प्रकाशित हों या नहीं, अपनी सृजनशीलता में प्रतिबद्ध बना रहे। रचना की सफलता प्रकाशन से नहीं, उसके प्रभाव और उद्देश्य से आंकी जानी चाहिए।

3. लेखक की दृष्टि : दूरदर्शिता और संवेदनशीलता

एक श्रेष्ठ लेखक समाज की दशा और दिशा को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। उसकी लेखनी भविष्यद्रष्टा होनी चाहिए। लेखक केवल घटनाओं का वृत्तांत प्रस्तुत नहीं करता, वह उनमें निहित मानवीय मूल्यों को उजागर करता है। इसलिए लेखक को संवेदनशील, विचारशील और सत्यनिष्ठ होना चाहिए।

4. लेखनी की नैतिकता : न बिकने वाली सोच

एक लेखक की पहचान उसकी स्वतंत्र विचारधारा और अडिग लेखनी से होती है। वह न किसी प्रभाव में आता है, न ही किसी लालच में। लेखक को अपने विचारों और लेखनी की पवित्रता बनाए रखनी चाहिए, क्योंकि लेखन समाज की चेतना को निर्मित करता है।

5. लेखन का प्रभाव और उत्तरदायित्व

बोले गए शब्द समय के साथ बदल सकते हैं, परंतु लिखित शब्द स्थायित्व प्रदान करता है। यही कारण है कि साहित्यिक रचनाएँ कालातीत होती हैं। लेखक को यह समझना होगा कि उसकी प्रत्येक रचना एक ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में यथावत रह जाती है। अतः उसे अत्यंत जिम्मेदारी और विवेक के साथ लिखना चाहिए।

6. मौलिकता और कालसापेक्षता

जो रचना मौलिक होगी, वही शाश्वत होगी। आज की रचना यदि पचास या सौ वर्षों के बाद भी प्रासंगिक बनी रहे, तो वह सच्ची साहित्यिक कृति मानी जाएगी। अतः लेखक को सतही विषयों से हटकर अनुसंधान परक और अनछुए विषयों पर कार्य करना चाहिए।

7. अनुसंधान और गहराई का महत्व

कोई भी साहित्यिक कृति तब तक परिपक्व नहीं मानी जा सकती जब तक उसमें विषय की गहराई, सुसंगठित चिंतन और अध्ययन का आधार न हो। लेखक को चाहिए कि वह जिस भी विषय पर लिखे, पहले उस पर गहन शोध और अध्ययन करे।

8. भाषा और शैली का महत्व

रचना की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो पाठकों के हृदय को स्पर्श कर सके। विचारों की प्रस्तुति में साहित्यिक गरिमा और भावनात्मक गहराई आवश्यक है। लेखक को चाहिए कि वह ऐसे प्रसंग, घटनाएं या इतिहास को शब्दबद्ध करे, जो आत्मा को आंदोलित कर दें।

9. लेखनी : एक दैवीय उपहार

लेखक को अपनी लेखनी को व्यक्तिगत नहीं, अपितु मां सरस्वती से प्राप्त दैवीय उपहार मानना चाहिए। जब भी एक लेखक लेखन करे, तो उसे गुरुवाणी, संतों की शिक्षाएं, देश की संवैधानिक मर्यादा और नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए लिखना चाहिए।

10. लेखन की दिनचर्या और आत्म-संवाद

एक लेखक के लिए यह आवश्यक है कि वह लेखन को मात्र कार्य न समझे, अपितु एक साधना के रूप में अपनाए। इस साधना में आत्म-संवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्रतिदिन की अनुभूतियों, विचारों तथा कल्पनाओं को स्वर देने हेतु एक निजी डायरी अथवा डिजिटल मंच-जैसे कि ब्लॉग का निर्माण करना एक लेखक के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। उदाहरणस्वरूप, मेरा स्वयं का स्वतंत्र ब्लॉग https://arsh.blog इस दिशा में मेरी रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बना है।

ब्लॉग के माध्यम से लेखक अपनी विविध रचनाओं को सुव्यवस्थित ढंग से श्रेणियों (Category) में वर्गीकृत कर सकता है, जिससे किसी भी विषयवस्तु को पाठकगण कहीं से भी, किसी भी उपकरण जैसे कि मोबाइल, लैपटॉप अथवा टैब पर गूगल या क्रोम की सहायता से सहजता से पढ़ सकते हैं। यह सुविधा न केवल विचारों को व्यापक पहुँच प्रदान करती है, अपितु उन्हें सुरक्षित भी करती है; क्योंकि मौलिक चिंतन जहन में बार-बार नहीं आता।

साथ ही, किसी भी रचना के प्रकाशन से पूर्व उसे बारंबार पढ़ना, संशोधित करना और साहित्यिक सौंदर्य से सजाना आवश्यक है, क्योंकि लेखक की रचनाएं उसकी आत्मा की प्रतिध्वनि होती हैं, वह केवल शब्द नहीं, अपितु उसके जीवन-दर्शन की गूंज होती हैं।

11. निष्कर्ष (Conclusion)

एक अच्छा लेखक केवल लेखक नहीं, बल्कि एक दृष्टा, विचारक और समाज का निर्माता होता है। उसकी कलम यदि सत्य, मानवता और स्वतंत्रता के लिए चले तो वह समाज के लिए वरदान बन जाती है। यह आवश्यक है कि हम लेखन को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज, राष्ट्र और संस्कृति के उत्थान का साधन मानें।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद की उपादेयता

प्रतिष्ठा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
(राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, शाहपुरा बाग जयपुर)

सारांश

भारत विश्व के उन गिने-चुने देशों में से है, जहां आध्यात्मवाद को प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण माना गया है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, भगवान श्री राम, गुरु नानक देव आदि महापुरुषों के माध्यम से आध्यात्म के ज्ञान के साथ उनकी शिक्षाओं से भी हमें काफी कुछ सीखने को मिला है। यदि वर्तमान में उनके शिक्षाओं को सार रूप में ग्रहण करना हो तो एक ही महापुरुष का नाम इस क्रम में आता है श्री मोहनदास करमचंद गांधी। उन्होंने इन सभी की शिक्षाओं का मूल सार ग्रहण किया जो है “सत्य”। वे अपने जीवन में एक महान राजनेता एवम सच्चे कर्मयोगी थे। गांधी जी न केवल अपने देश अपितु संपूर्ण विश्व के लिए सत्य, अहिंसा से युक्त नैतिकता पर आधारित राजनीति का मार्ग चुना। यही गांधीजी के संपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति है। यदि वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में किसी बात की आवश्यकता है तो, वह यही है। गांधी जी के विचारों सिद्धांतों और मान्यताओं को ही सामूहिक रूप से गांधीवाद कहा जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसकी महत्वपूर्णता पर प्रकाश डालते हुए शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद की उपादेयता को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

शब्दावली - गांधीवाद, सर्वोदय, यथार्थवाद।

परिचय

कंप्यूटर और इंटरनेट ने विश्व के सारे ज्ञान को में सुलभ कर रखा है। इससे हमारा देश भी अछूता नहीं है। हमारे देश की अधिकतर आबादी चाहे इंटरनेट पर आश्रित हो चुकी है परंतु फिर भी हमारे देश का एक गरीब तबका और आबादी इसका लाभ उठाने और अपने हितों के अनुसार इसका लाभ उठाने में असमर्थ है तो इसलिए हमें भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी को भी साथ लेकर चलना पड़ेगा। वर्तमान शिक्षा की अनुपयुक्तता एवं शिक्षित बेरोजगारों की बढती संख्या ने इस और ध्यान देने के लिए एक चेतावनी दी है। गांधी जी ने शिक्षा हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये, वर्तमान स्थिति में इस चुनौती का सामना करने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं यदि हमारा देश विकसित देशों के समान उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होना चाहता है और शिखर पर पहुंचाना चाहता है तो गांधी जी की बताई हुई दिशा हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकती है गांधी जी ने माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने की प्राथमिकता दी थी। उनके विचार से वैज्ञानिक विषयों एवं विशेष विषयों में उचित संतुलन से शिक्षा को उपयोगी बनाने की दिशा में एक समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। वर्तमान में हमारा देश बेरोजगारी और गरीबी के कुचक्र में फंस चुका है अतः यदि शैक्षिक परिवेश की बात की जाए तो गांधी जी का यह गांधीवाद इस अंधेरे में एक उजाले की किरण का कार्य कर सकता है क्योंकि उनके द्वारा जो भी शिक्षण पद्धतियां एवं शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम बताए गए हैं वह कहीं ना कहीं बेरोजगारी को चुनौती देने का कार्य करते हैं।

प्रो. हुमायूं कबीर ने भी कहा है "विज्ञान प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक शिक्षा से ही किसी देश की उन्नति हो सकती है।"

गांधी जी के अनुसार बताए गए पाठ्यक्रम एवं शिक्षा के उद्देश्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को समझा जा सकता है कि किस प्रकार हमारा देश इसका प्रयोग कर विश्व गुरु के रूप में अपनी खोई हुई पहचान को पा सकता है।

गाँधीवाद

गाँधीवाद शब्द गाँधीजी के समय में भी कुछ लोगों ने प्रयुक्त किया था। लोग गाँधीवाद शब्द का अब प्रयोग करने लगे हैं। सन् 1936 में गाँधीजी ने गाँधीवाद के संबंध में इस प्रकार लिखा है- "गाँधीवाद जैसी कोई वस्तु है ही नहीं और मुझे अपने पीछे कोई सम्प्रदाय नहीं छोड़ जाना है। मैंने कोई नया तत्त्व या नया सिद्धान्त खोज निकाला है, ऐसा मेरा दावा नहीं। मैंने तो मात्र जो शाश्वत सत्य है, उन्हें अपने नित्य के जीवन और प्रश्नों से संबंधित करने का अपने ढंग से प्रयास किया है। मैंने जो रायें निश्चित की हैं और जिन निर्णयों पर मैं पहुँचा हूँ, वे अन्तिम नहीं हैं। गांधी जी ने क्रमबद्ध रूप से तो अपने सिद्धांतों को किसी वाद के रूप में स्थापित नहीं किया था, परंतु उन्होंने स्वयं ही सत्य के शाश्वत रूप को इतने व्यावहारिक रूप से प्रस्तुत किया कि उसने एक वाद (संप्रदाय/ विचारधारा) का रूप ले लिया जो की गांधीवाद कहलाया। अतः अगर इसे समझना हो तो कहा जा सकता है कि गांधी जी के अनुयायियों द्वारा गांधी जी के बिखरे हुए विचारों को संकलित कर क्रमबद्धता प्रदान कर गांधीवाद का नाम प्रदान किया गया।

गांधीवाद की शिक्षा में उपादेयता

गांधी जी के इसी गांधीवाद का शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान है। क्योंकि इस गांधीवाद में आदर्शवाद, प्रकृतिवाद एवं यथार्थवाद का उत्तम समन्वय परिलक्षित होता है। क्योंकि उनकी शिक्षा की योजना तो प्रकृतिवादी थी फिर भी उन्होंने यथार्थवाद और आदर्शवाद को भी इसमें स्थान दिया। गांधी जी के शब्दों में "शिक्षा से मेरा तात्पर्य है कि बालक में निहित शक्तियों का शारीरिक मानसिक एवं आत्मिक विकास का सर्वोत्तम रूप से प्रयोग करना हैं। " इसी प्रकार शिक्षा के उद्देश्यों में वे आदर्शवादी थी, उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य चारित्रिक एवं स्वस्थ आदतों का विकास करना बताया था। इसी प्रकार उन्होंने शिक्षा को यथार्थवाद से भी जोड़ा था, वे व्यावसायिक शिक्षा के पूर्ण समर्थक थे। उनका कहना था कि बच्चे की शिक्षा का आरंभ हस्तकला या शिल्प कला सीख कर करना चाहिए, जिससे उसका सर्वोच्च विकास हो सके। शिक्षा इतनी विश्वसनीय होनी चाहिए कि उसके समाप्ति पर बेरोजगारी ना रहे।

गांधी जी ने इसी प्रकार शिक्षा के पाठ्यक्रम में हस्तकौशल, भाषा, गणित, कला नैतिक एवं शारीरिक शिक्षा को भी सम्मिलित किया यदि हम गांधीवाद की बात करें तो उनके विचार उनकी पुस्तक "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" में एवं उनकी एक अन्य पुस्तक हिंद स्वराज में भी मिलते हैं। गांधीवाद वास्तविकता पर आधारित है। वह कर्म में विश्वास करते थे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अब इस और बहुत कम ध्यान दिया जाने लगा है सिर्फ रटने की पद्धति को महत्व दिया जाने लगा है, जिससे स्थाई ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है। इसी प्रकार गांधीवाद का एक प्रमुख आधार अहिंसा भी है, जिसकी वर्तमान में अत्यधिक आवश्यकता है। आजकल बालकों में बढ़ती हिंसक सोच एवं विचारधारा दैनिक समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर स्थान ले रही है, जो उनकी असीम ऊर्जा का नकारात्मक स्थानांतरण कर भविष्य के उजालों से हटाकर अंधेरों के दलदल में धकेल देती हैं। जबकि अहिंसा के द्वारा उन्हें आत्मिक बल प्रदान किया जा सकता है, जिससे ही एक सुव्यवस्थित समाज की स्थापना संभव है। इसी प्रकार गांधीवाद का एक प्रमुख बिंदु सर्वोदय भी था। वर्तमान में गरीबी एक प्रमुख समस्या है और कहीं ना कहीं बेरोजगारी की जड़े इसमें समाहित हैं। शिक्षा के द्वारा इसे दूर किया जा सकता है। इसके लिए रोजगार परक शिक्षा देने की आवश्यकता है। यदि अभी शिक्षा का स्वरूप देखें तो यह सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित रह गई है और यह शिक्षा वास्तविकता से कोसों दूर शोषण को बढ़ावा दे रहे हैं अतः गांधीवाद के माध्यम से इस व्यवस्था को सुधारा जा सकता है।

जिसमें सर्वोदय अर्थात सभी का उदय हो जिससे मानव विकास एवं लोक कल्याण हो। इसी प्रकार गांधीजी अध्यापकों में भी सत्य,अहिंसा, क्षमा एवं कर्तव्य परायणता जैसे गुणों का समावेश चाहते थे ताकि वह एक पथ प्रदर्शक और सहयोगी के रूप में कार्य करें एवं अभ्यास व प्रशिक्षण पर ध्यान दें। इसी प्रकार उन्होंने शिक्षण में मनोवैज्ञानिक पद्धतियों पर जोर दिया, जिसके माध्यम से ही पुन रूहमारा देश भारत देश विश्व गुरु के रूप में अपनी खोई हुई पहचान को पा सकेगा। केन्द्रीय शिक्षा परामर्शदात्री परिषद ने बेसिक शिक्षा के निमित्त एक स्थायी समिति का निर्माण किया है, जिसका काम बेसिक शिक्षा के विषय में परिषद् को परामर्श देना है। द्वितीय योजना काल में बेसिक शिक्षा के प्रचार के लिए कई कार्यक्रम अपनाए गए। अनेक जूनियर बेसिक स्कूलों को सीनियर बेसिक स्कूलों में परिवर्तित किया गया। साधारण प्रारंभिक स्कूल तथा मिडिल स्कूल भी बेसिक स्कूलों की प्रणाली में ढाले गए। पब्लिक स्कूल सम्मेलन ने भी बेसिक शिक्षा में रुचि प्रदर्शित की है। भारत ने बेसिक शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा का अंग माना है। अनेक पंचवषीय योजनाएँ समाप्त हो चुकी है। इन योजनाओं मे अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था के लिए बेसिक शिक्षा की प्रणाली ही स्वीकृत की गई है। फिर भी बेसिक शिक्षा में जितनी उन्नति की आशा की गई थी, उतनी उन्नति नहीं हुई।

गाँधीजी ने तात्कालीन शिक्षा प्रणाली से खिन्न होकर ही एक नवीन शिक्षा पद्धति का विकास किया, जिसे हम बेसिक शिक्षा की संज्ञा देते हैं। उन्होंने तात्कालीन शिक्षा प्रणाली के दोषों की ओर दृष्टि डालने पर देखा कि यह भारत के लिए सर्वथा अनुपयुक्त प्रणाली है। उनका कहना था कि भारत को अपनी जलवायु अपने ही प्राकृतिक सौंदर्य एवम अपने ही साहित्य में फलना फूलना होगा। गांधी जी स्त्री शिक्षा में एवम् प्रौढ़ शिक्षा को भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे, वें स्त्री को स्वतंत्रता पूर्वक अध्ययन करने का अवसर देने के समर्थक थे। बालिका शिक्षा को भी वे बालकों की शिक्षा की तरह ही जरूरी समझते थे। इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा के भी प्रबल समर्थक थे उनका यह मानना था कि प्रौढ़ शिक्षा एक तरह से अभिभावक की शिक्षा ही है जिसके द्वारा वें भी अपने बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व की पूर्ति सर्वोत्तम ढंग से कर सकता है एवं उसके विकास हेतु जागरूक रह सकता है। वर्तमान समय में हमारे देश में स्त्रियों की दशा में निरंतर सुधार के प्रयास के बाद भी अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है, अतः यदि हम आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद का प्रयोग करें तो इस दिशा में सफलता संभव है। इसी प्रकार यदि गांधीवाद के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाए तो हमारे बुजुर्गो के अनुभवों के साथ नवीन पीढ़ी के जोश एवम् उत्साह को जोड़कर हमारा देश विश्व में अपनी एक अलग पहचान बन सकता है। इस प्रकार गांधीवाद न केवल वर्तमान में अपितु आने वाले कई पीढियां के लिए उपयोगी रहेगा। स्वयं गांधी जी ने कराची में गांधी इरविन समझौता के बाद एक सार्वजनिक सभा में कहा था कि" गांधी मर सकता है पर गांधीवाद सदा जीवित रहेगा। अतः इन सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गांधीवाद को यदि हम हमारे वर्तमान एवं भविष्य नीतियों के साथ समावेशित करें तो यह शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। गांधी जी के विचार न केवल तात्कालिक परिस्थितियों में अपितु वर्तमान परिस्थितियों के लिए भी मार्गदर्शन का कार्य करते हैं और हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में एक नई ऊंचाई पर ले जाने में सहायक है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ

गांधीजी शिक्षा को केवल साक्षर करने का माध्यम ही नहीं मानते थे अपितु उनका मानना था कि शिक्षा बालक को एक पूर्ण मानव बनती है शिक्षा का संगठन इस प्रकार का होना चाहिए कि वह मानव को अपने कुशलताओं का विकास करने का संपूर्ण अवसर प्रदान करें। वे शिक्षा को बुनियादी शिक्षा से भी जोड़ते थे और शिक्षा को उच्च स्तर पर गांधीजी अध्यात्म और दर्शन से जोड़कर देखते थे। ऐसे गांधी जी ने शिक्षा का अर्थ संकुचित रूप में ना लेकर उसे उसके व्यापक रूप में ग्रहण किया था जैसे की शिक्षा अपने मूल रूप में समझी जा सकती हैं। गांधी जी केवल साक्षरता को ही शिक्षा नहीं मानते थे। उनके शब्दों में साक्षरता ना तो शिक्षा का अंत है और ना ही प्रारंभ यह केवल साधन मात्र है, जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है आता है यदि गांधी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ लिया जाए तो शिक्षा मानव की अपूर्णता को दूर कर उसे संपूर्ण स्वरूप प्रदान करती है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

1) बच्चों को बड़े होने पर जीवकोपार्जन हेतु समर्थ एवं सक्षम बनाना।

2) बच्चों के चरित्र को उन्नत बनाना।

3) बच्चों की शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का संपूर्ण विकास करना।

4) बच्चों को संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना।

5) बच्चों को नैतिक ज्ञान प्रदान करना।

6) बच्चों का सामाजिक विकास करना।

7) बच्चों का सांस्कृतिक विकास करना।

8) परिस्थितियों का सामना करने हेतु बच्चों को समर्थ बनाना।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

गांधी जी पाठ्यक्रम में निम्न का समावेश करना चाहते थे-

(1) हस्तशिल्प

(2) भाषा- मातृभाषा, राष्ट्रभाषा

(3) गणित

(4) सामाजिक विज्ञान

(5) विज्ञान - भौतिक विज्ञान,प्राणी विज्ञान

(6) कला - संगीत, चित्रकला और नृत्य

(7) नैतिक शिक्षा

(8) शारीरिक शिक्षा

(9) सांस्कृतिक शिक्षा

गाँधी जी के शैक्षिक सिद्धान्तों की वर्तमान भारत में उपयोगिता

गाँधी जी के शैक्षिक सिद्धान्तों की वर्तमान भारत की समस्याओं के लिए उपयोगिता उनकी बुनियादी शिक्षा के उद्देश्यों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. भारतीय परिस्थितियों के लिए उपयोगी- गाँधी जी ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करना चाहते थे जो भारतीय परिस्थितियों में उपयोगी हो, जो बालकों का स्वाभाविक रूप से विकास कर सके तथा भारत की प्रगति की दृष्टि से लाभदायक हो।

2. बालकों का सर्वांगीण विकास- गाँधी जी के शैक्षिक सिद्धान्तों पर आधारित बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना था। इस दृष्टि से बुनियादी शिक्षा की योजना इस प्रकार बनायी गई थी कि बालकों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक विकास किया जा सके।

3. अच्छी नागरिकता का विकास- बुनियादी शिक्षा बालकों में अच्छी नागरिकता का विकास करने में महत्त्वपूर्ण थी। आज के बालक कल के श्रेष्ठ नागरिक तभी बन सकते हैं जब उनमें प्रेम, धैर्य, सद्भाव, सहनशीलता, परोपकार, सत्यनिष्ठा तथा सदाचार इत्यादि लोकतान्त्रिक मूल्यों के प्रति गहरी निष्ठा हो। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा बालकों में ऐसे मूल्यों का विकास करने में सक्षम थी।

4. सर्वोदय की भावना का विकास- गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा की अवधारणा छात्रों में उन् गुणों का संचार करने के लिए बनाई गई थी, जिनके द्वारा छात्र केवल अपनी ही उन्नति के प्रति सजग न रह कर पूरे समाज की उन्नति की भावना से ओत-प्रोत रहें। सामाजिक उत्थान के लिए सर्वोदय की भावना का विकास आवश्यक है।

5. नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास- बुनियादी शिक्षा के द्वारा गाँधी जी छात्रों का भारतीय

मूल्यों और आदर्शों के अनुसार नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करना चाहते थे। यही कारण है कि उन्होंने पाठ्यक्रम में महान पुरुषों, वैज्ञानिकों, अन्वेषकों की जीवनियों को सम्मिलित किया था।

6. आर्थिक निर्भरता- आर्थिक निर्भरता वर्तमान भारत की सबसे गम्भीर आवश्यकता है। आज बेरोजगारी का प्रकोप विकराल रूप ले चुका है। सरकार स्वार्थ के वशीभूत होकर इस दिशा में गम्भीर नहीं दिखती उस पर आरक्षण जैसे प्रावधान योग्य एवं कुशल युवाओं में कुण्ठा उत्पन्न कर रहे हैं। ऐसे में गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा छात्रों की स्वावलम्बी, आत्मविश्वासी एवं आत्म-निर्भर बनाकर बेरोजगारी की गम्भीर समस्या का समाधान कर सकती है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा में हस्त-कौशलों, काष्ठ, चमड़ा, कृषि, चीनी मिट्टी के बर्तन, मछली पालन, मधु मक्खी पालन इत्यादि लघु कुटीर उद्योगों की शिक्षा सम्मिलित थी, जो छात्रों को स्वावलम्बी बनाती थी।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि गांधीवाद वर्तमान में शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है। भारत की संस्कृति, सभ्यता, धर्म एवं मूल आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा योजना का सूत्रपात गांधीजी के गांधीवाद के माध्यम से ही किया जा सकता है। आज के शैक्षिक पपरिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य रंग से सरोबार भारत के लिए यह आवश्यक हो गया है कि इस गांधीवाद अर्थात उनके सिद्धांतों के अनुरूप शिक्षा की विचारधारा हो ताकि सच्चे अर्थों में हम आजादी का अमृत महोत्सव मना सके।

संदर्भ

गांधी 1940 द ईयर बुक ऑफ एजुकेशन 441

लाल प्यारे पूना होती 441

गांधी की आत्मकथा

लक्ष्मी नारायण गुप्ता- महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री कैलाश प्रकाशन मन्दिर 16 विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद-3 संस्करण- 1978

पटेल एम.एस .1948 द टीचर्स वर्ल्ड

गांधी हिंद स्वराज नवजीवन प्रकाशन पृष्ठ 23

पटेल एम.एस .1956 एजुकेशनल फिलासफी ऑफ़ महात्मा गांधी

शाह, पीके (2017), "बुनियादी शिक्षा और इसकी प्रासंगिकता पर गांधीजी के विचार'', पुणे रिसर्च एन इंटरनेशनल जर्नल इन

इंग्लिश, खंड 3, अंक 4।

विजयलक्ष्मी, एन. और अन्य (2016), "21वीं सदी में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता'', इंजीनियरिंग, आईटी और सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 6, अंक 1.

सक्सेना, एस. (2003), "शिक्षा के सिद्धांत'', मीराट, सूर्या प्रकाशन।

टंडन, एस. (2016), "टीचर्स इन द मेकिंग'', नई दिल्ली, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी।

पिल्लई, "शिक्षा पर गांधी की अवधारणा और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता''

रोला, रोमा. महात्मा गांधी जीवन और दर्शन

शर्मा, रामनाथ - भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा प्रथम संस्करण- 1917

बाकेलाल सिंह - शिक्षा के आधार भूत सिद्धान्त, साहित्य सेवा शिविर लाइन बाजार जौनपुर, प्रथम संस्करण- 1968

अमित कुमार यादव-महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का शिक्षा पर प्रभाव।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

वैदिक कालीन शिक्षा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

केशव मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर
(राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, शाहपुरा बाग जयपुर)

प्रस्तावना

भारत की शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। वैदिक काल, जिसे भारतीय सभ्यता का स्वर्ण युग कहा जाता है, उस समय की शिक्षा प्रणाली के आदर्शों, सिद्धांतों और दृष्टिकोण से परिपूर्ण था। यह शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर आधारित थी, जिसमें केवल ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और आध्यात्मिक उन्नति पर बल दिया जाता था। भारत सरकार द्वारा 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) शिक्षा की इन मूल अवधारणाओं को पुनः स्थापित करने का प्रयास है। यह नीति भारत की पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था की आधुनिक आवश्यकता के अनुरूप पुनर्व्याख्या करती है। इस शोध पत्र में वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली की विशेषताओं का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है।

वैदिक कालीन शिक्षा की विशेषताएँ

वैदिक कालीन शिक्षा केवल किताबी ज्ञान पर आधारित नहीं थी, बल्कि इसका उद्देश्य मनुष्य के बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक और आत्मिक सभी पक्षों का विकास करना था। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. गुरुकुल प्रणाली : विद्यार्थी गुरुकुलों में निवास कर गुरुओं से प्रत्यक्ष संपर्क में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह प्रणाली जीवन अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सेवा की भावना विकसित करती थी।

2. समग्र विकास : शिक्षा केवल अक्षर ज्ञान तक सीमित नहीं थी। विद्यार्थी वेद, गणित, खगोल, आयुर्वेद, संगीत, धनुर्वेद, नीति और नैतिकता जैसे विषयों में निपुणता प्राप्त करते थे।

3. नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा : धर्म, सत्य, अहिंसा, संयम और त्याग जैसे जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी, जिससे चरित्र निर्माण होता था।

4. मातृभाषा में शिक्षा : शिक्षा संस्कृत में होती थी, जो उस समय की अभिव्यक्ति की प्रमुख भाषा थी। यह सीखने को सहज और सजीव बनाती थी।

5. ज्ञानार्जन का उद्देश्य : शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका अर्जन नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, बहु-विषयक, मूल्य-आधारित और जीवनोपयोगी बनाना है। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. नई संरचना : 5+3+3+4 शिक्षा की नई संरचना में पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक तक विभिन्न चरणों को पुनः परिभाषित किया गया है।

2. मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा : कक्षा 5 तक शिक्षा मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में देने पर बल दिया गया है।

3. गुणात्मक सुधार और नैतिक शिक्षा : नीति शिक्षा को केवल नौकरी के साधन के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसे सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों से जोड़ती है।

4. गुरु की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन : शिक्षकों को "नेशन बिल्डर'' की संज्ञा दी गई है और उन्हें प्रशिक्षित कर प्रेरणास्पद बनाने पर जोर दिया गया है।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश : योग, आयुर्वेद, भारतीय गणित, दर्शन, संस्कृति, और संस्कृत को पाठ्यक्रम में उचित स्थान देने की बात कही गई है।

वैदिक शिक्षा और NEP 2020 के बीच साम्य

1. शिक्षक का उच्च स्थान : वैदिक काल में 'आचार्य देवो भवः' की परंपरा थी। NEP 2020 में भी शिक्षक को शिक्षा व्यवस्था का केंद्र माना गया है।

2. नैतिक मूल्यों की शिक्षा : दोनों ही प्रणालियाँ मानवीय मूल्यों और चरित्र निर्माण को शिक्षा का मूल उद्देश्य मानती हैं।

3. भाषा और संस्कृति का संरक्षण : मातृभाषा में शिक्षा, संस्कृत का पुनर्प्रसार, और भारतीय संस्कृति का पाठ्यक्रम में समावेश वैदिक दृष्टिकोण को पुनजीवित करता है।

4. समग्र विकास का दृष्टिकोण : NEP 2020 शिक्षा को बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक दृष्टि से समग्र बनाना चाहती है।

5. स्वावलंबन और कौशल विकास : वैदिक शिक्षा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती थी। NEP 2020 में भी स्किल डेवेलपमेंट और व्यावसायिक शिक्षा पर बल है।

चुनौतियाँ और अंतर

1. आधुनिक तकनीक का समावेश : वैदिक काल में तकनीक का अभाव था, जबकि आज की शिक्षा तकनीक-आधारित हो चुकी है। इसे वैदिक मूल्यों से संतुलित करना चुनौती है।

2. गुरुकुल प्रणाली की व्यावहारिकता : गुरुकुल जैसी आवासीय व्यवस्था आज के सामाजिक-आर्थिक ढांचे में पूरी तरह लागू नहीं की जा सकती।

3. प्रवेश प्रतियोगिताओं का दबाव : आज की शिक्षा प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं पर केंद्रित है, जबकि वैदिक काल में आत्मज्ञान और मौलिक चिंतन को महत्व दिया जाता था।

निष्कर्ष

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज को सांस्कृतिक और नैतिक रूप से समृद्ध बनाया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस प्राचीन परंपरा के मूल तत्वों को आधुनिक संदर्भ में पुनः स्थापित करने का प्रयास है। दोनों प्रणालियाँ शिक्षा

को केवल जीविकोपार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला मानती हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वैदिक शिक्षा की आत्मा को पहचानें और उसे तकनीक, विज्ञान और वैश्विक संदर्भों में पुनःस्थापित करें। NEP 2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ सूची

भारत सरकार, (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार प्रकाशन।

Sharma., R. (2012)- Vedic Education: A System Rooted in Indian Culture- Journal of Indian Education-

Kapoor. K. (2008), भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली : भारतीय विद्या भवन।

राधाकृष्णन आयोग रिपोर्ट, (1949), भारतीय विश्वविद्यालय आयोग।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : संभावनाएँ, चुनौतियाँ और भविष्य

डॉ. संजय धोटे
हिंदी विभागाध्यक्ष, यशवंत महाविद्यालय, वर्धा
मोबा.9730772209 (dhotedr-sanjay@yahoo.com)

सारांश (Abstract) - वर्तमान शोधालेख में हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के अंतर्संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह शोधालेख बताता है कि AI तकनीक किस प्रकार हिंदी भाषा के माध्यम से भाषाई समावेशन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, डिजिटल शोध, और ग्रामीण-शहरी अंतर को पाटने में सहायक हो सकती है। इसमें AI आधारित हिंदी वॉयस असिस्टेंट, ट्रांसलेशन टूल्स, NLP मॉड्यूल्स और ओपन-सोर्स परियोजनाओं के महत्व को रेखांकित किया गया है। शोधालेख में यह भी दर्शाया गया है कि AI हिंदी भाषा में रोजगार, स्टार्टअप्स और लोकलाइजेशन इंडस्ट्री के नए अवसर पैदा कर रही है। साथ ही भाषा संसाधनों की कमी, क्षेत्रीय बोलियों की विविधता, तकनीकी दक्षता का अभाव तथा डेटा सुरक्षा व नैतिकता से जुड़ी चुनौतियों का उल्लेख कर समाधान के सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। जिसमें ओपन-सोर्स पहल, नीति-निर्माण, प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम हिंदी भाषा को डिजिटल युग में सशक्त बनाने की दिशा के दिशा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं तभी 'डिजिटल इंडिया' की मजबूत आधारशिला स्थापित हो सकती है।

बीज शब्द (Keywords) - कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), भाषायी समावेशिता, ओपन सोर्स, हिंदी लोकलाइजेशन, तकनीकी साक्षरता, हिंदी कंटेंट जेनरेशन, भाषा संरक्षण, ग्रामीण डिजिटल सशक्तिकरण एवं डिजिटल रोजगार।

प्रस्तावना - वर्तमान युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है, जहाँ मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवाचार और तकनीकी विकास ने अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) एक ऐसी प्रगतिशील तकनीक के रूप में उभरकर सामने आई है, जिसने पारंपरिक कार्य पद्धतियों को नई दिशा और गति प्रदान की है। आज AI न केवल विकसित देशों तक सीमित है, बल्कि विकासशील देशों में भी इसकी पहुँच और उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, जहाँ भाषा और संस्कृति में व्यापक विविधता विद्यमान है, वही AI की सफलता और प्रभावशीलता का महत्वपूर्ण आधार भाषाई समावेशन पर निर्भर करता है। भारत में हिंदी भाषा को जनमानस की भाषा का गौरव प्राप्त है, जो देश को और भारत के नागरिकों को एकता के सूत्र में बाँधती है। हिंदी में तकनीकी विकास और AI आधारित सेवाओं की उपलब्धता से जनमानस को तकनीकी सशक्तिकरण की दिशा में न केवल नई संभावनाएँ दिखाई देने लगी है। बल्कि यह डिजिटल खाई को पाटने में भी सहायक सिद्ध होगी। किंतु हिंदी भाषा में AI के यथायोग्य विकास के मार्ग में अनेक जटिल चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं, जैसे संसाधनों की कमी, उपयुक्त डेटा का अभाव, तकनीकी शब्दावली का सीमित विस्तार तथा स्थानीय बोलियों की विविधता। इन चुनौतियों के बावजूद हिंदी भाषा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ निहित हैं, जो न केवल तकनीकी प्रगति को आमजन तक पहुँचाएँगी, बल्कि भारतीय समाज के सामाजिक-आर्थिक विकास को भी गति प्रदान करेंगी। इस शोधालेख का उद्देश्य हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंतर्संबंधों

की विवेचना करना, इसके संभावित अवसरों और विद्यमान चुनौतियों का विश्लेषण कर भविष्य की दिशा में नीतिगत सुझाव को प्रस्तुत करना है, जिससे हिंदी प्रेमी तकनीकी सशक्तिकरण की मुख्यधारा से जुड़ सके। देश डिजिटल इंडिया के सपने को साकार करने में सक्षम हो सके। हिंदी भाषा पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव व्यापक और दूरगामी है। यह न केवल भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक ही नहीं है, बल्कि इसके उपयोग, संरक्षण, और विकास के नए आयाम खोल रही है। इन्ही का यहाँ विवेचन किया जा रहा है

हिंदी भाषा विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाएँ

भाषायी समावेशिता (Linguistic Inclusion) - भाषायी समावेशिता अर्थात् एक ऐसी तकनीकी एवं सामाजिक व्यवस्था विकसित करना जिसमें प्रत्येक भाषा को विशेषकर मातृभाषाएँ और क्षेत्रीय भाषाएँ डिजिटल और तकनीकी जगत में समान अधिकार और अवसर प्राप्त करें। अभी तक इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का विकास मुख्यतः अंग्रेजी जैसी वैश्विक भाषाओं के इर्द-गिर्द ही हुआ है। परिणामस्वरूप हिंदी समेत अनेक भारतीय भाषाएँ डिजिटल सेवाओं में पीछे रह गई हैं। AI के माध्यम से यह असमानता दूर की जा सकती है जिससे हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषा-भाषी समुदाय को भी तकनीक का पूरा लाभ मिल सकता है। AI के अंतर्गत भाषायी समावेशिता मुख्यतः निम्न चरणों में संभव हो सकता है। जैसे—

हिंदी में संवाद की सुविधा- AI आधारित वर्चुअल असिस्टेंट्स जैसे Siri, Alexa या Chat GPT हिंदी भाषा में बातचीत कर सकते हैं। इससे ग्रामीण या हिंदी प्राथमिकता वाले लोगों को भी तकनीक से जुड़ने में आसानी होती है।

हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराना- हिंदी जानने और समझनेवालों के लिए सर्च इंजन, हेल्थ एप, सरकारी सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध कराकर डिजिटल खाई को पाटा जा सकता है।

ट्रांसलेशन और ट्रांसक्रिप्शन - AI आधारित अनुवादक (Translator) हिंदी में विश्व साहित्य, शोध सामग्री और सरकारी दस्तावेज़ों को उपलब्ध करा सकते हैं।

दृष्टिबाधित या अशिक्षित लोगों के लिए सुविधा- स्पीच-टू-टेक्स्ट, वॉइस असिस्टेंट्स, और टेक्स्ट-टू-स्पीच तकनीक हिंदी में सुलभ हों तो दृष्टिहीन, वृद्ध और अल्पशिक्षित वर्ग भी डिजिटल दुनिया से जुड सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर हम हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाएँ में डिजिटल सेवाओं का लाभ प्राप्त कर सकते है। उदाहरणार्थ—

1: Google Assistant: हिंदी में पहले स्मार्टफोन्स के वॉइस असिस्टेंट अंग्रेज़ी तक सीमित थे। अब Google Assistant हिंदी में मौसम, समाचार, कॉलिंग, मैसेजिंग जैसी सुविधाएँ देता है। इससे हिंदी जानने वाला किसान भी मौसम की जानकारी, सरकारी योजना, हेल्थ टिप्स अपनी भाषा सुन सकता है।

2ः आयुष्मान भारत हेल्थ कार्ड : सरकारी हेल्थ पोर्टल और एप्लिकेशन अब हिंदी में भी उपलब्ध हैं। ग्रामीण लोग स्वास्थ्य बीमा, सरकारी अस्पतालों की जानकारी आसानी से हिंदी में प्राप्त कर सकते हैं।

3: Koo App : ट्विटर का भारतीय विकल्प ज्ञवव हिंदी समेत कई भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। साधारण शिक्षित व्यक्ति भी अब अपनी बात हिंदी में लिखकर डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रख सकते हैं। यह भाषायी लोकतंत्र का उदाहरण है।

भाषायी समावेशिता केवल कल्पना नहीं बल्कि यह AI तकनीक से राजभाषा और राष्ट्रीय अस्मिता के लिए सभी भारतीय भाषा-भाषियों को समान अवसर देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन रही है। आज ग्रामीण और आर्थिकस्तर से कमजोर वर्ग तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा AI के माध्यम से सहज सुलभ होकर आवश्यक लोगों तक पहुँच रही है। हिंदी साहित्य, संस्कृति और ज्ञान परंपरा को AI तकनीक के साथ जोड़कर नई पीढ़ी से जोड़ना सहज ही संभव है। निश्चित ही हम अगर डेटा नीति और ई-जागरूकता की कमी को दूर कर सके। तो निश्चित ही हिंदी डिजिटल इंडिया की रीढ़ बन सकती है, ऐसा कहना अनुचित न होगा।

AI का हिंदी भाषा शिक्षण और अनुसंधान में योगदान

हिंदी शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सामग्री AI के ज़रिए किताबें, पाठ्यक्रम, नोट्स, ऑडियो-वीडियो कंटेंट इत्यादि हिंदी में सहज तैयार किए जा सकते हैं। इससे हिंदी माध्यम के छात्रों को अपनी भाषा में विषय समझना और भी आसान होगा। उदाहरण : DIKSHA Portal, NPTEL जैसे प्लेटफॉर्म हिंदी में वीडियो लेक्चर, क्विज़, टेस्ट सीरीज उपलब्ध कराते हैं। बैंज ळच्ज् जैसे AI टूल्स हिंदी में जटिल विषय को आसान भाषा में समझा सकते हैं।

स्मार्ट क्लासरूम और पर्सनलाइज्ड लर्निंग- AI आधारित एप्लिकेशन छात्रों के स्तर के अनुसार पाठ सामग्री तैयार करते हैं। कमजोर छात्रों को हिंदी में रिवीजन, एक्स्ट्रा नोट्स या लाइव डाउट-क्लियरिंग सुविधा आज उपलब्ध है। उदाहरणार्थ–

1. Byju's, Vedantu जैसे एजु-टेक प्लेटफॉर्म अब हिंदी में कंटेंट दे रहे हैं।
2. वॉइस असिस्टेंट के माध्यम से हिंदी में सवाल पूछना और उत्तर पाना आज संभव है।

ग्रामीण और दूरस्थ इलाकों तक शिक्षा का विस्ताररू- हिंदी भाषा में AI चैटबॉट्स, वर्चुअल टीचर्स की सहायता से गाँवों में भी बच्चों को डिजिटल शिक्षा मिल सकती है। शिक्षकों की कमी AI से पूरी की जा सकती है। उदाहरणार्थ - EkStep Foundation - यह परियोजना हिंदी के साथही अन्य भारतीय भाषाओं में ओपन-सोर्स डिजिटल शिक्षा कंटेंट उपलब्ध कराती है।

AI और हिंदी अनुसंधान के विकास में योगदान

हिंदी ग्रंथों का डिजिटलीकरण- AI आधारित OCR (Optical Character Recognition) टूल्स से हिंदी पांडुलिपियाँ, ग्रंथ, शोधपत्र डिजिटल किए जा सकते हैं। इससे हिंदी साहित्य, इतिहास और संस्कृति का संरक्षण और शोध की संभव बढ़ी है। उदाहरणस्वरूप–

1. Google Books हिंदी में हजारों पुस्तकों को स्कैन कर उपलब्ध कराता है।
2. Project Madad भारतीय भाषाओं के ग्रंथों को डिजिटल फॉर्म में सुरक्षित करना।

ट्रांसलेशन और डेटा एनालिटिक्स- AI अनुवादक शोधपत्रों को हिंदी में या हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवादित कर सकते हैं। डेटा एनालिटिक्स टूल्स से हिंदी में जनमत सर्वेक्षण, सामाजिक अध्ययन और शोध आसान हो गया है।

उदाहरण

1. Google Translate, Microsoft Translator हिंदी में रिसर्च डेटा ट्रांसलेट करते हैं।
2. AI टूल्स बड़ी संख्या में हिंदी डाटा का विश्लेषण कर शोध कार्य में मदद करते हैं।

हिंदी NLP (Natural Language Processing) अनुसंधान हिंदी के लिए छस्च् मॉड्यूल्स (जैसे टोकनाइज़र, सेंटिमेंट एनालिसिस) विकसित किए जा रहे हैं। यह AI आधारित हिंदी सर्च इंजन, चैटबॉट्स, रोबोटिक्स आदि के शोध को बढ़ावा देता है।

जैसे 1. IIT मद्रास और अन्य संस्थान भारतीय भाषाओं के लिए AI लैब चला रहे हैं।

2. भाषा AI योजना (BHASHINI) से हिंदी NLP अनुसंधान को बड़ा बल मिला है।

उपरोक्त उदाहरणों के माध्यम से कहा जा कता है कि AI शिक्षा और अनुसंधान में हिंदी को एक नई शक्ति प्रदान की है, जिससे हिंदी में कंटेंट, शिक्षक, शोध संसाधन डिजिटल और सुलभ बनते जा रहे हैं।

AI और हिंदी भाषा शिक्षण में व्यवसाय - रोजगार की संभावनाएँ

लोकलाइजेशन इंडस्ट्री का विकास होने के कारण भारत में विदेशी कंपनियाँ अपनी वेबसाइट, एप, प्रोडक्ट मैनुअल हिंदी में देने लगी हैं। इसके लिए AI आधारित ट्रांसलेशन और कंटेंट जनरेशन टूल्स की माँग निरंतर बढती जा रही है। हिंदी में विज्ञापन, सोशल मीडिया पोस्ट, ईमेल मार्केटिंग तैयार करने के लिए कॉपीराइटर, अनुवादक, कंटेंट एडिटर जैसे रोजगार के

नए अवसर प्रदान कर रहे है। जैसे -

1. अमेज़न, फ्लिपकार्ट अब हिंदी में ग्राहक सेवा और प्रोडक्ट विवरण दे रहे हैं।

2. Netflix, YouTube हिंदी सबटाइटलिंग, डबिंग के लिए AI और लोकलाइजेशन प्रोफेशनल्स का इस्तेमाल करते हैं।

हिंदी में ग्राहक सेवा (Customer Support) - AI चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट हिंदी में कस्टमर के सवालों के जवाब देते हैं। इसके लिए हिंदी में डेटा एनोटेशन, स्क्रिप्ट राइटिंग, और ट्रेनिंग की ज़रूरत होती है। कंपनियाँ हिंदी कॉल सेंटर एजेंट्स और कंटेंट मॉडरेटर्स को भी नियुक्त कर रही हैं। उदाहरणस्वरूप :

1. IRCTC, बैंकिंग, टेलिकॉम कंपनियों में हिंदी कॉल बॉट्स।

2. Ola, Swiggy जैसी कंपनियाँ हिंदी में ग्राहक सहायता दे रहे हैं।

हिंदी AI स्टार्टअप्स - कई नए स्टार्टअप हिंदी में वॉइस असिस्टेंट्स, ट्रांसलेटर एप्स, ऑटोमैटिक कंटेंट जेनरेशन टूल्स बना रहे हैं। इनमें डेवलपर्स, डाटा एनोटेटर, रिसर्चर, कंटेंट स्पेशलिस्ट के लिए रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

केस स्टडी : Vernacular-AI - यह एक भारतीय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित कंपनी है, जो वॉयस असिस्टेंट, कस्टमर सपोर्ट और भाषा आधारित बातचीत (Conversational AI) के क्षेत्र में काम करती है। यह कंपनी व्यवसायों (जैसे बैंक, बीमा कंपनियाँ, कॉल सेंटर्स आदि) को स्वचालित कॉल सेंटर और मल्टी-लिंगुअल वॉयस बॉट (कई भारतीय भाषाओं में बोलने वाला बॉट) बनाने में मदद करती है।

Koo App- एक भारतीय माइक्रोब्लॉगिंग और सोशल नेटवर्किंग प्लेटफ़ॉर्म था, जिसे नवंबर 2019 में को-फ़ाउंडर Aprameya Radhakrishna और Mayank Bidawatka द्वारा बनाया गया था और मार्च 2020 में लॉन्च किया गया। इस बहुभाषी प्लेटफ़ॉर्म की शुरूआत कन्नड़ में हुई, बाद में हिंदी, तमिल, तेलुगु, मराठी, बंगाली, गुजराती आदि भाषाओं में समर्थन उपलब्ध किया गया। हिंदी समेत भारतीय भाषाओं में माइक्रोब्लॉगिंग के लिए लोकल कंटेंट मॉडरेशन टीम रखता है।

रोजगार सृजन के नये अवसर

भाषा लोकलाइजेशन	ट्रांसलेटर, एडिटर, कॉपीराइटर
छस्न्च मॉडल विकास	डेटा एनोटेटर, लिंग्विस्ट, रिसर्च असिस्टेंट
AI वॉयस असिस्टेंट	स्क्रिप्ट राइटर, डायलॉग डिज़ाइनर
हिंदी कंटेंट जेनरेशन	कंटेंट राइटर, सोशल मीडिया मैनेजर
ग्राहक सेवा	हिंदी चैटबॉट मैनेजर, कॉल सेंटर एजेंट

ग्रामीण और घरेलू स्तर पर लाभ- हिंदी AI टूल्स से छोटे व्यवसायी अपने उत्पादन हिंदी में ऑनलाइन बेच सकते हैं। गाँव का किसान मंडी भाव हिंदी या अपनी मातृभाषा में जानकर सीधा व्यापार कर सकता है। ग्रामीण महिलाएँ हिंदी वीडियो ट्यूटर से स्किल सीखकर ऑनलाइन काम कर सकती हैं। फ्रीलांसर प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी कंटेंट राइटिंग, ट्रांसलेशन, वॉइस ओवर आर्टिस्ट की माँग बढ़ी है। AI हिंदी भाषा के माध्यम से व्यवसाय और रोजगार के नए द्वार खोल रहा है। हिंदी लोकलाइजेशन उद्योग तेजी से बढ़ रहा है। तकनीकी, रचनात्मक और ग्राहक सेवा से जुड़े लाखों रोजगार हिंदी में सृजित हो रहे हैं। यह ग्रामीण और गैर-अंग्रेजी भाषी युवाओं के लिए भी डिजिटल दुनिया में आय के नए अवसर तैयार हो रहे हैं।

हिंदी भाषा विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौतियाँ- भारत जैसे बहुभाषी देश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का प्रसार एक नई अत्याधुनिक तकनीकी क्रांति है। AI ने अंग्रेज़ी समेत कुछ वैश्विक भाषाओं में तो अनेक सफलताएँ हासिल कर ली हैं, लेकिन हिंदी जैसी बहु जनसंख्या वाली भाषा इसके संपूर्ण लाभ से अभी भी वंचित है। भले ही हिंदी भाषा में AI के अपार अवसर उपलब्ध हैं, परंतु इसके सफलता के रास्ते में अनेक तकनीकी, सामाजिक, नीति-गत और संरचनात्मक चुनौतियाँ मौजूद हैं। इन चुनौतियों को समझना और दूर करना अत्यावश्यक होगा है, तभी AI तकनीक भारतीय समाज के

हर वर्ग तक पहुँच सकेगी और डिजिटल खाई को पाटने में सफल होगी। विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा होते हुए भी हिंदी भाषा में अभी तक AI तकनीक का उतना व्यापक लाभ नहीं उठा पाई है, जितना अंग्रेज़ी या अन्य वैश्विक भाषाओं ने उठाया है। लेकिन हिंदी भाषा में AI के प्रसार की राह में अनेक चुनौतियों का सामना करना हैं–

भाषा संसाधनों की कमी - कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) विशेषकर भाषा से जुड़े क्षेत्र जैसे Natural Language Processing (NLP), मशीन ट्रांसलेशन, वॉयस रिकॉग्निशन, आदि को अच्छी तरह काम करने के लिए विशाल और गुणवत्ता वाले भाषाई संसाधनों (Language Resources) की आवश्यकता होती है। जैसे -शब्दकोश (Dictionary), व्याकरण नियम (Grammar Rules) Annotated Corpora (टेक्स्ट का बड़ा संग्रह जिसमें हर शब्द/वाक्य को लेबल किया गया हो) , बोली और लहजे के साउंड सैंपल्स , ट्रांसलेशन डेटाबेस इत्यादि। ऑडियो और स्पीच डेटा , अंग्रेज़ी जैसी भाषाओं के लिए ये संसाधन बड़ी मात्रा में पहले से ही उपलब्ध हैं। लेकिन हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में यह मात्रा और गुणवत्ता अभी भी बहुत सीमित है। इसका मुख्य कारण डिजिटल डेटा की कमी, हिंदी में उच्च गुणवत्ता वाले टेक्स्ट, ऑडियो और वीडियो कॉर्पस सीमित मात्रा में डिजिटाइज़ हुए हैं। पुरानी पांडुलिपियाँ, लोक साहित्य, क्षेत्रीय बोलियाँ अभी तक डिजिटल नहीं हो पाई हैं।

स्टैंडर्डाइज़ेशन की कमी - हिंदी में अलग-अलग बोलियाँ और लहजे हैं जैसे अवधी, भोजपुरी, ब्रज। इन्हें एक मानक हिंदी में बदलकर AI मॉडल बनाना कठिन कार्य है।

एनोटेटेड डेटा की कमी - मशीन लर्निंग के लिए टेक्स्ट को सही लेबल करना जरूरी है (जैसे कौन-सा शब्द, कौन-सा भाग है, वाक्य का भाव क्या है?)। हिंदी में ऐसे Annotated Corpora बहुत कम उपलब्ध हैं।

तकनीकी संसाधन और फंडिंग की कमी - विकसित देशों की तुलना में हिंदी भाषा संसाधनों के लिए शोध और विकास पर कम निवेश हुआ है।

नीति और फंडिंग : सरकार, निजी कंपनियाँ और शैक्षणिक संस्थान मिलकर भाषा संसाधनों के विकास को बढ़ावा दें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी भाषा के विकास के लिए बड़ा अवसर प्रदान कर रही है, लेकिन भाषा संसाधनों की कमी सबसे बड़ी चुनौती है। अगर हम इस कमी को दूर कर लें तो हिंदी भाषा न केवल तकनीक के क्षेत्र में सशक्त होगी, बल्कि करोड़ों हिंदी भाषी लोग डिजिटल अर्थव्यवस्था से पूरी तरह जुड़ सकेंगे।

प्रादेशिक विविधता : हिंदी ही अकेली एक रूपी भाषा नहीं है। हिंदी क्षेत्र में कई बोलियाँ, उपभाषाएँ, और स्थानीय लहजे बोले जाते हैं। उदाहरणार्थ - अवधी (उत्तर प्रदेश) , भोजपुरी (पूर्वांचल और बिहार), ब्रज (पश्चिमी उत्तर प्रदेश), मैथिली, मगही (बिहार), हरियाणवी (हरियाणा), बुंदेली (मध्य प्रदेश) , मारवाड़ी (राजस्थान), छत्तीसगढ़ी (छत्तीसगढ़), आदि। ये सभी हिंदी के बड़े परिवार में आती हैं, लेकिन शब्दावली, उच्चारण, वाक्य संरचना और मुहावरों में काफी अंतर दिखाई देता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल केवल मानक हिंदी (खड़ी बोली) पर प्रशिक्षित होते हैं। बोलियाँ और क्षेत्रीय उच्चारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल को भ्रमित कर देते हैं। स्पीच रिकॉग्निशन में दिक्कत, कृत्रिम बुद्धिमत्ता वॉयस असिस्टेंट (जैसे Google Assistant) जब पूर्वांचल के भोजपुरी उच्चारण या बुंदेली शब्द सुनता है, तो सही शब्द पहचानने में गलतियाँ करता है। ट्रांसलेशन और ट्रांसक्रिप्शन में बाधा, बोलियों के शब्दकोश और व्याकरण अभी तक व्यापक रूप से तैयार नहीं हैं। भोजपुरी, अवधी आदि से हिंदी / अंग्रेज़ी में सटीक अनुवाद करना कठिन हो जाता है। किस बोली को 'मानक हिंदी' माना जाए? बोलियों को सहेजते हुए AI मॉडल कैसे तैयार हो? यह बड़ा प्रश्न है। उदाहरणार्थ -

1. एक किसान छत्तीसगढ़ी भाषा में वॉयस असिस्टेंट से पूछता है - 'मोला मौसम के बता दे' (मुझे मौसम बता दे)। लेकिन वॉयस असिस्टेंट तो केवल मानक हिंदी या अंग्रेज़ी समझता है। वह इसे नहीं पहचान पाता।

2. भोजपुरी फिल्मों के संवादों को ऑटोमैटिक सबटाइटल जनरेशन में सही-सही ट्रांसक्राइब करना मुश्किल होता है, क्योंकि भोजपुरी शब्दकोश सीमित हैं।

तकनीकी दक्षता की कमी (Technological Literacy) - तकनीकी दक्षता का अर्थ है - लोगों की वह योग्यता जिससे वे डिजिटल उपकरण, इंटरनेट, स्मार्टफोन, एप्लिकेशन और AI आधारित तकनीकों को सही ढंग से इस्तेमाल कर सकें। भारत

में करोड़ों हिंदी भाषी लोग हैं, पर उन सभी के पास स्मार्टफोन, इंटरनेट या कंप्यूटर चलाने की समान क्षमता नहीं है। यही कारण है कि AI के हिंदी टूल्स और सुविधाएँ होते हुए भी बहुत से लोग इसका पूरा लाभ नहीं उठा पाते है। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी डिजिटल साक्षरता के अभाव के कारण बहुसंख्यक लोग कंप्यूटर या स्मार्टफोन सही से चलाना नहीं जानते। तकनीकी शब्दावली (जैसे लॉगिन, पासवर्ड, डाउनलोड) हिंदी में सरल रूप में सिखाना मुश्किल होता है।

इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी - गांवों और पिछड़े इलाकों में इंटरनेट स्पीड कम या अनियमित रहती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित टूल्स को चलाने के लिए अच्छी इंटरनेट स्पीड जरूरी है।

भाषाई इंटरफेस सीमित - बहुत से एप्लिकेशन अब भी अंग्रेज़ी में हैं। हिंदी में उनका इंटरफेस या तो है ही नहीं या अभी अधूरा है।

आर्थिक बाधाएँ : देश के अधिकतर लोग निम्न मध्यमवगीय परिवार से होने के कारण स्मार्टफोन, लैपटॉप या डेटा पैक नहीं खरीद सकते। इस कारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में अनेक समस्यों का सामना करना पड़ता हैं -

1. हिंदी वॉइस असिस्टेंट या ट्रांसलेशन टूल होते हुए भी ग्रामीण लोग उनका इस्तेमाल नहीं कर पाते।
2. कई लोग सरकारी या बैंकिंग एप्लिकेशन हिंदी में होने पर भी भरने में असमर्थ रहते हैं।
3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्मार्ट क्लासरूम या डिजिटल लाइब्रेरी हिंदी में तैयार हैं, पर बच्चों को उनके इस्तेमाल का अभ्यास नहीं।
4. लोकल स्टार्टअप्स और डेवलपर्स को भी हिंदी यूजर के लिए टेक्नोलॉजी डिज़ाइन करने में दिक्कत आती है।

उदाहरणार्थ : कई सरकारी योजनाएँ जैसे च्ड ज्ञपेंद, आयुष्मान भारत अब हिंदी में पोर्टल और एप्लिकेशन प्रदान कर रही हैं। पर बहुत से किसान या ग्रामीण लाभाथी अपने मोबाइल में लॉगिन, रजिस्ट्रेशन या ज्ञल्ब सही से नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें डिजिटल प्रक्रिया की तकनीकी समझ नहीं है।

निजता और नैतिकता - कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तब काम करती है जब उसे बड़े पैमाने पर डेटा मिलता है जैसे -बातचीत, आवाज़, टेक्स्ट, फोटो, स्थान (Location) जैसी जानकारी। जब हिंदी भाषी लोग AI टूल्स, चैटबॉट्स या वॉयस असिस्टेंट का इस्तेमाल करते हैं, तो उनका निजी डेटा (जैसे बोली जाने वाली भाषा, सवाल-जवाब, व्यक्तिगत जानकारी) सिस्टम में दर्ज होता है। तब निजता का प्रश्न उपस्थित होता है। क्या यह डेटा सुरक्षित है? क्या यूज़र को पता है कि उसका डेटा कहाँ, किसके पास और किस उद्देश्य से जाएगा? नैतिकता का प्रश्न है। क्या AI हिंदी में इसका सही, निष्पक्ष और जिम्मेदार उत्तर दे रहा है? कहीं वह भ्रामक या आपत्तिजनक कंटेंट तो नहीं फैला रहा? अतरू हिंदी भाषा के विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की निम्नाकिंत चुनौतियाँ दिखाई देती है :

1. हिंदी में ओपन-सोर्स भाषा संसाधन सीमित हैं।
2. स्टार्टअप और शोध संस्थान अक्सर फंडिंग और दिशा निर्देशों की कमी से जूझते हैं।
3. निजता, डेटा सुरक्षा, कंटेंट मॉडरेशन के लिए मजबूत हिंदी-केंद्रित नियम नहीं हैं।
4. हिंदी क्षेत्रीय बोलियों को नीति निर्धारण में पर्याप्त महत्व नहीं मिलता।

हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य- कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक ने मानव जीवन को सरल और कुशल बनाया है, वैसे ही भाषाओं के डिजिटल स्वरूप और उनके संरक्षण को भी नई दिशा दी है। आज अंग्रेज़ी समेत कुछ वैश्विक भाषाएँ इस तकनीकी क्रांति से पूरी तरह लाभान्वित हो चुकी हैं, लेकिन हिंदी जैसी विशाल जनसंख्या वाली भाषा के सामने आज भी कई अवसर और चुनौतियाँ समान रूप से खड़े हैं। भारत में करोड़ों लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि भविष्य में हिंदी भाषा को भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ जोड़कर नई ऊँचाइयों पर ले जाया जाए। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी को न केवल तकनीकी रूप से सक्षम बनाएगी बल्कि क्षेत्रीय बोलियों, साहित्य, शिक्षा और प्रशासन में भी हिंदी भाषा के उपयोग को सरल और सुलभ बना सकेगी। हालाँकि इसके लिए ओपन सोर्स परियोजनाओं का विकास, डेटा सुरक्षा, नैतिक दिशा-निर्देश और डिजिटल साक्षरता जैसी अनेक बातों पर एकजुट प्रयास करने की आवश्यकता

है। जो इस प्रकार हैं -

खुले स्रोत (Open Source) की आवश्यकता - खुले स्रोत यानी ओपन सोर्स में कोई भी सॉफ़्टवेयर, डेटा, मॉडल, टूल आदि सार्वजनिक रूप से निःशुल्क उपलब्ध कराए जाए हैं। जैसे GitHub पर कोई कोड सबके लिए खुला होना चाहिए। कोई भी उसे डाउनलोड कर सकता है, पढ़ सकता है, बदल सकता है, और अपनी ज़रूरत के अनुसार बेहतर बना सकता है। अंग्रेज़ी जैसी वैश्विक भाषाओं में पहले से बड़े-बड़े डेटा सेट, भाषा संसाधन, छस्च् टूल्स, वॉयस मॉडल और लाइब्रेरीज़ मुफ्त या व्यवसायिक रूप से उपलब्ध हैं। हिंदी के लिए ऐसे व्यापकस्तर पर काम बहुत कम हुआ है। नई तकनीक बनाने में अगर हर संस्थान या डेवलपर को शून्य से शुरू करना पड़े तो समय, पैसा और संसाधन अधिक लगेंगे। लेकिन ओपन सोर्स के माध्यम से इसे आसान और सस्ता बना सकते है। पहले से ही तैयार कोड, मॉडल और डेटा को लेकर कोई भी उपभोक्ता अपनी ज़रूरत के हिसाब से काम कर सकता है। ओपन सोर्स का उपयोग करनेवाले भारतीय भाषा समाज को निश्चितही इसका लाभ होगा। जिसके लिए—

नवाचार (Innovation)- छात्र, शोधकर्ता, स्टार्टअप्स नए हिंदी एप्लिकेशन आसानी से बना सकते हैं। जैसे हिंदी में चैटबॉट्स, वॉयस असिस्टेंट्स, अनुवाद टूल्स आदि। कोई भी छात्र हिंदी वॉयस असिस्टेंट में नई डायलॉग स्क्रिप्ट जोड़ दे, कोई शोधकर्ता नई शब्दावली का डेटाबेस जोड़ दे। इस तरह नवाचार से सामूहिक विकास तेज़ हो सकता है।

स्थानीय अनुकूलन (Localization) - हिंदी बोलियों जैसे भोजपुरी, अवधी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी आदि में उच्चारण, शब्दावली अलग-अलग होती है। ओपन सोर्स मॉडल्स में इन्हें आसानी से जोड़ा जा सकता है। इससे प्रत्येक क्षेत्र के लिए स्थानीय भाषा संसाधन तैयार होंगे। गाँव, कस्बा, शहर सब जगह तकनीक उपयोगी होगी।

संस्कृति और साहित्य संरक्षण- पुरानी हिंदी किताबें, पांडुलिपियाँ, साहित्य को OCR और NLP टूल्स से डिजिटाइज किया जा सकता है। स्थानीय लोकगीत, लोककथाएँ, बोलियाँ डिजिटल रिकॉर्ड में रखी जा सकती हैं। जिससे भाषाई विविधता सुरक्षित रहेगी और नई पीढ़ी को इसका निश्चित ही लाभ मिलेगा।

शिक्षा और रोजगार- ओपन सोर्स कोड और डेटा से छात्र सॉफ्टवेयर बनाना सीख सकते हैं, प्रयोग कर सकते हैं।

बिना महंगे पेटेंट या लाइसेंस फीस के नई अनुसंधान संभव हैं। हिंदी कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोजेक्ट्स में युवाओं के लिए रोजगार और इंटर्नशिप के अवसर निर्माण होंगे।

डेटा सुरक्षा और नैतिक AI नीति- स्थानीय भाषा में नीति नियम की आवश्यकता है जिससे Terms & Conditions और Privacy Policies हिंदी में भी हों। ताकि सामान्य उपभोकर्ता समझ सकें कि उनका डेटा कहाँ और कैसे उपयोग होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स को हिंदी बोलियों का सम्मान करना होगा। किसी भी भाषा या समुदाय को नुकसान न पहुँचे इसके लिए नैतिक दिशा-निर्देश नियमानुकूल होने चाहिए। नीति में साफ़ प्रावधान हों कि हिंदी की प्रमुख बोलियों के लिए अलग-अलग डेटा सेट और मॉडल तैयार किए जाएँ।

क्षेत्रीय संस्थानों की भूमिका : क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों, भाषा संस्थानों को भाषा संरक्षण और रिसर्च के लिए सरकारी अनुदान मिले। क्षेत्रीयस्तर पर टीमें स्थानीय डेटा इकट्ठा करें, टूल्स बनाएं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम : स्कूल-कॉलेजों में हिंदी छस्च्, AI ट्रांसलेशन, डेटा एनोटेशन, वॉयस प्रोसेसिंग जैसे कोर्स शुरू हों। छात्र ओपन सोर्स प्रोजेक्ट्स पर हाथ आज़मा सकें। निजी कंपनियाँ, स्टार्टअप और सरकारी संस्थाएँ मिलकर (स्किल डेवलपमेंट और PPP मॉडल) संसाधन, इन्फ्रास्ट्रक्चर और फंडिंग उपलब्ध कराएँ। IITs, भाषा संस्थान और लोकल स्टार्टअप मिलकर ओपन सोर्स हिंदी मॉड्यूल्स विकसित करें। जैसे हिंदी OCR लाइब्रेरी, हिंदी वॉयस मॉडल, हिंदी चैटबॉट टेम्प्लेट।

जागरूकता और डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता : भारत में करोड़ों लोग स्मार्टफोन तो इस्तेमाल करते हैं, लेकिन AI, बैंजइवज, छस्च् जैसे शब्दों से अबतक अनजान हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी झूठी अफवाहें, कममच ांमि वीडियो और गलत जानकारी समाज में भ्रम पैदा कर सकती हैं। इसलिए लोगों को सरल हिंदी में समझाना जरूरी है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता कैसे काम करती है, इसका कैसे फायदा होगा और किन चीजों से हमें सावधान रहना है।

तकनीक को अपनाने में मदद : जब लोग समझेंगे कि हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता उनके लिए आसान है तो वे इसका उपयोग शिक्षा, व्यवसाय, रोज़मर्रा के काम में करेंगे। देश के गाँव-कस्बों के लोग भी डिजिटल टूल्स से जुड़ेंगे। इससे डिजिटल अंतर घटेगा। कहा जा सकता है कि खुले स्रोत हिंदी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य हैं। यह विकास, नवाचार, शिक्षा, रोजगार, संस्कृति संरक्षण के साथ ही मानव जीवन से जुडे हर क्षेत्र में काम आएगा। डेटा सुरक्षा, नैतिक दिशा-निर्देश, प्रशिक्षण, जनजागरण और सरकारी-निजी सहयोग ये सब मिलकर हिंदी भाषा को डिजिटल युग में सशक्त बना सकते हैं।

निष्कर्ष - शोधालेख से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अंतर्संबंध भारत जैसे बहुभाषी देश में अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी भाषा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास से भाषाई समावेशिता, शिक्षा-शोध और रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। यह डिजिटल खाई को पाटने, ग्रामीण क्षेत्रों तक तकनीकी ज्ञान पहुँचाने और सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देने में सहायक सिद्ध हो सकती है। हालाँकि इसके मार्ग में भाषा संसाधनों की कमी, बोलियों की विविधता, तकनीकी दक्षता का अभाव तथा डेटा सुरक्षा व नैतिकता से जुड़ी अनेक चुनौतियाँ भी हैं, जिन्हें दूर करना आवश्यक है। फिर भी ओपन सोर्स परियोजनाएँ, लोकल डेटा, नीति-निर्माण, प्रशिक्षण कार्यक्रम और डिजिटल जागरूकता इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं। अंततः कहा जा सकता है कि यदि हिंदी भाषा के लिए ओपन-सोर्स संसाधनों को विकसित कर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक को लोकतांत्रिक, सुलभ और सुरक्षित बनाया जाए तो हिंदी भाषा न केवल डिजिटल भारत की रीढ़ बनेगी बल्कि भाषा, संस्कृति और तकनीकी विकास का एक सशक्त माध्यम के रूप में भी सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भाषा AI योजना (BHASHINI) से संबंधित दस्तावेज़ एवं नीति-पत्र।
   URL: https://www.meity,gov,in
2. NPTEL एवं DIKSHA पोर्टल हिंदी माध्यम में AI आधारित डिजिटल शिक्षा संसाधन।
   URL: https://diksha.gov.in/ | https://nptel.ac.in/
3. IIT मद्रास भारतीय भाषा AI अनुसंधान परियोजनाएँ URL: https://www.iitm.ac.in@/
4. Google AI Blogs & Reports हिंदी NLP, ट्रांसलेशन टूल्स और वॉयस असिस्टेंट्स से संबंधित आँकड़े।
   URL: https://ai-googleblog.com/
5. Vernacular.AI भारतीय बहुभाषी AI स्टार्टअप की वेबसाइट और केस स्टडी रिपोर्ट्स।
   URL: https://www.verloop.io/
6. Koo App भारतीय भाषाओं में सोशल मीडिया के लिए केस स्टडी। URL: https://www.kooapp.com/
7. Google Books & Project Madad हिंदी ग्रंथों का डिजिटलीकरण। URL: https://books.google.co.in/ | https://www.projectmadad.org/
8. भाषा प्रौद्योगिकी और NLP शोध-पत्र Singh, A. K. & Jain, A. (2020)- Challenges and Opportunities in Indian Language NLP- Journal of Language Technology-
9. संसाधन: Open Source Platforms GitHub Repositories on Hindi NLP] OCR and Speech Recognition Projects-
   URL: https://github.com/
10. डिजिटल इंडिया कार्यक्रम डिजिटल समावेशन और AI से जुड़े शासकीय रिपोर्ट्स।
    URL: https://www.digitalindia.gov.in/

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में कोचिंग का प्रभाव

अनिता शर्मा
शोधकर्त्री
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ

सारांश :- उच्च माध्यमिक शिक्षा आमतौर पर माध्यमिक शिक्षा के बाद प्रारम्भ होती हैं। इसके बाद व्यवसायिक शिक्षा, रोजगार शिक्षा या उच्च शिक्षा होती हैं। उच्च माध्यमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों के नैतिक, शारीरिक, मानसिक विकास में सहायता करना हैं ताकि वे संतुलित और शिक्षित व्यक्ति और समाज के आदर्श सदस्य बन सके तथा आगे की पढ़ाई, रोजगार, मनोरंजक गतिविधियों और सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान कर सकें।

उच्च माध्यमिक शिक्षा छात्रों के विषय विकल्प, प्रगति व उनके अध्ययन समूहो को निर्धारित करती है। वैश्वीकरण की इस दुनिया में व्यक्तियों की आवश्यकतायें दिनोदिन बढती ही जा रही हैं। इन सब को देखकर युवा पीढी की महत्वकांक्षायें व इच्छाऐं भी बढती जा रही हैं। जिसका प्रभाव उनकी योग्यताओं और क्षमताओं पर पड़ता हैं। छात्रों को अपने कैरियर के लिए दिशा-निर्देश, विषय वस्तु के गहन अध्ययन के लिए कोचिंग जाना ही पड़ता हैं। कोचिंग में कुछ ही छात्र लाभान्वित होते हैं। 2023 के दैनिक भास्कर में एक लेख था कि छात्रों की मेंटल हेल्थ को लेकर गम्भीर कोशिश करनी होगी। शिक्षा व्यवस्था को मजबूत व मानवीय बनाने से ही बच्चों की आत्महत्याएँ रूक सकेगी।

प्रस्तावना :- परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं और परिवर्तन की प्रक्रिया स्वाभाविक हैं। 21वीं शताब्दी के युग में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक व व्यवसायिक जगत में भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में हो रहे हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव समाज की हर पीढ़ी पर पड़ रहा हैं चाहे वो बालक, जवान व वृद्ध हो।

परिवर्तन की प्रकृति के कारण आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति की इच्छाऐं व आकांक्षाऐं दिनोदिन बढ़ती जा रही हैं। आधुनिकरण के इस युग में महत्वाकांक्षाओं के बढ़ने के कारण विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति समाज व पारिवारिक वातावरण सब प्रभावित हो रहे हैं। परिवर्तन के इस युग में पढाई का स्टैण्र्ड बढता जा रहा हैं। पढाई के बढते स्टैण्र्ड कारण के विद्यार्थियों व उनके माता-पिता का रूझान कोचिंग की तरफ ज्यादा हो रहा हैं कि उनका बच्चा सबसे टॉप पर आवे व अच्छी रैंक लेकर सफल हो। अतः वे पूर्ण रूप से कोचिंग पर ही निर्भर होते जा रहे हैं।

उच्च माध्यमिक शिक्षा माध्यमिक शिक्षा पूर्ण होने के बाद प्रारम्भ होती हैं। इसके बाद व्यावसायिक उच्च शिक्षा शुरू होती हैं। उच्च माध्यमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में नैतिक विकास करना हैं ताकि वे सन्तुलित और शिक्षित व्यक्ति और समाज के आदर्श सदस्य बन सके।

भारत में बढ़ती दुनिया के साथ-साथ उच्च माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों का जीवन जीने का तरीका भी बदलता जा रहा हैं। वैश्वीकरण की इस दुनिया में समाज की आवश्यकताये बढती जा रही हैं। इन सब को देखकर युवा पीढी की

महत्वकाक्षाये व इच्छाऐं भी बढती जा रही हैं। इसका सीधा प्रभाव उनकी योग्यताओं एवं क्षमताओं पर पड़ रहा हैं। एक दूसरे विद्यार्थी से आगे निकलने की होड हो रही हैं। जिसके कारण बालक के व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ रहा हैं। बालक के माता-पिता भी इस बात को लेकर परेशान रहते हैं कि किसी भी तरह से उनका बच्चा अच्छी रैंक लाये और कक्षा में अव्व्ल रहे। इसके लिए माता-पिता कोचिंग में दाखिला दिला देते हैं। कोचिंग में भेजना आज के युग में एक फैंशन सा हो गया हैं और एक अच्छे पैसे वाले परिवार का सिम्बल बनता जा रहा हैं। और वो बच्चें को स्कूल में भेजने के बजाय छोटी कक्षाओं में ही कोचिंग में दाखिला दिला देते हैं। चाहे वह कक्षा छः से ही क्यों ना हो और माता-पिता बच्चों को कोचिंग भेजकर निश्चिन्त हो जाते हैं चाहें बच्चें को कोचिंग में कछ समझ में आये या ना आये।

अगर विद्यार्थी का स्वास्थ्य खराब हो जाता तो पढाई में पीछे रह जाता हैं और वो अपना अध्ययन पूर्ण नहीं कर पाता फलस्वरूप वह मानसिक रूप से परेशान हो जाता हैं। आज के युग मे माता-पिता तो कोचिंग में भेजकर इतना निश्चिन्त हो जाते हैं कि वह बच्चों को पूछते तक नहीं हैं कि उनकी पढाई ठीक चल रही हैं या नहीं किसी प्रकार की कोई परेशानी तो नहीं हो रही हैं।

राष्ट्रीय सांख्यिकीय संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में पाँच में से एक छात्र निजी कोचिंग के साथ स्कूली शिक्षा को पूर्ण करता हैं। एक समय था जब पढाई में कमजोर छात्रों के लिए ही कोचिंग जरूरी था,परन्तु इन दिनों कोचिंग में भेजना एक चलन सा बनता जा रहा हैं। कोचिंग नहीं करने वाले विद्यार्थियों को कमजोर, औसत या प्रतिभाविहीन मान दिया जाता हैं। प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता प्राप्त विद्यार्थी मे नैतिकता, सामाजिकता संवेगात्मकता आदि गुणों एवं मूल्यों की सर्वथा उपेक्षा झलकती हैं।

कोचिंग कक्षाओं के प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के होते हैं। इतने विद्यार्थियों में मुश्किल से 5 से 10 प्रतिशत विद्यार्थी ही अपने लक्ष्य में सफल हो पाते हैं। औपचारिक शिक्षा प्रणाली और छात्रों के कल्याण पर कोचिंग सेन्टरों का बहुत प्रभाव पड़ा हैं। कोचिंग सेन्टरों के कारण छात्र विद्यालयों में प्रवेश केवल उपस्थिति दर्ज कराने के लिए ही लेते हैं और वो कोचिंग सेन्टरों में अध्ययन कार्य करते हैं। छात्र स्कूली शिक्षा की तुलना में कोचिंग कक्षाओं को प्राथमिकता देते हैं। जिससे एक समग्र स्कूली गतिविधियों व शैक्षिक अनुभव प्रदान करने में औपचारिक शिक्षा का महत्व कम हो जाता हैं। कोचिंग सेन्टरों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में कड़ी प्रतिस्पर्धा और लम्बे समय तक पढाई करने से छात्रों में चिन्ता, तनाव, अवसाद और आपसी ईर्ष्या की समस्या पैदा होती हैं। बच्चें पढाई में इतने विलीन हो जाते हैं कि उनको अपने स्वास्थय के प्रति कोई चिन्ता नहीं रहती हैं वे ना तो समय पर खाते हैं और ना ही समय पर सोते हैं। वे अपने शिक्षण कक्ष व कोचिंग तक ही सीमित रह जाते हैं। परिणामस्वरूप कुछ बच्चें सफल हो जाते हैं और कुछ बच्चें किसी कारणवश पढाई समझ में न आने के कारण असफल हो जाते हैं और वे अपनी जीवनलीला ही समाप्त कर लेते हैं। कुछ बच्चें अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं जो समाज में आँखे मिलाना भी नहीं चाहते हैं और अकेला रहना पसन्द करने लगते हैं।

कोटा में छात्रों की आत्महत्या की खबरे दूसरे-तीसरे दिन आती रहती हैं। बच्चे मानसिक रूप से इतने डिस्टर्ब हो जाते हैं कि वे अन्य गम्भीर बिमारियों से ग्रसित होने लगे हैं। एक शोध में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में 32 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र में 28 प्रतिशत प्रीहाईपरटेशन और हाईबीपी की चपेट में आ रहे हैं। इसका कारण पढाई का प्रेशर और खेल के मैदान की दूरी हैं जो विद्यार्थी सफल होकर एमबीबीएस कर रहे पाँच प्रतिशत छात्र भी हाईपरटेशन से शिकार हैं। ऐसी ही एक आईआईटी खडगपुर में बीटेक कर रहा छात्र 6 मई 2025 को अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। इस प्रकार छात्र मानसिक तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। वो अपने लक्ष्य को तो पाने में सफल हो गये लेकिन समाज में समायोजित नहीं हो पाये या समायोजन करने में सफल नहीं हो सके।

हाल ही में 30 अप्रेल 2025 को एक बालक जो 20 दिन पहले ही कोटा में नीट की कोचिंग के लिए गया था उसने आत्महत्या कर ली। इसी तरह 5 मई 2025 को एक विद्यार्थी ने अपने सुसाईड नोट में लिखा ''नीट परीक्षा सही नही गयी अब मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा। बालक जानता हैं कि उसके परिवारवालों ने कहाँ-कहाँ से कर्जा लेकर कोचिंग में भेजा हैं

और अगर वो सफल नहीं होगा तो क्या करेंगे यह समझ बच्चें को गलत कदम उठाने के लिए बढाता हैं और वो गलत फैसला कर बैठते हैं। इस प्रकार माता-पिता कर्ज के निचे भी दब जाते हैं और बच्चा भी खो बैठते हैं। बच्चें शहर में रहकर कोचिंग लेते हैं तो वह अपने परिवार से दूर रहते हैं उनको वहाँ कोई समझाने वाला, प्रेम करने वाला, समस्या को समझाने वाला कोई भी नहीं होता हैं और वे सही निर्णय नहीं कर पाते हैं कि अगर हम सफल नहीं हो पाये तो मेरे माता-पिता के सपने खत्म हो जायेगे जो उन्होंने अपने बच्चें के लिए देखे थे। इस प्रकार वो दिन-प्रतिदिन परेशान ही रहते हैं।

विद्यार्थी जो सफल हो गये वो समाज में अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते हैं। और ना ही अपनी संस्कृति, आदर्शो, मूल्यों, संस्कारों के बारे में जान पाते हैं क्योकि जिस समय ये सिखाये जाते हैं तब तो उनके कोचिंग में दाखिला करवा दिया जाता हैं। एक शोध से पता चला हैं कि भारत में कोचिंग उधोग लगभग 58000 करोड का बाजार बना चुका हैं और यह बाजार औपचारिक शिक्षा की गुणवता पर बहुत बुरा प्रभाव डालता हैं।

छोटी कक्षा में ही जैसे - पाँचवीं कक्षा में प्रवेश लेने के कारण छात्र की कला, खेल, शारीरिक व्यायाम आदि गतिविधियाँ छूट जाती हैं क्योकिं छात्र कोचिंग कक्षाओं में अधिक समय लगाया करते हैं IIT, NEET Clat आदि की कोचिंग करने वाले विद्यार्थी तो पारिवारिक, धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों में भाग ही नहीं ले पाते हैं क्योकि वे महगें कोचिंग सेन्टरों में अध्ययन करते हैं। अगर वो इन कार्यक्रमों में भाग लेगे तो वे कोचिंग में पीछे रह जायेगे। फिर उन्हें वह टॉपिक समझ नहीं आयेगा इस डर से वो चाहे बिमार हो या कोई भी कारण हो वो कोचिंग से अनुपस्थित नहीं रह पाते हैं। इस प्रकार विद्यार्थी अपने कमरे से कोचिंग सेन्टर तक ही सीमित होकर रह जाते हैं। इस प्रकार बच्चा पढते-पढते मानसिक तनाव व दूश्चिन्ता का शिकार हो जाता हैं और अपना आत्मविश्वास खो बैठता हैं।

कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को समय-समय पर बच्चें को प्रेरणा देनी चाहिये व परिवार वालो को अपने बच्चें की अधिक्षमता को समझना आवश्यक हैं। दुनिया में कोचिंग कराने की भेडचाल से अपने बच्चों को सुरक्षित रखे व समय-समय पर बच्चों को समझाते रहना चाहिये। किसी ने कहा हैं कि कभी हार मत मानो क्या पता कामयाबी आपकी और कोशिश का इंतजार कर रही हो सबसे बडी सम्पति हमारा दिमाग हैं इसलिए हमेशा सकारात्मक रखना चाहिये और इससे स्वस्थ रहना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- 2010, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा विश्वकोश तृतीय संस्करण से ई तुओविने
- WWW. academia. edu.
- WWW. Google.com
- WWW.hindi saamana.com
- WWW. Times of India

प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' में निहित नारी-अस्मिता और उसकी संघर्ष की वास्तविक झलक

शशि नाथ प्रसाद
(पीएच०डी०, शोधार्थी)
हिन्दी विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार।
E mail- Id - snp27crj@gmail.com
Mobile-No- 8250586443, 8653575675

शोध- सारांश - नारी अपनी अस्तित्व की खातिर जीवनपर्यंत जिन संघर्षों का सामना करती है, और अंत में अपने लक्ष्य की प्राप्ति करती, इसका जीवंत चित्रण हमें प्रभा खेतान कृत उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में देखने को मिलता है। प्रभा खेतान का जन्म कोलकाता के टालीगंज में, 1 नवंबर 1942 में हुआ। उनका परिवार एक समृद्ध और संपन्न मारवाड़ी परिवार था। जो कि राजस्थान के मूल निवासी थे। व्यापार के सिलसिले में उनका परिवार राजस्थान से पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में आकर बस गए, और यही के होकर रह गए। प्रभाजी का पालन- पोषण और शिक्षा-दीक्षा, सभी कोलकाता शहर में ही सम्पन्न हुआ। हिन्दी साहित्य में अपने अतुलनीय योगदान और सामाजिक कार्यों की वजह से प्रभा जी एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कहानीकार, कवयित्री के साथ-साथ समाज-सेविका तथा नारीवादी-चिंतक आदि बहुमुखी प्रतिभा के रूप में जानी जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने उपन्यास की मुख्य पात्र प्रिया के माध्यम से नारी अस्मिता और उसके जीवन पर्यन्त चलनेवाले संघर्ष को उकेरने का सफल प्रयास किया है।

मूलशब्द- छिन्नमस्तिके, स्त्रीवादी, पितृसत्तात्मक-समाज, अस्तित्व, यौन-संबंध, विवाह-विच्छेद, दीवानगी, महात्वाकांक्षी, बिजनेस, ईर्ष्यालु आदि।

मुख्य आलेख - प्रभा खेतान कृत छिन्नमस्ता उपन्यास में छिन्नमस्ता क्या है, और इसका वास्तविक अर्थ क्या है? छिन्नमस्ता का तात्पर्य क्या है? इस प्रकार के प्रश्न उठना स्वाभाविक है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार 'छिन्नमस्ता', देवी 'मां काली' का ही दूसरा रूप है। ऐसा माना जाता है कि मां छिन्नमस्ता जीवनदायिनी और जीवनहरने वाली दोनों ही शक्तियों की प्रतीक है। इन्हें कहीं-कहीं छिन्नमस्तिके माता के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि इनकी पूजा अर्चना करने से सारी चिंता- व्यथाएं आदि दूर हो जाती हैं, अतः इन्हें चिंतपूरणी मां भी कहा जाता हैं। इनके एक हाथ में अपना ही कटा हुआ सर और दूसरे हाथ में खड़ग होने के कारण प्रचंड चंडिका मां नाम से भी विख्यात है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने नारी अस्मिता और उसके जीवन-संघर्ष का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। उपन्यास में लेखिका ने स्त्रीवादी दृष्टिकोण के माध्यम से दांपत्य जीवन के उतार-चढ़ाव को बहुत सुंदर ढंग से उकेरा है जैसे-पति-पत्नी में मतभेद, आपसी क्लेश, असंतोष की भावना तथा एक दूसरे के साथ झगड़ा आदि। किसी भी दांपत्य जीवन में उसके विवाह-विच्छेद का सबसे मुख्य कारण क्या होता है विवाहेतर यौन- संबंध? इस प्रकार के संदर्भों का उल्लेख उपन्यास में आम है।

जैसे असीम और प्रिया का संबंध, प्रिया के ससुर और उसके रखैल का प्रसंग आदि।

प्रस्तुत उपन्यास की मुख्य पात्र प्रिया, जिसके इर्द-गिर्द संपूर्ण उपन्यास की कथा घूमती रहती है। आरंभ में पाठकों ने इसे प्रभा खेतान की आत्मकथा घोषित कर दिया था, परंतु बाद में इस गलत भ्रांति का खंडन किया गया और इसे एक उपन्यास के रूप में स्वीकारा। उपन्यास के मुख्य पात्र प्रिया जिसका मायका और ससुराल दोनों ही धन दौलत, संपन्न समृद्ध और रईसों से भरा हुआ उच्च वर्गीय मारवाड़ी परिवार है। फिर भी प्रिया का जीवन यातना, कठिनाई और संघर्षों से भरा हुआ है। प्रिया अपनी आत्म-सम्मान और अस्तित्व को लेकर काफी चिंतित रहती है। वह अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए अनवरत संघर्ष करती रहती है। जिसमें हमें कुछ हद तक लेखिका के संघर्षमय जीवन से लेकर सफल होने तक के सफर की वास्तविक चित्र परिलक्षित होती है। प्रिया आर्थिक रूप से संपन्न होने के बावजूद भी अपने अस्तित्व के लिए व्यवसाय जगत की दुनिया से जुड़ती है। लेखिका ने भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की क्या स्थिति है, उसका कच्चा चिट्ठा खोल कर रख दिया है। जिसकी जीती जागती उदाहरण प्रिया स्वयं है। जिसका ससुराल और मायका आर्थिक रूप से संपन्न होते हुए भी मानवीय मूल्यों की दृष्टि से कंगाल है। प्रिया के पास सब कुछ होते हुए भी वह स्वयं को हमेशा अकेला पाती हैं। दिखावटी प्यार उसे ससुराल और मायका दोनों जगह मिलता है लेकिन वह सच्चे प्रेम के लिए जीवन भर तरसती रहती है।

राजेंद्र यादव ने पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री के प्रति पुरुषों की क्या मानसिकता है, इसे अपने एक साक्षात्कार में व्यक्त किया ष्जब तक वह (स्त्री) मेरी संपत्ति है, तभी तक वह मेरी प्रिय है, जैसे ही वह मुझसे छूटकर स्वतंत्र होकर खड़ी होती है, वह मेरी सत्ता को चुनौती देती है। मेरी सत्ता से छुटी स्त्री मेरे लिए चुनौती है, दुश्मन है।"[1] प्रिया का पति नरेंद्र भी इसी मानसिकता का शिकार है। यह समाज की कितनी निचली स्तर की विचारधारा है, कि जहां पुरुष, स्त्री को अपनी संपत्ति या अपने सुख की वस्तु मात्र समझता है। पुरुष जाति को स्त्री की ना ही सुख की कोई परवाह है और ना ही उसकी भावनाओं की कोई कद्र। नरेंद्र अपनी पत्नी को केवल शौक पूर्ति हेतु मात्र एक वस्तु की भांति इस्तेमाल करता है। वह अपनी शान-शौकत और सोसाइटी में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए प्रिया को आभूषणों से सजाकर, एक दिखावटी गुड़िया बनाकर समारोहों में लेकर जाता है। अतः वास्तव में प्रिया केवल मात्र नरेंद्र के लिए शान-शौकत बढ़ाने वाली और शारीरिक सुख देने वाली एक वस्तु के अलावा और कुछ नहीं। प्रिया कोई निजीव वस्तु या गुड़िया नहीं, उसके भी कुछ सपने हैं, अपनी ख्वाहिशें हैं परंतु इसकी परवाह किसको है?

प्रिया एक स्वतंत्र ख्यालों वाली महिला है। वह अपने दुखों से दुखी ना होकर बल्कि अपने अस्तित्व को बचाए रखने हेतु संघर्ष का रास्ता चुनती है। उसे चुनौतियों को मुंहतोड़ जवाब देना पसंद है। व्यावसायिक परिवार से होने के कारण व्यापार उसके रगों में दौड़ रही है। अतः वह व्यापार करने का रास्ता चुनती है। वह लेदर एक्सपोर्ट करने का बिजनेस प्रारंभ करती है। इस सिलसिले में उसे कई बार विदेश की भी यात्रा करनी पड़ती है। अंततः वह स्वयं को एक बिजनेसवुमैन के रूप में स्थापित करने में सफल होती है। प्रिया के पति नरेंद्र को उसकी सफलता हजम नहीं होती। वह रात दिन प्रिया से जलता रहता है, इस संदर्भ में प्रिया कहती है-"क्या महत्वाकांक्षी होना अपराध है? क्या तुम रुपया नहीं कमाते हैं।"[2] नरेंद्र का ईर्ष्यालु स्वभाव ही कुछ हद तक प्रिया को महत्वाकांक्षी बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

प्रिया नहीं किसी प्रकार की गुलामी बर्दाश्त करती है और ना ही किसी दबाव को सहन करती है। वह स्त्री मुक्ति के लिए समाज की घिसी-पीटी परंपराओं के खिलाफ आवाज उठाते हुए कहती है—''अम्मा! तुम्हारे जैसी, जीजी लोगों जैसी, जिंदगी मै नहीं स्वीकारना चाहती। मैं भी भाभी जी की तरह घुट घुट कर नहीं मरना चाहती।[3] प्रस्तुत पंक्तियों में प्रिया का विद्रोहीणी स्वरूप प्रलक्षित होता है। यह दर्शाता है कि- प्रिया समाज के ढाकोसली परंपराओं को न मानकर खुले गगन में उन्मुक्त पंछियों की भांति ऊंची उड़ान भरने की हौसला रखती है। वह मन ही मन कहती है—''मेरे साथ मेरा अकेलापन है पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ समझा रहा है जैसे मैंने अपने आप को बचाया है अपने मूल्यों को जीवन में समझाया है हां टूटी हूं बार-बार टूटी हूं पर कहीं तो चोट के निशान नहीं दुनिया के पैरों तले रौंदी गई पर मैं मिट्टी के लौंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई हूं।"[4]

लेखिका ने प्रिया की जीवन पर्यंत चलने वाली संघर्ष के माध्यम से एक स्त्री और औरत के मध्य के अंतर को बहुत

ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है। प्रिया कहती है-"मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि मुझे लड़की ही बने रहना है, औरत नहीं बनना।"[5] स्त्री और औरत के बीच का यह अंतर गुलामी और आजादी की जिंदगी जीने के मायने को दर्शाता है। प्रिया के दिल और दिमाग में बचपन से ही पुरुषों के प्रति घृणा की भावना घर कर गई थी। इसका मुख्य कारण बचपन में उसके साथ हुई शारीरिक हिंसा की घटना जिसे कोई और नहीं बल्कि उसके ही बड़े भाई ने अंजाम दिया था। प्रिया को पैसों का कोई लोभ नहीं। वह समाज में केवल अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए काम करती हैं। परंतु नरेंद्र को उसका काम करना पसंद नहीं जिस कारण दोनों आपस में झगड़ते हैं। दोनों आपस में झगड़ते हुए, तर्क करते हैं–''नरेंद्र! मैं पैसों के लिए काम नहीं कर रही।

फिर किस लिए काम कर रही हो? सुबह से रात तक फिरकी की तरह नाचती हो किस लिए? हां, बोलो जवाब दो?

अपनी आइडेंटिटी, व्यक्तित्व के विकास के लिए।"[6]

लेखिका ने प्रिया के माध्यम से संपूर्ण स्त्री-वर्ग को स्वतंत्र, स्वालंबी और सम्मान के साथ जीने हेतु प्रोत्साहित किया है। लेखिका ने उपन्यास में कई घटनाओं का उल्लेख किया है, जिससे यह पता चलता है कि एक महिला किस प्रकार की शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं को झेलती है। प्रिया की यह पंक्तियां इसे प्रमाणित करती है-"मुझे प्रेम, सेक्स, विवाह यह सारे सदियों पुराने घिसे हुए शब्द लगने लगे थे। नहीं, शब्द नहीं, मांस के ताजा टुकड़े, लहू टपकते हुए। इन शब्दों के पीछे की दीवानगी और आदिकाल से चली आ रही परंपराओं का चेहरा सिर्फ औरतों के आंसुओं से तरबतर है।"[7] पारिवारिक क्लेश नोक जोक झगड़ा आदि से तंग आकर प्रिया अकेले रहने का फैसला करती है। प्रिया अपना घर त्याग कर अपने ससुर के दूसरी पत्नी तिलोत्तमा और उसके पुत्री नीना के साथ रहती है।नरेंद्र तिलोत्तमा और नीना से इतनी नफरत करता है कि वह उनकी शक्ल तक नहीं देखना चाहता। परंतु प्रिया को इसकी कोई परवाह नहीं वह सारी उम्र बिना पुरुष के रह सकती है। इस संदर्भ में प्रिया कहती है-"मेरा काम जिसमें मुझे सृजन और अभिव्यक्ति का सुख मिलता है। मेरा सबसे बड़ा आलंबन है। यही वह एक बालिश्त जमीन है जिसमें मैंने कभी एक मुट्ठी भर बीज रोते थे। यह पौधा छोटा ही सही, पर इसे मैंने सींचा है। और मेरे सामने नीना है, मेरी अगली पीढ़ी मुझसे ज्यादा सशक्त, ज्यादा ईमानदार, मैं चाहती हूं कि अब नीना इस काम को संभाले।"[8]

यदि कोई स्त्री या पुरुष अकेले जीवन निर्वाह करता है तो यह उसका व्यक्तिगत फैसला हो सकता है परंतु एक पहिए वाला वाहन लंबी दूरी तय नहीं कर सकता। वही दो-पहिया वाहन आसानी से कई मिलो की दूरी तय कर लेता है। प्रिया एक तरफ तो पुरुषों से नफरत करती है लेकिन दैहिक सुख हेतु पुरुष की कमी भी महसूस करती है। प्रस्तुत पंक्तियों में इसका उल्लेख मिलता है-"पुरुष भूमि है, आकाश है, हवा है, अग्नि है, जल है, लेकिन स्त्री बीज बनाकर धरती के नीचे दबना जानती है, वक्त आने पर अंकुरित होती है और फिर शाखा-प्रशाखाओं में फैलती हुई पूरा जंगल हो जाती है।... हर व्यक्ति अपने आप में इकाई अवश्य होता है, पर उसमें सच्चे और स्त्री और पुरुष वही हो पाते हैं, जो पुरुष प्रधान समाज की सीमाओं को पार करके अपने स्वभाव में स्त्री की करुणा को संचित कर पाते हैं, वे ही जीवन का सच्चा सृजन कर पाते हैं।''[9]

संपूर्ण उपन्यास के अध्ययन के पश्चात निष्कर्षतः हम पाते हैं कि, हमारे समाज में स्त्री वर्ग की स्थिति कुछ खास नहीं है। प्रायरू सभी स्त्रियां कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार से दमित, कुंठित और वंचित है। जिस तरह प्रिया बचपन से ही शोषण उत्पीड़ित और उपेक्षित रही है। उसे बचपन में ना हीं प्यार मिला और ना ही युवावस्था में परिवार से उचित सम्मान। उसका जीवन आरंभ से लेकर अंत तक संघर्षमय ही रहा। लेखिका के शब्दों में-"औरत के जीवन में जरा सा खुरचो दर्द पीड़ा और त्रासदी के बहते दरिया मिलेंगे।"[10]

प्रभा खेतान का मानना है कि स्त्री किसी पुरुष पर निर्भर न होकर स्वयं आत्मनिर्भर बने और समाज में सम्मान और गर्व के साथ अपनी एक अलग पहचान बनाएं। नारी रूप में जन्म लेना कोई अपराध नहीं बल्कि औरत बनकर यंत्रणाओं और पीड़ाओं को सहकार आंसू बहाना सबसे बड़ा पाप है सबसे बड़ा अपराध है। स्त्री विमर्श के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर चुकी रेखा कश्तवार के अनुसार-"स्त्री की चेतना जहां विकसित होने लगती है स्त्री की महत्वाकांक्षाएं अस्वीकार्य होने लगती है।

यदि स्त्री अपने व्यवसाय में व्यस्त है घर में समय नहीं दे पा रही, पति की दैहिक जरूरत को पूरा नहीं कर पा रही, तब बिजनेस का औचित्य परिवार नहीं समझता। अच्छी स्त्री की परंपरागत भूमिका से भिन्न छवि ना परिवार को स्वीकार्य है न ही समाज को। अपने लिए जगह बनाती स्त्री से व्यवस्था को भी खतरा है। इस 'घरफोड़' स्त्री से परिवार को बचाकर रखना चाहता है समाज।"[11] प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से एक स्त्री के संघर्ष से लेकर लक्ष्य को प्राप्त करने तक के सफ़र का बखूबी से चित्रण करने में सफल रही उपन्यासकार 'प्रभा खेतान'।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्त्री मुक्ति का सपना : प्रोफेसर कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००५, पृष्ठ संख्या-३१.
2. छिन्नमस्ता : प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९७, पृष्ठ संख्या-२६.
3. वही पृष्ठ संख्या-६१.
4. वही पृष्ठ संख्या-१७.
5. वही पृष्ठ संख्या-८५.
6. वही पृष्ठ संख्या- २१५.
7. वही पृष्ठ संख्या- २१६.
8. वही पृष्ठ संख्या- २१२.
9. वही पृष्ठ संख्या -२०७.
10. वही पृष्ठ संख्या- २११.
11. स्त्री चिंतन की चुनौतियां; रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६, पृष्ठ संख्या- १८

मुख्य संदर्भ-ग्रंथ - छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् १९९७।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Rural-Urban Disparities in Child Sex Ratio and Its Determinants in Haryana

Santosh Kumar
Research Scholar in Geography
Department of Social Sciences
Baba Mastnath University, Rohtak

Dr Satyaveer Yadav
Prof. of Geography
Department of Social Sciences
Baba Mastnath University, Rohtak

Abstract:

Sex ratio is one of the keys that determine the general status of women in society and it is a key indicator of the development of any society. As the understanding of different issues about women and their rights are gaining prominence in society under feminist understanding, studies related to sex ratio are also gaining prominence in academia. It is generally accepted that the study is child sex ratio is far more informative as compared to the study of general sex ratio. As the general sex ratio is liable to various factors such as migration or under-enumeration, the Child Sex Ratio (CSR) is generally more informative about the trends of sex ratio and the status of women in any society.

In the context of Haryana declining sex ratio is a very serious issue and its study is vital for the general upliftment of women in society, therefore, it is vital to understand the rural-urban divide in sex ratio. In this paper, an attempt has been made to understand Rural-urban differentials of Child Sex Ratio in the state of Haryana. Based upon secondary data sources collected from varied data sources and Census of India has served as the largest data source for the paper. This paper has concluded that rural-urban differentials are very prominent in shaping the aggregate level of CSR. The sex ratio in urban areas is far higher as compared to rural counterparts as urban areas have more access to medical determination of the sex of babies in the wound of the mother and determine accordingly.

Key-words: Sex ratio, Sex ratio differentials, Male Dominance, Traditional Society.

Introduction

Economic growth and development have remained one of the key objectives of policymakers the world over including in India. Economic development can be achieved by increasing per capita and gross domestic production of the economy. Achievement of economic growth is a relatively easier target for a developmental policy that can be achieved with minimalistic efforts as economic growth does not encompass quality of distribution or it has no social connotation achieved with it. On the other hand, development has a larger scope and meaning as compared to economic growth. Development is an increase in per capita of population, an increase of GDP and it has many social

connotations. Equal distributions of wealth in society, increase in literacy rate, and general well-being of the population are some indicators of the development of any economy. Of late in the last few decades, the better status of women is also considered as one of the key aspects that indicates the development of society and economy. With the spread of feminism in the world women's rights and women's wellness are also considered crucial for economic development (George & Dahiya, 1998).

In most traditional societies with low social development status of women is poor. In most of the cases, they are devoid of their rights and women are living their life on mere subsistence. Women get fewer opportunities as compared to their male counterparts and as a result, in most cases male-female development scenario is not in parity. Under its nature, women are different from the male, as nature has a different set of qualities to women in comparison to the male. Women being soft-hearted and caregiving have to bear the burden of family responsibility. On the other hand, males are powerful, and in most of society they have upper status as compared to females they have more excess resources and therefore, they enjoy higher status as compared to females.

Similarly, in most of the societies in third world countries due to the poor status of families, women are deprived of education which further causes in determination of their status. During times of need or any emergency women and other marginalized sectors of society suffer much more as compared to their male counterparts and well-offs of the society. In social sciences, studies about the status of women are one of the key mandates that determine the cause and magnitude of suffering of women. Being a part of social sciences, geography also deals with the status of women and its varied manifestations. In this context, in geographical studies study of sex ratio is a very important indicator of the status of women which has a larger impact on other socio-economic aspects of the society. In the Indian context, the sex ratio is a vital and very complex issue. Over the last few censuses of India reports sex ratio in many parts of the country is dismally low and needs urgent policy attention for its amelioration.

If seen from a historical perspective, the status of women in India has not always remained as dismal as it is now. During the Vedic period, females used to enjoy the same rights and social status as males enjoyed during that time. As per the Vedic literature, they were allowed to read and write, and at the same time, they had many privileges, indicating their fair status in society. Later on, over the centuries women's rights and their status has not remained the same. During medieval times and later in modern times their social status has worsened and as the outcome of this girls are seen as the burden of family (Banerjee, 1977).

Poor literacy rate of women, low sex ratio, higher incidents of violence against women, and discrimination against women are some fine indicators of the dismal status of women. In some regions such as in north-western India situation is even more problematic and as a result social evil of female feticide has also emerged in society which in turn further deteriorated the condition of women in society in the form of a falling sex ratio. The falling sex ratio is not just an isolated phenomenon or a phenomenon related to urban areas, but it has deeply penetrated the minds of the rural population. In this paper, an attempt has been made to understand the dynamics of the Child Sex Ratio in the state of Haryana.

In recent years too skewed sex ratio has also caused worry and a decline in sex ratio in different parts of the country and in some states of India has been the matter of serious deliberations in the

words of Nobel Laureate Amartya Sen ”More than 100 million women are missing.”

Sex Ratio and its Driver

Sex is the identifiable characteristic of an individual hence; data on sex (i.e. male and female) are available in almost all the census operations the world over. As any census provides completive data sets on various demographic and social aspects, numbers of males are readily available for analysis. In a more demographic sense, data on male-female is understood as the sex composition of the society.

Sex is a biological phenomenon and Sex ratio can be defined as the number of females per thousand males. It is one of the key demographic indicators that provide insight into the status of women. Sex ratio is the outcome of many drivers and these drivers can be statistically identified. The balance between males and females at any given point in time is governed by the following factors:

1. Sex Ratio at Birth

As it is known that the sex ratio is a biological phenomenon and in the case of natural conditions in any society there is always a predominance of male babies over female babies at birth. This predominance gets nullified as male foetuses are more susceptible to loss or death as compared to female foetuses. This resolves several advantages to male babies as compared to females and nature establishes the balance between both the sexes naturally.

2. Mortality Differentials

As the sex ratio at birth was largely determined and established by natural forces, mortality differentials are the outcome of social discrimination. Mortality differentials are the differentials in the death rates of males and females. Normally, male fetuses have higher mortality as compared to females. Ironically this balance is imbalanced by the social system based on discrimination favoring males and ignoring females. Due to social neglect, a female child is considered a burden while the male is regarded as a source of wealth and glory for the family. Discrimination starts with the birth of a girl child; the birth of a male has been celebrated socially and culturally no such celebration at the birth of a girl child. The sex ratio in a population is, therefore, sometimes considered a very good indicator of the status of women in such societies (Sen, 1990).

3. Migration

Migration is one of the key population drivers that work towards the redistribution of population in any country. As Ravenstine (1885) in his laws of migration said migration is age and sex-selective, therefore, from a region most of the male population in the working age group tends to migrate. This age and sex-selective migration harms the sex ratio of a region and most of the time decline in the sex ratio is attributed to migration in the region. Therefore, in studies related to sex ratio to nullify the impact of migration, the child sex ratio of age group 0-6 is studied, as children of these age groups are not migratory.

4. Under the enumeration of Girls

In some societies and some social groups reporting of girl children is also a cause of underreporting of the actual number of girl children present in any population. Although this number is very small stills it is prevalent in tribal-based societies living in forests.

Therefore, sex ratio is a complex phenomenon and it changes under the influence of factors that

have been discussed in preceding sections of the paper. The sex ratio result affects many other things in the society such as women available for marriage which in turn further causes the bringing of girls from other regions and other cultures to Haryana.

Map 01

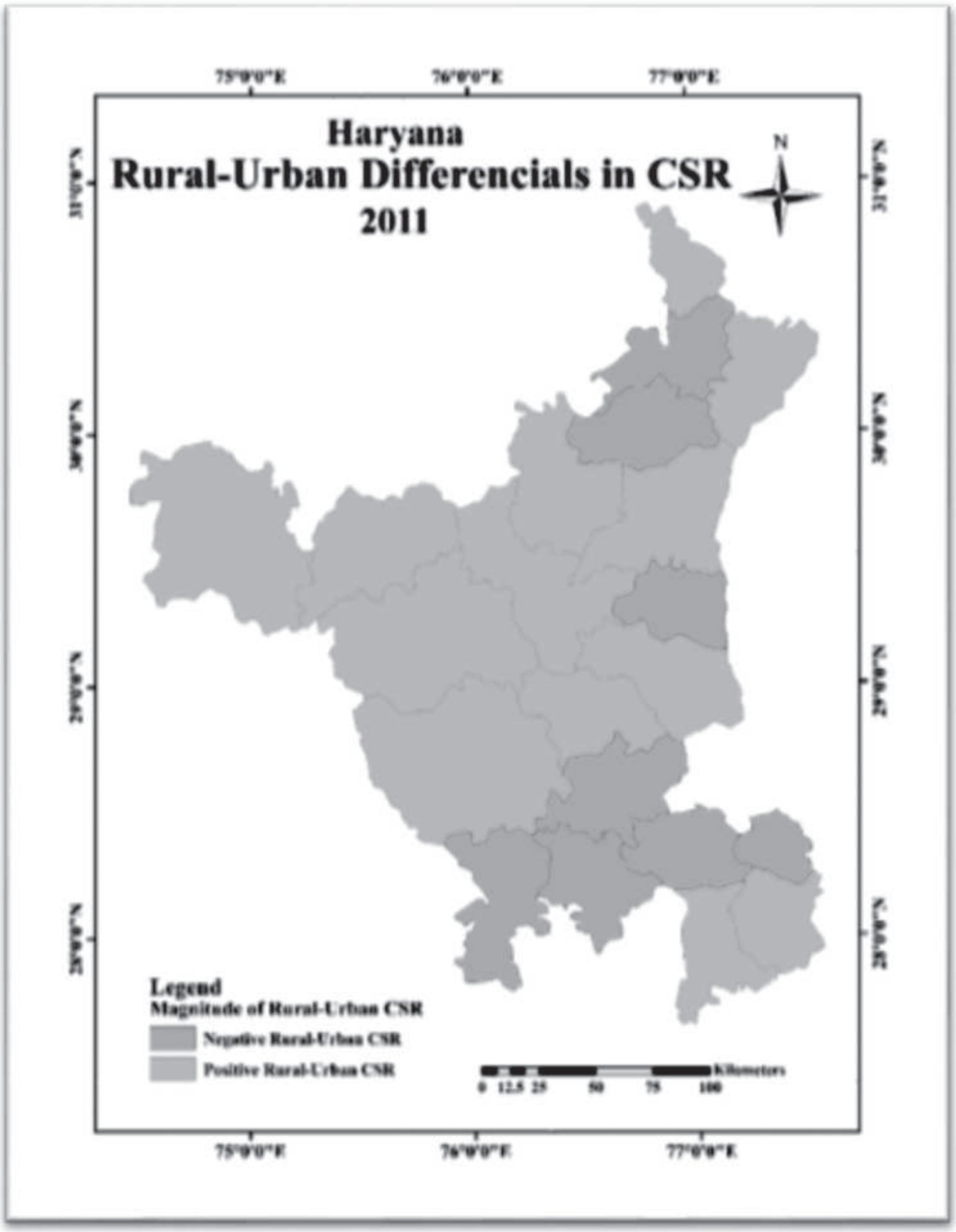

Source: Prepared by research scholar with the help of ARC GIS

Map 02

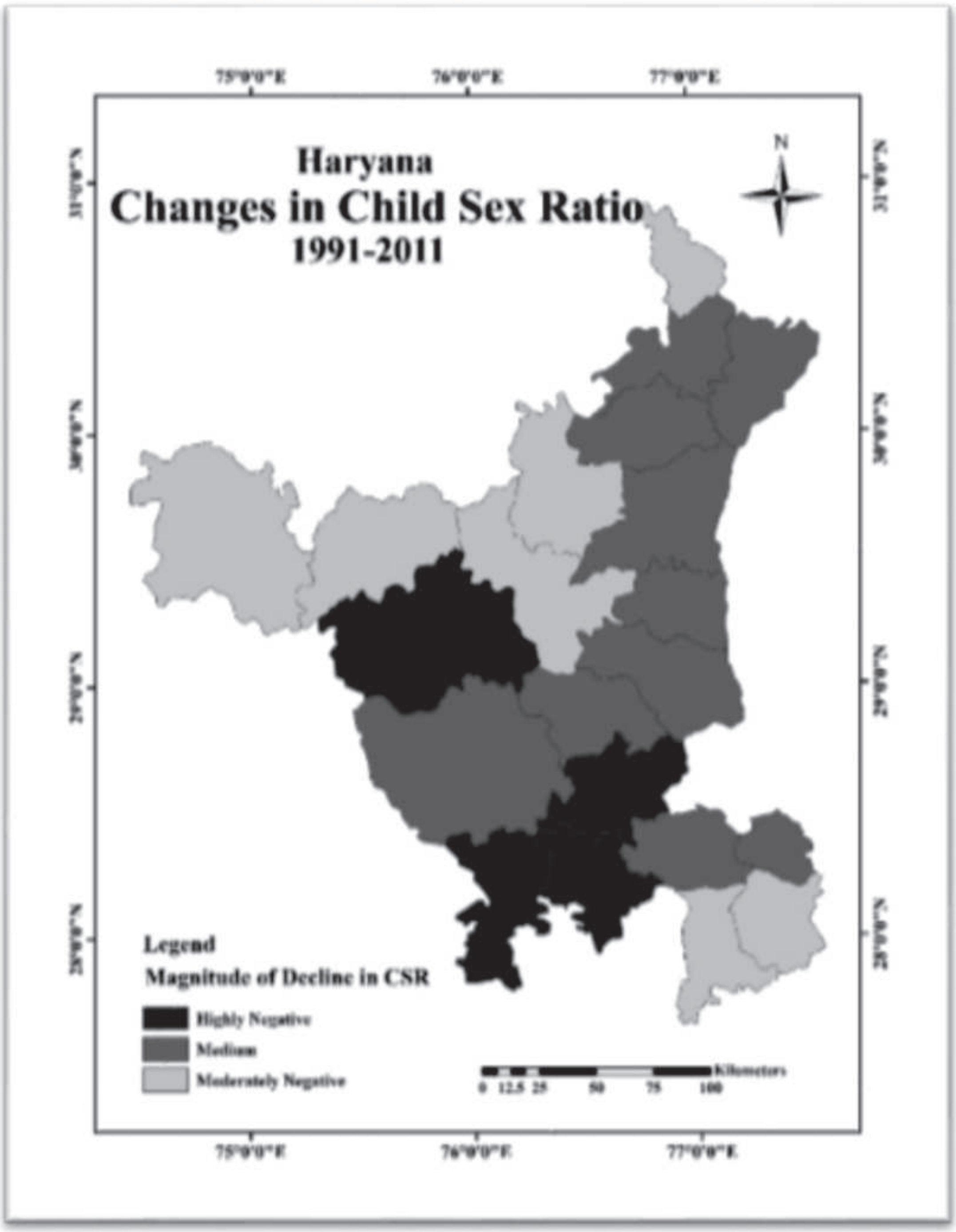

Source: Prepared by research scholar with the help of ARC GIS

Objective

The main objectives of the paper are to understand the dynamics of the child sex ratio in the state of Haryana and to understand rural-urban differentials in sex ratio discussing the causes and consequences of the emerging trends in this regard.

Study Area

For the analysis in this paper, Haryana has been selected as the study area and all the districts of the state have been selected as the level of study.

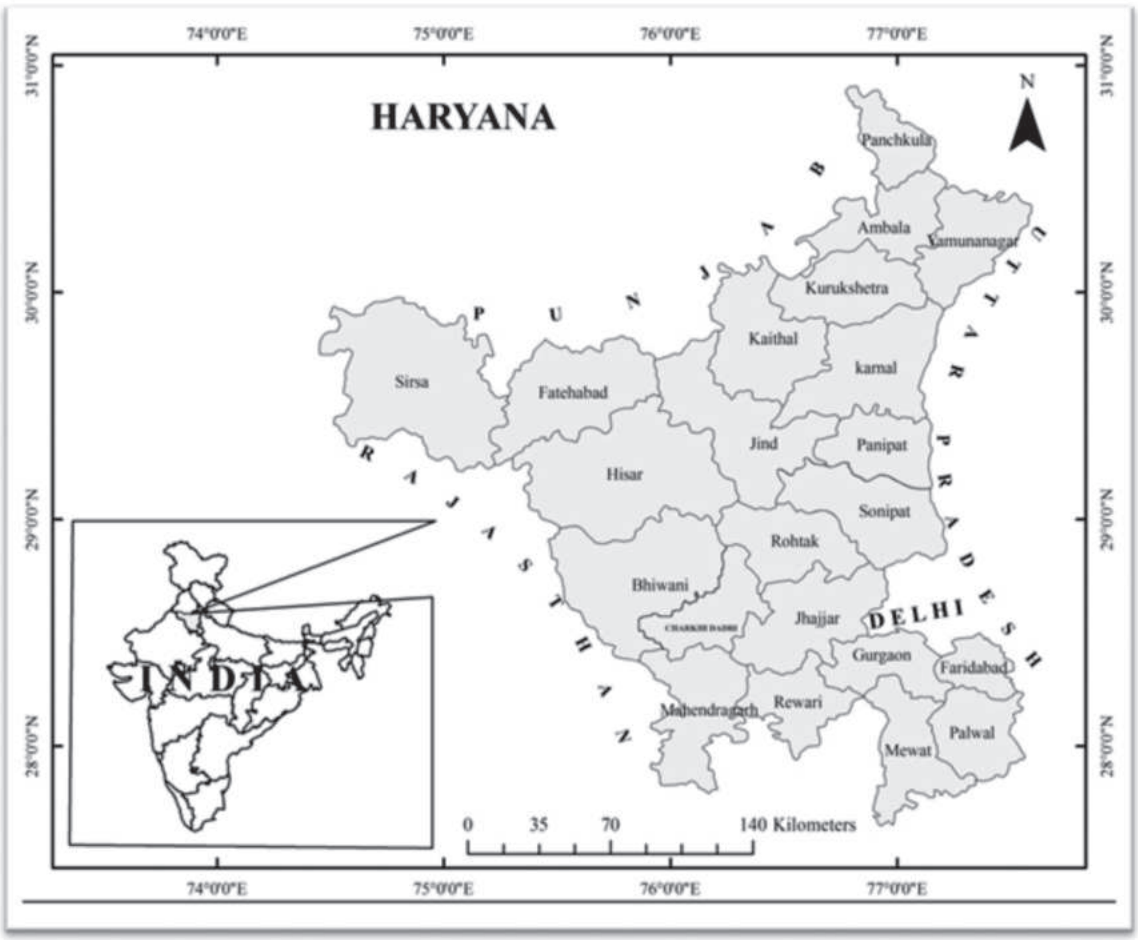

It is beyond doubt that the state of Haryana is one the most economically developed in the country. It is blessed with large tracts of fertile and plenty of water resources supplied through its perennial canal system, making it the granary of Inda. Haryana through its agricultural might has achieved many successes, including that it provides nearly 16 percent of food grains to the central pool to meet the needs of grain in PDS or mid-day meal scheme. Along with this Haryana is one of the leading states of India in terms of animal husbandry and it is playing a significant role in providing

quality milk and milk-related products to the costumers through improved varieties of livestock. Over the last few decades, along with agriculture Haryana has emerged as an industrial power of the region with its location advantage and nearness to large markets in the form of Delhi NCR.

Ironically, shreds of evidence suggest that the state of Haryana has not performed equally well in terms of social development. Among many social challenges in the state, the poor status of women and the resulting falling sex ratio is the most worrisome aspect. The state is witnessing well below the national average sex ratio and some of the districts in the state are at the lowest pedestal in the context of sex ratio. Therefore, understanding the root causes of the falling sex ratio and understanding rural rural-urban divide regarding the child sex ratio is very vital to ameliorating the social crisis in the state of Haryana.

Database and Methodology

Every research relies on certain data sources that can be primary and secondary data sources by their nature. In almost all the social research that deals with demographic phenomena in one sense of the other census of India acts as the main source of quantative information. Similarly, for the present research paper census of India has acted as a secondary data source. In this paper Haryana has been selected as the main unit for analysis and data about various districts of Haryana has been used for analysis that has been derived from census from various years. Similarly, for representation of data maps and other appropriate cartographic techniques have been used to depict data pictorially.

Result and Analysis

The general sex ratio in India has always remained a cause of worry for policymakers now for many decades. The spatial distribution of sex ratio in India shows a clear north and south divide. Most of the southern states such as Kerala, Tamil Nadu, and most of the other southern states have favored females is reflected in higher sex ratios as compared to most of the northern states. Much analysis indicates that analysis of the sex ratio of the whole population has a large influence on migration. In India, it is a well-known fact that migrants migrate from the poor states of Bihar and Jharkhand towards economically well-off states leading to a skewed distribution of the general sex ratio. Therefore, most of the demographer's favor using the Child Sex Ratio (CSR) of the 0-6 age group to ascertain the real picture by nullifying the impact of migration on the fluctuations of the sex ratio. In general, CSR is the outcome of sex ratio at birth, mortality differentials, and other social factors. The spatial and temporal distribution of CSR is also much skewed in space and time. As indicated in map 1 and map 2 CSR is highest in the southern and north-eastern states of India and the most worrisome picture is emerging from the north-western states of India, especially from Punjab and Haryana. In the context of Haryana, the scenario of CSR has always remained very dismal. As indicated in Table 1 the general trend of the general sex ratio from 1901 to 2011 has always remained against females as it has never reached beyond 879. This scenario suggests the larger aspect of discrimination in the state. Another aspect of the sex ratio that also needs urgent attention from policymakers is the rural-urban divide of the sex ratio. Here, too the distribution of sex ratio is not equal. Table 1 suggests that the rural-urban sex ratio is also very low.

Table 1

Trends in Overall Sex Ratio in Haryana, 1901-2011

Census Year	Total	Rural	Urban
1901	867	908	861
1911	835	842	834
1921	844	811	848
1931	844	792	851
1941	869	806	879
1951	871	845	877
1961	868	842	874
1971	867	853	870
1981	870	849	876
1991	865	868	864
2001	861	847	866
2011	879	873	882

Source: Census of India for Various Years

Although the last census data for the year 2011 indicates some improvement in the status of the general sex ratio of the state. The picture is also very dismal and problematic when the sex ratio for the 0-6 population is considered. Here too, the Child Sex Ratio Favors male and disfavouring girls' child. It is a very disturbing trend that CSR in Haryana fell as low as 819 showing that even though Haryana has managed to achieve greater economic growth and development, the status of girls in society is still at a very disadvantageous level. Table 2 shows CSR in Haryana from 1961 onwards and shows the prevalence of discrimination against female children.

Table 2

Haryana: Child Sex Ratio (0-6 age group)

Census Years	Child Sex Ratio	Decadal Change
1961	910	—
1971	898	-12
1981	902	+4
1991	879	-23
2001	819	-60
2011	830	+11
2021*	893	+63

Source: Census of India for Various Years, 1961-2011

*National Family Health Survey (NFHS-5)

Haryana being a traditional Hindu society, girls are considered as the burden for the family, and on the other hand boys are welcomed as the name bearer of the family. Due to the prevalence of the dowry system in the society and increased cost of expenditure of marriages of girls, they are less welcomed in the family. Field experiences show that women and girls receive less education and get no role in the decision-making in the family. Similarly, a higher prevalence of malnutrition and anaemia is also found in women as they are not fed quality food. In political decision-making, too women are at a disadvantage situation as compared to male. In a nutshell, it can be ascertained that cultural preference for sons in society has made life worse for girls and women in society. Due to son preference and higher desire for male children's families are resorting to the event more cruel exercise of female Infanticide and Sex-Selective Abortion. With the wider availability of medical facilities and imaging technologies, sex-selective abortion has also caused falling CSR.

Table 3

Haryana: District Wise Urban Child Sex Ratio and Decadal Changes in Urban Child Sex Ratio in Haryana during 1991 – 2011

Sr. No	Districts	1991	2001	2011	1991 to 2001	2001 to 2011	1991 to 2011
1	**Ambala**	888	808	832	-80	24	-56
2	**Bhiwani**	891	827	814	-64	-13	-77
3	**Palwal**	NA	NA	830	NA	NA	NA
4	**Fatehabad**	NA	798	836	Na	38	NA
5	**Mewat**	NA	NA	890	NA	NA	NA
6	**Hisar**	867	806	843	-61	37	-24
7	**Jhajjar**	NA	804	794	NA	-10	NA
8	**Jind**	875	775	833	-100	58	-42
9	**Kaithal**	857	769	825	-88	56	-32
10	**Karnal**	872	792	810	-80	18	-62
11	**Kurukshetra**	865	766	820	-99	54	-45
12	**Mahendragarh**	896	795	783	-101	-12	-113
13	**Panchkula**	NA	813	856	NA	43	NA
14	**Panipat**	905	807	849	-98	42	-56
15	**Rewari**	911	816	799	-95	-17	-112
16	**Rohtak**	879	781	818	-98	37	-61
17	**Sirsa**	874	801	838	-73	37	-36
18	**Sonipat**	892	775	794	-117	19	-98
19	**Yamunanagar**	886	789	823	-97	34	-63
20	**Gurgaon**	889	816	845	-73	29	-44
21	**Faridabad**	895	848	847	-47	-1	-48

Source: Census of India for Various Years

NA: indicates that these districts were not in existence.

Table 3 shows district-wise Urban Child Sex Ratio and decadal changes in urban Child Sex Ratio in Haryana during 1991 – 2011, it is very pathetic to note that from 1991-2001 all the districts in Haryana witnessed a fall in CSR of urban areas. This shows that in most of the districts in Haryana due to increased medical technology and imaging technology sex-selective abortion was very common and, in most cases, it went unchecked and unabated. After a very hefty fall in CSR and hue and cry in media drawing the attention of policymakers and law & order agencies, stringent checks on medical imaging, especially ultrasound technology, from 2001-2011 most of the districts have witnessed significant improvement in CSR. Only some districts such as Bhiwani, Jhajjar, Mahendragarh, Rewari, and Faridabad have negative CSR.

If the scenario as reflected about urban CSR in Haryana is seen from a larger perspective from 1991-2011, the picture is very gloomy. During the period from 1991-2011, almost all the districts of Haryana have witnessed a fall in urban CSR. This suggests that the misuse of medical termination and imaging technology in the state of Haryana was so high from 1991-2001 that its impact is still visible and could not be tamed even after the stringent policies during 2001-2011.

Moreover, new vigor is required to keep check on illegal medical institutes that wooing families for sex determination and abortions. In a larger scenario, to improve urban CSR needs of hour is to focus on two-pronged strategies. On one hand, strict checks on hospitals and nursing homes are required so that no illegal use of medical facilities can be used to help culprits. At the same time, the need of the hour is to spread social awareness so that the masses can be sensitized towards growing social evils (Unisa, et. al., 2007).

Table 4

Haryana: District Wise Rural Child Sex Ratio and Decadal Changes in Rural Child Sex Ratio in Haryana during 1991 – 2011.

Sr. No	Districts	1991	2001	2011	1991 to 2001	2001 to 2011	1991 to 2011
1	**Ambala**	888	770	795	-118	25	-93
2	**Bhiwani**	885	844	835	-41	-9	-50
3	**Palwal**	NA	NA	874	NA	NA	NA
4	**Fatehabad**	NA	834	858	NA	24	NA
5	**Mewat**	NA	NA	908	NA	NA	NA
6	**Hisar**	868	839	855	-29	16	-13
7	**Jhajjar**	NA	800	778	NA	-22	NA
8	**Jind**	855	828	839	-27	11	-16
9	**Kaithal**	854	796	829	-58	33	-25
10	**Karnal**	876	813	829	-63	16	-47
11	**Kurukshetra**	867	773	818	-94	45	-49
12	**Mahendragarh**	891	821	774	-70	-47	-117

13	**Panchkula**	NA	839	871	NA	32	NA
14	**Panipat**	874	810	826	-64	16	-48
15	**Rewari**	891	810	782	-81	-28	-109
16	**Rohtak**	875	807	822	-68	15	-53
17	**Sirsa**	885	823	869	-62	46	-16
18	**Sonipat**	876	792	800	-84	8	-76
19	**Yamunanagar**	890	814	828	-76	14	-62
20	**Gurgaon**	896	866	801	-30	-65	-95
21	**Faridabad**	875	851	834	-24	-17	-41

Source: Census of India for Various Years

NA: indicates that these districts were not in existence.

It is largely expected that as compared to urban society, rural society is more sympathetic towards women and they do not resort to medical termination of pregnancies. Contrary to this notion, as indicated in Table 4, trends in rural CSR are also very similar to urban CSR. The problems and the perception of the burden of the girl child on the family have also diffused in the rural areas. Moreover, the people or hospitals or nursing homes that are engaged in the illegal determination of sex and later termination are now approaching the villagers also. Following the trends that have emerged in urban areas in CSR, rural CSR also shows that from 1991 to 2001 CSR has fallen in most districts. The situation has improved in the period 2001-2011 with strict vigil. In a nutshell, the overall scenario of rural CSR is equally dismal as it is in urban areas. Table 4 shows that urgent attention is required to ameliorate the CSR status in rural areas and also in urban areas.

Suggestions and Conclusions

India is a country that is gaining economic importance and it has emerged as the fastest growing nation in the world. With the growing need for more and more skilled manpower in the country, a balance between sexes is required. The balance between age and sex is the very basis for the normal functioning of society and the economy. Age balance in society provides a consistent supply of labor as an economic workforce. Similarly, the balance between males and females is also very vital for the smooth functioning of society. In the absence of balance, many social problems would emerge and brides would have to be imported from other states. Such marriages between males and females of different cultural understanding and language are very hard to sustain.

In India, women generally have a relatively low social position, and a major indicator of this is the consistently decreasing sex ratio. In comparison to the analysis of the overall sex ratio of CSR, it is more powerful and enlightening to have a comprehensive understanding of the dynamics of sex ratio. The influence of migration is eliminated in the CSR study, producing a more accurate image. The picture of CSR in Haryana is much more concerning because it is likewise appallingly low. According to the analysis in this article, CSR in the state of Haryana has consistently been low. Additionally, both regions are exhibiting comparable tendencies when compared to their rural and urban trend behavior. The drop in unregulated abortions and female feticides is extremely steep,

similar to the rural and urban CSR from 1991 to 2001. Additionally, the situation with hospitals and nursing homes has improved somewhat between 2001 and 2011. A bright image is also portrayed towards CSR in the National Family Health Survey-5 report which also displays an increase of CSR in both rural and urban areas of Haryana state.

The threat of female feticide and sex-selective abortions must be addressed immediately by implementing multifaceted measures. Improving the child-to-sex ratio in the state and the nation as a whole should be the goal of a social movement that involves mass leaders and individuals from all walks of life.

References

1. Babiarz, K. S., Ma, P., Song, S., & Miller, G. (2019). Population sex imbalance in China before the One-Child Policy. *Demographic Research*, *40*, 319–358.
2. Banerjee, M. (1977). The Pattern of Sex Ratios in Singhbhum District, Bihar. Geographical Review of India, 39, pp. 30-38.
3. Basu, A. M. (1990). Cultural Influences on Health Care Use: Two Regional Groups in India. *Studies in Family Planning*, *21*(5), 275–286.
4. George, S. M., & Ranbir S. Dahiya. (1998). Female Foeticide in Rural Haryana. *Economic and Political Weekly*, *33*(32), 2191–2198.
5. Goodkind, D. (2011). Child Underreporting, Fertility, and Sex Ratio Imbalance in China. *Demography*, *48*(1), 291–316.
6. Pai, S. (1987). Class, Gender and Agrarian Change: An Analysis of the Status of Female Agricultural Labour in India. *Social Scientist*, *15*(6), 16–32.
7. Rajan, S., & Morgan, S. P. (2018). Selective Versus Generalized Gender Bias in Childhood Health and Nutrition: Evidence from India. *Population and Development Review*, *44*(2), 231–255.
8. Sen, Amartya. (1990). "More than 100 Million Women are Missing." New York Review of Books 37 (20): 61–66.
9. Sule, B.M and Barkade, A.J(2012). Correlation between literacy and sex ratio in Solapur district of Maharashtra: A Geographical Analysis, Social Growth, 1(4). P.7
10. Unisa, S., Sucharita Pujari, & Usha, R. (2007). Sex Selective Abortion in Haryana: Evidence from Pregnancy History and Antenatal Care. *Economic and Political Weekly*, *42*(1), 60–66.
11. Zarate, A. O. (1967). Some Factors Associated with Urban-Rural Fertility Differentials in Mexico. *Population Studies*, *21*(3), 283–293.
12. Anand, S., & Gaur, R. (2013). Promoting the Survival of Girl Children through Conditional Cash Transfers: Is it a Sustainable Approach? *Indian Anthropologist*, *43*(2), 55–71.
13. Annan, K. (2018). A study of Correlation between Literacy Rate and Sex Ratio in Haryana: Trend and Emerging Issues.
14. Arnold, F., Kishor, S., & Roy, T. K. (2002). Sex-Selective Abortions in India. *Population and Development Review*, *28*(4), 759–785.
15. Arokiasamy, P., & Goli, S. (2012). Explaining the Skewed Child Sex Ratio in Rural India: Revisiting the Landholding-Patriarchy Hypothesis. *Economic and Political Weekly*, *47*(42), 85–94.
16. Babiarz, K. S., Ma, P., Song, S., & Miller, G. (2019). Population sex imbalance in China before the One-Child Policy. *Demographic Research*, *40*, 319–358.
17. Bala, A. (2017). Social development in Haryana: a regional analysis. *Social development*, *2*(4).

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

शैलेश मटियानी के कहानी संग्रह 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' में दांपत्य जीवन का अध्ययन

सुनीता
शोधार्थी ए. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज खुर्जा बुलंदशहर

डॉ. रेखा चौधरी
शोध निर्देशिका (एसोसिएट प्रोफेसर)
ए. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज खुर्जा बुलंदशहर

प्रस्तावना

स्त्री पुरुष का मिलन ही सृष्टि निर्माण का आधार है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक यह विचारधारा सतत् विकासमान रही है, इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका पति-पत्नी की रही है। पुरुष व स्त्री का यह दांपत्य भाव समाज का मूल आधार रहा है। समाज द्वारा स्वीकृत स्त्री और पुरुष के संबंध जिस दिन विवाह रूप में परिणत हुए, उसी दिन से दांपत्य जीवन का आयाम विकसित हुआ।

सभ्यता के साथ-साथ यह दांपत्य संबंध मानव जीवन में अपने विशिष्ट स्थिति वह प्रभाव छोड़ता गया, जिसमें साहित्यकार भी अछूते नहीं हैं साहित्य का राजेंद्र यादव के शब्दों में,

"आपसी संबंधों में सबसे नाजुक सबसे निर्णायक और विस्फोटक संबंध नारी और पुरुष का है इसलिए संसार के सारे कथाकारों का केंद्रीय विषय भी यही रहा है। जो सामाजिक परिवर्तन बड़े-बड़े भाषणों और कानून से नहीं ले जा सके और बड़े-बड़े शासक जिन्हें लागू नहीं कर पाए उन्हें किस तरह दो गुमनाम स्त्री पुरुष ने अनजाने ही केवल अपनी भावना के भाव में स्थापित कर दिया इसे देखने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है।"[1]

हिंदी के जिन साहित्यकारों ने नारी पुरुष संबंध तथा दांपत्य जीवन को अपने विशिष्ट दृष्टिकोण द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, उनमें शैलेश मटियानी जी का नाम महत्वपूर्ण है। अपनी कहानियों में उन्होंने दांपत्य जीवन को विशेष स्थान दिया है।

1. दाम्पत्य जीवन का अर्थ

दंपति का तात्पर्य है "विवाहित पति पत्नी का युग्म" व्युत्पर्थ दृष्टि से दंपति का भाव ही दाम्पत्य है। शब्दकोश के अनुसार दंपति का अर्थ "पति पत्नी का सम्बन्ध बताया गया है"[2] "अमरकोश" मैं पति और पत्नी को दंपति कहा गया है तथा दंपति के पर्यायवाची शब्दों के रूप "जम्पती" "जायापति" और "भार्यापति" शब्द दिए गए हैं।[3] विवाह के उपरान्त स्त्री और पुरुष पति पत्नी बनकर जिस जीवन का निर्वाह करते है, वह दांपत्य जीवन कहलाता है, इसीलिए विवाह का दूसरा अर्थ समाज में प्रचलित एवं स्वीकृत विधियों द्वारा स्थापित किया जाने वाला दाम्पत्य सम्बन्ध और पारिवारिक जीवन भी होता है। इस सम्बन्ध में पति पत्नी को अनेक अधिकार तथा कर्तव्यों की प्राप्ति होती है। जिनका निर्वहन वह दाम्पत्य जीवन में रह कर करते है।

परिभाषाएं

के. एम. कापड़िया के अनुसार- "दाम्पत्य वह सामाजिक संस्था है जो पुरुष और स्त्री की कतिपय आधार भूत शारीरिक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के निमित्त सामने आयी"[4]

महाभारत में लिखा है - "वे ही व्यक्ति सम्यक रूपेण अपने दायित्वों को पूरा कर सकते है जिनके पत्नियाँ हैं। वे व्यक्ति सुखी रह सकते है जिनके पत्नियाँ है, वे ही व्यक्ति पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते है।"[5]

डॉ. महेंद्र कुमार के अनुसार - "भारतीय संस्कृति में स्त्री पुरुष के लौकिक एवं आध्यात्मिक संबंध को दांपत्य की संज्ञा दी गई है पति और पत्नी दांपत्य के अविभाज्य अंग होते हैं पति के बिना पत्नी निराश्रित एवं अपूर्ण है और पत्नी के बिना पति एकाकी।"[6]

राजेंद्र यादव के अनुसार- "यथार्थ प्रेम जिसे तुम स्वर्गीय अमर कहते हो विवाह के पश्चात प्रारंभ होता है क्योंकि यह स्वाभाविक है साहचर्य से उत्पन्न होता है।"[7]

अतः हम कह सकते हैं कि भारतीय समाज में स्त्री को "अर्धांगिनी" और "धर्मपत्नी" कहा जाता है, जिसका अर्थ है पुरुष का आधा भाग उसकी पत्नी है इसलिए विवाह के बाद ही व्यक्ति को पूर्ण माना जाता है; पत्नी को पति की आत्मा माना जाता है। पत्नी धर्म, अर्थ, काम की प्रेरणा है तथा मोक्ष प्राप्ति का साधन है। नारी और पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक है। नारी के बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं और पुरुष के अभाव में नारी का कोई मूल्य नहीं। दोनों का संबंध अनादि। अखंड और अभिन्न है। स्त्री और पुरुष मिलकर जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई बनते हैं, दांपत्य शब्द इसी की पुष्टि करता है और पति-पत्नी का संबंध ही दांपत्य जीवन का मूल आधार है।

2. "दस प्रतिनिधि कहानियाँ" संग्रह में दांपत्य जीवन के विविध रूप

यह कहानी संग्रह 1997 में प्रकाशित हुआ था।किताब घर प्रशासन द्वारा प्रकाशित यह कथा सीरीज "दस प्रतिनिधि कहानियाँ" संग्रह सभी शीर्ष कथाकारों की प्रतिनिधि कहानियों का दिग्दर्शन कराता है। शैलेश मटियानी की दस प्रमुख लोकप्रिय कहानियों में से हम दांपत्य जीवन पर आधारित कहानियों का अध्ययन करेंगे।

इस संग्रह की अर्धांगिनी कहानी शैलेश मटियानी की सर्वाधिक लोकप्रिय कहानियों में स्थान रखती है। अर्धांगिनी कहानी में दांपत्य जीवन के आदर्श दांपत्य प्रेम को दिखाने के साथ-साथ सैनिकों के दांपत्य जीवन की उस गहरी पीड़ा को भी दिखाया गया है जिसे वह झेलते हैं क्योंकि हर क्षण वह यह सोचने को मजबूर होते हैं कि उनकी जिंदगी कितनी बची है साथ ही लेखक ने यह भी दिखाने की कोशिश की है कि जितना त्याग एक सैनिक के परिवार को करना पड़ता है उतना शायद ही किसी को करना पड़ता हो। "नहीं तो फौजी की नौकरी में कौन जानता है कि सरकार ने कब दाना पानी छुड़ा देना है कैलिबरी की जिंदगानी है जीन लगाम ही अंग वस्त्र है पिछले साल अचानक ही कैसा ब्लू स्टार ऑपरेशन हो गया और कितने वीर जवान राष्ट्र को समर्पित हो गए।"[8] लेखक ने व्यक्ति के जीवन में परिवार के महत्व को विशेष स्थान दिया है। क्योंकि व्यक्ति जितना भी दूर रहे वह अपने परिवार को अपने जीवन से अलग नहीं कर पता है इस तरह दांपत्य जीवन में भी व्यक्ति प्रेम की इतनी गहराई में चला जाता है कि उसे दूसरे के अस्तित्व में भी अपने प्रिय व्यक्ति का अस्तित्व ही नजर आता है जो प्रेम के पराकाष्ठा का रूप होता है। "अब तो जहां आती जाती खेतों में काम करती औरतें दिख रही है सभी में रुकमा सूबेदारनी की छाया गोचर होती है"।[9] इस कहानी में नैन सिंह सूबेदार अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं को वर्तमान के हवाले करता जाता है। पारिवारिक दायित्वों को निभाने के साथ ही सामाजिक दायित्व का निर्वहन भी करता है। इन सभी दायित्वों के निर्वहन के साथ वह अपने दांपत्य संबंधों को निश्चल प्रेम भाव के साथ निभाता हुआ दिखाई देता है। जिसका मार्मिक और कंपकपाता एहसास सूबेदार की छुट्टी बिताकर जाते समय होता है।

"बिल्कुल चुपके से आस्तीन से आंखें पोंछी तो भी कुछ आवाज सी आती सुनाई पड़ी नैना सूबेदार ने जसी के जेब

में से निकाल कर चश्मा लगा लिया"।[10] लेखक ने रुकमा सूबेदारनी के मन में हृदय में भाव संबंधों में बसी अर्धांगिनी को प्रत्यक्ष भूमि पर स्थापित किया है वह पति के लिए किए गए किसी भी कार्य को छोटा बड़ा नहीं समझती है, रुकमा सूबेदारनी ने पति के लिए किए गए कार्य में सहायता का अभिमान नहीं अपितु अर्धांगिनी होने की आकांक्षा ध्वनित होती है

"तुम जब वहां रात दिन हम लोगों की चिंता में घुलते रहे हो तब कुछ नहीं एक दिन को तुम्हारा बोझ हमारे सर पर आ गया तो क्या पर्वत आ गया ठहरा? सर के ताज तो तुम ही हुए।"[11]

इस तरह इस कहानी में शैलेश मटियानी जी ने पति-पत्नी के उसे निश्छल प्रेम को दिखाया है, जो दांपत्य संबंध की डोर को मजबूत बनाए रखता है जिस तरह से एक आदर्श दंपत्ति के रूप में नैनसिंह सूबेदार और रुकमा सूबेदारनी को दिखाया गया है। वह एक दूसरे के महत्व का बोध प्रतिष्ठा की रक्षा और भावात्मक एकात्मकता के अर्धांग भाव की दमदार एवं गरिमामय में उपस्थिति प्रतिष्ठित करते हैं।

हमारे समाज में विवाह को एक संस्कार के रूप में स्वीकार किया जाता है। क्योंकि विवाह के द्वारा ही व्यक्ति गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है जिसमें रहकर वह अनेक धार्मिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करता है, जैसे ऋणों से मुक्ति प्राप्त करना, यौन संतुष्टि, संतति को जन्म और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करना आदि अनेक कार्यो को करता है। शैलेश मटियानी ने सुहागिन कहानी में इन वैवाहिक मान्यताओं को मानने वाले उस धर्म भीरू भाई को दिखाया है, जो अविवाहित बहन का विवाह घट से सिर्फ इसलिए करवाता है कि उसे और उसकी बहन को अपना दायित्व निर्वहन करने से पाप से मुक्ति मिलेगी और उसका मोक्ष का मार्ग खुल जाएगा मगर जब खुद भाई ने आंसू गिरा दिए, "पदमा मेरा अंत समय आ गया है बहुतों की सद्गति करके उनका तारण मैंने किया है मगर अब मुझे अपना ही तारण दुर्लभ हो रहा है तू अपनी दया निभा दे। तुझे सुहागिन देखने से मेरा तारण हो जाएगा।"[12]

लेखक ने स्पष्ट किया है कि स्थानीय धार्मिक मान्यताओं के अनुसार समाज हमारी नियति तो तय कर देता है, लेकिन जब हम उस नियति को ही अपना सच मानकर अपना कर्तव्य निभाते हैं तो यही समाज हमारा उपहास भी बनाने लगता है। यही स्थिति पद्मावती के साथ होती है जब उस घट को हाड़ मांस के पति के रूप में स्वीकारने लगती है तो समाज में सब उसका उपवास उड़ाते हैं, लेकिन फिर भी पद्मावती उस ताम्र कलश की सेवा निस्वार्थ भाव से करती है तथा उस घट में ही कल्पना में समाए पति को अनुभव करती है। उस कलश से उसे इतना अनुराग है कि वह अपनी भाभी से कहती है -

"तुम्हारे लिए यह सिर्फ तांबे का कलश ही होगा, बोज्यु मगर मेरे लिए तो मेरा सुहाग भी है।"[13]

किशोरियों जैसा बावलापन तरुनियों जैसी सौंदर्य अनुभूति और ग्रहणियों जैसा अपनापन पद्मावती में ताम्र कलश के प्रति स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। लेखक ने पद्मावती के रूप में एक ऐसी पत्नी को दर्शाया है जो पति की सेवा को ही अपना धर्म समझती है। चाहे उसे कितना भी दुख क्यों न हो लेकिन घट रुपी पति को कोई कष्ट नहीं पहुंचने देती है।

वह उन सभी दायित्व को निभाती दिखाई देती है। जो दांपत्य जीवन में एक गृहणी अपने पति के लिए निभाती है। क्योंकि पति की सेवा करना ही वह अपना प्रमुख कर्तव्य मानती है उसका विश्वास है कि पति की सेवा से ही पत्नी को मुक्ति प्राप्त होती है-

"न जाने किस जन्म पति को क्लेश पहुँचाया होगा, इस जन्म में यह गति है। इस जन्म में भी सेवा नहीं हो पाई तो फिर कैसे तारण होगा।"[14]

इस तरह मटियानी जी ने परंपराओं को मानने वाली आदर्शवादी पत्नी का रूप दिखाया है जिसका प्रेम इतना श्रेष्ठ है कि वह उस निर्जीव वस्तु की भी उसी तरह सेवा करती है जैसे किसी हाड़ मांस के पति की कर रही है।उसके लिए उसका पति ही सर्वस्व है। यह कहानी नारी मन की सूक्ष्म सुकोमल अनुभूतियों को पाठक के सामने रखती है, नारी के मन की वेदना पूर्ण अभिव्यक्ति पाठक के मन को भेद देती और दांपत्य जीवन के निस्वार्थ प्रेम को एक अलग दृष्टि से यह कहानी रखती है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत और अटल नियम है, परिवर्तन से तात्पर्य है पहले की वस्तु अथवा स्थिति में बदलाव आ जाना। जिससे प्रकृति में कोई बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकता है, इस तरह मानव समाज भी इस प्रकृति का अंग होता

है, जिसके कारण वह भी परिवर्तनशील होता है और यही परिवर्तन व्यक्ति का अहम हिस्सा होता है। जिससे व्यक्ति की आयु, गुण, आदतें सभी परिवर्तनशील होते हैं।

लेखक ने पति पत्नी के वैवाहिक रिश्ते में प्रेम और मानव व्यवहार के अंदर स्वाभाविक और अश्वाभाविक गुणों के कारण मानव जीवन में होने वाले परिवर्तन को "अहिंसा कहानी में दिखाया गया है" लेखक ने इस कहानी में जिस जगेसर को इस कहानी का पात्र बनाया है, वह पात्र हमें अपने समाज में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में दिखाई देता है। आज भी व्यक्ति उस दर्द वह अन्तर्द्वन्द से इस तरह गुजरता है जिस तरह से कहानी का पत्र जगेसर गुजरता है। जिस तरह से जगेसर की मनोव्यथा को लेखक ने पाठक के सामने स्पष्ट किया है उससे लगता है जैसे- आज भी कहानी का पत्र जगेसर हमारे समाज में मौजूद है। जगेसर खाट बुनने का कार्य करता है, यही उसकी आय का साधन है इसी से वह पैसे कमाकर अपनी पत्नी बिंदा का इलाज शहर आकर करा रहा है। जगेसर एक ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिसके लिए उसका पारिवारिक जीवन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

"अब तो जिंदगी का एकमात्र सार इसमें है कि इस देवी स्वरूप औरत के इलाज में कोई कसर न छूटे।"[15]

लेखक ने जगेसर को उस पति का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाया है जिसके जीवन में पत्नी पति का आधा अंग बनकर उसके अधूरे जीवन को पूर्ण करती है। उसकी अपनी पत्नी के प्रति अगाध प्रेम ही है जिसके लिए वह अपनी पत्नी का इस दुख में भी साथ नहीं छोड़ता है। वह पत्नी को अपने गृहस्थ रूपी भवन की दीवार के रूप में मानता है जो पूरे भवन को गिरने से रोक रही है।

"कुछ दिन पहले तक सारी गृहस्थी इस पर टिकी थी और अब यह औरत घर की नींव सी ढह गयी।"[16]

बिंदा के रूप में लेखक ने उस पत्नी को दिखाया है, जो बीमार है लेकिन फिर भी गृहस्थी की जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश कर रही है। वह बिस्तर से उठ नहीं पाती है फिर भी कोशिश करती है कि उसे जानवरों वह बच्चों की सब की खबर मिलती रहे। जगेश्वर के प्रति प्रेम की अनुभूति उसकी आंखों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिससे उसे आत्म संतुष्टि की प्राप्ति होती है। पति-पत्नी के प्रेम की गहराई को लेखक ने इतनी सूक्ष्मता से वेदना पूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया जो पाठक के मन को जाकर छूता है।

"देखता सुनता और महसूस करता सब, जैसे बस, बिंदा , के इर्द- गिर्द सब सिमट कर रह गया है। सुनो आसमान में उड़ते पंछियों को देखने की स्मृति रहती है न सड़क पर चलती हलचल की। इंद्रियों का स्वाद ही उड़ गया है।"[17]

जगेसर में हम उसे व्यक्ति को देखते हैं जो अंदर से टूट रहा है, लेकिन फिर भी अपनी पत्नी के स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहा है, लेकिन जब बिंदा की मृत्यु हो जाती है तो वह भीतर से पूरी तरह टूट जाता है, और किसी से कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं रहता है, जिसके कारण वह ऐसा संकल्प लेता है जिसकी शायद हमने कल्पना भी नहीं की होगी। जिस तरह से वह डॉक्टर गुदौलिया की हत्या करके एक शान्ति का अनुभव अपने अन्दर करता है, और अंतरमन में हो रही हलचल को शान्त करता है; किसी पवित्र संकल्प को अपने मन में अंकुरों की तरह अनुभव करता है और चेहरे पर किसी भी तरह के हिंसा के भाव की जगह उसका अहिंसात्मक रूप ही दिखाई देता जिससे वह पाठक की सहानुभूति ही प्राप्त करता है।

उपसंहार

समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है और परिवार की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति है, अतः व्यक्ति परिवार और समाज दोनों का केंद्र बिंदु है, इसीलिए व्यक्ति परिवार और समाज दोनों का सदस्य होने के कारण दोनों से गहरे स्तर पर प्रभावित होता है। शैलेश मटियानी इस बात को स्वीकार करते हैं कि-

"अकेले का संघर्ष तो संभव ही नहीं है, अगर समाज साथ न हो तो। मुझे ज्ञात अज्ञात अनेक लोगों का सहयोग मिला। उन्हीं के सहारे ही मैं चल पाया।"[18]

रचनाकार यदि जीवन के उज्जवल पक्षों को अभिव्यक्ति देता है तो उसके यहां जीवन की विसंगतियां भी अभिव्यक्ति

पाती हैं, क्योंकि रचनाकार भी उस समाज का अभिन्न अंग होता है जिसमें रहकर वह आरंभ से लेकर अंत तक जीता है। रचनाकार केवल निजी अनुभवों को ही आत्मसात नहीं करता बल्कि वह दूसरे व्यक्तियों के अनुभवों को भी अंदर समेटता है, और अभिव्यक्त करता है यह अनुभव ही उसकी रचना और संवेदना को समाज से जोड़कर समृद्ध बनाते हैं। लेखक के शब्दों में-"अगर आप लेखक होना चाहते हैं तो अपने अनुभव पर भरोसा करना और उसे महत्व देना जरूरी है, जिस चीज का अपना अनुभव हो , मेरा मानना है उस पर लिखा जाना संभव नहीं है। झूठे या उधार के अनुभवों से थोड़े समय के लिए दूसरों को भरमाया जा सकता है, लेकिन लेखक होना संभव नहीं है।"[19]

पति-पत्नी का संबंध आंतरिक कर्तव्य बोध पर आधारित होता है। भारतीय नारी पति को देवता स्वरूप मानकर उसकी प्रत्येक इच्छा और आज्ञा का पालन करती हुई पति व्रत धर्म का पालन करती है सहृदय नारी घर की शोभा बनकर एक स्वस्थ परिवार की स्थापना तथा एक व्यवस्थित घर की रचना करती है, और उसके स्वस्थ विचारों से परिभाषित होकर परिवार सुखी और समृद्धशाली बनता है, लेकिन जब स्थिति इसके विपरीत होती है तो गृहस्थ जीवन के साथ पारिवारिक विघटन भी होने लगता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में सबसे बड़ा परिवर्तन स्त्री पुरुष के संबंधों में देखने को मिलता है। दांपत्य जीवन के विविध पक्षों पर कथाकार शैलेश मटियानी ने अपनी महत्वपूर्ण लेखनी चलाई है। अपनी दृष्टि से उन्होंने दांपत्य जीवन के छोटे से छोटे पक्ष को भी ओझल नहीं होने दिया है। उन्होंने दांपत्य जीवन के पति-पत्नी के आदर्श दांपत्य प्रेम से लेकर, स्त्री पुरुष के बदलते हुए रिश्ते दांपत्य संबंधों में मतभेद और परिवार के टूटने की स्थिति को दिखाया है, तो कहीं दांपत्य संबंधों के बीच तीसरे व्यक्ति की आशंका तो कहीं पर दांपत्य जीवन में निस्वार्थ प्रेम त्याग आदि को सूक्ष्मति सूक्ष्म रूप से चित्रित किया है। इस तरह शैलेश मटियानी की कहानियों में दांपत्य जीवन के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं। उनकी कहानियों में नायक- नायिका अपने दांपत्य जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना संयम और समझदारी से करते हुए समस्या का हल भी खोजते हुए नजर आते हैं। मटियानी जी की दांपत्य जीवन की इन कहानियों में स्त्री सभी परिस्थितियों में समझौता करते हुए दिखाई देती है, जो पत्नी के रूप में उनका चरित्र उदात्त भाव को प्रकट करता है। इस प्रकार शैलेश मटियानी ने अपनी कहानियों में दांपत्य जीवन के विविध रूपों को उजागर करते हुए पति-पत्नी के बीच में प्रेम, समर्पण, संतुलन तथा समझौता को प्रमुख स्थान दिया है, जो कि वर्तमान समय में दांपत्य जीवन की प्रमुख आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपन्यास- स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव पृष्ट 15प्रकाशन वर्ष २००८ वाणी प्रकाशन।
2. हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी पृष्ट संख्या 388 प्रकाशन वर्ष २012 राजपाल एंड संस।
3. अमरकोश, श्लोक 38पृष्ट संख्या 214।
4. भारतवर्ष में विवाह एवं परिवार, डॉ. केव एमव कपाड़िया, पृष्ट 45।
5. भारतवर्ष आदि पर्व पृष्ट 4०,41।
6. हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण डॉ. महेन्द्र कुमार जैन, पृष्ट 87।
7. खेल खिलौने, राजेंद्र यादव पृष्ट 158।
8. दस प्रतिनिधि कहानियाँ शैलेश मटियानी पृष्ट संख्या13 प्रकाशन वर्ष 1997, किताबघर दिल्ली।
9. वही....पृष्ठ संख्या 10 (अर्धांगिनी)
10. वही..... पृष्ठ संख्या 26(अर्धांगिनी)
11. वही..... पृष्ठ संख्या 24(अर्धांगिनी)
12. वही..... पृष्ठ संख्या 39(सुहागिनी)
13. वही....पृष्ठ संख्या 4०(सुहागिनी)

14. वही.......पृष्ठ संख्या 42(सुहागिनी)
15. वही....पृष्ठ संख्या 92(अहिंसा)
16. वही...... पृष्ठ संख्या 94(अहिंसा)
17. वही.....पृष्ठ संख्या 106(अहिंसा)
18. कथा पुरुष शैलेश मटियानी (अंतरंग स्मृतियाँ और मुलाकातें) प्रकाशमनु, पृष्ठ संख्या 34 प्रकाशन वर्ष 2004, ग्रन्थ सदन दिल्ली।
19. वही....पृष्ठ संख्या 104

Online Gambling in India: The Dark Reality Behind Digital Entertainment

Soundara Rajendren Nayagi
Former HOD English, Shri Andal Alagar Institute and Technology,
Chennai, Former Journalist & Soft Skill Trainer Frankfinn
Email Address: soundaranayagi14@gmail.com
Phone Number: 9629466316

1. Introduction

Online gambling in India has witnessed an unprecedented rise over the past decade. Fueled by affordable internet, widespread smartphone usage, and relentless marketing campaigns, this digital phenomenon has grown into a multi-billion-rupee industry. What starts off as mere entertainment for many has proven to be a dangerous rabbit hole, with far-reaching consequences for individuals and society at large. Behind every flashy app and celebrity-endorsed promotion lies a growing trail of financial disaster, mental health breakdowns, and legal ambiguity.

2. Real Lives, Real Losses

To comprehend the gravity of the issue, one must look beyond statistics and delve into human stories. In one case form Hyderabad, a young engineering student tragically ended his life after falling deep into gambling debt amounting to ^{1} 7 lakh. In Kerala, a homemaker was caught stealing from her neighborhood's self-help group to fuel her gambling addiction. In Rajasthan, a 16-year-old boy lost over Rs. 1.2 lakh using his father's UPI ID on an online gaming app. These aren't isolated incidents—they're symptomatic of a rising crisis.

3. A Legal Labyrinth

India's legal approach to gambling is as fragmented as its federal structure. Gambling is a state subject under the Constitution, which means each state has the autonomy to make its own laws. While some states like Andhra Pradesh, Telangana, and Tamil Nadu have enacted outright bans on online gambling, others remain silent, inadvertently allowing these platforms to flourish in legal gray zones.

The lack of a central regulatory framework creates a loophole-rich environment that online operators exploit. Many websites operate from offshore jurisdictions, making them difficult to track, tax, or penalize. Moreover, the ongoing confusion between 'games of skill' (like chess or rummy) and 'games of chance' (like roulette or poker) is often manipulated. Gambling operators frequently

rebrand betting games as "skill-based gaming" to circumvent laws. Courts have weighed in, but without a cohesive national policy, enforcement remains inconsistent.

4. Economic Devastation and the Debt Trap

According to a 2023 report by the All India Gaming Federation, over 43% of regular online gamblers had borrowed money to continue playing—most often from unregulated digital loan apps. These apps offer instant credit with interest rates as high as 35%, creating a vicious cycle of loss, borrowing, and further loss. Families are driven into bankruptcy. People sell property, gold, and even essentials to clear mounting debts. A recent case in Mumbai involved a schoolteacher who lost her entire provident fund trying to recover earlier losses.

Middle-class and lower-income households are particularly vulnerable, often seduced by the prospect of doubling small investments. The consequences are not merely financial but ripple into domestic violence, child neglect, and even crime.

5. Psychological Fallout: The Silent Epidemic

The World Health Organization officially recognizes gambling disorder as a behavioral addiction. It engages the brain's dopamine system in a manner similar to drugs and alcohol. Victims experience cravings, tolerance, and withdrawal. In India, mental health experts have flagged a sharp rise in cases related to online gaming addiction, particularly among teenagers and young adults.

Unfortunately, stigma and ignorance continue to be major barriers. In many households, these addictions are mistaken for mere "bad habits" or "time-pass," delaying critical intervention. In India, support for mental health problems like gambling addiction is still very new and limited. There are only a handful of dedicated rehab centers and even fewer that offer services in regional languages or cater to rural populations.

6. The Influence of Celebrities and Social Media

One cannot ignore the role that marketing and popular culture play in glamorizing online gambling. Celebrity endorsements, influencer collaborations, and high-budget advertising campaigns on YouTube, IPL matches, and even school-level gaming tournaments present gambling as a trendy, aspirational activity. Offers like 'welcome bonuses,' 'spin-to-win' games, and constant app notifications keep people addicted by taking advantage of their fear of missing out (FOMO).

It is not uncommon for minors to get lured through fantasy cricket apps and slowly graduate to high-stakes platforms. Despite disclaimers stating "play responsibly," these apps rarely enforce real age checks or spending caps.

7. Policy Solutions: Time for a Unified Front

Given the scale and complexity of the issue, piecemeal measures will not suffice. India needs a multi-pronged, coordinated strategy.

i. Central Legislation and a Regulatory Authority

A national law governing online gambling—like the IT Act does for cybersecurity or the Telecom Regulatory Authority of India (TRAI) does for communication—is essential. This law should clearly

define “gambling,” “skill-based games,” and “betting,” and provide mechanisms for licensing, taxation, monitoring, and penalties. A centralized authority should be empowered to block illegal platforms, ensure compliance, and investigate breaches.

ii. Public Awareness and Education

Digital literacy must expand to include ethical and mental health dimensions. Schools and colleges should run awareness programs about the risks of gambling addiction. Government-led media campaigns—similar to those for tobacco and alcohol—can play a vital role in destigmatizing addiction and encouraging early help-seeking behavior.

iii. Ethical Use of Technology

AI and big data should be used not to increase playtime but to monitor for red flags. Algorithms can track excessive spending, erratic play patterns, or underage usage. Websites should be legally made to set limits on how much users can deposit, allow them to block themselves from playing, and give them break periods to stop for a while.

iv. Corporate and Celebrity Accountability

Influencer and celebrity promotions should be regulated. Any advertisement that glamorizes gambling without a visible warning or disclaimers should be banned. In 2022, the Indian Ministry of Information and Broadcasting issued advisories against surrogate advertising of betting apps through news channels and social media. Enforcement, however, remains lax.

v. Rehabilitation and Support Systems

India must invest in helplines, mental health services, and community support groups focused on gambling addiction. Rehabilitation programs modeled after successful international models—like the UK’s National Gambling Helpline—can offer confidential, accessible support. NGOs and local authorities should collaborate to create safe, stigma-free spaces for recovery.

8. Ancient Lessons, Modern Relevance

The Mahabharata offers a powerful allegory. Yudhishthira, a noble king and learned scholar, gambled away his kingdom, brothers, and wife in a single night—not because he lacked wisdom, but because he lost self-restraint. His downfall was not due to a rigged game but to his own weakness. In today’s context, technology is our modern “game of dice”—an immensely powerful tool that, when misused, can lead to catastrophe.

9. Conclusion: A Call to Awareness and Action

Online gambling is a ticking time bomb disguised as entertainment. It may begin as a harmless diversion but can swiftly spiral into a destructive addiction with grave legal, financial, and psychological consequences. With the growing digital footprint across India, especially among youth and middle-class households, this menace demands immediate and multi-pronged intervention.

To address this, India needs a strong central legal framework that clearly defines and regulates online gambling, backed by effective enforcement and cross-state coordination. Education and awareness must form the foundation—schools, families, and communities should openly discuss the risks and warning signs of digital addiction. Technology platforms must take accountability by enforcing

age restrictions, spending caps, and AI-based red flag monitoring. Public figures and influencers, too, must recognize the weight of their endorsements.

Ultimately, change begins with individual responsibility. As users of technology, we must exercise discipline and make conscious choices about how we spend our time and money. The lesson from the Mahabharata is clear: even the wise can fall without self-restraint. Let us ensure that our pursuit of progress is guided by awareness, ethics, and balance—so that digital innovation uplifts lives rather than dismantles them.

Let us remember: advancement in science and technology is a blessing, but only if we wield it with wisdom, responsibility, and restraint. Without self-control, all progress can quickly turn to peril. Let not the pursuit of thrill or quick riches cost us our peace, dignity, or future.

10. If You or Someone You Know Is Affected by Online Gambling:

- **Speak up** — silence strengthens the trap.
- **Seek help** — legal aid, counseling, and rehab are available.
- **Take action** — report illegal apps and spread awareness.

Together, as a society, we must draw a firm line between recreation and ruin and ensure that the digital world uplifts us rather than consumes us.

Bibliography / References

1. Ministry of Law and Justice. (n.d.). *The Constitution of India*. Government of India.
2. Government of India. (1867). *The Public Gambling Act, 1867*.
3. Government of India. (2000). *The Information Technology Act, 2000*.
4. All India Gaming Federation. (2023). *Annual Report on Online Gaming in India*.
5. National Institute of Mental Health and Neurosciences (NIMHANS). (n.d.). *Online Gaming and Mental Health*.
6. Times of India. (2023). *Maharashtra school teacher loses PF in online gambling*.
7. Hindustan Times. (2023). *Teen spends Rs. 1.2 lakh on gaming apps*.
8. World Health Organization. (2019). *ICD-11: International Classification of Diseases – 11th Revision: Gambling Disorder*.
9. The Hindu. (2022). *Celebrities, fantasy leagues, and the rise of betting in India*.
10. Press Information Bureau (PIB). (2022). *Ministry of Information and Broadcasting advisories on online gaming advertisements*.
11. Bhandarkar Oriental Research Institute. (Ed.). (n.d.). *The Mahabharata: Critical Edition*.
12. KPMG & Internet and Mobile Association of India (IAMAI). (2022). *Online Gaming in India – The Youth Perspective*.
13. Indian Psychiatric Society. (2021). *Position Paper on Behavioral Addictions*.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

स्मार्ट मशीन लर्निंग प्रणाली द्वारा हृदय रोग का पूर्वानुमान : एक व्यवहारिक अध्ययन

के के इश्विन्ता श्री
बी.टेक स्नातक (वी आई टी भोपाल विश्वविद्यालय),
एमबीए छात्रा (एस आर एम इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी)
ईमेल : kkishvinthasree@gmail.com
मोबाइल : 9993932316

1. सारांश

आज के समय में हृदय रोग (दिल की बीमारी) एक आम लेकिन गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन चुकी है। कई बार यह बीमारी तब तक पता नहीं चलती जब तक स्थिति गंभीर न हो जाए। अगर हम समय रहते किसी व्यक्ति में हृदय रोग होने की संभावना को जान सकें, तो इलाज जल्दी शुरू हो सकता है और जान बचाई जा सकती है।

इस शोध में हमने एक ऐसी स्मार्ट प्रणाली पर काम किया है जो मशीन लर्निंग तकनीक का इस्तेमाल करके यह बताती है कि किसी व्यक्ति को दिल की बीमारी होने का खतरा है या नहीं। इसमें हमने तीन तकनीकों का उपयोग किया है—लॉजिस्टिक रिग्रेशन, डिसीजन ट्री और सपोर्ट वेक्टर मशीन। हमने इन तकनीकों को एक डेटा सेट (डेटाबेस) पर चलाकर देखा कि कौन सी तकनीक सबसे सही और सटीक काम करती है।

यह प्रणाली मोबाइल या कंप्यूटर ऐप के रूप में बनाई जा सकती है जिससे लोग घर बैठे ही अपनी जांच कर सकें और समय रहते डॉक्टर से सलाह ले सकें। यह खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत मददगार साबित हो सकती है जहां अस्पताल या डॉक्टर तक पहुँचना मुश्किल होता है।

2. परिचय

भारत में हर साल लाखों लोग दिल की बीमारियों की वजह से अपनी जान गंवाते हैं। यह बीमारियाँ हमारी जीवनशैली, खानपान, तनाव और व्यायाम की कमी जैसी वजहों से होती हैं। अधिकतर मामलों में रोग की जानकारी तब होती है जब स्थिति गंभीर हो चुकी होती है। अगर इस बीमारी की पहचान जल्दी हो जाए तो इलाज आसान और कम खर्च में हो सकता है।

इन्हीं जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, आज के समय में तकनीक की मदद से एक नई दिशा मिल रही है—जिसे हम मशीन लर्निंग कहते हैं। मशीन लर्निंग एक ऐसी तकनीक है जो पुराने डेटा को देखकर खुद सीखती है और भविष्य में क्या हो सकता है इसका अंदाजा लगाती है।

इस शोध में हम एक ऐसी मशीन लर्निंग आधारित स्मार्ट प्रणाली बना रहे हैं जो कुछ आसान से सवालों या मेडिकल डेटा (जैसे—उम्र, ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल, धूम्रपान की आदत आदि) को लेकर यह अंदाज़ा लगा सकती है कि किसी व्यक्ति

को हृदय रोग होने की संभावना कितनी है।

हमने ऐसे डेटा पर काम किया जो पहले से उपलब्ध है और उस पर मशीन लर्निंग की अलग-अलग तकनीकों को लागू किया। इससे हमें यह जानने में मदद मिली कि कौन सी तकनीक सबसे सटीक है और किसका उपयोग भविष्य में किया जा सकता है।

3. उद्देश्य और समस्या कथन

क. समस्या कथन

आज भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों में हृदय रोग तेजी से बढ़ रहा है। समस्या यह है कि अधिकतर लोग या तो अपने स्वास्थ्य की नियमित जाँच नहीं करवाते या जब तक बीमारी का पता चलता है, तब तक वह गंभीर हो चुकी होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो यह स्थिति और भी खराब है क्योंकि वहाँ न तो पर्याप्त डॉक्टर होते हैं और न ही जाँच की सुविधा।

इसलिए जरूरत है एक ऐसी तकनीक की जो लोगों को पहले से चेतावनी दे सके और यह बता सके कि उन्हें डॉक्टर से मिलना चाहिए या नहीं। लेकिन हर किसी के लिए समय पर डॉक्टर से मिलना और महँगी जाँच कराना संभव नहीं होता।

यहीं पर मशीन लर्निंग आधारित स्मार्ट प्रणाली मदद कर सकती है—जो पहले से जमा हुए मेडिकल डेटा को देखकर यह अनुमान लगा सकती है कि किसी व्यक्ति को हृदय रोग होने की कितनी संभावना है।

ख. उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी स्मार्ट प्रणाली बनाना है जो :

- व्यक्ति के मेडिकल डेटा (जैसे उम्र, ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल आदि) के आधार पर उसकी स्वास्थ्य स्थिति का मूल्यांकन कर सके।
- मशीन लर्निंग तकनीकों का उपयोग करके यह अनुमान लगाए कि किसी व्यक्ति को दिल की बीमारी होने की कितनी संभावना है।
- समय रहते मरीज को सचेत कर सके ताकि वह पहले ही डॉक्टर से सलाह ले सके।
- इस प्रणाली को मोबाइल या कंप्यूटर ऐप के रूप में विकसित किया जा सके, जिससे आम जनता को आसानी से उपलब्ध हो।
- ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में डिजिटल स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा मिल सके।

4. प्रस्तावित कार्य प्रणाली

यह स्मार्ट प्रणाली मुख्यतः चार चरणों में काम करती है :

क. डेटा संग्रह

स्वास्थ्य से संबंधित डेटा जैसे उम्र, लिंग, ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल स्तर, धूम्रपान की आदत, पारिवारिक इतिहास आदि एकत्र किया जाता है। यह डेटा पहले से उपलब्ध विश्वसनीय स्रोतों (जैसे UCI डेटासेट) से लिया गया है।

ख. डेटा पूर्व-प्रसंस्करण

डेटा को साफ किया जाता है—जैसे कि यदि कोई जानकारी गायब है तो उसे हटाया जाता है या पूरा किया जाता है। इसके बाद डेटा को मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म के लिए तैयार किया जाता है।

ग. मॉडल चयन और प्रशिक्षण

तीन प्रमुख एल्गोरिद्म पर काम किया गया :

- लॉजिस्टिक रिग्रेशन (Logistic Regression)
- डिसीजन ट्री (Decision Tree)

● सपोर्ट वेक्टर मशीन (Support Vector Machine&SVM)

इन एल्गोरिद्म को पहले से मौजूद डेटा पर प्रशिक्षित किया गया, जिससे वे नए मामलों में सही अनुमान लगा सकें।

घ. जोखिम मूल्यांकन और सुझाव

मॉडल उपयोगकर्ता के डेटा को लेकर यह तय करता है कि व्यक्ति कम, मध्यम या उच्च जोखिम वाली श्रेणी में आता है। यदि व्यक्ति उच्च जोखिम में पाया जाता है, तो उसे तत्काल डॉक्टर से संपर्क करने की सलाह दी जाती है।

5. परिणाम और विश्लेषण

इस अध्ययन में मशीन लर्निंग की तीन विधियों—लॉजिस्टिक रिग्रेशन, डिसीजन ट्री और सपोर्ट वेक्टर मशीन (SVM) का उपयोग यह विश्लेषण करने हेतु किया गया कि हृदय रोग की संभावना बताने में कौन-सा मॉडल सबसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है।

सारणी (Table) 1. एल्गोरिद्म का प्रदर्शन

एल्गोरिद्म का नाम	सटीकता (Accuracy)	विशेषताएँ
लॉजिस्टिक रिग्रेशन (Logistic Regression)	82%	यह मॉडल सरल संरचना वाला है और तेज़ी से परिणाम देता है, सामान्य स्थितियों में उपयोगी।
डिसीजन ट्री (Decision Tree)	85%	इसमें वर्गीकरण की क्षमता बेहतर होती है और यह उच्च सटीकता के साथ पूर्वानुमान करता है।
सपोर्ट वेक्टर मशीन (Support Vector Machine)	83%	जटिल डेटा विश्लेषण में सक्षम है, लेकिन निष्कर्ष देने में अन्य की तुलना में धीमा हो सकता है।

● डिसीजन ट्री (Decision Tree) एल्गोरिद्म ने सबसे अधिक सटीकता दिखाई।

● सभी मॉडल को समान डेटा पर प्रशिक्षित और परीक्षण किया गया, जिससे तुलना निष्पक्ष हो।

● हमने Confusion Matrix, Precision, Recall और F1-Score जैसे मानकों का भी विश्लेषण किया, जिससे हमें यह स्पष्ट हुआ कि Decision Tree वास्तविक जीवन में भी बेहतर परिणाम दे सकता है।

उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया

कुछ सीमित उपयोगकर्ताओं पर जब यह मॉडल परीक्षण किया गया, तो उन्होंने इसे उपयोग में आसान और जानकारी देने वाला बताया। विशेष रूप से वे लोग जो डॉक्टर के पास तुरंत नहीं जा सकते, उनके लिए यह एक उपयोगी प्रारंभिक जाँच उपकरण हो सकता है।

6. वास्तविक जीवन उपयोग

यह स्मार्ट हृदय पूर्वानुमान प्रणाली कई तरह से आम लोगों और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है :

i. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में उपयोग

गाँव और कस्बों में जहाँ विशेषज्ञ डॉक्टर नहीं हैं, वहाँ यह सिस्टम स्वास्थ्य सहायक या नर्स के लिए एक सहायक उपकरण के रूप में कार्य कर सकता है।

ii. मोबाइल ऐप के रूप में उपयोग

यह प्रणाली मोबाइल ऐप के रूप में उपलब्ध करवाई जा सकती है, जिससे कोई भी व्यक्ति घर बैठे अपने स्वास्थ्य डेटा

के आधार पर जोखिम का आकलन कर सके।

iii. टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म पर एकीकरण

इस प्रणाली को टेलीमेडिसिन सेवाओं के साथ जोड़ा जा सकता है, जिससे डॉक्टर रिमोट लोकेशन से भी प्राथमिक जाँच कर सकें।

iv. जागरूकता और समय पर निदान

जिन लोगों को यह पता नहीं होता कि वे खतरे में हैं, वे इस प्रणाली के माध्यम से चेतावनी प्राप्त कर सकते हैं। इससे गंभीर स्थिति से पहले ही इलाज की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है।

7. सीमाएँ एवं भविष्य की दिशा

i. सीमाएँ

सीमित डेटा सैंपल : प्रयोग में प्रयुक्त डेटा सेट में रिकॉर्ड की संख्या सीमित थी, जिससे बड़े स्तर पर परिणामों की पुष्टि नहीं की जा सकती।

सांख्यिकीय विविधता की कमी : सभी वर्गों के लोगों (जैसे आयु, लिंग, जातीयता) का डेटा समान रूप से मौजूद नहीं था।

मूल्यांकन केवल पूर्व-संग्रहीत डेटा पर : मॉडल को रीयल टाइम मरीजों पर व्यापक रूप से नहीं परखा गया है।

स्वतंत्र चिकित्सकीय निर्णय नहीं : यह प्रणाली केवल एक सहायक टूल है, चिकित्सक की सलाह का स्थान नहीं ले सकती।

ii. भविष्य की दिशा

अधिक डेटा का समावेश : भविष्य में मॉडल की सटीकता और उपयोगिता को बेहतर बनाने के लिए अधिक मात्रा में तथा विविध प्रकार के डेटा को शामिल किया जा सकता है।

रीयल-टाइम मॉनिटरिंग : फिटनेस बैंड या स्मार्टवॉच जैसे IoT उपकरणों से सीधे डेटा एकत्र किया जा सकता है।

बोलने योग्य और बहुभाषी इंटरफेस : इसे क्षेत्रीय भाषाओं में और वॉयस-इनेबल्ड बना कर ग्रामीण उपयोगकर्ताओं को अधिक लाभ मिल सकता है।

डॉक्टरों के साथ इंटीग्रेशन : डॉक्टरों की रिपोर्ट और सुझाव जोड़कर यह प्रणाली एक मजबूत डिजिटल हेल्थ इकोसिस्टम का हिस्सा बन सकती है।

AI आधारित जोखिम रैंकिंग : भविष्य में यह प्रणाली प्राथमिकता के आधार पर मरीजों को श्भ्पही ।समतजश श्रेणी में रखकर उन्हें टेलीमेडिकल सलाह से जोड़ सकती है।

8. निष्कर्ष

यह शोध दर्शाता है कि मशीन लर्निंग आधारित स्मार्ट प्रणाली हृदय रोग के पूर्वानुमान में एक उपयोगी और प्रभावी माध्यम बन सकती है।

कम संसाधन वाले क्षेत्रों में यह प्रणाली प्रारंभिक जाँच का सरल, सुलभ और सस्ता विकल्प प्रदान कर सकती है।

डिसीजन ट्री (Decision Tree) एल्गोरिद्म ने सर्वश्रेष्ठ सटीकता (85%) के साथ सबसे अच्छा प्रदर्शन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सही तकनीक के साथ मशीन लर्निंग मॉडल चिकित्सकीय सहायता के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।

भविष्य में यदि इस प्रणाली को सही दिशा और विकास मिले, तो यह भारत जैसे देश में स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है।

संदर्भ

1. WHO Report on Cardiovascular Diseases, 2023
2. Dua, D. & Graff, C. (2019). UCI Heart Disease Dataset
3. Sharma, R. et al. (2022). "Smart Healthcare Prediction Using ML", IJERT
4. Taly, A. (2021). "Introduction to Machine Learning", Springer
5. Kaur, M. (2023). "ML Techniques for Heart Disease Prediction", AI India Journal
6. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR), "भारत में हृदय रोग की प्रवृत्ति और रोकथाम", 2022।
7. सिंह, आर. एवं तिवारी, पी. (2021). "मशीन लर्निंग के माध्यम से स्वास्थ्य पूर्वानुमान : एक अध्ययन", भारतीय कंप्यूटर विज्ञान शोध पत्रिका, खंड 9, अंक 2।
8. Verma, S. et al. (2021). "AI and Heart Disease Prediction using Hybrid Algorithms", Journal of Medical Informatics, Vol. 14(4).
9. Jaiswal, N. (2020). "मशीन लर्निंग का उपयोग कर हृदय रोग का पूर्वानुमान : एक तुलनात्मक अध्ययन", हिन्दी विज्ञान शोध पत्रिका, अंक 6(3)।
10. Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India - National Programme for Prevention and Control of Cancer, Diabetes, Cardiovascular Diseases and Stroke (NPCDCS), 2023 Report
11. Kumar, V., & Aggarwal, R. (2023). "Heart Disease Prediction with ML in Rural Health", Indian Journal of Health Tech, Vol. 8.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

Smartwatch-Based Monitoring System for Parkinson's Patients Using AI

K K Ishvitha Shree
B.Tech Graduate (VIT Bhopal University),
MBA Student (SRM Institute of Science and Technology)
Email: ishvithashree@gmail.com
Mobile: +91 8305618990

Abstract

Parkinson's disease is a progressive neurological disorder that severely affects motor control, balance and daily physical activities. Regular monitoring and early detection of symptom progression are crucial to improving the quality of life of affected individuals. However, most traditional monitoring methods depend on clinic-based assessments that lack real-time and continuous data capture.

This paper proposes a cost-effective, AI-enabled smartwatch system designed to continuously monitor the movements and vital signs of Parkinson's patients during routine activities. The system integrates sensors such as accelerometers and gyroscopes to detect tremors, posture imbalance and movement patterns. Machine learning algorithms analyze the collected data to identify abnormal activity and issue alerts when needed.

The proposed system is lightweight, portable and designed with user comfort and real-world usability in mind. It aims to bridge the gap between clinical diagnosis and at-home monitoring. This research demonstrates how smart wearable technology, combined with artificial intelligence, can transform Parkinson's care by providing real-time support, better tracking and increased independence for patients.

1. Introduction

Parkinson's disease (PD) is a chronic and progressive neurological condition characterized by tremors, rigidity, slowed movement (bradykinesia) and impaired posture or balance. Alzheimer's disease is the most common neurodegenerative disease, with Parkinson's being the second most common. As the disease progresses, daily activities such as walking, writing, or even maintaining body balance become increasingly difficult. According to the Parkinson's Foundation, over 10 million people globally live with Parkinson's and many experience challenges due to a lack of timely monitoring and assistance.

Traditional Parkinson's monitoring relies primarily on scheduled clinic visits, neurological examinations

and patient self-reporting. These methods are limited in capturing the variability of symptoms throughout the day and often miss important real-time indicators. Moreover, frequent hospital visits are not feasible for all patients, especially those in remote or resource-limited settings.

In recent years, wearable technologies have shown significant promise in healthcare applications, including chronic disease monitoring. Smartwatches, in particular, have evolved from being fitness trackers to powerful health companions capable of collecting real-time physiological data. When combined with AI and machine learning, these devices can provide proactive insights into disease progression, detect risk situations (e.g., tremor spikes or falls) and even alert caregivers or physicians.

This paper presents a practical design and prototype of a smartwatch-based monitoring system for Parkinson's patients. The proposed system includes multiple sensors to track hand tremors, daily movement and posture changes. It uses AI models to analyze the data and generate alerts for abnormal behavior. This research aims to create a user-friendly, cost-effective solution that can improve quality of life and empower patients through better self-management and clinical communication.

2. Objective and Problem Statement

Objective

The primary objective of this study is to design and implement a **smart, AI-enabled wearable monitoring system** that assists Parkinson's patients in tracking their daily physical activities and symptoms in real-time. The system focuses on:

- Detecting early signs of tremors and postural instability
- Providing real-time data through onboard sensors (e.g., accelerometer, gyroscope)
- Generating notifications for family members or caregivers when unusual movement patterns are identified
- Enhancing the patient's autonomy and reducing dependency on continuous hospital visits
- Offering affordable and easy-to-use technology for home-based care

Problem Statement

Parkinson's disease symptoms vary throughout the day and can worsen without timely detection or support. Existing clinic-based monitoring techniques are limited by their episodic nature, reliance on self-reporting and lack of real-time feedback. There is a clear **gap between clinical observation and continuous daily-life tracking**.

Patients often experience tremors, sudden stiffness and balance loss in their homes — when no clinical help is available. Without proper monitoring, these symptoms can go unnoticed or untreated, leading to falls, reduced mobility and psychological distress.

This study addresses the need for a **non-invasive, real-time, wearable solution** that can assist in **tracking, detecting and alerting** in response to Parkinson's-related movements, enabling **timely intervention** and **better disease management**.

3. Methodology

The proposed system is a **smartwatch-based wearable device** embedded with motion and vibration sensors, designed to detect Parkinson's-specific symptoms during routine activities. The following essential modules make up the methodology:

3.1. Hardware Design

- **Sensors Used:**
  - **Accelerometer**: Captures movement and tremors
  - **Gyroscope**: Measures angular motion and posture shifts
  - **Pulse Sensor (Optional)**: Can be integrated to track variations in heart rate and detect stress-related physiological changes.
- **Microcontroller:**
  - The system uses a compact microcontroller (e.g., Arduino Nano/ESP32) to process sensor data locally
- **Power Supply:**
  - Rechargeable lithium-ion battery with low-power consumption design

3.2. Data Acquisition and Processing

- Real-time data is collected from the sensors during hand movements, walking, or rest.
- Sensor readings are continuously logged and analyzed using a predefined threshold mechanism.
- AI/ML models can later be trained (in extended versions) using labeled datasets to improve accuracy.

3.3. Tremor Detection Logic

- An algorithm has been developed to analyze vibration signals in order to identify the **tremor's strength and rate of occurrence**
- Movement outside normal ranges (based on medically accepted standards) triggers an alert system.
- The system's threshold settings can be adjusted based on the user's specific condition and symptom severity.

3.4. Alert and Notification Module

- If abnormal tremor patterns or posture instability are detected, the system triggers:
  - A **local alert** (e.g., buzzer or vibration)
  - Optional message or notification to a **mobile app or** to the **personal assistant device**

3.5. User Interface (Prototype Stage)

- A basic LCD display or LED indicator shows real-time system status.
- In future versions, smartphone app integration is planned for better visualization and analytics.

4. Results and Discussion

The proposed smartwatch-based system was implemented as a prototype using motion sensors and a microcontroller board. Initial testing was carried out in a simulated environment using controlled hand tremors and movement patterns to mimic Parkinson's symptoms.

4.1 Key Observations:

- The **accelerometer and gyroscope** successfully captured tremor frequency between 4–6 Hz, which matches typical Parkinsonian tremors.
- The **system reliably triggered alerts** when tremor intensity exceeded the predefined threshold range.
- The **delay between movement detection and alert activation** was minimal (approx. 1–2 seconds), making it suitable for real-time support.
- The **hardware design** was lightweight and wearable, with average battery life lasting up to 10–12 hours under continuous monitoring.

4.2 Limitations Observed:

- Due to the prototype nature, real Parkinson's patients were not used in testing; thus, results are based on simulated data.
- Network-based alerting (SMS/app integration) was not yet implemented in full, but planned in future development stages.
- Variability in tremor patterns requires adaptive threshold tuning for different users — which future AI-based models can address.

Overall, the system demonstrated **proof-of-concept success** in detecting and reacting to simulated Parkinson's symptoms, validating the feasibility of a wearable assistive tool.

5. Real-World Applications

This system has the potential to benefit Parkinson's patients and caregivers in various real-life situations:

5.1. Home-based Monitoring:

Patients can be monitored at home continuously, reducing the need for frequent hospital visits and improving comfort and independence.

5.2. Fall Detection and Prevention:

With posture imbalance detection, the system can alert family members when the patient is at risk of falling.

5.3. Caregiver and Doctor Integration:

Data collected can be shared with caregivers or doctors, providing insight into patient condition over time and aiding in treatment planning.

5.4. Rural and Remote Areas:

In areas where specialist care is unavailable, this system can act as a basic diagnostic support and

early warning device.

5.5. Healthcare Systems and Telemedicine:

The system can be integrated with telehealth platforms to enhance remote monitoring services, especially for aging populations.

6. Literature Review

In recent years, several studies have explored wearable technology for Parkinson's disease monitoring, aiming to address limitations of traditional clinical evaluations. Goetz et al. (2004) introduced the revised Unified Parkinson's Disease Rating Scale (MDS-UPDRS), which is widely used to assess symptom severity, but remains clinic-bound and lacks continuous tracking capability.

Patel et al. (2012) proposed a system that uses multiple wearable sensors to monitor motor fluctuations, showing how accelerometers and gyroscopes can quantify tremor and movement. Similarly, Rigas et al. (2012) used machine learning to classify tremor patterns based on accelerometer data, achieving promising accuracy in controlled environments.

However, many of these systems rely on bulky sensor setups, complex calibration, or are limited to research environments. Few have been implemented as compact smartwatch-based solutions suitable for daily home use. This research addresses that gap by presenting a **lightweight, real-time monitoring system** that leverages commonly available hardware with practical application potential.

By simplifying sensor integration and focusing on user comfort, this paper contributes to the growing field of **AI-powered wearable healthcare solutions** tailored specifically for neurodegenerative conditions.

7. Future Scope

While the current prototype successfully demonstrates core functionality in tremor detection and real-time alerting, there is ample scope for future enhancements.

A key area of improvement is the **integration of machine learning algorithms** trained on real patient data to personalize detection thresholds. Adaptive models can better distinguish between Parkinsonian tremors and other benign movements, reducing false alarms. Additionally, **mobile app integration** can provide visual feedback, store historical data, and allow caregivers to track patient activity remotely.

Expanding the system to include **fall detection, gait analysis**, and **voice monitoring** can make it a more comprehensive support tool for Parkinson's management. Future versions can also explore cloud-based data storage, periodic doctor feedback loops, and multilingual voice interaction to support elderly users across different regions.

Ultimately, such advancements can transform the prototype into a **clinically useful assistive technology** accessible to a broader patient population.

8. Conclusion

This research presents a practical, low-cost and non-invasive solution to assist Parkinson's patients in monitoring their daily physical activity and detecting tremor episodes in real-time. By integrating

accelerometer and gyroscope sensors into a wearable smartwatch system, the model successfully detects abnormal movements associated with Parkinson's disease.

The results validate the feasibility of such a device to offer continuous support outside clinical settings, especially in rural or remote areas. The proposed design enhances patient autonomy, supports early intervention and opens opportunities for AI-driven healthcare innovation.

Though the prototype was tested in a controlled setup, future improvements can include mobile app integration, machine learning-based personalization and broader clinical validation with real patients.

In conclusion, this smartwatch-based monitoring system holds strong potential to contribute meaningfully to the field of assistive healthcare technology and improve the lives of Parkinson's patients.

References

1. Goetz, C.G. et al. (2004). "Movement Disorder Society-sponsored revision of the Unified Parkinson's Disease Rating Scale (MDS-UPDRS)." *Movement Disorders*.
2. Patel, S. et al. (2012). "Monitoring Motor Fluctuations in Parkinson's Disease Using Wearable Sensors." *IEEE Transactions on Information Technology in Biomedicine*.
3. Rigas, G. et al. (2012). "Tremor Analysis from Accelerometer Data Using Machine Learning Algorithms." *Physiological Measurement*.
4. Sharma, R. et al. (2021). "AI-based Smart Healthcare Wearables." *Indian Journal of Emerging Tech*, Vol. 9.
5. Parkinson's Foundation. (2023). "Understanding Parkinson's Disease." Retrieved from https://www.parkinson.org/

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ और मानवतावाद

प्रो. ज्योति किरण
(हिंदी विभाग) महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर
मोबाईल नं. 9450431549

शोध सारांश : भारतीय समाज के जीवन दर्शन एवं साहित्यिक परम्पराओं में 'मानवता' को सर्वोपरि माना गया और मानवता का विकास साहित्य का अंतिम लक्ष्य है। भारतीय संस्कृति में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की प्रार्थना वस्तुतः मानवतावाद को लक्षित है। मानवतावाद की स्पष्ट अवधारणा नहीं होने के बावजूद यह सूत्र वाक्य मानवतावाद का पथ प्रदर्शक है। त्याग, तपस्या, सहिष्णुता, सद्भाव, प्रेम, दया, करुणा, ममता, मैत्री आदि मन की उदात्त भावनाएँ मानवतावादी विचारधारा के प्रमुख आधार है। इस विचारधारा के अनुसार आदर्श जीवन मूल्य ही उच्चतर जीवन स्तर के निर्वाह की प्रेरणा दे सकते हैं। समस्त मानव का कल्याण ही मानवतावाद के केन्द्र में है। मानव निर्मित जो सामाजिक विसंगतियाँ और भेदभाव है उसे दूर करने, मिटाने का प्रयास मानवतावाद का मूल लक्ष्य है। आधुनिक युगीन मानवतावाद ईश्वर में नहीं बल्कि मानव में ही स्थित अजेय परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास रखता है। मानवतावाद में मानव की अंतर्निहित अशेष शक्तियों, विकास की अनंत संभावनाओं का दर्शन निहित है। साहित्य में मानवतावादी स्वरूप की प्रतिष्ठा मुख्यतः दो प्रकार से हुई है। एक तो यह कि व्यक्ति अंततः सदाशयी है। कठोर से कठोर व्यक्ति के हृदय में भी करुणा की स्त्रोत स्विनी प्रवाहित होती है। होमर की अमर कृति 'इलियड' इस संदर्भ में विशेष रूप से देखी जा सकती है। दूसरा सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति से सम्बंधित है। प्रायः सभी भाषाओं के साहित्यकारों ने सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति देकर निम्नवर्ग के लोगों के पक्ष में अपनी आवाज उठाई है। साहित्य और समाज में व्यक्ति की उदात्त प्रवृत्ति को समझने, उसका अध्ययन, अनुशीलन करने तथा उसके सामाजिक धरातल पर व्यवहृत करने का सक्रिय प्रयास आरंभ से ही रहा है, और भौतिकवाद के उत्कर्ष, औद्योगिक और राजनीतिक क्रांतियों की परम्परा तथा परस्पर विभिन्न धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक मान्यताओं के बावजूद मानवता एक अखंड चेतना के रूप में निरंतर प्रवाहित होती रही है।

बीज शब्द : मानवतावाद, समाज, संघर्ष, कविता, भवानी प्रसाद मिश्र, मूल्य, समानता, असंतोष, शोषित, दया, सम्वेदना।

शोध का उद्देश्य : मानव समाज में मानवतावाद एक अत्यंत स्वाभाविक और सहज पहल है। मानव होने के नाते मानवता मनुष्य के स्वाभाविक गुण हैं। मानवता समग्र सृष्टि, प्रकृति, समग्र धरती को पोषित पल्लवित करती है। मानवता के विपरीत जब हम कार्य करते हैं तब विभिन्न प्रकार की समस्याएँ सामने आती है। मानव जब मानवता के डोर से बंधने के बजाए जातिगत, धर्मगत, वर्गगत डोर से बंध जाता है तब नाना संघर्ष सामाजिक, पारिवारिक स्तर पर देखा जाता है। सीमित, संकीर्ण स्वार्थ के वशीभूत मनुष्य अपनी अनंत कामनाओं को पूरा करने मनुष्य में प्रकृति और दूसरे लोगों की कामनाओं, भावनाओं की अनदेखी करता है। आकंठ लोभ में डूबा व्यक्ति सामाजिक, राष्ट्रीय दायित्व से बेखबर होता है। मानवतावादी कवि- भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में क्षीण होती मानवता की पीड़ा व्यंजित है। किसी व्यक्ति का मन जितना सामाजिक

होगा संघर्ष उतना ही न्यूनतम होगा। हर कवि मानवता के पक्ष में खड़ा होता है लेकिन भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का मूल ध्येय मानवता के वृहतर आयामों को स्थापित करना है। मानवतावादी चिंतन से ही समाज के सभी वर्गो का उत्थान संभव है। सभी मानव को मानव होने का गौरव तभी मिल पाएगा जब मानवतावादी चिंतन का प्रचार-प्रसार होगा। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कवि भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में मानवतावादी चिंतन पर प्रकाश डालना है। आज समाज में जिस तरह के संघर्ष और समस्याएँ है उससे सामाजिक-सांस्कृतिक ताना-बाना क्षत-विक्षत एवं लहूलुहान है। ऐसे समय में कवि की कविताएँ मानव मन के अंदर मानवता का संचार कर उसे उदात्त बनाती हैं। मानवतावादी होना कोई विमर्श और वाद नहीं है, बल्कि यह मनुष्यता की पहचान है। हमारी पहचान न खो जाए इसलिए कवि की कविताएँ हमे मनुष्यता की ओर ले जाती है।

प्रस्तावना : मानवतावाद का दूसरा अर्थ मानववाद भी है। मानवतावाद अंग्रेजी के 'Humanitarianism' का पर्याय है। बृहत् अंग्रेजी हिंदी कोष के अनुसार ह्यूमेनेटिरियनिजूम का अर्थ लोकोपकार वाद, जनसेवावाद, मानव सेवावाद, लोकोपारिता, जनसेवा वाद आदि दिया गया है। पाश्चात्य विचारक शिलर ने मानवतावाद को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "मानवतावाद वह दर्शन है जिसमें मानवीय ज्ञान, मेघाशक्ति, विज्ञान और साहित्य के केन्द्र में मानव को प्रविष्ठ किया है।"(1)

मानव प्रकृति की सबसे खूबसूरत निर्मिति है, क्योंकि मनुष्य ही इस दुनिया को खूबसूरत बना सकता है, बनाए रख सकता है। 'सबार ऊपर मानुष रे भाई, तहार ऊपर न कोई' चण्डीदास जी का यह कथन मानवतावाद का बुनियादी मंत्र है। एच. जे. मुलर ने मानवतावाद की परिभाषा इस प्रकार दी है :

"मानवतावादी विचार और प्रकृति के क्षेत्र में मानव के स्थान को सर्वोच्च मानने की भाव विधा है। वह भाव संसार में मानवीय शुभ एवं सौंदर्य को मन साम्राज्य के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करता ह और सृष्टि में मानव को किसी भी बाह्यांत शक्ति या इच्छा का दास नहीं रहने देता।"(2)

मानवतावादी विचारधारा भारतीय साहित्य और संस्कृति में अति प्राचीन काल से चली आ रही है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय चेतना बौद्धिकता, वैज्ञानिकता और मानवतावाद की ओर अग्रसर हुई। विदेशी साहित्य के साथ-साथ भारतीय साहित्य में भी समाज की उदात्त प्रवृत्ति को जानने तथा उसके सामाजिक व्यवहारिक रूप प्रदान करने का प्रयास होता रहा है। मानवतावाद युग की नवीन चेतना से समाज के साथ-साथ संपूर्ण मानव का कल्याण चाहता है। भारतीय मनीषी आचार्य गुलाब राय ने मानवतावाद को परिभाषित करते हुए लिखा है : "मानवतावाद ने कविता को जीवन के संपर्क में लाने की माँग पेश करके शोषित, पीड़ित मानवता का पक्ष लिया। किसान मजदूरों की हिमाकत इसका मुख्य ध्येय हुआ और पूँजीपतियों को पानी पीकर कोसना इसका धर्म बना।"(3)

सामाजिक असमानता और आर्थिक विषमताओं को दूर करने का संदेश साहित्य में स्थापित करना मानवतावाद का उद्देश्य है इसलिए इसे जनवाद के रूप में भी देखा जाता है। रांगेय राघव ने कहा है—मानवतावाद को जनवाद तथा वास्तविक यथार्थवाद के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रकार मानवतावादी आदर्श की स्थापना कारुण्य, पीड़ा शोषण और दुःख की भूमिका पर ही होती है। भारत के प्राचीनतम वांग्मय ऋगवेद में भी मानव समाज की उत्पति, मानव समाज के सुख और व्यवहार की सात्विकता की ही कामना प्रमुख रूप से अभिव्यक्त हुई है। मानवतावादी आदर्श के उपकरण उपनिषदों में भी स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ते हैं। डॉ. राधाकृष्णन ने अपने ग्रंथ 'East and West' में लिखा है— "आत्मा की निर्मलता को स्थिर रखना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। --------------- सच्च ऐश्वर्य मानसिक है, भौतिक नहीं। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि भारतीय प्राचीन जीवन सम्बन्धी आध्यात्मिकता का आदर्श स्पष्ट हो जाता है। हिंदू धर्म में इसी आध्यात्मिक आदर्श को सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। इसीलिए सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय साहित्य में इसी दिशा में प्रशस्त होने के निर्देश प्राप्त होते हैं। भारतीय मनीषियों ने व्यक्ति में उदात्त गुणों और सात्विकता की कल्पना करते हुए उसे ईश्वर का प्रतिरूप बतलाया है।"(4)

डॉ. राधाकृष्णन ने मानव में देवत्व की स्थिति मानी है। मानव के व्यक्तित्व में सात्विक गुणों और प्रेम की उदात्त भावना की स्थिति को मानना ही मानवतावादी आदर्श को प्रस्तुत करना है। वैदिक साहित्य में भले ही मानवतावाद शब्द का प्रयोग

नहीं हुआ है लेकिन जिन उदात्त आदर्शों की प्रतिष्ठा हुई है वो मानवता के विकास से ही सम्बंधित है। कालांतर में महात्मा बुद्ध के उपदेशों से मानवतावादी आदर्श का गहरा परिचय मिलता है। डॉ. राधाकृष्णन ने अपने ग्रंथ पूर्व और पश्चिम (East and West) में लिखा है—"बोधिसत्व सभी प्राणियों को उसी प्रकार प्रेम करते हैं, जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने एकमात्र पुत्र को प्रेम करता है। जिस प्रकार चिड़िया अपने बच्चों को चाहती है, और उनकी देखभाल करती है उसी प्रकार का व्यवहार बोधिसत्व सभी प्राणियों के साथ करते हैं।"(5)

जैन धर्म में भी मानवतावादी समभाव के आदर्श लक्षित होते हैं। संत साहित्य में लोककल्याण एवं लोक मंगल की भावनाएं प्रबल थी। संत साहित्य में व्यक्ति और समाज दोनों को समान महत्व दिया गया है।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में मानवतावाद—कवि भवानी प्रसाद मिश्र मानते हैं कि सभी मानव समान है और महान है। लेकिन भारतीय सामाजिक संरचनाओं में जातिगत, धर्मगत, वर्गगत आदि विसंगतियों के कारण मानव आपस में बँटे हुए हैं। संत साहित्य में भी सभी संत कवियों ने सभी मानव को एक समान माना। मानवतावाद में जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय, छूत-अछूत के लिए कोई स्थान नहीं है।

भवानी प्रसाद मिश्र लिखते हैं—

"पिछले सौ बरसों में कितने संत सुधारक
तुकाराम दादू, कबीर, कणप्पा, नानक
हमें सिखाने आए सब मानव समान है
सब छोटे हैं सब महान हैं।
मगर साफ यह बात हमारे गले न उतरी
हम पर चढ़ी चुड़ैल छूत की, भले न उतरी
लेकिन अब तो हमें होश में आना होगा
और नहीं तो मिटना और मर जाना होगा"(6)

छुआछूत सामाजिक कलंक है। आधुनिक भारतीय समाज में छुआछूत की पीड़ा कभी-कभी सामने आ जाती है। अज्ञानता, गरीबी, नफरत, हिंसा, अशिक्षा सब मानवता के दुश्मन हैं। भवानी प्रसाद मिश्र समाज को खुशहाल और समृद्ध देखना चाहते हैं—

"अज्ञान, गरीबी, द्वेष, घृणा सबके दुश्मन
हमको भी इनके देखे से दुःख होता है
और अगर ज्ञान आनंद स्नेह
विश्वास हमारे हाथों में रचते हैं
तो हमको भी सुख होता है।"(7)

एक सुखद समाज की आकाँक्षा में कवि अपने भावों की अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से करते हैं। मानवतावादी दृष्टि में समन्वय की भावना को महत्वपूर्ण माना गया है। संत कवियों से लेकर आजतक के भक्तों में समन्वय की भावना दृष्टिगोचर होती है। समाज में यह समन्वय स्थापित करने के लिए शोषण और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष भी आवश्यक हो जाता है—

"युद्ध मरण धर्मा काम का शौक नहीं
जरूरत हो जाती है...
जब वह देखती है कि
कही भी कोई भी
नहीं सुन पा रहा है उसकी प्रार्थना....
तब वह अंतिम अभिव्यक्ति के लिए

हो जाती है सन्नद्ध
अंतिम अभिव्यक्ति के लिए
सचमुच, अंतिम अभिव्यक्ति के लिए....”[8]

सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन के लिए यथास्थिति के खिलाफ आंदोलन ही एकमात्र रास्ता है। लेकिन सामाजिक जड़ता अकर्मण्यता के कारण हताशा व्याप्त है—

“जहर तेज होता जा रहा है
समूचा देश तेज खोता जा रहा है
अब आँधी भी आती है तो
धूल नहीं उठती
किसी भी गर्व से छाती
फूल नहीं उठती
गद्दारी के लिए हर व्यक्ति
न्योता जा रहा है।”[9]

भवानी प्रसाद मिश्र हिंदी के उन विरल कवियों में आते है जिन्हें समय जन्म देता है। प्रसिद्ध आलोचक प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते हैं—“नसें तो नसें, जिसे हड्डियों में भी अपना दिल धड़कता लगता है, जो किसी बौद्धिक तर्क के सहारे कविता नही रचता, बल्कि जो कविता लिखता ही नहीं, कविता उसे लिखती है; जिसे आज की कविता पिछले तमाम युगों की अपेक्षा अतीत से सबसे अधिक जुड़ जाने योग्य लगती है, जो कोकिल, हवा, नदी, मेघ, पिचकारी, आँचल और दूध की भाषा बोलता है उसके बारे में हमें ऐसा क्यों लगता है कि वह पिछले पाँच दशकों का विरल कवि है।”[10]

भवानी प्रसाद मिश्र किसी भी वाद-विवाद से परे होकर मानव मन की अभिव्यक्ति करते रहे। अकेले और निविड़ अपकेलेपन में भी वे निस्संग नहीं रहे। उनके साथ समूची प्रकृति और मनुष्य रहा। वे काव्य को मानवात्मा के खालिस सुख और खालिस दुःख की अभिव्यक्ति थे। मनुष्य सभी प्रकार के मानसिक, शारीरिक जकड़न से मुक्ति चाहता है। घृणा, द्वेष, दैन्य, भय, संशय से मुक्ति के लिए सभी संघर्षरत हैं—

“इन्होंने अन्न नहीं खाया है
खून पिया है
इन्होंने आदमियों का नहीं
दरिन्दों का जीवन जो जिया है
भाईबंद माने नहीं जाते ये चेहरे
हमसे बिल्कुल पहचाने नहीं जाते थे चेहरे”[11]

वे अपराजित हृदय के कवि थे। और कोरे कवि भी नहीं थे। प्रसिद्ध लेखक, आलोचक विजय बहादुर सिंह ने लिखा है—

“उनकी जिंदगी दोनों किनारों के घाटों पर एक खेवक की नाव की तरह इस पार से उस पार को जोड़ने की कोशिश में लगी रहती थी। एक किनारे पर जीवन यथार्थ की भयानक चुनौतियाँ थी और एक सजग नागरिक का दायित्वबोध। दूसरे पर कविता की पुकार। भवानी भाई बड़ी खूबसूरती से दोनो राग गाते थे। उन्हें कविता भी सिर्फ इसलिए प्रिय थी, क्योंकि वह इस लड़ाई के आड़े दिनों में एक गहरे और भरोसेमंद दोस्त की तरह काम आती थी।”[12]

बेमिसाल संघर्ष और बलिदान के पश्चात हासिल हुई स्वतंत्रता के बाद भी सामाज़िक संघर्ष और भेदभाव खत्म नहीं हुए। ऐसी स्थिति में कवि का हृदय व्यथित हो जाता है—

"यह अछूत वह काला गोरा
यह हिन्दू वह मुसलमान है
वह मजदूर और मैं घनपति
यह निर्गुण वह गुण विधान है।"(13)

सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा, मैत्री, शांति, सद्‌भाव सहिष्णुता मानवता के मूलभूत गुण हैं। इस गुण के उजागर होते ही मानव का उदात्तीकरण हो जाता है। समस्याएँ धीरे-धीरे विलीन हो जाती है—

"देश के हर गाँव शहर और कस्बे की
चिता चुपचाप जलने नहीं दी जाएगी
मैं एक ही जिंदा आदमी (महात्मा गाँधी)
इस ऊँचाई से आवाज लगाऊँगा
लाशों को जगाउँगा
लाशे जागेंगी
और नया एक दूसरा जश्न
मनाया जाएगा
नए सिरे से इस देश की धरती को
शस्य श्यामला बनाया जाएगा।"(14)

कवि जगत् की जीर्ण पुरातन भावनाओं, पुरानी रुढ़ियों, पुरानी विचारधाराओं को मिटाकर एक नयी विचारघ्धारा को स्थापित करने के पक्षधर है। कवि को आशा है कि समय और समाज अवश्य बदलेगा—

"ज्यादातर आँखें खुश हैं कि
लगभग खत्म एक आशा ने
फिर जैसे सिर उठाया है
घाव दुखाने वालों का दल
इस अनपेक्षित से थोड़ा ही सही, घबराया है
और गर्दन कुछ झुकी हुई है
प्रार्थना के भाव से।"(15)

'गाँधी पंचशती' में मानवतावादी स्वर अधिक मुखर है। मानव के सुख-दुःख से प्रेरित कवि जगत् में सत्य और अहिंसा के माध्यम से एक नूतन युग के निर्माण का आकांक्षी है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में मानवतावादी कवि भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं अभिव्यंजित मानवतावादी प्रवृत्तियों का अनुशीलन किया गया है।

भवानी प्रसाद मिश्र उन कवियों में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जिनका पुरातन के प्रति मोह भी है और आधुनिकता के प्रति लगाव भी, क्योंकि मनुष्य पुरातन से जुड़कर अपनी परंपराओं, संस्कृति को जान पाता है तथा आधुनिकता से जुड़कर वह आधुनिक ज्ञान विज्ञान से अपने को सम्बद्ध कर पाता है। भवानी प्रसाद मिश्र को सच्चा कवि हृदय मिला है। अनुभूति की मार्मिकता और अभिव्यक्ति की सरलता ने उनकी कविताओं को लोकप्रियता के विविध सोपनो पर ला बिठाया है। पूंजीपतियों द्वारा हो रहा शोषण, शासन से शोषण, अफसरशाही से शोषण आदि अनेक समस्याओं से जब आम जनता त्रस्त हो रही थी उस समय भवानी प्रसाद मिश्र ने मानवतावादी दृष्टि को अपनाकर कविताएं लिखी।सामान्य आदमी को केंद्र में रखकर कविता

लिखना एक लोक धमी और मानवतावादी कवि की पहचान है।

वर्तमान युग मूल्यों के विघटन का युग है। समस्त प्राचीन अच्छे मूल्य धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं आज का समय अत्यंत चुनौतीपूर्ण और संघर्षपूर्ण प्रतीत हो रहा है। मनुष्य के प्रबल स्वार्थ ने ज्ञान विज्ञान की अद्‌भुत शक्ति को कल्याण के मार्ग से हटाकर उसे नरसंहार के मार्ग पर ला खड़ा किया है। मानवतावाद का केंद्र बिंदु मनुष्य है और मानवतावाद का सर्वभूत सिद्धांत बुद्धि पर आश्रित है। मानवतावाद का संबंध आदर्शवाद से भी अधिक है मानवतावाद का संबंध आगे चलकर नैतिकता से भी हो जाता है। मनुष्य आज जिस शोषण मुक्त न्याय और समानता के सिद्धांतों पर आधारित जनतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था की आकांक्षा में लगा है उसमें वह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में मानवतावाद का विकास करना चाहता है जिससे सारे विश्व में बंधुत्व का भाव पैदा हो सकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि मानवतावाद के सिद्धांतों का प्रत्यक्ष जीवन में प्रयोग हो और मानवतावाद के विविध आयामों का सामाजिक स्तर पर सहजता से ग्राह्य हो। मानवतावादी मूल्यों जैसे अहिंसा, प्रेम, विश्व बंधुत्व, सहिष्णुता, परोपकार, दया, करुणा, मैत्री, शांति, सद्‌भाव, सहिष्णुता आदि का प्रचार प्रसार जितना अधिक होगा मानवतावादी चिंतन उतना ही प्रखर होता जाएगा। मानवतावाद में मनुष्य की महिमा को प्रतिष्ठित करने का स्वर है। मानवतावाद मानकर चलता है कि मनुष्य के भीतर पाशविक और दिव्य दोनों प्रकार की शक्तियां है और इन शक्तियों में दिव्य शक्ति को उजागर करना मानवतावाद का लक्ष्य है। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में मानव मूल्यों के प्रति आस्था एवं मानवीय संवेदनाएं विशेष रूप से सामने आती है समस्त मानव जाति के लिए कल्याण की भावना उनके काव्य में सर्वत्र देखी जा सकती है।मानवतावाद और मानवीय मूल्यों के प्रति कवि की सोच अत्यंत गंभीर है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में मानवतावाद के विभिन्न आयाम उपलब्ध हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शिलर एफ० सी० एस०, ह्यूमेनिटेनिज्म घूमेनिरेटिनिज्म, इनसायक्लोपिडिया ऑफ रिलीजन एंड एथिक्स, पृ०830
2. मूलर एच० जे० मूलर, द ह्यूमेनिस्ट फ्रेम सं० हक्सले, जार्ज ऐलेन एण्ड अनविल लि० लंदन, पृ०402
3. गुलाबराय, आचार्य, काव्य के रूप, प्रकाशक-आत्माराम एण्ड संल, दिल्ली, पृ०55
4. राधाकृष्णन, पूर्व और पश्चिम (East and West), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ०19
5. वही, पृ०28
6. मिश्र भवानी प्रसाद, गाँधी पंचशती, सरला प्रकाशन, दिल्ली सं० 1969, पृ०14
7. वही पृ०148
8. मिश्र भवानी प्रसाद, त्रिकाल संध्या, राजपाल प्रकाशन दिल्ली, सं० 1978, पृ०65
9. वही, पृ०124
10. श्रोत्रिय प्रभाकर, कवि परम्परा तुलसी से त्रिलोचन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2013, पृ०196
11. मिश्र भवानी प्रसाद, त्रिकाल संध्या, राजपाल प्रकाशन दिल्ली, सं० 1978, पृ०122
12. सिंह विजय बहादुर, 'व्यक्ति थे पहले तुम अब समय हो', समकालीन सृजन संचयन, सं० शंभुनाय, प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता, प्रथम संस्करण 2018, पृ०260
13. मिश्र भवानी प्रसाद, गाँधी पंचशती, सरला प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 1969, पृ०15
14. मिश्र भवानी प्रसाद, त्रिकाल संख्या, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1978, पृ०28
15. मिश्र भवानी प्रसाद, गाँधी पंचशती, सरला प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1969, पृ०339.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

Angling Cleopatra, Drawn Antony: The Shades of A New Politics of Gender in *Antony and Cleopatra*

Anas Tabraiz

Give me mine angle. We'll to th'river. There,
My music playing far off, I will betray
Tawny-finned fishes. My bended hook shall pierce
Their slimy jaws, and as I draw them up
I'll think them every one an Antony
And say, "Aha! You're caught." (Act 2 Sc. 5)

O! Thy vile Lady!
She has robbed me of my sword (Act IV, Sc. 14)

Shakespeare's presentation of the affair between Antony and Cleopatra is one of the most mature and complex depictions of love not only in Shakespearean, but all Elizabethan, drama. The primary interest comes from the fact that the two lovers around whom the play revolves are quite past their youth and both have been in several erotic and marital alliances before they meet each other. At the opening of the play, we find Antony, an adherent of the old feudal world who finds himself bedazzled by a woman who refuses to be 'pinned down', comprehended and emptied of the traits of which she holds a huge variety. Cleopatra clearly appears on top of her game, while, Antony, the mighty warrior, follows her around as her erotic object. As the play progresses, "Antony declines in greatness," by losing integrity in Rome and "Cleopatra rises" in triumphing over Octavius (Doran 170). In spite of him being a soldier and a politician, Cleopatra has no compunctions in distracting Antony with carnal pleasures (like the fish is with music) to gain power through and over him. The interesting thing about the relationship is that Cleopatra knows what she is doing. Cleopatra's 'infinite variety' is what keeps Antony distracted while she can laugh him 'out of' and 'into patience'. Cleopatra is a master of performance who can bring Antony to a point of moral unconsciousness where she might dump her femininity on him and assume the garb of his masculinity. These facts about the two lovers show them as inhabitants of two incommensurable worlds.

The appearance of Nicollo Machiavelli on the European political scene had brought about a rift in the code that ruled the old feudal world and the one that had begun to define modern politics. The

love of Antony and Cleopatra is Shakespeare's testimony to the important political shift and the dynamism that it brings about in the gender roles and consequently in erotic relations. *Antony and Cleopatra* is a play that marks the Elizabethan shift from a politics of physical duels and bloodshed to the one of language, performance and discourses. A. C. Bradley's notes this shift when he tells us that,

. . .people converse, discuss, accuse one another, excuse themselves, mock, describe, drink together, arrange a marriage, meet and part, but they do not kill, do not even tremble or weep.

To Bradley, the play consciously eschews events that

. . .appeal most powerfully to the dramatic feelings—scenes of action or passion which agitate the audience with alarm, horror, painful expectation, or absorbing sympathies and antipathies (*Oxford Lectures* 283-4).

In the paper, I would like to discuss how a historical change in structures of human power leads Antony, in spite of being a masculine Icon, a 'triple pillar of the world' to be transformed into "a strumpet's fool".

By the late 16th century, the European world had already undergone a significant transformation with the impact of Machiavellian thought on the understanding of power, politics and morality on a large part of the continent. J.G.A. Pocock in his important book *The Machiavellian Moment: Florentine Political Thought and the Atlantic Republican Tradition* (1975) shows how civic humanism in the Renaissance, the qualities of virtu, public virtue, and citizenship gave way to modern political thought. Pocock shows how, what he calls, *The Machiavellian Moment* becomes an important juncture when the ideals of classical civic virtue are disrupted by a popular awareness about time, contingency and power.

Writers like Stephen Greenblatt and Quentin Skinner discuss the changes that Machiavelli brought to international politics, in terms of language and culture and in terms of pure politics, in their respective studies. Appropriately branded the father of modern political science, Machiavelli made the important move of detaching politics from morality, religion and tradition and aligning it to power, realism and contingency. Among other changes that it brought about, Machiavellian politics engineered a shift from a direct, moral, honour-based confrontation to an international system of strategic performance, mediation, and manipulation of appearances. Machiavelli, in keeping with the general changes in the tendencies of the human society, advocated never to approach one's opponent without a mediating system. Rather than physically challenging an enemy in open fight, Machiavelli advocated engaging indirectly with the enemy in a mental tussle for power. Machiavelli stressed on techniques of power that work through (mis)representation and psychological anticipation. In doing this, Machiavellian politics shifted the game away from the field of action to representation and performance. Politics after Machiavelli came more and more to resemble an erotic game in which objects would become desirable not for their own sake, but because they fulfil a systemic demand more than that of an individual. Individual desire in this system was thus a matter of secrecy and was always in an erotic dialogue with systemic desire.

Shakespeare has, in many of his plays, used the conflict between the old and the new world for incredibly effective drama. In many of his plays, Shakespeare, like many other playwrights of his time, incorporates the Machiavel type into his plays. The Machiavel type is usually a complex

character, like Iago in *Othello*, Richard III in a play of that name and Edmund in *King Lear*, who is a cunning, amoral and power-hungry schemer. To a large extent, Octavius Ceasar and justifiably Cleopatra too are examples of Machiavellian characters in *Antony and Cleopatra*.

The first major instance of Machiavellian politics in the play is Octavius' offer of his sister's hand in marriage to an Antony who, he knows, is besotted with Cleopatra. Octavia becomes a pawn in a politico-social alliance to hold Antony back in Rome to counter the impending threat of Pompey, Menas and Menecrates. Octavius' move is a political masterstroke as he stalls Pompey's advance through Antony and also creates scope for seizing total control over Rome once the external threat has been dealt with. In offering his sister, Octavius anticipates Antony's later return to Cleopatra which he plans to capitalise on by using public sympathy in his favour once Antony deserts his sister.

Sextus Pompeius, on the other hand, becomes a representative of the old political system when he rejects Menas's offer of killing the three Roman triumvirs when they are carousing on his ship. In refusing to kill the triumvirs and take over the kingdom lost by his father, Sextus Pompeius deems 'honour' more important than an exceptional, amoral, political opportunity to cease power. The refusal to finish his enemy at the first opportunity presents Pompey as a relatively effeminate political player, who shows inordinate sympathy for people who are essentially his opponents. In doing this, Pompey acknowledges relations to people outside the political system and dithers at assuming phallic masculinity to feminize his opponents.

What the above episode shows is that Pompey is outdated and unsuited for the new political order in which power comes to the one who is ready to seize the moment. The new political system, as is evident from the puny frame of Octavius, is one where biological, social, political positions of power are, not static and fixed, but contingent. Consequently, the imbalances of power between sparring parties rather than birth, class or race define the old binaries of masculinity/femininity or master/slave.

The little episode with Pompey has a direct bearing on the erotic relationship between Antony and Cleopatra. As is evident from the metaphor of angling in the above quoted lines, Cleopatra knows that keeping an immensely powerful Roman Triumvir like Antony 'hooked' to herself is vital for sustaining her, otherwise inconsequential, entity on the political field. Like the pleasurable music that brings suggestible fish to her net, she needs to use herself as a carrot on the stick to keep Antony in tow. Piquing Antony's sexual desire without ever satisfying it becomes her game for survival. According to Peter A. Parolin,

> Cleopatra easily shifts from being the morsel of food that Roman generals eat to being the devourer of those same generals; and if Cleopatra shifts in this way, then Antony, too, shifts from being the manly hero who consumes. (Deats, 217)

Cleopatra to being the effeminate Roman who is consumed by her Although Antony would probably have moved on to another woman after having sexually exhausted Cleopatra, he does not see their relation as a game. He, being a representative of the old world, like Pompey, is earnestly in love with Cleopatra and maintains the old chivalric code until he feels he has received assurance of her fidelity. The new Machiavellian system requires that one play the game representationally by keeping one's actual entity out of the symbolic field. Cleopatra, however, plays the game in the Machiavellian fashion and remains unscathed. Antony, on the other hand, cannot differentiate between his representation in the political arena and his real person outside it.

It is Antony's ignorance of the 'game' that makes him effeminate both vis-à-vis Octavius Ceasar and Cleopatra. What the soothsayer predicts for Antony in the face of Octavius, the weakness of his 'daemon' is true for his relationship with Cleopatra too:

If thou dost play with him at any game

Thou art sure to lose and of that natural luck

He beats thee 'gainst the odds (Act II, Sc. 3)

The play is strewn with misfits like Antony, who not keeping up with the changed political scenario cease to be players and become pawns in other people's game. This lack of control over their own political fate brings a shadow of effeminacy on characters like Enobarbus, Sextus Pompeius and Ventidius. Ventidius is also a character of the older world associated with honour, virtue and chivalry. Commissioned by Antony to fight the Parthians, Ventidius, like Pompey, loses a political opportunity to push on into Parthia and win more territory than he had been asked to do. Rather than pursuing individual ambition, Ventidius only thinks of following his master's orders so as not to lose his favour. In doing this, he also confuses his symbolic position in the game with his reality outside it.

Enobarbus is the character through whom, at times, Shakespeare speaks directly to the audience, one instance of this is when Antony receives the news of Roman unrest and Fulvia's death and suggests that they leave Alexandria immediately. Enobarbus makes a comic but meaningful observation. He suggests that they would "kill all (our) women" if they leave, their departure would be taken as an unbearable unkindness. Although jokingly, Enobarbus shares a false belief with Antony—the belief that they are the centre of the world and the world would not sustain itself without them. Enobarbus then makes a lewd remark about women being 'made' to 'die' only "under compelling occasion". Behind the sexual innuendo, Shakespeare slips in a theoretically loaded message, that probably 'died' upon his later audience. Enobarbus' lines suggest that women or the 'other' should be encountered and 'compelled' physically until they 'die'. Shakespeare, through Enobarbus' lines suggests the political encounters of the older world where the self entered into a battle with the other and physically vanquished them. The Machiavellian world "cast(s)" the other "away for nothing". What Shakespeare suggests is that in the new political system, the 'women', the real femininity of the 'other' is rendered non-existent, "nothing", and the sexual encounter takes place in a freshly 'mapped' mental terrain. Cleopatra knows that an essentially sexual encounter, in the garb of the social, political, ethnic or economic happens in 'another space' (the Lacanian *anderschauplatz*). She knows that the body bound to natural reality must be kept off the new political stage and should be replaced by a 'masque' that, because of the immense performative possibilities, can enjoy a "celerity in dying". Antony and Enobarbus, on the other hand belong to a world where it is against the masculine heroic code and, in fact, effeminate to not be yourself and to wear a masque. In conversation with Menas, Enobarbus suggests that "there is never a fair woman has a true face." (II, 6)

At the time when Octavius sees his sister off, Enobarbus, Agrippa and Antony all make comments on 'weeping' implying that it is an effeminate act. Enobarbus, in fact, counters Agrippa's allegation that Antony wept at the time of Ceasar's death and later for Brutus. He says that Antony was 'troubled with a rheum' and willingly confounded it with wailing. What Enobarbus suggests is that at the time of Ceasar's death, Antony merely 'put on' the appearance of crying and used the watery eyes, symptoms of a cold, to make his 'act' look real. The ability to use the body to 'perform' rather

than 'be' becomes a masculine trait. Shakespeare uses this scene to establish the later emasculation and feminization of Antony's men when he makes them weep at Antony's ignominious defeat. Even a cunning soldier like Enobarbus, for whom tears that "water a sorrow" should only "live in an onion" becomes "onion-eyed" and fears the troops' transformation to women.

Enobarbus is the only character in the play who, because of his perceptive nature, understands the ebb of 'older' ways and the 'flowing in' of the new. He leaves Antony's service but would not give up the code by which he has spent a large part of his life.

Alexas did revolt; and went to Jewry

On affairs of Antony; there did persuade

Great Herod to incline himself to Caesar,

And leave his master Antony: for this pains

Caesar hath hang'd him. Canidius and the rest

That fell away have entertainment, but

No honourable trust. I have done ill;

Of which I do accuse myself so sorely,

That I will joy no more. ()

Enobarbus realizes that the people of the older order who have defected to the new have been used by the system, been extinguished and reduced to nothing. On receiving a bounty from Antony even after his sorry defection, Enobarbus exits the political stage even before he has completely entered it.

The most interesting scene, one that graphically shows the 'feminization' of Antony is the one between him and Eros. In the 14th scene of the 4th act, Antony compares the multiple shapes that a cloud takes with "black vesper's pageants". Shakespeare characteristically uses a complex metaphor here. Vesper is a word associated not only with evenings but also the evening star, Venus. It is phenomenal how one word in Shakespeare can, at times, open a chest of meanings for his readers. Black, Vesper and pageants—the three words put together create a play of meanings as various as the shapes suggested by Antony's clouds themselves. In Antony's description, there is his unconscious acknowledgement of being fooled, more immediately by Cleopatra but, generally by the new political scene. In dealing with his world in 'real' terms rather than through mediating representations, Antony finds himself 'nod(ded) unto a world' only to have his eyes "mocked. . .with air". The famous cloud speech is the final acknowledgement of finding himself 'emasculated' in the face of a 'black' screen against which erotic games (pageants) are performed by 'inconstant' masques. Cleopatra, appropriately being a representative of Venus, shows herself adept at playing the game of masques and thus eventually emerges more powerful with her phallic masculinity. In the early acts of the play, Cleopatra recalls a night of revelry with Antony where she dresses him in her own robes while she 'playfully' wears his mighty sword. The performance in the small vignette at the beginning of the play turns real as Antony finds himself condemned to 'oblivious' femininity while Cleopatra takes on a masculine, phallic role by wearing his sword 'Philippan'. According to Hugh Richmond,

Cleopatra's endless costume changing is the surface evidence of her mastery of the art of role-playing, with which only an expert actor-author could endow her. Her magnetism, bizarrely

enough, resembles that which Falstaff has for Prince Hal, a psychological agility which hypnotizes the victim, and overpowers his will. However, Falstaff's ingenuity is largely governed by his physical limitations to the mode of parody of serious attitudes, while Cleopatra slips into each role so completely that it ceases to be an affectation.

The subsequent scene of Antony's felo-de-se is strangely enigmatic in that it presents Antony as a tragic and a comic character at the same time. From a tragic perspective Antony performs a valorous act by falling on his sword. As a tragic hero Antony's suicide is the final resolution to his conflict with a larger order that overwhelms his solitary view of the world. After the final moment of revelation of his disharmony with the world around him and a comprehension of his tragic flaw, Antony embraces death. In Antony's death the play expresses the limits of human power and articulates the inevitable failure of the tragic protagonist, death becomes a resolution to a slow process of isolation. Antony becomes the essence of a tragic man who, according to Aeschylus, 'must suffer to be wise'.

From another point of view, the play is a study in volatility rather than an ecstatic tragedy. In her essay Martha Tuck Rozett observes,

In choosing the well-known Romeo and Juliet legend for his first tragedy of love, Shakespeare either stumbled upon or deliberately sought out a solution to the major problem inherent in the two-protagonist tragedy: that of orchestrating an ending in which two characters separately yet jointly undergo tragic downfalls and deaths. (Rozett, 152)

Antony's failed attempt at suicide is a mix of pathos and comic incongruity. The 'handless' sword becomes a phallic symbol that rather than giving him the relief of having fulfilled the code of masculine honour, makes him an object of systemic 'penetration' rather a subject who penetrates. Significantly therefore, Antony does not die from the wound but pleads to the others to 'despatch him'.

Hugh Richmond in his analysis of the scene says that,

I have repeatedly seen performers flush with rage after audience laughter greets his Bottom-like clumsiness in his suicide attempt: "How, not dead? Not dead?" (4.14.103), an indignation coming from a failure to realize that the ultimate tragedy of Antony (like Lear) is to become ridiculous.

According to Rozett,

Part of the comic effect here is owing to Shakespeare's reiteration of the trickery motif: having just been tricked by Cleopatra, Antony allows himself to be tricked again by Eros, who deliberately arouses Antony's-and the audience's-expectations, and then shocks both his master and us by stabbing himself. When Antony rushes toward death like a bridegroom to a bride, only to be deceived a third time ("How? not dead? not dead?") the effect is ironic, to say the least. Antony continues to behave like a gulled, ineffectual comic figure for most of the scene, as he pleads unsuccessfully with his followers to kill him, and as he listens to Diomedes' revelation that Cleopatra is alive. Not until he is borne aloft by the guardsmen and carried off the stage does he begin to regain his heroic stature. (Rozett, 160)

It is the comic reading of this tragic act that justifies the oft-debated running of the play into the fifth act even after the protagonist's supposed death. The scene with Cleopatra in the monument is strangely analeptic in that it interprets Antony's attempted suicide and justifies the fifth act. Antony's actual attempt at killing himself finally proves to Cleopatra that Antony's love for her was not part of

a performance. It jolts her back from her performed femininity inside the Machiavellian political order to the realization of her real 'femininity' outside it. The monument scene, like the scene of Antony's suicide, has baffled many directors often confusing its presumed intention with its effect. According to Hugh Richmond,

There is a similar grotesqueness found in all directors' struggles to make a smooth effect out of the lifting of the mortally wounded Antony to the gallery of Cleopatra's monument, as specified by the stage direction "*They heave Antony aloft to Cleopatra*" (4.15.37). In their unavailing attempts to avoid awkwardness directors fail to see that this clumsy and insignificant rise of Antony is a gross parody of the apotheosis to lovers' heaven that he has anticipated in planning his romantic suicide (4.14.44-54).

The elevation of Antony into Cleopatra's monument of death, for me however, is also the descent of Cleopatra back into the world of physical reality.

The world outside the monument and the world inside it belong to different realms as instantiated by Cleopatra's refusal to fulfil Antony's last request for a kiss, outside the mausoleum. When the dying Antony asks her for a kiss, Cleopatra refuses to comply stating that she 'dare not' do so. Cleopatra interestingly distinguishes the territory outside her 'monument of death' as the territory of Machiavellian 'life' and of Ceasar. Cleopatra abides by the rules of the new world, deems Antony an element of Ceasar's world and refuses to be earnestly 'taken' by Antony in the masculine realm of life, of Ceasar and of performance.

. . .I dare not,

Lest I be taken: not the imperious show

Of the full-fortun'd Ceasar ever shall

Be brooched with me; if knife, drugs, serpents have

Edge, sting or operation I am safe. . .

It is only when he has been lifted into the feminine realm of her 'hideout', the 'tomb' does she kiss him, urging him to "die where thou hast lived". The scene shows that Cleopatra realizes that by the logic of the new political order, Antony had always been in the feminine realm. It is this realization that now forces her to die out of the performative and emerge into the realm of reality and death. With Antony's impending death, Cleopatra has been pushed out of the 'lightness of being' back into the heavy weight of the real world, where 'Our strength is all gone into heaviness'.

Antony's death pushes Cleopatra out of the political game, where she could perform whatever role she willed, back into her physical femininity. Antony's death is of great importance to Cleopatra because with him she has lost the phallic extension that was her ticket to the political game. To her Antony is the epitome of maleness, the 'soldier's pole' without whom "young boys and girls are level now with men". Consequently, in a passing out that symbolises death she dies as 'Royal Egypt', the 'Empress' and wakes up again as a woman. . .commanded

By such poor passions as the maid that milks

And does the meanest chares.

Cleopatra confesses that she had entered the political world with the intention of fighting those in power with equal strength. In a subtle line she distinguishes the feminine world of physical constraint

from the masculine world of freedom and performance.

. . .it were for me

To throw my sceptre at the injurious gods;

To tell them that *this world* did equal *theirs*

Till they had stol'n our jewel.

By the logic of Machiavellian politics, the play could not have ended with the death of Antony. Antony is not the hero of *Antony and Cleopatra* because he never played the game but was always a mere pawn of the Machiavellian system. The play rightly ends with Cleopatra's suicide, the tragic hero who stayed within an oppressive system, guarded her private space without being discovered, captured or being vanquished. As Hugh Richmond says,

> The relative unfashionableness of *Antony and Cleopatra* in comparison with the earlier tragedies like *Julius Caesar* lies in its confident rejection of both aesthetic and psychological consistency: those "for" and those "against" Cleopatra are both wrong: she is the heroine resultant from the creation of a unique hybrid: at once comedy, tragedy, and history play.

Works Cited

Deats, Sara Muchon, *Antony and Cleopatra*: New Critical Essays, Routledge, New York, London: 2005

Doran, Madeleine. *Shakespeare's Dramatic Language*. Madison: U of Wisconsin P, 1976.

Richmond, Hugh, *Antony and Cleopatra* as Tragicomedy, Shakespeare's staging (media resource for students and teachers) https://shakespeare.berkeley.edu/essays/antony-and-cleopatra-as-tragicomedy? utm_ source= chatgpt.com

Rozett, Martha Tuck, "The Comic Structures of Tragic Endings: The Suicide Scenes in *Romeo and Juliet* and *Antony and Cleopatra*" in *Shakespeare Quarterly,* Vol. 36, No. 2, Summer, 1985, pp. 152-64.

Shakespeare, William. Complete Works of William Shakespeare, Oxford and IBH Publishing Co. Pvt. Ltd, Calcutta 1980

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

THE CONCEPT OF GOD: CONTINUITY AND CHANGE

Dr. Kumari Soni Rekha
Assistant Professor, Department of Sociology,
J. D. Women's College, Bailey Road, Patna – 800023.
Mob No. 8102241530
Email: kumarisonirekha@gmail.com

The article unravels the true concept of God and unfolds the importance of nurturing faith in the true concept of God. The article goes on to describe the Continuity and Change in the true concept of God as found in the contemporary society. It explains how continuity in the true concept of God is functional for society. Finally the article winds up with showing the way to attain continuity in the true concept of God in order to bring forth a peaceful, loveful, happy, heaven-like, divine society i.e. Satyug from the present day Kalyug.

[**Keywords:** God, Continuity and Change, Satyug, Kalyug]

The Concept of God

Om/ Aum is the biggest/ highest/ the most important name of God in Hindi and Sanskrit. The term God is most widely used in English language for the Almighty, the Supreme Soul, the Brahma, Ishwar, Allah, Khuda, Wahe Guru, Prabhu, Param Pita, Parmatma, Bhagwan, Parmeshwar, the Supreme Power, Om/Aum.

The bhajan sung by Baba Ramdev runs as:

'.......Om hai nij Ishwar ka naam, kahe Ved ki kadi-kadi.......'

So, even Vedas describe 'Om' as God's name which I believe is the most sacred word in the entire Universe. God is the Creator and Runner of the universe as goes the bhajan:

'......racha hai shrishti ko jis Prabhu nen, wahi ye shrishti chala rahe hain.....'

The Earth, the Water, the Sky, the Air, the Sun, the Moon, the Stars, the entire Greenary, the entire Animal World including the Humans are His Creation. So, He has created all of us, each one of us. Creating Entirety, he has hidden himself within it. As goes the saying: *'kan-kan men Maan, raj-raj men Maan'*. Here the term 'Maan' is used for God, the Creator and Runner of the Universe. It describes the Omnipresent nature of God.

God is not only in every point of Universe, He is also every point of Universe as goes the bhajan:

'.....sab ke bhitar swayam chhip gaya. Srijanhaar shrishti ka hai.....'

So God is within every point of Universe, within each one of us within every soul. As says the bhajan:

'.......mujhmen rahkar, mujhise apni,
ye khoj kaisi kara rahe ho;
hriday men tum ho, tum hin ho priyatam;
pukarta hai har dil tumhin ko,
kyonki sab dil men tum sama rahe ho...'

So God, the Supreme Soul is within us, the soul which we truly, really, internally and eternally are. And simultaneously, He is exactly that which we (each one of us) are. So, this is the micro-identity of God.

The macro-identity of God is that He is entire Creation. As we Humans crave to see God, and somewhere within we crave to see Him as we are. Answering to it Baba Ramdev says that the Heaven (the Space, Dev Lok) is God's head, the Sky (Aakash, Antriksha Lok) is His body and this Mother Earth (Prithvi Lok) is His feet. This way he gives God's visualization describing Him as entire Creation.

So from above it follows that God is abstract, God is concrete. God is single, God is multiple. God is male, God is female; and God is of neither sex as well (as He is abstract too).

God is not only 'vishwamayi' (worldly, Universal), He is vishwatit (Supraworldly, Supramundane) as well – as says Baba. He is all that we can think of and also all that we cannot conceive of/ think of.

We are souls craving/ trying to know the Supreme Soul. We are knowledgeable, we can know God (with our narrow mind), the Omniscient, the all Knowledgeable; but we cannot be all-knowledgeable. Our every want, every thought, every word, every action, every feeling is owing to His blessings/ His inspiration; as goes the saying: '*Ishwar ki marzi ke bina ek patta bhi nahin hilta hai*'.

So He is All-in-all (the Sarve-sarwa) as says Baba the 'Jagat-niyanta', One who controls or runs the Universe. So He is Omnipotent – the All-powerful. Humans today are the most powerful being on Earth who is controlling the Entirety, but we cannot be all-powerful. Likewise God is Omnipresent, we the Humans can be present only at one place at a time. Thus God – the Supreme Soul – is Omniscient, Omnipotent and Omnipresent as distinct from souls.

II

Importance of nurturing faith in the true concept of God

Though faith in God is sufficient for our peace of mind, the knowledge of and faith in the true concept of God solves all problems of society; be it religious, social, political, economic or educational leading to a divine society with love and happiness all around.

Religion is faith in God. Be it any religion. All religion speaks of the same God. And the knowledge of and faith in the true concept of God help get rid of religious disharmony in the society. As goes the bhajan:

'......majhab nahin sikhata, aapas men vair rakhna......'

When one has the knowledge of and faith in the true concept of God, it fosters fraternity, universal brotherhood with faith that we all are children of same God. As goes the bhajan:

'……Hindu, Muslim, Sikh, Isai, aapas men hain bhai-bhai……'

Another bhajan runs as:

'……kan-kan men basa jab tu, fir kaun paraya hai…….'

Another one is:

'……..tum hin ho saathi, tum hin sahare; tumhare naate, sabhi hamare……..'

When one nurtures faith in the true concept of God, one sees God in all - men and women - which strengthens their bond of relationship leading to peace and harmony in the society. This way it solves all social problems, i.e. problems of social relationships.

The faith in the true concept of God helps solve political problems as well. Politics is struggle for power. Power is the capacity to control (impose one's will on) others with or without the consent of others. The realization that God is within all and all are Gods and Goddesses helps one get rid of thought to control/ govern and further also the thought to be controlled/ governed; there remains just one feeling – the feeling of love and adoration towards all. And what else can one expect other than this or higher than this – all other wishes if at all anyone has also, is got rid of. So the realization of and visualization of God in all brings a feeling of divinity all around.

Then the belief in the true concept of God, being in His consciousness and seeing Him/ His divine presence in every bit of Universe solves all economic problems as well, as it helps one get rid of the feeling of mine and thine. As goes the bhajan:

'…….naan ye tera, naan ye mera, ye mandir hai Bhagwan ka;

paani uska, bhoomi uski; sab kuchh usi Mahan ka…..'

All are God's and all is God – the entire Creation, the Earth, the Sun, the Moon, the Brahmand, even all Stars and whatever concrete manifestation, expression we see around us. As goes the prayer:

'…….swami tera tujhko arpan, kya laage mera…..'

This way, those who nurture faith in the true concept of God see Him in every point of Universe, and adore and worship the Entirety. Thus all problems of economy, of possessiveness is got rid of.

Next is education, the process of gaining knowledge. Knowledge of what? Of Entirety, of entire Universe, both Concrete and Abstract – in other words the knowledge of God. When this realization comes that whatever I am knowing, I am knowing God; there comes a feeling of adoration in whatever we are trying to know and knowledge gaining becomes an interesting and enjoyable process.

So by nurturing faith in the true concept of God we find there emanates a good, positive vibration of adoration and divinity all around; and it seems as if;

'……naya yug yog ka aa raha hai, manuj Devta bana jaa raha hai…..'

This is the bhajan sung by the Patanjali disciples.

III

Continuity and Change in the Concept of God

Now let us find Continuity and Change in the true concept of God as was originally held since ancient times/ Vedic period.

Findings:

Table 1: God – Abstract or Concrete

Category	Men	Women	Total	Average %
Abstract	60	64	124	62
Concrete	16	20	36	18
Both	14	6	20	10
No Answer	10	10	20	10
Total	100	100	200	100

The Table shows that 10% of respondents choose not to respond, 62% believe that God is abstract, 18% believe in concrete nature of God; merely 10% believe in both abstract and concrete nature of God. So the continuity in the true concept of God is only among 10%, rest 80% have changed who either hold that God exist only as abstract or only as concrete. In other words, the continuity in the true concept of God that He is both abstract as well as concrete is only among 10%.

Table 2: God – Single or Multiple

Category	Men	Women	Total	Average %
Single	78	84	162	81
Multiple	8	12	20	10
Both	2	0	2	1
No Answer	12	4	16	8
Total	100	100	200	100

The Table shows that 8% choose not to respond, 81% believe that God is single and 10% believe in multiple identity of God. Well God is single/ One (the Entirety) as well as multiple in every point of Universe and also is every point of the Universe. Merely 1% holds that God is both single as well as multiple. Thus here the belief in the true concept of God continues only among 1% of respondents, rest have changed to hold differing views and believe in either only single God or in only multiple God.

Table 3: God – Male or Female

Category	Men	Women	Total	Average %
Male	18	14	32	16
Female	4	16	20	10
Neither	26	22	48	24
Both	32	34	66	33
No Answer	20	14	34	17
Total	100	100	200	100

So 17% do not reply at all; 16% believe that God is only male, 10% believe that God is only female, 33% reply that God is both male and female and 24% reply that God is neither male nor female.

Though the question then was not put to them, still none of them on their own pointed out that God is both male and female; and at the same time also neither male nor female (as God is abstract as well).

So this was all about the Continuity and Change in the concept of God. Now let us analyze the findings.

Analysis:

The finding is that there is very little continuity in the true concept of God. Only 10% believe that God is both abstract and concrete. And only 1% as both single and multiple; this too I think is by chance, I don't think they have the explanation as to how He (God) is both single and multiple. Then the continuity in the true concept of God is not that strong, as none pointed out on their own that God is both, of both sexes as well as of neither sex (as evident from Table 3).

The concept of God as held currently has changed a lot as we find. Change is the law of nature and is inevitable with passage of time. However as the changes have been, it is clearly evident that people are confused regarding the concept of God. Nobody seems to have the true picture, visualization of God as He is. But one thing is quite sure mere faith in God is sufficient to bestow them with peace of mind. But since most of them do not nurture the true concept of God, this is why there is faced today religious, social, political, economic and educational problems. There is found communalism and religious fundamentalism. There is disharmony in social relationships. Politics is only for the sake of attaining power rather than to serve the society. There is too much conflict so far as money matters are concerned. The process of gaining knowledge is felt as very monotonous by students. What is more is that whatever knowledge that they gain that too is not true and correct; more so, so far as social sciences are concerned which further causes restlessness in the society.

As the knowledge of and faith in the true concept of God has not continued, the feeling of love, reverence and adoration is lacking among us. However, there is minimum bestowed to us, i.e. 'Peace' as anatheism has continued among 96% of respondents (98% women and 94% men) as evident from my earlier article (under process of publication).

IV

Conclusion and Suggestion

The observation and my experience says that greater is the continuity in the true concept of God, more is there peace, love and happiness all around on the society. The more is there change in the concept of God, more are there are religious, social, political, economic and educational problems – consequently restlessness all around. Thus the continuity is functional and change in the concept of God is dysfunctional for the society.

Therefore the wisdom says that to have a peaceful, loveful, happy and heaven-like divine society, there should be greater continuity in the true concept of God. And for this is required not only reading religious texts but also practicing what is said in these texts to have the true realization, a true visualization of God and for being able to nurture feeling of reverence and adoration towards God i.e. Universe, Society and one and all. And the easiest way to attain this state is by practicing Pranayam.

Then would come a divine, heavenly and happy society – Satyug from Kalyug.

Acknowledgement

I thank my Parents whose blessings kept me peaceful to write this article. Then I thank my PhD Supervisor Prof. Vinita Singh Ma'am for having supervised my PhD work with lot of love and affection. This article which is derived from my research work is written by her inspiration and blessings. I even thank my Spiritual Guru Baba Ramdev for enlightening me with the true concept of God. And most importantly, I thank God for continuously showering his love and blessing upon me which was the driving force to write this article.

Notes

- The article is based on the Doctoral Study conducted on 200 Ranchiites (100 men and 100 women). The Study was done by Descriptive Research Design. The Samples were chosen by Purposive Sampling Design. All the Samples were Urban Educated Hindus.

- The bhajans, prayers, devotional hymns stated in the article are sung by Baba Ramdev and his disciples in the Patanjali Yogpeeth, Haridwar.

- The paper was presented in All India Sociological Conference 2024 (in the ISS-RC-06: Sociology of Religion).

Reference:

Channel Aastha (5.00 am to 7.30 am – live telecast every day). *Param pujya Swamy Ramdevji Maharaj ke pawan saanidhya menYog Shivir.*

Breaking Social Barriers: Sri Chaitanya's Role in Promoting Equality

Shampa Banerjee
Ph.d Scholar, Utkal University
Bhubaneswar, Odisha

Abstract

Sri Chaitanyadev was a spiritual leader and a social reformer who sought to establish equality in medieval Indian society. At a time when the caste system and untouchability had deeply divided Hindu society, he challenged social injustices. He promoted the idea that all people, regardless of caste or creed, were equal in the eyes of God. His teachings went beyond religious devotion and aimed at eliminating discrimination, superstition, and social hierarchy.

One of Chaitanyadev's most significant contributions was his inclusive approach to religion. Unlike the rigid traditions followed by the upper castes, he introduced Naam Sankirtan (chanting the holy name of Krishna) as a powerful medium to unite people from all backgrounds. Through public congregational singing (Nagar Sankirtan), he created a sense of social and spiritual equality, breaking the barriers imposed by the caste system. His message was clear—true devotion was based on love and humility, not birth or social status.

Although Gaudiya Vaishnavas primarily regard him as the proponent of Vaishnavism, his impact extended far beyond religious revival. His movement subtly carried political undertones, as it weakened the dominance of the priestly class and empowered the lower castes. His teachings not only influenced medieval society but also laid the foundation for future social reform movements advocating equality and justice.

The impact of Chaitanyadev's movement was far-reaching, promoting unity, compassion, and religious tolerance. His philosophy continues to inspire spiritual and social progress, proving that his vision of universal brotherhood remains relevant even today. His life and teachings serve as a timeless example of how love and devotion can transcend social barriers, fostering a more inclusive and just society.

Keywords: Social Equality, Caste System, Untouchability, Devotion (Bhakti), Nagar Sankirtan.

Introduction

Equality is the foundation of democracy, recognizing that all people are inherently equal. Without equality, neither an individual nor a society can achieve genuine progress. Moreover, freedom itself is incomplete in the absence of equality. When discrimination exists, the strong dominate the weak,

creating an unjust society.

In today's world, the idea of equality remains a crucial issue. In medieval India, a society plagued by caste divisions and superstition, Sri Chaitanya emerged as a great reformer who preached the ideal of equality. His contributions to the Bengal and Indian renaissance were profound and undeniable. His advent marked a turning point in medieval Indian history. Rising above all forms of narrow-mindedness, Sri Chaitanya called for the abolition of untouchability and advocated for equality among all people—an idea that was revolutionary in his time.

Chaitanya was one of the greatest saints of the Bhakti movement. He preached love, equality, humanity, and harmony. A true champion of social liberation, he denounced the caste system and advocated for the universal brotherhood of mankind. At the same time, he strongly opposed the domination of the priestly class and the practice of superfluous rituals and ceremonies. Due to his commitment to social liberation, many people from socially oppressed classes became his disciples. Notably, one of his most devoted followers was a Muslim named Haridas

The objectives of this article are as follows:

- This article provides an in-depth examination of Sri Chaitanya's contributions to the discourse on social equality in medieval India, focusing on his efforts to dismantle rigid caste and religious boundaries**.**
- This article examines Sri Chaitanya's pivotal role as a propagator of the Bhakti Movement in medieval India.
- The objective of this article is to highlight that Sri Chaitanya, beyond being a religious reformer, was deeply committed to the ideals of humanism.

"Sri Chaitanya's Bhakti Movement and His Vision of Social Equality"

Sri Chaitanya Mahaprabhu was born on February 18, 1486, in Nabadwip, Bengal, and he was known for his liberal mindset, deep learning, and strong religious inclination. At the age of twenty-four, he renounced worldly life and embarked on a spiritual journey across India to spread his message of Vaishnavism and Bhakti (devotion to Lord Krishna).

Accompanied by his close associate Nityananda, he first traveled to Orissa, where he preached and conducted large congregational chanting (Sankirtana). His charisma attracted thousands of followers. He stayed for some time in Puri, where he became deeply associated with the Jagannath Temple. From there, he journeyed across South India, visiting Tirupati, Kanchipuram, and Srirangam (on the banks of the Kaveri River), where he engaged in discussions with scholars and spread the philosophy of Krishna Bhakti. He also traveled to Madurai, Rameswaram, and Kanyakumari, promoting devotion through Nama Sankirtana (chanting the holy names of God).

During his travels, he visited Udupi, Pandharpur, and Nashik, interacting with saints of different traditions. Moving north, he reached Vrindavan, where he bathed in the Yamuna River, worshipped at sacred shrines, and expressed his devotion through ecstatic dance and prayer. He also revisited Nabadwip, his birthplace, before finally settling in Puri, where he spent the rest of his life in deep devotion and spiritual ecstasy.

Sri Chaitanya's travels played a crucial role in spreading Bhakti Yoga, fostering unity among different sects, and inspiring countless devotees across India. His influence remains profound in Vaishnavism,

particularly within the Gaudiya Vaishnava tradition

Among the preachers of Vaishnavism, the name most widely revered is Sri Chaitanya Mahaprabhu. The essence of his teachings was monasticism and deep devotion to Sri Krishna, but at its core, his movement was also a challenge to the caste system. A staunch opponent of caste-based discrimination, he accepted disciples from all backgrounds, regardless of race, religion, social status, or wealth.

Sri Chaitanya's ideology deeply influenced the common people, offering them a sense of unimaginable spiritual liberation. Through his teachings and personal example, he spread the message of universal brotherhood, equality, and pure devotion, leaving an indelible mark on Indian society.

Shri Chaitanya was a key figure in the religious reform movement during the Sultanate period. Under his influence, the Vaishnav movement took on a new form, evolving into what became known as the Bhakti Andolan (Devotional Movement). Its primary aim was to counter the caste system and challenge the social and religious superstitions prevalent in Hindu society at the time.

Chaitanya transformed the movement into a new spiritual path, incorporating ideals of liberal humanism and social equality. He emphasized the concept of Jivatma (the individual soul) and Parmatma (the Supreme Soul), reinforcing the belief in a direct and personal connection with the divine, beyond societal divisions.

Chaitanyadev's movement had two key aspects: reforming religion and society and countering the growing influence of Islam, which was supported by the ruling class. Through his Kirtan (devotional singing), he established a new path of love and devotion, granting equal religious rights to the common people. His goal was to bridge the gap between the upper and lower classes, fostering a sense of unity and kinship within society.

A true practitioner of his teachings, Chaitanyadev only taught others after first learning himself. In Chaitanya Bhagavata, it is mentioned that while visiting Navadwip, he first went to the house of Tantubay (a weaver), where he received new clothes as a gift. He then visited a cowherd's house, where he accepted milk, and later engaged with various artisan communities, including the Gandhabanik (perfume makers), Shankhabanik (conch shell traders), Malakar (florists), and Tambali (betel leaf sellers). By involving them in his movement, he demonstrated his rejection of caste-based discrimination and fearlessly defied social ostracism. (Lala,2014,P-142)

For Chaitanyadev, human life held greater value than religious scriptures. His message of love and devotion united people from all social backgrounds, reflecting a spirit of social progress and inclusivity. His movement was not just a religious awakening but also a powerful force for social transformation.

Women played a significant role in the Vaishnava movement led by Sri Chaitanyadev, participating alongside men in spreading the faith. Jahnavidevi, the youngest wife of Nityananda and mother-in-law of Birbhadra, established a Vaishnava center in Kharadha, where she actively preached and promoted the religion. Similarly, Hemlata Thakurani, daughter of Srinivas Acharya of Bishnupur, initiated devotees and contributed to the expansion of the movement.

Sri Chaitanya's Vaishnavism fostered a sense of organizational consciousness by granting equal rights to both men and women in religious preaching, setting a progressive precedent in spiritual leadership.

During Sri Chaitanyadev's time, inequality and untouchability became deeply entrenched in Hindu society due to the rigid caste system. Social evils such as Kaulinya Pratha (the oppressive kinship system), Sati Pratha (widow immolation), and child marriage further bound Hindu society in a web of superstition and immorality.

Amidst this societal decline, Sri Chaitanyadev emerged in Bengal and East India, offering a new spiritual and social vision. He strongly preached that among Krishna devotees, there is no racial or caste-based distinction—all are equal before God. Through his revolutionary teachings, he sought to establish the ideal of equality in medieval India, challenging deep-rooted social injustices and advocating for a more inclusive society.

Sri Chaitanyadev's doctrine was unimaginable in the rigid, multi-caste Hindu society of medieval India. At that time, Brahmins occupied the highest position in society, while Shudras were placed at the lowest level, creating wide social divisions. Even after the Turkish conquest, the social and religious rigidity of the Hindu community only intensified.

In such a restrictive environment, Sri Chaitanya sought to unite people across caste and creed through the mantra of Krishna's love. He allowed everyone to participate in the devotional hymns (Kirtan) that he introduced, emphasizing that liberation could be attained through pure devotion (Bhakti).

He made Naam Sankirtan (chanting the holy names) a powerful tool of the Vaishnava movement, and Nagar Sankirtan (public congregational chanting) became a symbol of collective strength (Sanghshakti). By incorporating processional walking into these gatherings, he infused the movement with dynamism and mass appeal.

While upholding the importance of religion, Sri Chaitanya also emphasized human dignity and worldly responsibilities, demonstrating his deep contemporary awareness and spiritual charisma.

Sri Chaitanya's call for the abolition of untouchability and his emphasis on equality among all people were truly revolutionary for his time. Rising above all social and religious divisions, he preached tolerance toward different faiths and denominations. His teachings encouraged humility, urging people to be "as humble as a tree."

Through his extensive travels across India, Sri Chaitanya fostered spiritual and cultural exchanges, bridging regional and sectarian divides. He engaged with saints and philosophers like Tukaram, Ramananda, and Advaitacharya, weaving a spiritual network that connected North, South, East, and West India.

In doing so, Sri Chaitanyadev paved the way for national unity in medieval India, promoting a sense of collective spiritual identity that transcended caste and regional differences.

Outcomes of the Article:

Concept of Equality

- **Highlights the importance of equality in establishing people's right and respect.**
- **Emphasizes the role of** Sri **Chaitanya Mahaprabhu in promoting equality through his teaching on Bhakti.**

Sri Chaitanya as a religious propagator and Social Reformer

- Explores how Sri Chaitanya established himself as a religious propagator and social reformer.

Discuss his contributions to promoting social changes and equality.

Challenging the caste and creed system

- Examine how Sri Chaitanya challenged medieval India's caste and creed system through his teaching on Bhakti.

Highlights the significance of devotion as a tool for social reform.

Contribution to the Bhakti Movement

- Discusses Sri Chaitanya's contributions to the Bhakti movement and its spread across to the different sections of society.
- Emphasizes the Impact of his teaching on promoting devotion and equality.

Life and Teaching of Sri Chaitanya

- Provides an overview of Sri Chaitanya's life and teaching.
- Highlights the significance of his message of love, devotion and equality.

Conclusion

From the above discussion, it is evident that Sri Chaitanyadev was not merely a religious preacher but also a social reformer and advocate of equality in medieval Indian society. At a time when the Hindu caste system had reached its peak, dividing society into rigid social hierarchies and deepening inequalities, Chaitanyadev emerged as a beacon of hope for the oppressed and marginalized. His teachings went beyond spiritual devotion and sought to dismantle social barriers, offering a message of universal brotherhood and love.

One of Chaitanyadev's most revolutionary contributions was his firm opposition to caste-based discrimination. In an era where Brahmins held absolute religious authority and Shudras were considered untouchables, he fearlessly challenged these notions. He declared that all devotees of Krishna were equal, irrespective of caste, creed, or social background. His philosophy not only empowered the lower castes but also forced the upper castes to question their superiority, thereby laying the foundation for social inclusivity. Through Sankirtan (congregational chanting of God's name), he created a sense of unity where people from all walks of life could come together in devotion, free from discrimination.

Chaitanyadev's vision of equality was not limited to social reforms but extended to religious tolerance as well. Unlike many religious figures of his time who sought to establish supremacy over other faiths, he preached harmony among different religions. His teachings emphasized humility, compassion, and respect for all, reinforcing the idea that true devotion lies in the purity of heart, not in birth-based privileges. This liberal approach to religion made Vaishnavism more inclusive and appealing to the common masses.

Although Gaudiya Vaishnavas primarily regard Chaitanyadev as the great proponent of Vaishnavism, it must also be acknowledged that he possessed remarkable political foresight. His movement was not just a religious revival but a social revolution that challenged oppressive structures and empowered

the common people. By advocating social equality through love and devotion, he undermined the authority of the priestly class, which had long maintained its dominance through rigid religious rituals and caste-based discrimination. In this way, his movement was not just spiritual but also deeply political, as it threatened the established hierarchy and called for a more just and equal society.

The impact of Chaitanyadev's revival in medieval India was far-reaching. His teachings inspired countless followers, giving birth to the Gaudiya Vaishnavism tradition, which continues to influence millions worldwide. Moreover, his emphasis on equality, love, and devotion laid the groundwork for future reform movements that sought to challenge caste discrimination and promote social justice. His legacy remains a testament to the power of love, devotion, and social harmony, making him one of the most influential figures in India's spiritual and social history.

In conclusion, Sri Chaitanyadev's contribution to Indian society was profound. He not only revived Vaishnavism but also redefined the principles of social justice and inclusivity. The way he eliminated injustice, inequality, and superstition through his message of love and devotion is truly commendable. His movement bridged the gap between the privileged and the oppressed, promoting a society where all individuals, regardless of their background, could unite in the divine love of Krishna.

Even today, his ideals continue to inspire movements for social change, proving that his vision of equality and universal brotherhood was not just relevant in medieval India but remains eternally significant in the pursuit of a just and harmonious world.

References

1. **Kabiraj, K.** (2010). *Sri Sri Chaitanya Charitamrita* (S. Sen & T. Mukherjee, Eds.). Ananda Publishers retrieved on 03rd april,2025
2. **Lochandas.** (2000). *Chaitanya Mangal* (B. Ghorai, Ed.). Sahityalok.
3. **Bandopadhyay, K.** (2002). *Medieval Bangla.* Des's Publishing.
4. **Lala ,A.**K(2014).Bangla Jiboni Kabyya O Chaitanyadev. Des's Publishing.
5. **Chatterjee, R. R.** (2002). *Chaitanya Bhagavat* (V. Das, Author). Sahityasangi.
6. **Gaudiya History.** (2021, January 22). *Lochana Dasa Thakura.* Retrieved from https://gaudiyahistory.iskcondesiretree.com
7. **Vrindavan Das.** (n.d.). *Chaitanya Bhagavata* (Âdi-khaGa 1.122).
8. **Chattopadhyay, N. K.** (1961). *Sri Sri Chaitanya Charitamrita.*
9. **Sen, D. C.** (2012). *Chaitanya: His Age.* Aparna Publishers.
10. **Kenedy, J.** (2013). *The Chaitanya Movement.* Aparna Publisher

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

कृष्ण बिहारी मिश्र की आलोचना दृष्टि

रुद्र प्रताप सिंह
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
अरिग्नार अन्ना गवर्नमेन्ट आर्ट एवं साइंस
कालेज, कराईकल, पुदुचेरी, ६०९६०५

किसी साहित्यिक रचना को पढ़कर जब उसके गुण और दोषों का सम्यक विवेचन किया जाता है वह आलोचना कहलाता है। आलोचना संस्कृत के लोच (लुच्) धातु से बना है, जिसका अर्थ देखना है। जब वस्तु, पदार्थ या किसी साहित्यिक कृति एवं रचना का सम्यक मूल्यांकन या विश्लेषणात्मक व्याख्या किया जाता है वह आलोचना होता है। साहित्यकार अपने जीवन के अनुभव को समाहित कर साहित्य की सर्जना करना है आलोचना उन तत्वों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करती है। हिन्दी में आलोचना शब्द अंग्रेजी के क्रिटिसिज्म (Criticism) का पर्याय है जिसका अर्थ मूल्यांकन करना होता है। हिन्दी के आरम्भिक युग में यह प्रायः यह धारणा प्रचलित थी कि आलोचना का अर्थ कृति या रचना विशेष का गुण दोष विवेचन मात्र है। आज हिन्दी आलोचना का क्षेत्र-विस्तार हो जाने के परिणामस्वरूप समीक्षा, आलोचना, समालोचना आदि शब्दों का अर्थ विस्तार हो गया है जो सभी एक दूसरे के अनुपूरक हैं। आलोचना के अन्तर्गत आलोचक का कर्तव्य रचना के विशेषताओं पर विचार कर उसके उप्लब्धियों एवं अभावों का मूल्यांकन कर तथा उसे श्रेणीबद्ध कर पाठक को समझने में मदद करना भी होता है। आलोचना में गुण दोष को विवेचन के संतुलित आधार को महत्व दिया जाता है जिसका यह लाभ होता है कि सहृदय को साहित्य के प्रामाणिक अनुशीलन की सुविधा प्राप्त हो जाती है। आलोचना से पाठक को रचनाकार के विषय में समझने में आसानी होती है और उसकी रस ग्रहण की क्षमता एवं साहित्य विषयक जिज्ञासा की वृद्धि भी होती है।

हिन्दी में शुद्ध व्यावहारिक आलोचना का सुत्रपात भारतेन्दु युग से माना जाता है लेकिन इसके पूर्व संस्कृत साहित्य की परम्परा में आलोचना के रूप प्रचलित थे जो आगे चलकर हिन्दी साहित्य में देखने को मिलता है। कृष्ण बिहारी मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी के युग के आलोचक हैं। इनके अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध आलोचको में मिश्रबन्धु, पद्मसिंह शर्मा, लाला भगवानदीन आदि भी आते हैं। मिश्र बन्धुओं ने 'हिन्दी नवरत्न' में नौ कवियों का स्थान दिया। उनके प्रिय कवि 'देव' हैं। यह देव और बिहारी को लेकर तुलनात्मक विवेचन करने का प्रयास करते हैं और देव को बिहारी से श्रेष्ठ मानते हैं। तुलनात्मक आलोचना का सूत्रधार मिश्रबन्धुओं ने ही किया इसमें कोई संदेह नहीं। ''मिश्रबन्धु सन्धिकालीन हिन्दी क्षेत्र की उस मध्यवर्गीय मानसिकता के प्रतीक थे जहाँ भक्ति के लिए सूर-तुलसी के पद अनिवार्य थे तो सामान्य गृहस्थ जीवन यापन के लिए रीतिकालीन कवित्त-सवैये विनोद का साधन थे। उनकी उसी रुचि का परिणाम था कि वे सूर-तुलसी के टक्कर में देव को रखना चाहते थे, जो न तो द्विवेदी को स्वीकार थी और न ही शुक्ल को।''[1]

आलोचना में आगे चलकर जो प्रवृत्ति तुलनात्मक आलोचना के नाम से विख्यात हुई, उसका पुरस्कर्ता या अध्येता इन्हीं को समझना चाहिए। हिन्दी नवरत्नों का चयन इन्होंने कवियों के परस्पर तुलना के द्वारा ही किया था। जिसका अनुकरण आगे चलकर कृष्ण बिहारी मिश्र जैसे आलोचकों ने किया। मिश्रबन्धुओं ने अपने काव्य-निर्णय में 'देव' को केन्द्र में रखते

हैं तो वहीं इसके विरोध में पद्मसिंह शर्मा, लाला भगवानदीन ने बिहारी को केन्द्र में रखकर अपनी आलोचना को आगे बढ़ाते हैं। कृष्णबिहारी मिश्र ने 'देव और बिहारी' शीर्षक से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर देव और बिहारी विवाद को एक नये धरातल पर पहुँचाया। अपनी पुस्तक देव और बिहारी में उन्होंने देव को बिहारी से श्रेष्ठ कवि माना है।

कृष्ण बिहारी मिश्र का जन्म १८९० ई० में ग्राम गंधौली, जिला सीतापुर (उ०प्र०) में हुआ था। इनके पिता का नाम रसिक बिहारी मिश्र था। चीन का इतिहास, देव और बिहारी जैसे ग्रंथों ने इनको प्रसिद्धि प्राप्त हुई पर सबसे ज्यादा इन्हें देव और बिहारी की आलोचनात्मक पुस्तक ने एक नया आयाम दिया। इसके अलावा इन्होनें सम्पादित पुस्तकें जैसे मतिराम ग्रंथावली, गंगाभरन, नवरस तरंग, नटनागर विनोद आदि हैं। कृष्ण बिहारी मिश्र ने अपने आलोचना के क्रम में रीतिकालीन कवियों पर अध्ययन करते हुए (विशेष रूप से देव, बिहारी, मतिराम) उन्होंने 'माधुरी' और 'समालोचक' जैसी पत्रिकाओं का संपादन भी किया। माधुरी पत्रिका का प्रकाशन १९२१ ई० में लखनऊ से होता था जिसका संपादन विष्णुनारायण भार्गव करते थे। प्रारम्भिक वर्षों में इसका संपादन दुलारे लाल भार्गव और रूपनारायण पाण्डेय करते थे। बाद में जिसका संपादन कृष्ण बिहारी मिश्र और प्रेमचंद ने किया। १९२६ ई० से १९३० के बीच जब छायावाद पर चर्चा अपने उत्कर्ष पर था तब कृष्ण बिहारी मिश्र ही इसके संपादन का दायित्व संभाल रहे थे। जिसमें उन्होंने निराला की प्रसिद्ध लेख माला 'पंत जी और पल्लव' माधुरी में प्रकाशित किया।

"कृष्ण बिहारी मिश्र ने देव और बिहारी की तुलनात्मक काव्य विवेचन के अतिरिक्त शृंगार के रसराजत्व पर भी विस्तृत विचार किया है। इसमें उनकी काव्य सम्बन्धी अन्य धारणाएँ भी प्रकट हो गई हैं। रसराज नामक अध्याय के प्रारम्भ में लिखते हैं कि 'कविता का उद्देश्य हमारी राय में आनन्द प्रदान करना है।' मिश्र जी ने भाव विभाव अनुभाव को अपने शब्दों मे समझाया है।"[२]

भरतमुनी के रससूत्र को उन्होंने अपनी सरल और सहज शब्दों में रखकर हृदयी को समझाने का प्रयास करते हैं। कृष्ण बिहारी मिश्र की आलोचना दृष्टि अत्यंत ही स्पष्ट है उन्होंने अपने आलोचक धर्म का कार्य अत्यंत ही गम्भीरता से रखने का प्रयास किया है। रसराज में लिखते हुए कहते हैं कि "यह आनंद-प्रदान रस के परिपाक से सिद्ध होता है। यों तो नीरस कविता भी मानी गई है और चित्र-काव्य का भी कविता के अंतर्गत वर्णन किया गया है, पर वास्तव में रसात्मक काव्य ही काव्य है। रस मनोविकारों के सम्मपूर्ण विकास का रूप है। किसी कारण विशेष से एक मनोविकार उत्थित (उठता) होता है, फिर परिपुष्ट होकर वह सफल होता है; इसी को रस परिपाक कहते हैं। मनोविकार के कारण को विभाव, स्वयं मनोविकार को स्थायी भाव, उसके अन्य पोषक भावों को व्यभिचारी भाव एवं तजन्य कार्य को अनुभाव कहते हैं। सो विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव की सहायता से जब स्थायी भाव उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त हो मनुष्य के मन में अनिर्वचनीय आनंद को उपजाता है, तब उसे रस कहते हैं।"[३]

रस की पुष्टि करते हुए कृष्ण बिहारी मिश्र ने केवल भारतीय आचार्यों को ही नहीं अपितु पाश्चात्य समीक्षकों को अपने समर्थन में उदधृत करते हैं। वह मैथ्यू आर्नल्ड, शेली, स्कीलर आदि का भी उल्लेख करते हैं। शृंगार को रसराज स्वीकार करते समय प्रेम के आदर्श की उत्कृष्ठता को त्यागते नहीं हैं। वह काव्य में रस की अवधारणा को बहुत ही सहज ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं जिससे पाठक को पढ़ने और समझने में कोई समस्या ना हो। देव या अन्य रीतिकालीन कवियों की रचनाओं की व्याख्या और उसकी समीक्षा सहृदयता के साथ करते हैं। उनकी सहृदयता और रसास्वादन करने की क्षमता अद्भुत है। वह कविता को ब्रह्मानंद सहोदर समझ उसके रस का आस्वादन करते हैं और काव्य में निहित तत्वों की व्याख्या कर सहृदयी, श्रोता या पाठक को समझने के लिए सहज एवं सुलभ बना देते हैं। 'देव' की पंक्तियों के माध्यम से उनके काव्य कला को कृष्ण बिहारी मिश्र ने किस प्रकार व्याख्यायित किया वह इस प्रकार है–

"खरी दुपहरी, हरी भरी, भरी कुंज मंजु
गुंज अलि-पुंजन की देव, हियो हरिजात,
सीरे नद-नीर, तरु सीतल गहीर छाँह

सोवैं परे पथिक, पुकारैं पिकि करिजात
ऐसे में किसोरी भोरी, कोरी, कुम्हिलाने मुख
पंकज से पाय धरा धीरज सों धरिजात।
सोहैं घन श्याम मग हेरति हथेरी-ओट
ऊँचे धाम बाम चढ़ि आवति उतरि जात॥"[४]

देव ने उत्कंठिता नायिका की इस विकलता को स्वाभावोक्ति-अलंकार पहनाकर सचमुच ही अलौकिक आनंद प्रदान करने वाला बना दिया है। विषमता का आश्रय लेकर देव जी अपने काव्य-चित्र में अपूर्व रंग भर देते हैं। कहाँ तो ग्रीष्म-मध्यान्ह का उपर कथित दृश्य और कहाँ भोली किशोरी का कुम्हलाया-सा वदन! बार-बार छत पर चढ़ना, हाथ की ओट लगाकर प्रियतम के आने वाले मार्ग को निहारना और आते न देखकर फिर नीचे उतर आना, इस प्रकार धीरज से पृथ्वी पर चरण-कमलों को रखना अत्यंत मर्म-स्पशी है। कृष्ण बिहारी मिश्र ने प्रकृति रूपी नायिका का वर्णन अत्यंत ही मार्मिकता से की है और देव के इस पद के माध्यम से से वह उत्कंठित प्रकृति और अधीर नायिका के समस्त उपादानों और उनके स्थतियों का दृश्य पाठक के सामने सहज रूप से प्रस्तुत करते हैं। मिश्र जी ने देव की काव्य कुशलता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि देव के काव्य में भावों की यह मार्मिकता अनेक स्थानों पर प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़ती है। कृष्ण बिहारी मिश्र अपनी तुलनात्मक समालोचना के क्षेत्र में शास्त्रीय शैली का प्रयोग करने के साथ ही तुलनात्मक समालोचना को सर्वांगीण पूर्णता देने में सर्वदा अग्रसर रहे हैं। वह द्विवेदी जी के शुद्ध परिष्कृत और संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली हिन्दी का प्रचार-प्रसार तो करते हैं, लेकिन साथ ही वह ब्रज भाषा का मोह त्याग नहीं पाते हैं। उनका मानना था कि ब्रज भाषा में जो माधुर्य, रसानुभूति, शब्द अभिव्यक्ति का अलौकिक संचार है वह खड़ी बोली में पूर्णतया समाहित नहीं है। खड़ी बोली हिन्दी कहीं ना कहीं इस रसानुभूति से अछूता है।

किसी वस्तु के स्वरूप और महत्व का वास्तविक ज्ञान तभी होता है जब कुछ समानधर्मी वस्तुओं के साथ उसकी समानता और असमानता का सम्यक विवेचना एवं समीक्षा की जाये। जब तक किसी वस्तु या कृति को संसार के परस्पर विरोधी तथा समानधर्मी वस्तुओं या कृतियों के समक्ष रखकर उसकी उपादेयता, महत्व, उद्देश्य, सौन्दयता आदि पर पूर्णतया विचार नहीं किया जाता तब तक उसके मूल्य के सम्बन्ध में निर्णय करना तर्कसंगत नहीं होता है। इससे श्रेष्ठता सम्बन्धित जो प्रचलित भ्रान्तियाँ हैं उसके निवारण में सहायता मिलती है और उसके जटिलताओं का निराकरण होता है। कृष्ण बिहारी मिश्र 'देव और बिहारी' की तुलनात्मक विवेचना करते समय इन भ्रान्तियों से हटकर सन्तुलित दृष्टि का परिचय देने का प्रयास किया है, लेकिन वह भी उन पूर्वाग्रहों से अपने आप को पूरी तरह हटा पाने में कहीं-कहीं असमर्थ दिखाई पड़ते हैं और देव को बिहारी से श्रेष्ठ मानते हैं। फिर भी हम कह सकते हैं कि देव और बिहारी की तुलना करते समय निसंदेह मिश्र जी निष्पक्षता से देव और बिहारी की काव्यों की विवेचना करने का यथा-सम्भव प्रयास करते हैं।

कृष्ण बिहारी मिश्र की इसी समानधर्मिता और निष्पक्ष स्वरूप की समीक्षा करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी लिखते हैं- "इस पुस्तक में बड़ी शिष्टता, सभ्यता और मार्मिकता के साथ दोनों बड़े कवियों के भिन्न-भिन्न रचनाओं का मिलान किया गया है। इसमें जो बात कही गई है, वे बहुत कुछ साहित्यिक विवेचन के साथ की गई है, 'नवरत्न' की तरह यों ही नहीं कही गई है। यह पुरानी परिपाटि की साहित्य समीक्षा के भीतर अच्छा स्थान पाने के योग्य है। मिश्रबंधुओं की अपेक्षा पं. कृष्ण बिहारी मिश्र की साहित्यिक आलोचना के कहीं अधिक अधिकारी कहे जा सकते हैं। 'देव और बिहारी' के उत्तर में लाला भगवानदीन जी ने 'बिहारी और देव' नाम की पुस्तक निकाली जिसमें उन्होंने मिश्रबंन्धुओं के भद्दे आक्षेपों का उचित शब्दों में जबाब देकर पं. कृष्ण बिहारी जी के बातों पर पूरा विचार किया।"[५]

कृष्ण बिहारी मिश्र मानते हैं कि कवि का संसार ज्ञान जितना व्यापक होगा और उसे वह आत्मसात करेगा। उसकी रचना उतनी ही चमत्कारपूर्ण होती है। 'देव' अपनी रचनाओं में संसार की समस्त पदार्थों पर बहुत ही पैनी नजर रखते हैं। वह संसार में स्थित तत्वों या पदार्थों का बड़े ही मार्मिक, सूक्ष्म की दृष्टि से अवलोकन करते हैं और उसका सौन्दर्यता के साथ अन्वेषण भी करते हैं। उनकी रचना का संसार के प्रत्येक पदार्थों से गहरा जुड़ाव है, जिससे पाठक को सहज ही अलौकिक

आनन्द की प्राप्ति होती है। वह 'बिहारी' को भी इन तत्वों से जुड़ा हुआ देखते हैं और कहते हैं कि बिहारी का भी ज्ञान सीमित नहीं था। वह भी संसार के उन समस्त अवयवों, पदार्थों का अन्वेषण करते हैं, परन्तु वह शृंगार रस के अनन्य भक्त थे और उनकी रचना इसी शृंगार की बहुलता और अतिशयोक्ति से भरा पड़ा है। बिहारी को कम शब्दों में अनूठे भाव भरने का अपूर्व कौशल है, लेकिन सजावट के इस अद्भुत सौन्दर्य में भावों का समावेश कहीं ना कहीं अछूता दिखाई पड़ता है। देव विशेष रूप से घनाक्षरी और सवैया छंदो का प्रयोग करते हैं, जिसमें भावों का पर्याप्त समावेश करते हैं। वह बड़े चित्रकार की भाँति अनेक कूचियों के माध्यम से उस चित्र में अनेक रंग भरने का प्रयास करते हैं। वह इस बात का ध्यान रखते हैं कि भावों का समावेश करते समय व्यर्थ पदों को दूर रखा जाय जिससे उसकी सौन्दर्यता बनी रहे। हालांकि इन दोनो कवियों ने शृंगार का वर्णन अद्भुत किया है जिससे उनकी रचना और उनकी काव्य-शक्ति पाठको को आनंद के पराकाष्ठा का अनुभव कराता है। जो इनके पद में स्पष्ट रूप से दिग्दर्शित होता है-

"बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाय;
सौंह करै, भौहन हँसैं, दैन कहै, नटि जाय।"[६]

कोई गोपी कृष्ण से प्रेम करती है और उनसे हँसी ठिठोली करने एवं बात करने के उनकी मुरली छुपा लेती है। मुरली छुपा लेने से कृष्ण उससे बात करेंगे और जिससे उसको आनंद का अनुभव होगा। इसी उद्देश्य से वह मुरली छुपा लेती है, लेकिन जब कृष्ण मुरली माँगते है तो वह सौगंध खाने लगती है उसके पास नहीं है लेकिन उसकी भौहें हँस कर यह बता रही है कि मुरली उसी के पास है लेकिन वह कृष्ण को देने से मना कर देती है। देव जी गोपी का कृष्ण के प्रति यह ढ़िठाई अच्छी नहीं लगती और अपने कृष्ण के प्रेम में आसक्त वह गोपी से बदला लेना चाहते हैं जिसका अवसर उनको मिल जाता हैं—

"कंपत हियो; न हियो कंपत हमारो;
यों हँसी तुम्हे अनोखी नेकु सीत मैं ससन देहु;
अंबर-हरैया, हरि, अंबर उजेरो होत;
हेरि कै हँसै न कोई; हँसै, तो हँसन देहु।
'देव' दुति देखिबे को लोयन में लागी रहै;
लोयन में लाज लागै; लोयन लसन देहु;
हमरे बसन देहु, देखत हमारे कान्ह,
अजहूँ बसन देहु ब्रज मैं बसन देहु।"[७]

देव इस पद के माध्यम से बिहारी के गोपियों को खूब छकाते हैं और उनको विनय करने के लिए बाध्य करते हैं। कृष्ण बिहारी मिश्र देव की इसी सौन्दर्य बोध का पाठको के समक्ष रखने का प्रयास करते हैं और उनको उस रसानुभूति का अनुभव कराने की चेष्टा करते हैं।

निष्कर्षतः कृष्ण बिहारी मिश्र की आलोचना दृष्टि तुलनात्मक आलोचना के ही अन्तर्गत ही आती है। जिसके फलस्वरूप उन्होंने 'देव और बिहारी' के माध्यम से अपनी प्रतिभा का अद्भुत प्रयोग किया है। उन्होंने देव और बिहारी की आलोचना करते समय आलोचना धर्म का बखूबी निर्वहन करने का प्रयास किया है। उन्होंने यथासम्भव दोनों कवियों की समीक्षा करते समय निष्पक्षता से काम लिया है और देव और बिहारी दोनों कवियों के काव्योत्कर्ष की विवेचना की है। इनके इसी निष्पक्ष भाव को देखते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन्हें मिश्रबंधुओं की अपेक्षा साहित्यिक आलोचना के रूप में उनको कहीं अधिक अधिकारी माना है। वह काव्य का रस बड़े ही सहृदयता के साथ ग्रहण करते हैं और उस काव्य में लिपटी हुई तत्वों की आलोचना कर पाठक को रसानुभूति का अनुभव कराने का प्रयास करते हैं। वह अपनी आलोचना में युगीन चेतना, साहित्यिक प्रवृत्तियों और उसमें निहित तथ्यों का निष्पक्ष भाव से आकलन और चिन्तन करते हैं। वह साहित्य को केवल अभिव्यंजना का साधन मात्र ही नहीं मानते अपितु उसमें निहित तत्वों का अन्वेषण करते हुए मानवीय भावों को भी स्थापित करने का प्रयास करते

हैं। द्विवेदी युगीन इस काल में कृष्ण बिहारी मिश्र, लाला भगवादीन पद्मसिंह शर्मा जैसे आलोचको के द्वारा देव और बिहारी पर अपनी-अपनी दृष्टि से तुलनात्मक विवेचन से हिन्दी पाठकों का और आने वाले नये आलोचको के रचना-कौशल और चेतना की दृष्टि का विकास हुआ।

सन्दर्भ सूची

१. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ १७४
२. हिन्दी आलोचना, विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ ३६
३. देव और बिहारी, कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठ ७४
४. वही, पृष्ठ १०५
५. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ १०५
६. देव और बिहारी, कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठ २२८
७. वही, पृष्ठ २२६

ISSN:2348-5639

Impact Factor
6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

रीता मौर्य
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

for the paper titled

सेवासदन : नारी जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Tai Chourasiya
Dean, Faculty of Law, Mansarovar Global University
Abhinesh Kumar Jain
(Enrollment No. 2022MGU0560)

for the paper titled

द्वेषपूर्ण भाषा, वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बाधक के रूप में : एक आलोचनात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

आदित्य राज

शोधार्थी, (NET), राजनीति विज्ञान विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

for the paper titled

भारतीय लोकतंत्र में 18 वीं लोकसभा चुनाव : मतदान व्यवहार का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Sunita Yadav
Associate Professor of English
R.D.S Public Girls College, Rewari

for the paper titled

Reimagining English Language Education: The New Pedagogical Structure of NEP 2020

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

एकलव्यः रुंगटा

पितुः नाम - नितिन रुंगटा

for the paper titled

समवायस्य विषये दर्शनान्तराणां मतम्

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

रामुराम

पिता का नाम- रतना राम

for the paper titled

सूरदासजी श्रृंगार और वात्सल्य रस के सम्राट

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr Preetesh Saxena
(Director)
Mr. Utkarsh Singh
(Head Of Department)
Himalayan Institute Of Technology And Management, Lucknow, U.P.

for the paper titled

Study of Improvement of Compressive Strength in Pervious Concrete

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. कुमुद श्रीवास्तव

(प्राध्यापक शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा मध्य प्रदेश)

आयुषी गोल्हानी

(शोधार्थी)

for the paper titled

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियाँ एवं सुझाव

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सतीश चन्द मंगल

(शोध परियोजना निर्देशक)

उप-प्राचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सीटीई, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर

डॉ. मुकेश कुमार शर्मा

(प्रमुख अन्वेषक) सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

श्रीमती रूकमणी शर्मा

(सह-अन्वेषक) सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

for the paper titled

उच्च शिक्षा में नवाचारी गतिविधियों की भूमिका

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Nena Ram Prajapat
Father's Name - Shree Ram Prajapat

for the paper titled

HDI रिपोर्ट में भारत की स्थिति

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

सुनीता जैन
सहायक आचार्य, इतिहास (VSY)
राजकीय महाविद्यालय देवली (टोंक)

for the paper titled

मध्यकालीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor
6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

मिनाक्षी पुत्री श्री ओटाराम

for the paper titled

हिंदी साहित्य में लिंग, जाति, वर्ग और धर्म जैसे सामाजिक मुद्दों का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

सुरेश चन्द

VPO- Jarau Kallan, Tehsil- Riyan Badi,
Dist- Nagaur (Rajasthan)

for the paper titled

भारत में पंचायती राज संरचना का विकास एवं कार्यप्रणाली

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. वी. बालाजी

Assistant Professor & Head,
Department of Sanskrit
National College (Autonomous)

for the paper titled

परमात्मनः सविशेषप्रकाशैकस्वरूपत्वसाधनम्

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

दीपक सोराड़ी
शोधार्थी
डॉ. देबकी सिरोला
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

for the paper titled

उत्तराखण्ड राज्य के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

*This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

पूजा शर्मा (शोधकर्त्री)
श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जयपुर

मन्जू देवी (सहायक आचार्या)
श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जयपुर

डॉ. मनोज कुमार
सहायक आचार्य, श्री बालाजी पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

for the paper titled

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त तथा उसकी सम-सामयिक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

Impact Factor
6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. वैशाली सिंह
शिक्षा संकाय
Resercher in Education, Delhi India

for the paper titled

मानविकी शिक्षा में खेल-आधारित शिक्षण की प्रभावशीलता

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

छविंद्र सिंह

Geography, Sadulshahar Degree College,
Sadulshahar
qualification -M.A., B.ED.,NET Geography

for the paper titled

श्रीगंगानगर (राजस्थान) जिले का प्राकृतिक भूगोल

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. लता एस पाटिल

राजीव गांधी बी एड कॉलेज धारवाड़ कर्नाटक

for the paper titled

सामाजिक यथार्थ की पड़ताल : डॉ. नरेश सिहाग की कविताएँ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

सुशीला कुलरिया
शोधार्थी,
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
झरना, जयपुर, राजस्थान

for the paper titled

नासिरा शर्मा के पारिजात उपन्यास में राम छवि

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'
सदनिका क्रमांक 5, अवन्तिका रेजीडेंसी,
58/59, सोमवार पेठ, नागेश्वर मंदिर रोड,
पुणे-411011 (महाराष्ट्र)

for the paper titled

लेखन कला और उसकी विधाएँ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रतिष्ठा सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

(राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, शाहपुरा बाग जयपुर)

for the paper titled

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद की उपादेयता

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

*This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

केशव मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफेसर

(राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, शाहपुरा बाग जयपुर)

for the paper titled

वैदिक कालीन शिक्षा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. संजय धोटे
हिंदी विभागाध्यक्ष, यशवंत महाविद्यालय, वर्धा

for the paper titled

हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : संभावनाएँ, चुनौतियाँ और भविष्य

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

चन्द्रशेखर
(शोधार्थी) देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब
डॉ. अरविंदर कौर
सहायक प्राध्यापक, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब

for the paper titled

डॉ. राजेन्द्र टोकी की कहानी 'अमानुषी' में नारी का विचित्र स्वरूप

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

अनिता शर्मा

शोधकर्त्री

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ

for the paper titled

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में कोचिंग का प्रभाव

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

*This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

शशि नाथ प्रसाद

(पीएच०डी०, शोधार्थी)

हिन्दी विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार।

for the paper titled

प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' में निहित नारी-अस्मिता और उसकी संघर्ष की वास्तविक झलक

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor 6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Santosh Kumar
Research Scholar in Geography, Department of Social Sciences, Baba Mastnath University, Rohtak
Dr Satyaveer Yadav
Prof. of Geography, Department of Social Sciences, Baba Mastnath University, Rohtak

for the paper titled

Rural-Urban Disparities in Child Sex Ratio and Its Determinants in Haryana

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

सुनीता

शोधार्थी ए. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज खुर्जा बुलंदशहर

डॉ. रेखा चौधरी

शोध निर्देशिका (एसोसिएट प्रोफेसर)ए ए. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज खुर्जा बुलंदशहर

for the paper titled

शैलेश मटियानी के कहानी संग्रह ‘दस प्रतिनिधि कहानियाँ’ में दांपत्य जीवन का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

*This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Soundara Rajendren Nayagi
Former HOD English
Shri Andal Alagar Institute and Technology,
Chennai, Former Journalist & Soft Skill Trainer Frankfinn

for the paper titled

Online Gambling in India: The Dark Reality Behind Digital Entertainment

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

*This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

K K Ishvitha Shree
B.Tech Graduate (VIT Bhopal University),
MBA Student (SRM Institute of Science and Technology)

for the paper titled

Smartwatch-Based Monitoring System for Parkinson's Patients Using AI

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

के के इश्विन्ता श्री

बी.टेक स्नातक (वी आई टी भोपाल विश्वविद्यालय),
एमबीए छात्रा (एस आर एम इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी)

for the paper titled

स्मार्ट मशीन लर्निंग प्रणाली द्वारा हृदय रोग का पूर्वानुमान : एक व्यवहारिक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

*This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रो. ज्योति किरण
(हिंदी विभाग) महिला महाविद्यालय,
किदवई नगर, कानपुर

for the paper titled

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ और मानवतावाद

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Anas Tabraiz

for the paper titled

Angling Cleopatra, Drawn Antony: The Shades of A New Politics of Gender in *Antony and Cleopatra*

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Kumari Soni Rekha
Assistant Professor, Department of Sociology,
J. D. Women's College, Bailey Road, Patna

for the paper titled

THE CONCEPT OF GOD: CONTINUITY AND CHANGE

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Shampa Banerjee
Ph.d Scholar, Utkal University
Bhubaneswar, Odisha

for the paper titled

Breaking Social Barriers: Sri Chaitanya's Role in Promoting Equality

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन

Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

रुद्र प्रताप सिंह

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
अरिग्नार अन्ना गवर्नमेन्ट आर्ट एवं साइंस
कालेज, कराईकल, पुदुचेरी

for the paper titled

कृष्ण बिहारी मिश्र की आलोचना दृष्टि

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July to September 2025, Vol. 12, Issue-3

Executive Editor
Dr. Varsha Rani

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**